सर्वोत्तम
रूसी साहित्य
पुस्तकमाला

Тургеневъ

Иван Тургенев

ОТЦЫ и ДЕТИ

Роман

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

МОСКВА
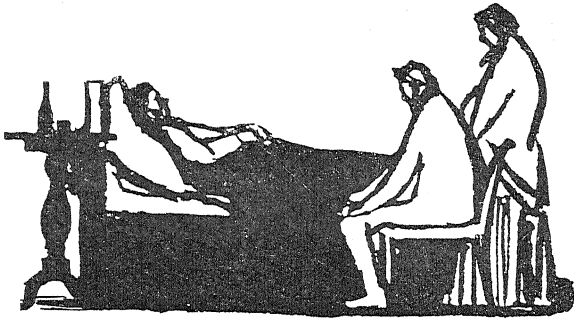
इवान तुर्गेनेव

पिता और पुत्र

उपन्यास

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

मास्को
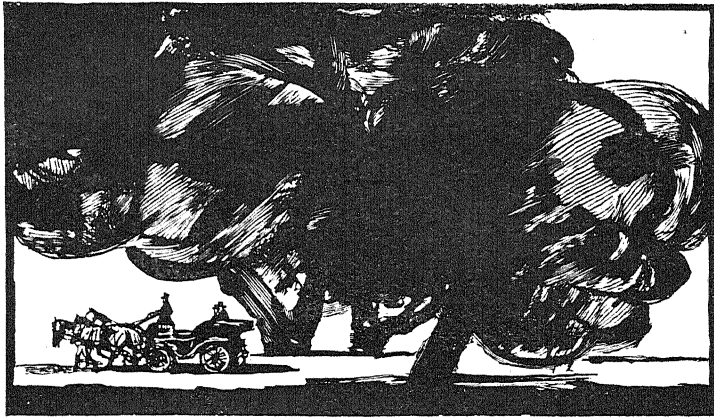
१

"क्यों प्योत्र, अभी भी उनका कोई चिन्ह नज़र नहीं आता?"

चालीस से कुछ ऊपर आयु के एक सज्जन ने जो धूसर कोट और चारख़ाने की पतलून पहने थे, 'क' सड़क पर स्थित एक छोटी-सी देहाती सराय में से नंगे सिर बाहर निकल चौखट पर पांव रखते हुए अपने नौकर से पूछा, जिसके गाल गोलमटोल, ठोड़ी सफ़ेदी लिए और आंखें चमक-विहीन थीं। यह बीस मई सन् १८५९ की बात है।

नौकर अपने समूचे हाव-भाव से – चिकने-चुपड़े और पट्टियां-कढ़े बालों, कान में एक फ़ीरोज़ी मुरकी और शाइस्ता चाल-ढाल से, एकदम

नये साचे में ढली पीढ़ी की उपज मालूम होता था। सड़क पर उसने एक नजर डाली और जवाब दिया

"नही मालिक, अभी तो कुछ नजर नही आता।"

"कुछ भी नजर नही आता?" मालिक ने फिर दोहराया।

"नहीं मालिक।"

उसांस छोड़कर मालिक एक छोटी-सी बेंच पर बैठ गए, पांवों को उन्होंने समेट लिया और उदास भाव से अपने इर्द-गिर्द नजर डालने लगे।

आइए, इस बीच आपसे उनका परिचय करा दें।

निकोलाई पेत्रोविच किरसानोव उनका नाम है। सराय से दसेक मील दूर दो सौ प्राणियों से युक्त एक भरी-पूरी जागीर के वह मालिक हैं—अथवा, जैसा कि वह खुद कहना पसंद करते है, पांच हजार एकड की उनके पास जायदाद है। काश्तकारी के अधिकार देकर अपने किसानों को उन्होंने मुक्त कर दिया है और अपना एक निजी 'फ़ार्म' वह अब चलाते है। उनके पिता एक फौजी जेनरल थे और सन् १८१२ की लड़ाई में लड़ चुके थे। उजड्ड और अनपढ़ होते हुए भी वह हृदय के अच्छे थे। सारी उम्र काठी कसे रहे। पहले ब्रिगेड का कमान किया, फिर डिवीजन का। हमेशा सूबों में ही रहे और उनके ओहदे ने उन्हें महत्वपूर्ण बनाए रखा। अपने भाई पावेल की भांति, जिनसे परिचित होने का अवसर आपको जब-तब मिलता रहेगा, निकोलाई पेत्रोविच भी दक्खिनी रूस में पैदा हुए थे। चौदह वर्ष की आयु तक घर पर ही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। सस्ते मास्टरों, शेखी बघारनेवाले और जी हजूरी करनेवाले सहकारियों तथा रेजीमेण्ट और स्टाफ़ के लोगों के बीच उनका जीवन बीतता। उनकी मां कोल्याज़िन परिवार की लड़की थी। कुंवारेपन में उसका नाम अगाथी था और जेनरल की पत्नी बनने पर अगाफ़ोक्लेया कुज़्मीनिश्ना किरसानोवा कहलाने लगी। वह उन भली स्त्रियों में से थी

जो घरेलू ही नही, बल्कि दफ्तर के मामलो का भी सूत्र-संचालन करती है। वह खूब सजधज से रहती,–भड़कीली टोपियां और सरसराते रेशम के कपड़े पहनती, गिरजे में सबसे पहले क्रास के पास पहुंचती, ज़ोर से और खूब जल्दी जल्दी बोलती, रोज सुबह बच्चों से अपना हाथ चुमवाती और रात को आशीर्वाद देकर उन्हें सुलाती। थोड़े में यह कि जीवन सुख से बीत रहा था। जेनरल का बेटा होने के नाते, अपने भाई पावेल की भाति, निकोलाई पेत्रोविच को भी फ़ौज में भेजने का निश्चय किया गया था, हालांकि साहस से उसका दूर का भी वास्ता नही था, यहां तक कि लोग उसे दब्बू और कायर कहते थे। लेकिन ठीक उसी दिन जबकि उसे फ़ौजी कमीशन मिलने की खबर आई, उसने अपनी टाग तोड़ डाली, दो महीने तक चारपाई को सेता रहा और अच्छा होने पर भी, जीवन भर के लिए, हल्का-सा लंगड़ापन उसके पांव में रह गया। तंग आकर पिता ने उसे फ़ौजी बनाने की उम्मीद छोड़ दी और उसे सिविल सर्विस में धकेलने का बीड़ा उठाया। अठारह वर्ष का होते ही उसे पीतर्सबर्ग ले जाकर विश्वविद्यालय में भर्ती करा दिया। उसका भाई पावेल, लगभग इसी समय, गारद-सेना का अफसर नियुक्त हुआ। दोनों युवक, अपने मामा इल्या कोल्याज़िन की दूर की निगरानी में, जो एक बड़ा अफ़सर था, एक साथ रहने लगे। लड़कों का वहां बन्दोबस्त कर पिता अपने डिवीजन और पत्नी के पास लौट आए। बीच बीच में, खाकी कागज़ के तावों में, खूब बड़े बड़े अक्षरो और क्लर्को-जैसी लिखावट में, अपने लड़कों के नाम वह खरीते भेजते जिनके अन्त में–बहुत ही सजावट और शान के साथ–वह अपना नाम टांकते: "प्योत्र किरसानोव, मेजर जेनरल"। १८३५ मे निकोलाई पेत्रोविच ने विश्वविद्यालय से अपनी डिग्री प्राप्त की। उसी साल, एक दुर्भाग्यपूर्ण मुआइने के फलस्वरूप, जेनरल किरसानोव को अपनी नौकरी से अवकाश

लेना पड़ा और अपनी पत्नी के साथ वह भी सन्त-पीतर्सबर्ग चले आए। तव्रीचेस्की उद्यान के पास उन्होंने मकान लिया और एक इंग्लिश क्लब के वह सदस्य बन गए। लेकिन तभी, अचानक, पक्षाघात का शिकार हो वह इस दुनिया से चल बसे। इसके शीघ्र बाद ही अगाफोक्लेया कुज़्मीनिश्ना ने भी उनका अनुसरण किया। राजधानी में एकाकी और सूने जीवन को वह बरदाश्त न कर सकी, विरक्त जीवन की भयानकता नें उसकी कमर तोड दी। इस बीच निकोलाई पेत्रोविच, अपने माता-पिता के जीवन-काल में ही, अपने भूतपूर्व मकान-मालिक तथा सरकारी अफ़सर प्रेपोलोवेन्स्की की लड़की के प्रेम में फंस गया। इससे उनके हृदय को काफ़ी चोट पहुंची। वह एक सुन्दर और तथाकथित अग्रगामी विचारों की लड़की थी—पत्रों में प्रकाशित ज्ञान-विज्ञान सम्बंधी भारी-भरकम लेख पढ़ा करती थी। मातम की अवधि पूरी होते ही निकोलाई ने उससे विवाह कर लिया, प्रतिपालन मंत्रालय की उस नौकरी को उसनें छोड़ दिया जिसे अपने पिता के प्रभाव से उसने प्राप्त किया था, और अपनी माशा के साथ लोकोत्तर आनन्द में रम गया। पहले उसनें जंगल-विद्या-भवन के निकट एक छोटे से बंगले में अपना मधु-स्वर्ग बसाया, फिर नगर में एक छोटा-सा सुन्दर फ़्लैट लिया जिसका ज़ीना खूब साफ़-सुथरा और ड्राइंग-रूम खूब शीतल था। इसके बाद उसने देहात की ओर रुख किया और स्थायी रूप से वहीं बस गया। यहां, कुछ ही दिन बाद, उसके लड़के आरकादी ने जन्म लिया। युवा दम्पति के दिन बहुत ही सुख से बीत रहे थे। न कोई विघ्न था, न बाधा। दोनों, क़रीब क़रीब, एक-दूसरे के साथ इस तरह जुड़े थे कि कभी अलग न होते—वे एक साथ पढ़ते, एक साथ पियानो बजाते और साथ साथ गाते। वह फुलवाड़ी को सींचती-पोसती, मुर्ग़ीख़ानें की देख-भाल करती। पति जब-तब शिकार के लिए जाते और जागीर के मामलों को सुलझाते।

सुख के इसी उतार-चढ़ाव विहीन वातावरण में आरकादी अनवरत बढ़ और बड़ा हो रहा था। दस वर्ष यों ही सपने की भांति गुज़र गए। सन् १८४७ में किरसानोव की पत्नी चल बसी। इस आघात ने उन्हें बेदम कर दिया। कुछ ही सप्ताह के भीतर उनके बाल सफ़ेद हो गए। जी को बहलाने के लिए वह विदेश जानेवाले ही थे कि सन् १८४८ बीच में आ गया ... उन्हे फिर अपने देहात लौटना पड़ा और बहुत अधिक लम्बी अवधि तक निष्क्रिय रहने के बाद अपनी जागीर का सुधार करने का काम उन्होंने अपने हाथों में उठाया। १८५५ में अपने बेटे को विश्वविद्यालय में भर्ती कराने वह पीतर्सबर्ग गए और वहां तीन जाड़े उसके साथ बिताए। वह कभी बाहर न निकलते, सदैव आरकादी के युवा मित्रों से जान-पहचान बढ़ाने का प्रयत्न करते। पिछले जाड़ों में वह उसके पास नही जा सके और इसी लिए, सन् १८५६ के मई के महीने में, हम उन्हें अपने लड़के की प्रतीक्षा करते देखते हैं। उनके बाल अब एकदम पक चुके हैं, काया भी स्थूल हो गई है और कंधे कुछ झुक आए हैं। लड़का अपनी डिग्री लेकर घर लौट रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कभी वह अपनी डिग्री लेकर लौटे थे।

नौकर, अदब के खयाल से या शायद इसलिए कि अपने मालिक की नजरों से वह बचना चाहता था, फाटक की ओर खिसक गया और वहां पहुंचकर उसने अपना पाइप सुलगाया। निकोलाई पेत्रोविच सिर नीचा किए जीर्ण-शीर्ण पैड़ियों की ओर ताक रहे थे। मुर्गी का एक अतिपुष्ट चूज़ा, अपने पीले पंजों से जोरों की आवाज़ करता, पोर्च की पैड़ियों को नाप रहा था। मुडेर पर, बहुत ही चुपचाप, एक मैली-कुचैली बिल्ली बैठी थी और चूज़े की ओर वैर भाव से ताक रही थी। सूरज आग उगल रहा था और गलियारे की धुंधली परछाइयों में से राई की गर्म रोटियों की महक आ रही थी। निकोलाई पेत्रोविच तन्मयता में खो गए।

"मेरा लड़का ... विश्वविद्यालय का स्नातक ... मेरा आरकाशा ..." हेर-फेर कर यही बात उनके दिमाग में चक्कर लगा रही थी। उन्होंने प्रयत्न किया कि कुछ और सोचें, लेकिन अदबदाकर फिर उन्ही विचारो की ओर लौट आते। उन्होने अपनी मृत पत्नी की याद को ताजा किया ... "काश कि वह आज का दिन देखने के लिए जीवित रहती," उदास भाव से उन्होने फिर उसास छोड़ी।

एक मोटा-ताजा कबूतर उड़कर सड़क पर उतरा और पानी पीने के लिए कुवें के निकट एक गढ़े की ओर बढ़ चला। निकोलाई पेत्रोविच इस दृश्य को देखने मे डूबे थे। तभी उन्हे निकट आती गाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनाई दी ...

"मालूम होता है कि वे आ रहे हैं, मालिक!" फाटक की ओट में से प्रकट होते हुए नौकर ने कहा।

निकोलाई पेत्रोविच उछलकर खड़े हो गए और सड़क की ओर उन्होंने नजर डाली। एक तरन्तास आती दिखाई दी जिसमें डाक के तीन घोड़े जुते थे। फिर विश्वविद्यालय की टोपी के नीले फ़ीते की झलक दिखाई दी और प्रिय चेहरे की परिचित रेखाएं उभरने लगी ...

"आरकाशा! आरकाशा!" अपनी बांहों को हिलाते और चिल्लाते किरसानोव दौड़कर आगे बढ़ चले ... कुछ ही क्षण बाद उनके होंठ युवा स्नातक के दाढ़ी-विहीन, धूल-धूसरित, तपे ताम्बे-से गालों का चुम्बन कर रहे थे।

२

"ओह पिताजी," अपन पिता के दुलार के जवाब में प्रसन्नता से हुमकते हुए आरकादी ने सफ़र से कुछ खसखसी, किन्तु किशोर-सुलभ और ताज़गी-भरी आवाज़ में, कहा, "मुझे ज़रा धूल तो झाड़ लेने दीजिए। देखिए न, मैंने आपको भी कितना गंदा बना दिया है।"

"ठीक है, ठीक है," सुखद मुसकान के साथ निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और अपने तथा अपने लड़के के कोट के कालर से धूल को झटकाते और एक डग पीछ हट उसे देखते हुए बोले, "जरा देखें तो, कैसा लग रहा है तू!" फिर उतावली से सराय की ओर बढ़ चले, बराबर यह कहते हुए, "इधर भाई, इधर। जल्दी ही हमें घर भी पहुंचना है।"

निकोलाई पेत्रोविच अपने पुत्र से भी अधिक विह्वल हो उठे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वह सकपका और घबरा गए हों। आरकादी ने उन्हें टोका।

"पिता," उसने कहा, "यह देखो, जरा इनसे भी तो मिल लो। यह हैं मेरे अच्छे मित्र बजारोव। अपने पत्रों में अक्सर इन्हीं का मै ज़िक्र किया करता था। यह इनकी कृपा है जो इन्होने फिलहाल हमारे मेहमान होना स्वीकार किया है।"

निकोलाई पेत्रोविच झट मुड़े और गाड़ी से अभी-अभी उतरकर वाहर आए लम्बे कद के एक आदमी के निकट पहुंचे जो फुंदनेदार सफ़री कोट पहने था। उसके लाल हाथ को—जिसमें वह दस्ताने नहीं पहने था और जिसे वह तुरत आगे नहीं बढ़ा सका—अपने हाथ में लेकर बड़ी हार्दिकता से उन्होंने दबाया।

"हार्दिक खुशी हुई आपसे मिलकर," उन्होंने कहा, "बड़ी कृपा की जो यहां आए। मैं कृतज्ञ हूं। आशा है ... भला क्या नाम है आपका—अपना पूरा नाम बताइएगा।"

"येवगेनी वसीलियेविच," अपने कोट का कालर उलटते हुए, अलस किन्तु परुष आवाज़ में, बज़ारोव ने कहा। निक़ोलाई पेत्रोविच को अब उसका पूरा चेहरा दिखाई दिया। लम्बा और दुबला। चौड़ा ललाट। नाक ऊपर से चौड़ी और सिरे पर पतली। थोड़ा हरापन लिए बड़ी बड़ी

ग्रांखें। नीचे को झुके हुए रेतीले गलमुच्छे। स्थिर मुसकान से दीप्त चेहरा, आत्म-विश्वास और प्रखर बुद्धि की झलक लिए।

"हा तो प्रिय येवगेनी वसीलियेविच," निकोलाई पेत्रोविच कह रहा था, "मुझे उम्मीद है कि हम लोगों के साथ तुम्हारा जी नही उचटेगा।"

बजारोव के होठ कुछ हिलकर रह गए। उसने जवाब में कुछ नही कहा। अपनी टोपी को थोड़ा-सा उठाया, और बस। भूरे रंग के लम्बे और घने बाल उसकी लम्बी-चौड़ी खोपड़ी के ऊबड़-खाबड़पन को छिपाने में असमर्थ थे।

"क्यों, तुम्हारी क्या राय है, आरकादी ?" अपने लड़के की ओर मुड़ते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया। "घोड़ों को जोतवाकर अभी सीधे ही चले चलें या कुछ देर सुस्ताना चाहोगे ?"

"घोड़े जोतवा लो। घर चलकर ही दम लेंगे।"

"बहुत ठीक, बहुत ठीक," पिता ने हामी भरी, "अरे ओ प्योत्र, कहां मर गया ? ज़रा फुर्ती से काम लो, मेरे भाई! जल्दी करो।"

प्योत्र ने—आखिर नये नमूने का नौकर तो वह था ही—छोटे मालिक का हाथ चूमकर नही, बल्कि दूर से ही केवल सिर झुकाकर, अभिवादन किया था। मालिक का आदेश सुनकर वह एक बार फिर फाटक के पार ओझल हो गया।

सराय-मालिक की बीवी इस बीच लोहे की डोलची में पानी ले आई थी और आरकादी अपना गला तर कर रहा था। बज़ारोव अपना पाइप सुलगाकर गाड़ीवान के पास पहुंच गया था जो घोड़ों की जोत उतार रहा था।

"मै गाड़ी ले आया था," निकोलाई पेत्रोविच ने व्यग्र भाव से कहा। "तुम्हारी तरन्तास के लिए भी तीन सुस्ताये हुये घोड़ों का प्रबंध हो जाएगा। लेकिन मेरी गाड़ी में केवल दो के बैठने की जगह है। कही ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे मित्र ..."

"वह तरन्तास में चला चलेगा," दबे हुए स्वर में आरकादी ने बीच में ही कहा। "उसके साथ इतना तकल्लुफ़ बरतने की कोई आवश्यकता नही। वह बहुत ही बढ़िया आदमी है। एकदम सरल... तुम्हें खुद पता चल जाएगा।"

निकोलाई पेत्रोविच का कोचवान घोड़े ले आया।

"हां तो अब ज़रा चेतन हो जाओ, लम्ब-दाढ़ी!" बजारोव ने अपनी भाड़ा-गाड़ी के कोचवान से कहा।

"कुछ सुना मित्या?" गाड़ीवान के साथी ने जो भेड़ की खाल के अपने कोट की जेबों में हाथ खोंसे पास ही खड़ा था चिल्लाकर कहा। "ज़रा देख तो इन साहब ने क्या नाम रखा है तेरा,—लम्ब-दाढ़ी। सच, बहुत ही ठीक नाम है!"

मित्या ने केवल सिर हिलाया और गर्म हुए बम पर से घोड़े की रास खींची।

"हां तो अब तेज़ी से लपक चलो," निकोलाई पेत्रोविच न चिल्लाकर कहा। "देखें, तुम में से कौन कितने इनाम का हक़दार होता है!"

देखते न देखते घोड़े जुत गए। पिता और पुत्र गाड़ी में सवार हुए। प्योत्र बोक्स पर जा बैठा। बज़ारोव लपककर तरन्तास में सवार हुआ और चमड़े की गुदगुदी गद्दी में धंस गया। दोनों गाड़ियां चल पड़ीं।

"हां तो तुम आ गए," कभी आरकादी के कंधों और कभी उसके घुटनों का स्पर्श करते हुए निकोलाई पेत्रोविच कह रहे थे, "विश्वविद्यालय की डिग्री से लैस, आखिर तुम अपने घर आ गए!"

"चाचा कैसे हैं? अच्छी तरह तो है न?" आरकादी ने पूछा। बावजूद इसके कि उसका हृदय एकदम सच्ची – बालको जैसी – खुशी से छलछला रहा था, वह बातचीत के सिलसिले को भावुकता से मुक्त, यथार्थ चीज़ों की ओर, मोड़ने के लिए उत्सुक था।

"अच्छी तरह है। तुमसे मिलने वह भी मेरे साथ आना चाहते थे, लेकिन फिर किसी वजह से इरादा बदल दिया।"

"क्या तुम्हें बहुत राह देखनी पड़ी?" आरकादी ने पूछा।

"ओह, और कुछ नही तो क़रीब पांच घंटे तो हो ही गए होंगे!"

"ओह मेरे दद्दा, तुम कितने अच्छे हो!"

अनायास ही आरकादी अपने पिता की ओर मुड़ा और हार्दिकता के साथ गालों पर उन्हें चुम्मा दिया। निकोलाई पेत्रोविच का चेहरा गुलाबी हंसी से खिल गया।

"यह देखो, कितना शानदार घोड़ा मैंने तुम्हारे लिए लिया है," उन्होंने कहा। "देखकर खुश हो जाओगे। और तुम्हारे कमरे में मैंने नयी अबरी चढ़वा दी है।"

"और बजारोव? उसके लिए भी तो कमरा चाहिए न?"

"उसे भी मिल जाएगा। चिन्ता न करो।"

"दद्दा, उसका पूरा ख़याल रखना। मैं कह नहीं सकता कि उसकी मित्रता को मैं कितना अधिक मूल्यवान समझता हूं।"

"क्या तुम्हारी उससे पुरानी जान-पहचान है?"

"नहीं, ऐसी बहुत पुरानी तो नहीं।"

"यही मैं भी सोचता था। पिछले जाड़ो में जब मै तुम्हारे पास गया था तो उसे देखने का मौक़ा नही मिला। उसने कौन-सा विषय लिया है?"

"पदार्थ-विज्ञान। यों वह हरफ़न मौला है। उसका इरादा अगले साल डाक्टर की डिग्री लेने का है।"

"तो यह कहो कि वह चिकित्सा-विज्ञान का अध्ययन कर रहा है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और यह कहकर वह चुप हो गए। इसके बाद, तुरत ही, अपने हाथ से आगे दिखाते हुए बोले, "उधर देखो प्योत्र, ये हमारे ही किसान हैं न?"

प्योत्र ने उस दिशा में देखा जिधर मालिक ने इशारा किया था। संकरी देहाती गली में से अनेक गाड़ियां हचकोले खाती लपकी जा रही थी। बेलगाम घोड़े उन्हें खींच रहे थे। हर गाड़ी में एक, या अधिक से अधिक दो, किसान बैठे थे। भेड़ की खाल के अपने कोटों के पल्ले उन्होंने खोल रखे थे।

"हां मालिक," प्योत्र ने जवाब दिया।

"ये कहां जा रहे हैं? नगर की ओर?"

"ऐसा ही मालूम होता है। बहुत सम्भव है, दारूघर जा रहे हों!" प्योत्र ने भौंह चढ़ाते और कोचवान की ओर झुकते हुए कहा, मानो उसे भी वह साक्षी बनने के लिए उसका रहा हो। लेकिन वह हिला तक नहीं। वह पुरानी छाप का आदमी था और नये विचारों को अपने से दूर ही रखता था।

"इस साल इन किसानों ने बुरी तरह तंग कर डाला है," अपने पुत्र की ओर मुड़ते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "अपना लगान तक नहीं देते। न उन्हें उठाए बनता है, न रखते!"

"क्या तुम अपने खेत-मजूरों से सन्तुष्ट हो?"

"हां," निकोलाई पेत्रोविच ने बुदबुदाते हुए कहा। "परेशानी यही है कि उन्हें भी भीतर ही भीतर गड़बड़ाया जा रहा है। इतने दिन हो गए, लेकिन ढंग से काम में जुटने की उन्हें आदत नहीं पड़ी। जोत ख़राब कर देते हैं। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उन्होने जोताई बुरी नही की। लगता है, अन्त में सब ठीक हो जाएगा। लेकिन खेती-बारी में तुम्हारी भला अब क्या दिलचस्पी हो सकती है? क्यों, ठीक है न?"

"अपने यहां कोई सायादार जगह नहीं है," पिता के आख़िरी प्रश्न का कोई जवाब न दे आरकादी नें कहा। "यह बात बुरी तरह अखरती है।"

"उत्तर की ओर, बाल्कनी के ऊपर, मैंनें एक बड़ा-सा सायबान तनवा दिया है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "अब हम खुले में भोजन कर सकते हैं।"

"यह तो कुछ ज़रूरत से ज़्यादा बंगलेनुमा हो गया... लेकिन कोई हर्ज नही। ओह, यहां की हवा कितनी प्यारी है! कितनी भीनी सुगंध है! सच, यहां जैसी महक कहीं ढूढे नहीं मिलेगी। और यहां का आकाश..."

आरकादी एकाएक रुक गया, नज़र बचाकर उसने पीछे की ओर देखा, और इसके बाद और कुछ नही बोला।

"बेशक," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "आख़िर तुमने यहां जन्म लिया है न! यहां की हर चीज तुम्हें अद्‌भुत नहीं मालूम होगी तो और किसे मालूम होगी..."

"क्या सचमुच? नहीं दद्दा, जन्म लेने या न लेने से कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

"फिर भी..."

"नहीं, इससे कतई अन्तर नहीं पड़ता।"

निकोलाई पेत्रोविच ने कनखियों से अपने पुत्र की ओर देखा। इस बीच गाड़ी आधा मील निकल गई थी। दोनों में से किसी ने कुछ नही कहा।

"मुझे याद नही पड़ता कि मैंने तुम्हें लिखा था या नही," निकोलाई पेत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया, "कि तुम्हारी बूढ़ी आया येगोरोव्ना, अब इस दुनिया में नहीं रही।"

"अरे? बेचारी बुढ़िया! लेकिन प्रोकोफ़िच तो अभी ज़िन्दा है न?"

"हां, और बिल्कुल वैसा ही—ज़रा भी नहीं बदला। अब भी वैसे ही झींकता रहता है। सच पूछो तो मारिनो में तुम्हें ऐसे कोई ख़ास परिवर्तन नज़र नहीं आयेंगे।"

"तुम्हारा कारिन्दा तो अभी भी वही है न?"

"बस, एक यही तब्दीली मैंने की है। मैंने निश्चय किया कि जागीर में काम करनेवाले अपने उन्मुक्त बन्धक-दासों में से किसी को भी मैं अपनी नौकरी में नहीं रखूंगा, या कम से कम, उनमें से किसी को भी ज़िम्मेदारी का काम नही सौंपूंगा।" (आरकादी ने प्योत्र की ओर इशारा किया) "Il est libre, en effet,"* निकोलाई पेत्रोविच ने दबी आवाज़ में कहा, "लेकिन यह तो केवल मेरा टहलुवा है। मेरा नया कारिन्दा नगर से आया है। अपने काम का जानकार मालूम होता है। ढाई सौ रूबल सालाना मैं उसे दे रहा हूं। लेकिन," हाथ से अपने माथे और भौंहों को खरोंचते हुए—भीतर परेशानी अनुभव होने पर सदा वह ऐसा ही करते थे—निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "जैसा कि मैंने अभी तुम्हें

---

*बेशक यह उन्मुक्त है। (फ़्रेंच) —सं०

बताया, मारिनो में तुम्हें कोई खास परिवर्तन नज़र नहीं आयेंगे... इसे तुम एकदम सच ही न समझ लेना। सो मैं तुम्हें पहले से ही चेताए..."

एक क्षण के लिए वह अचकचाए, फिर फ़्रेंच भाषा में कहना शुरू किया :

"नैतिकता के कट्टर पुजारी को मेरी साफ़गोई बेजा मालूम हो सकती है। लेकिन, सर्वप्रथम तो यह कि चीज़ों को छिपाकर नहीं रखा जा सकता। दूसरे, तुम जानते ही हो कि पिता-पुत्र के सम्बंधों के बारे में मेरे कुछ अपने विचार हैं। फिर भी, मुझसे असहमति प्रकट करने का पूरा अधिकार है। मेरी इस उम्र में, तुम जानते ही हो ... थोड़े में... यह लड़की जिसके बारे में शायद तुम सुन भी चुके हो..."

"फ़ेनिचका ?" आरकादी ने बेमन से पूछा।

निकोलाई पेत्रोविच के चेहरे पर लाली दौड़ गई।

"अरे नहीं! उसका नाम इतने जोर से न लो... हां तो वही... अब मेरे साथ रह रही है। उसे मैंने घर में ही जगह दे दी है... दो छोटे कमरे थे, उसे दे दिए। लेकिन, कहने की आवश्यकता नहीं, इस सब में उलट-फेर किया जा सकता है।"

"नहीं दद्दा, नहीं। इसकी भला क्या ज़रूरत है ?"

"तुम्हारा मित्र भी तो हमारे साथ ठहरेगा न... सो, यह कुछ अटपटा मालूम होगा अगर..."

"जहां तक बज़ारोव का सम्बंध है, उसके बारे में चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। वह इन सब चीज़ों से ऊपर है।"

"लेकिन तुम भी तो हो," निकोलाई पेत्रोविच ने कहना जारी रखा। "छोटा बाजू मनहूस-सा है। यही उसमें सबसे बड़ी ख़राबी है।"

"अरे नहीं दद्दा," आरकादी ने बीच में ही कहा, "अगर कोई सुने तो क्या कहे। लगता है जैसे माफ़ी मांग रहे हो। कुछ तो लाज करो।"

"सचमुच, मुझे लज्जित होना चाहिए—मैं इसी योग्य हूं," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और उसके चेहरे की लाली और भी अधिक गहरी होती गई।

"बस भी करो, दद्दा! तुम तो सचमुच अण्ड-बण्ड बहकने लगे!" आरकादी ने कहा और उसके चेहरे पर प्रेमपूर्ण मुसकान खेल गई। "भला यह भी कोई अनुताप करने की बात है," उसने मन ही मन सोचा और अपने भले, कोमल-हृदय पिता के प्रति एक तरह की गुप्त श्रेष्ठता से अनुरंजित सहज मुद्रा की भावना से उसका हृदय छलछला उठा। "क्या बकवास है," उसने दोहराया और समझदारी तथा आज़ादी की भावना अनायास ही उसके रोम रोम में हिलोरें लेने लगी।

निकोलाई पेत्रोविच का हाथ माथा खरोच रहा था। उंगलियों के बीच दराज़ों के भीतर से उन्होंने अपने पुत्र पर एक नज़र डाली और उनका हृदय जैसे किसी पैनी चीज़ से बिंध गया... लेकिन उन्होंने तुरत अपने आपको संभाल लिया।

"यह देखा, हमारे खेत यहां से शुरू होते हैं," एक लम्बी ख़ामोशी के बाद उसने कहा।

"और इनसे आगे, अगर मैं भूलता नही तो, हमारा जंगल ही है न?" आरकादी ने पूछा।

"हां। केवल इतना ही कि उसे मैंने बेच दिया है। इस साल यह कट जाएगा।"

"क्यों, उसे बेच क्यो दिया?"

"मुझे पैसों की ज़रूरत थी। इसके अलावा, यह जमीन अब किसानों की होने जा रही है।"

"उन्हीं किसानों की जो तुम्हें लगान तक नहीं देते ?"

"यह तो उनके समझने की बात है। जो हो, लगान तो वे देंगे ही, आज नहीं तो फिर किसी दिन!"

"फिर भी जंगल का जाना कतई अच्छा नहीं मालूम होता," आरकादी ने कहा और अपने चारों ओर नजर डालकर देखने लगा।

देहात के जिस इलाक़े में सें वे गुजर रहे थे, उसे मुश्किल से ही चित्रमय कहा जा सकता है। एक के बाद एक, दूर क्षितिज तक, खेत ही खेत नजर आते थे—लहरों की भांति उठते और फिर गिरते हुए। जहां-तहां जंगलों की पट्टियां और चक्करदार खाइया नज़र आती थी जिनपर नीची विरल झाड़िया उगी थी। लगता था जैसे कैथरीन महान के काल का पुरानी चाल का नक्शा आखों के सामने खुल रहा हो। नीचे पानी से कटे, कगारे निकले तटों से युक्त नदी-नाले, गिरे-ढहे छोटे बांध-टीले, काले पड़े अधनंगे छप्परों वाली चपटी झोंपड़ियों से युक्त छोटी बस्तियां, पेड़ की कटी डालियों से घिरे छोटे छोटे दीन-हीन खलिहान, परित्यक्त खलिहानों के मुह बाए फाटक, गिरजे जिनमें कुछ ईटों के थे, जिनका पलस्तर जहां-तहां से झड़ गया था, बाक़ी लकड़ी के, जिनके सलीबों के घुटने टूटे थे और कब्रें ढह गई थीं— एक एक कर गुजरते जा रहे थे। आरकादी का हृदय भीतर ही भीतर बैठा जा रहा था। दुर्भाग्य से राह में जो भी किसान मिले वे सब चिथड़ों के पुतले मालूम होते थे—बेजान और बुझे हुए। उनके घोड़े भी वैसे ही मरियल थे। बेद वृक्षों की टहनियां टूटी थीं और उनके तनों की छालें उतरी हुई थीं—जीर्ण-शीर्ण भिखारियों की भांति वे सड़क के किनारे खड़े थे। पिचकी-पिचकाई-सी

गाएं, जिनके अंजर-पंजर ढीले हो चुके थे और हाड़ उभर आए थे, खाइयों के किनारे उगी घास में मुंह मार रही थीं। ऐसा मालूम होता था जैसे वे अभी किसी भयानक कसाई के हाथों से छटकर आई हों। वसन्त की उस मनोहारी छटा के बीच, जीर्ण-शीर्ण पशुओं का दयनीय दृश्य ऐसा मालूम होता था जैसे वसन्त को ऊजड़ अन्तहीन शिशिर और उसके प्रचण्ड तूफ़ानों, धुध-पालों और बर्फ़ के बवण्डरों ने ग्रस लिया हो। "नहीं," आरकादी ने सोचा, "यह उपजाऊ प्रदेश नहीं है। सम्पन्नता या उद्यमशीलता की यह हृदय पर ज़रा भी छाप नही छोड़ता। नही, इस तरह नही चलेगा—चल नही सकता। सुधार अनिवार्य है... लेकिन सुधार किए कैसे जाएं, कहां से और कैसे उनका शुरूआत हो?..."

आरकादी यही सब सोच रहा था... वह सोच में डूबा था और उधर वसन्त अपना पूरा उभार दिखा रहा था। उसके चारों ओर वसन्त की सुनहरी आभा तथा हरियाली की छटा छाई थी। पेड़, झाड़ियां, घास—हर चीज़ में एक चमक, जीवन का स्पन्दन दिखाई पड़ता था। सुखद मृदु वायु की कोमल सरसराहट सबमें व्याप्त थी। हर कही लवे पक्षी चहचहा रहे थे। लगता था जैसे गूंजदार संगीत की वेगवती निर्झरियां फूट रही हों। निचली चरागाहों के ऊपर पंख फड़फड़ाते या पहाड़ियों के ऊपर निःशब्द उड़ते लैपविंग पक्षियों की विलाप-ध्वनि वायु को बींध रही थी। वसन्त कालीन अन्न की अधपकी फ़सलों की कोमल हरियाली पर अपनी काली छाया डालते कौवे भी पीछे नहीं थ। राई के पके खेतों में वे डुबकी लगाते और लहराती हुई बालों के बीच केवल उनके सिर जब-तब उतराते हुए नज़र आते।

आरकादी देर तक इस दृश्य को देखता रहा, देखते देखते उसका सोच-विचार—उसके चिन्तन की रेखाएं—धुंधली पड़ती गईं और अन्त

में बिल्कुल ही विलीन हो गई... उसने अपना कोट उतार डाला और अपने पिता की ओर कुछ इतनी मोहक बालसुलभ नजर मे देखा कि पिता से न रहा गया—उन्होंने फिर उसे अपने दुलार में समेट लिया।

"बस, अब अधिक दूर नही है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "बस, इस पहाड़ी के निकट पहुंचते न पहुंचते घर दिखाई देने लगेगा। देखना, हम दोनो मिलकर किस तरह जीवन को अपने मांचे में ढालते हैं। अगर तुम्हारा जी न ऊबे तो खेती-बारी के काम में मेरा हाथ बंटाना। मित्र की भांति हम दोनों रहें, एक-दूसरे मे घनिष्ठता प्राप्त करें। क्यों, ठीक है न?"

"बेशक," आरकादी ने कहा। "ओह, कितना सुहावना मौसम है आज!"

"तुम आए हो न, इसलिए। वसन्त, अपने पूरे निखार के साथ, तुम्हारा स्वागत कर रहा है। जो हो, मैं तो पुश्किन की बात से सहमत हूं। तुम्हें याद है न 'येवगेनी ओनेगिन' की वे पंक्तियां:

"वसन्त! प्रेम और प्यार का मौसम!
वसन्त, तुम्हारा आगमन
मुझे कितना उदास बना देता है,
कितना..."

"आरकादी!" सहसा तरन्तास में से बज़ारोव की आवाज आई। "भई, ज़रा दियासलाई तो भेजो। पाइप सुलगाने के लिए यहां मेरे पास कुछ नहीं है।"

निकोलाई पेत्रोविच का कविता-पाठ बीच में ही रुक गया और आरकादी ने, जिसने अचरज लेकिन कुछ सहानुभूति से पुश्किन की पंक्तियां सुननी शुरू की थी, तुरन्त अपनी जेब में से दियासलाई की चांदी की डिबिया निकाली और प्योत्र के हाथ उसे बज़ारोव के पास भेज दिया।

"तुम्हें चुरुट तो नहीं चाहिए?" बजारोव ने फिर चिल्लाकर पूछा।

" अच्छा अच्छा, भेज दो," आरकादी ने जवाब दिया।

दियासलाई की डिबिया और एक काला-सा मोटा चुरुट लिए हुए प्योत्र लौट आया। आरकादी ने उसे सुलगा लिया। कड़े तम्बाकू की तेज और तीखी गंध उसके इर्द-गिर्द फैल गई, यहां तक कि निकोलाई पेत्रोविच को, जिसने अपने जीवन में कभी तम्बाकू नही पिया था, अपनी नाक फेर लेनी पड़ी। और यह उसने बहुत ही अप्रकट रूप में किया, जिससे उसके पुत्र के हृदय को कोई ठेस न पहुंचे।

पंद्रह मिनट बाद दोनों गाड़ियां लकड़ी के एक नये घर की पैड़ियों के सामने जा लगी। घर भूरे रंग मे रंगा था और लोहे की लाल चद्दरों की उसकी छत थी। यही मारिनो था। इसे 'नव कुटीर' या किसानों के शब्दों में 'ऊजड़ फार्म' भी कहा जाता था।

४

मालिकों का अभिनन्दन करने के लिए पोर्च में बन्धक-दासों की कोई भीड़ उमड़कर नही आई। ले-देकर बारह वर्ष की एक छोटी लड़की और उसके पीछे एक नौजवान प्रकट हुआ जो शक्ल-सूरत में प्योत्र से अत्यधिक मिलता था और सुरमई रंग की जाकेट पहने था जिसमें सफ़ेद ज़िरहबख़्तरी बटन टंके थे। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव का नौकर था। उसने चुपचाप गाड़ी का दरवाज़ा और तरन्तास के पर्दे के बन्द खोल दिए। अपने लड़के और बजारोव के साथ निकोलाई पेत्रोविच ने एक अंधेरे, क़रीब क़रीब एकदम सूने, हॉल में प्रवेश किया। हॉल के दरवाज़े में से उन्हें एक युवती स्त्री के

चेहरे की क्षणिक झलक दिखाई दी। इसके बाद वे दीवानखाने में पहुंचे जो नवीनतम ढंग के साज़-सामान से लैस था।

"हां तो यह लो, हम अब अपने घर आ गए," अपनी टोपी उतारते और बालों को झटककर पीछे फेंकते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "और अब सबसे मुख्य बात यह है कि पेट में कुछ डाल-कर आराम कर लिया जाए।"

"ख़याल तो बुरा नही है," सोफ़े पर पसरते और अपने बदन को सीधा करते हुए बज़ारोव ने कहा, "ज़रूर कुछ खा लिया जाए।"

"ठीक है। भोजन–अच्छा तो भोजन ही कर लिया जाए," निकोलाई पेत्रोविच ने, बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के, अपना पांव पटकते हुए कहा। "और यह देखो, प्रोकोफ़िच भी आ गया। इस वक़्त ठीक इसी की ज़रूरत भी थी।"

पीतल का बटन लगा अबाबील की दुमनुमा कत्थई कोट पहने और गले में गुलाबी रूमाल बांधे क़रीब साठ वर्ष के एक दुबले-पतले, सांवले और सफ़ेद बालोंवाले आदमी ने प्रवेश किया। उसने खीसें निपोरीं, आरकादी के पास पहुंच उसका हाथ चूमा और, मेहमान के सामने दोहरा होने के बाद, उलटे पांव दरवाज़े पर लौटा और कमर के पीछे हाथ बांधकर खड़ा हो गया।

"हां तो प्रोकोफ़िच," निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "देखा तुमने... आख़िर आ ही गया... कहो, कैसा लगा?"

"छोटे सरकार बहुत ही अच्छे मालूम हो रहे हैं, मालिक," कहते हुए वृद्ध ने फिर अपनी खीसें निपोरीं और इसके बाद, तुरत ही, अपनी झाड़ीनुमा पलकों को सिकोड़कर वह गम्भीर हो गया। फिर रोबदार अन्दाज़ में बोला, "कहें तो मेज़ पर खाना लगा दूं, मालिक?"

"हां हां, ज़रूर। लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, शायद तुम पहले अपने कमरे में जाना चाहो?"

"नही, धन्यवाद, इसकी कोई ज़रूरत नही," बज़ारोव बोला, "बस, इनसे मेरा वह पुराना सूटकेस और लबादा मेरे कमरे में पहुंचा देनें के लिए कह दीजिए," अपना मुसाफ़िरी चोगा उतारते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा। प्रोकोफ़िच, इनका कोट ले लो।" (अचकचाकर प्रोकोफ़िच ने अपने दोनों हाथों में उसका लबादा थाम लिया और उसे अधर में उठाए पंजों के बल बाहर चला गया।) "और तुम, आरकादी, तुम क्या कहते हो? कुछेक देर के लिए अपने कमरे में जाओगे न?"

"हां, हाथ-मुह धोना ज़रूरी है," दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए आरकादी ने जवाब दिया। लेकिन तभी काले रंग का अंग्रेजी कोट, फ़ैशनदार नीचा गुलूबंद और चमकदार चमड़े के जूते पहने मझोले कद के एक आदमी ने दीवानखाने में प्रवेश किया। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव थे। आयु क़रीब पैतालीस के तो अवश्य होगी। छोटे छंटे हुए सफ़ेद बाल नयी चांदी की भांति खूब चमक रहे थे। चेहरा कुछ बुझा हुआ किन्तु झुर्रियों से मुक्त था। नाक-नक्श बहुत ही साफ़-सुथरे और उभरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे महीन छेनी से उन्हें गढ़ा गया हो। असाधारण सौन्दर्य के चिन्ह उनमें अभी भी मौजूद थे। निर्मल, स्याह और बादाम जैसी उनकी आंखें ख़ासतौर से आकर्षक थीं। कुलीनता और नफ़ासत में पगे आरकादी के ताऊजी के समूचे आकार-प्रकार में किशोर-सुलभ चपलता और ऊपर– धरती से खूब ऊंचे–उठने की आकांक्षा का वह भाव अभी तक मौजूद था जो, आमतौर से, बीस साल की आयु के बाद मानव का साथ छोड़ देता है।

पावेल पेत्रोविच ने अपनी पतलून की जेब से हाथ निकालकर अपने भतीजे की ओर बढ़ा दिया। बहुत ही नफ़ीस हाथ था वह—गुलाबी नाखूनों से युक्त जो आगे की ओर पतले होते गए थे। कमीज़ के सफ़ेद कड़े कफ़ ने—जिसमें दूधिया रंग का एक बड़ा नगदार बटन लगा था—हाथ के सौन्दर्य में और भी अधिक वृद्धि कर दी। यूरोपीय ढंग से प्रारम्भिक शिष्टाचार—हाथ आदि मिलाने—के बाद रूसी ढंग से उसने चुम्मा लिया, बल्कि कहिए कि इत्र में बसी अपनी मूंछों से तीन बार उसके गालों पर कूची-सी फेरते हुए उसका 'स्वागत' किया।

निकोलाई पेत्रोविच ने बज़ारोव से उनका परिचय कराया। अपने चपल बदन को थोड़ा झुकाकर और होंठों पर धुधली मुसकान के साथ उन्होंने उसका अभिवादन किया, लेकिन अपना हाथ नहीं बढ़ाया, जिसे उन्होंने फिर अपनी पतलून की जेब में डाल लिया।

"मुझे तो आशंका हो चली थी कि आज तुम नहीं आओगे," शिष्टतापूर्वक अपने बदन को झुलाते, कंधों को बिचकाते और अपने शानदार सफ़ेद दांतों को चमकाते हुए मधुर स्वर में उन्होंने कहा। "क्या रास्ते में कोई गड़बड़ हो गई थी?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं हुई," आरकादी ने जवाब दिया। "हमें थोड़ा रुक जाना पड़ा, बस। लेकिन फिलहाल तो पेट में चूहे कूद रहे हैं। प्रोकोफ़िच से कहो कि ज़रा जल्दी करे, मैं अभी लौट आऊंगा, दद्दा।"

"ज़रा ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं," सहसा सोफ़े से उठते हुए बज़ारोव ने चिल्लाकर कहा। दोनों युवक एक साथ चल दिए।

"यह कौन है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"आरकादी का मित्र। आरकादी के शब्दों में बहुत ही चतुर जीव।"

"क्या हमारे साथ ही रहेगा?"

"हां।"

"क्या कहते हो—यह भालू हमारे साथ रहेगा?"

"क्यों, हां।"

पावेल पेत्रोविच ने अपनी उंगलियों की नोक से मेज़ को ठकठकाया।

"मेरे ख़याल में आरकादी s'est dégourdi*," उन्होंने कहा, "मुझे खुशी है कि वह घर लौट आया।"

भोजन के समय बातचीत भूले-भटके हुई। ख़ासतौर से बज़ारोव ने बात कम की, खाया अधिक। निकोलाई पेत्रोविच ने, खुद उसी के शब्दों में, अपने किसान-जीवन की छुटपुट घटनाएं सुनाईं, शीघ्र ही चालू होनेवाली सरकारी योजनाओं की चर्चा की, कमेटियों, डेप्युटेशनों और मशीनों से काम लेने की आवश्यकता का ज़िक्र किया। पावेल पेत्रोविच ने खाने को हाथ नही लगाया। वह कमरे में इधर से उधर टहलते रहे। कभी कभी लाल मदिरा का गिलास उठाकर एकाध चुस्की ले लेते। उनके मुह से कोई टिप्पणी या "आह, अहा, हूं:" जैसे उद्गार और भी कम—बिरले ही—निकलते। आरकादी ने सन्त-पीतर्सबर्ग का नया हाल-चाल सुनाया। लेकिन वह बराबर एक हल्की-सी झिझक का अनुभव करता रहा जो आमतौर से उन युवकों को उस समय घेर लेती है जब वे अपने बचपन की देहरी को अभी अभी लांघ उस

---

*अधिक बेतकल्लुफ़ हो गया है। (फ़्रेंच)—सं०

जगह लौटते हैं जहां उन्हें सदा बच्चा ही समझा जाता रहा है। वह शब्दों को खींचकर बोल रहा था। 'दद्दा' सम्बोधन से उसने बचने का प्रयत्न किया, 'पिता' का भी उसने एक बार ही प्रयोग किया—सो भी बुदबुदाकर, स्पष्ट रूप में नहीं। और अतिरंजित 'बहादुरी' का भाव दिखलाते हुए वस्तुत: अपनी इच्छा से भी अधिक उसने मदिरा उंडेली और उसे गले के नीचे उतार गया। प्रोकोफ़िच बराबर उस-पर नजर जमाए था। उसका मुह बराबर चल और फुसफुसा रहा था। भोजन खत्म होते ही सब चल दिए।

"अजीब आदमी हैं तुम्हारे यह ताऊजी," बजारोव ने आरकादी से कहा। वह अब सोने का चोगा पहने था और आरकादी के पलंग की पाटी पर बैठा छोटे-से पाइप से कश ले रहा था। "देहात में भी यह बनाव-सिंगार—है न अद्‌भुत! और उसके नाखून,—ओह, वे तो नुमाइश में रखने लायक़ हैं!"

"बेशक तुम्हें नहीं मालूम," आरकादी ने जवाब दिया, "अपने जमाने में वह समाज के सिरताज थे। किसी दिन उनकी कहानी सुनाऊंगा। बहुत ही जानमार सौन्दर्य था उनका, और स्त्रियां तो उनके पीछे पागल थीं।"

"ओह, यह बात है। तो यह सब उस गुज़रे जमाने की खुरचन है। काश कि यहां भी कोई होती—अपने सिरताज पर न्योछावर होने के लिए। जो हो, कम से कम मुझे तो उन्होंने मंत्रमुग्ध कर ही लिया—लकड़ी की तरह सख्त उनका वह लाजवाब कालर, और एकदम सफ़ाचट ठोड़ी। क्या तुम्हें यह सब हास्यास्पद नहीं मालूम होता, आरकादी निकोलायेविच?"

"सो तो है। लेकिन सच, आदमी बहुत अच्छे हैं।"

"अजायबघर में रखने लायक़! लेकिन तुम्हारे पिता खूब हैं।

हालांकि कविता-पाठ को अगर वह बख़्श दें तो ज्यादा अच्छा हो। और मुझे तो लगता है कि खेती-बारी में भी उनका कोई ख़ास दख़ल नहीं है। जो हो, वह नेक हैं।"

"एकदम हीरा ही समझो!"

"पता नहीं, तुमने उस समय ध्यान दिया या नहीं—लगता था जैसे एकदम अपनापन भूल गए हों?"

आरकादी ने सिर हिलाकर हामी भरी, मानो वह खुद विह्वलता से मुक्त रहा हो।

"इन रोमाण्टिक बूढ़ों का भी जवाब नही," बज़ारोव कहता गया। "अपने स्नायु-तंत्र को ये इतना तानते हैं कि वह चरचरा उठता है ... और, जैसा कि स्वाभाविक है, सन्तुलन गड़बड़ा जाता है। जो हो, अब सोया जाए। मेरे कमरे में अंग्रेजी ढंग का हाथ-मुंह धोने का नल तो है, लेकिन दरवाज़े में खटका नहीं है—वह बंद नहीं किया जा सकता। फिर भी इन चीज़ों को—मेरा मतलब अंग्रेज़ी ढंग के हाथ-मुंह धोने के नल से है—बढ़ावा मिलना चाहिए। ये प्रगति के सूचक हैं।"

बज़ारोव चला गया और आरकादी उल्लास की तरंगों मे डूबने-उतराने लगा। खुद अपने घर में, परिचित बिस्तरे पर और चाव-भरे हाथों से संजोई रजाई के नीचे सोना कितना मधुर मालूम होता है। शायद वे चाव-भरे हाथ—मृदु, कोमल और अनथक हाथ—उसकी प्यारी नर्स के हों। आरकादी को येगोरोवना का ध्यान हो आया, एक उसांस उसके हृदय से निकली, उसे दुआएं दी ... लेकिन अपने लिए उसने न कोई प्रार्थना की, न दुआ।

वह और बज़ारोव, दोनों शीघ्र ही सो गए। लेकिन घर में अन्य लोग भी थे जो काफ़ी देर तक नही सो सके। पुत्र के घर-आगमन ने निकोलाई पेत्रोविच को उद्वेलित कर दिया था। बिस्तरे पर वह गए,

लेकिन बत्ती न बुझाई। सिर को हथेली पर टेके लम्बे ख़यालों में डूब गए। उनके भाई, आधी रात के बाद भी काफ़ी देर तक, अपने अध्ययन कक्ष में अंगीठी के पास एक चौड़ी कुर्सी पर बैठे रहे। अंगीठी के कोयले जल चुके थे और राख की तह से ढके रिस रहे थे। पावेल पेत्रोविच ने कपड़े नही बदले थे, सिवा इसके कि चमकदार जूतों की जगह अब उनके पांवों में लाल रंग के चीनी फ़र्शी सलीपर दिखाई पड़ रहे थे। हाथ मे '[illegible]' का नवीनतम अंक था, लेकिन उसे पढ़ नही रहे थे। आंखें एकटक अंगीठी की जाली पर जमी थीं जिसमें, कभी कभी, एक नीली-सी लपक दिखाई पड़ जाती थी ...कौन जाने, उनका दिमाग़ कहां कहां के चक्कर लगा रहा था। लेकिन वह केवल अतीत में ही नहीं रम रहा था। केवल स्मृतियों में डूबे आदमी से भिन्न उनके चेहरे पर एक घनीभूत और गम्भीर भाव छाया था। और पिछवाड़े के छोटे-से कमरे में, बिना आस्तीन की नीली जाकेट पहने, बड़े-से सन्दूक पर एक युवा स्त्री बैठी थी। उसके काले बालों पर सफ़ेद रूमाल बंधा था। यह फ़ेनिचका थी। कभी वह आहट लेती, कभी ऊंघ जाती, कभी खुले दरवाज़े की ओर नज़र डालती जिसमें से बच्चे का छोटा पलंग दिखाई देता था और सोए हुए बच्चे की सांसों की क्रमबद्ध आवाज़ वह सुन सकती थी।

५

अगली सुबह बज़ारोव उठा और बाहर घूमने निकल गया। तब तक घर में और कोई नहीं जगा था। "ऊंह," अपने चारों ओर के दृश्य को निहारते हुए उसने सोचा, "जगह कोई खास बढ़िया तो नहीं कि देखने के लिए मन ललचे।" किसानों की भूमि की हद्द-बंदी

करते समय एक नयी हवेली बनवाने के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने दस एकड़ की एकदम सपाट परती भूमि अलग निकाल ली थी। घर और उसके इर्द-गिर्द की इमारतें उसने बनवा ली थी, बाग़ लगवा लिया था, एक तालाब और दो कुवें खोदवा लिए थे, लेकिन पौधे ठीक से बढ़ नहीं सके। तालाब में पानी कम था और कुवें खारे निकले। केवल लिलक की झाड़ियां और बबूल ही कुछ दमदार निकले। इन्ही की छाया में कभी कभी चाय-पान या भोजन किया जाता था। कुछ मिनटों में ही बज़ारोव ने बाग़ को छान डाला, मवेशी-घर और अस्तबल का चक्कर लगाया, दो छोटे लड़कों से भेंट की, जिन्हें उसने तुरत अपना मित्र बना लिया और उन्हें लेकर, घर से एक मील के भीतर, मेंढकों का शिकार करने एक छोटे-से दलदली भूखण्ड की ओर निकल गया।

"मेंढकों का आप क्या करेंगे, मालिक?" लड़को में से एक ने पूछा।

"सुनो, मै तुम्हें बताता हूं," बजारोव ने जवाब दिया जो निम्न स्तर के लोगों का विश्वास पाने का नुस्ख़ा जानता था, हालांकि उन्हें ख़ुश करने के लिए वह कभी कोई प्रयत्न नही करता था और लापर्वाही से उनके साथ पेश आता था। "मैं मेंढकों को चीरकर देखूंगा कि उनके भीतर क्या कुछ हो रहा है। और चूंकि हम और तुम मेंढकों के समान ही हैं—सिवा इसके कि हम दो पांवों पर चलते है—इसलिए मुझे यह भी पता चल जाएगा कि हमारे भीतर क्या हो रहा है।"

"यह सब आप क्यों जानना चाहते हैं?"

"इसलिए कि अगर तुम बीमार पड़ जाओ और मुझे तुम्हारा इलाज करना पड़े तो कोई भूलचूक न हो।"

"तो आप डाक्टर हैं, क्यो?"

"हां।"

"वास्का, सुना तुमने, ये कहते है कि हम और तुम मेंढकों के समान है। है न मजे की बात?"

"ना बाबा, मुझे तो मेंढकों से डर लगता हे!" वास्का ने कहा। वह सात साल का लड़का था—नंगे पांव, सुनहरे बाल, खडे कालर का सलेटी कोट पहने हुए।

"क्यों, उनसे डरने की क्या बात है? वे किसी को नही काटते।"

"हा तो मेरे दार्शनिको," बजारोव ने कहा, "अब जरा पानी मे उतर चलो।"

इस बीच निकोलाई पेत्रोविच भी जाग गए और आरकादी से मिलने चल दिए। वह पहले से जागा हुआ था और कपड़े पहन-कर तैयार था। पिता और पुत्र बरामदे पर निकल आये जिसके ऊपर तनौवा तना था। मुडेर के पास, लिलक की घनी टहनियो के बीच, समोवर में पानी खौल रहा था। एक छोटी लडकी आई, वही जो यहां आने पर सबसे पहले उन्हें मिली थी, और कर्णवेधी आवाज में बोली:

"फ़ेदोसिया निकोलायेवना की तबीयत ठीक नहीं है। वह नहीं आ सकतीं। कहा है कि अपनी चाय खुद बना लें, नही तो फिर दुन्याशा को वह भेज दे।"

"ठीक है। हम खुद बना लेगे," निकोलाई पेत्रोविच ने झट से कहा। "क्यों आरकादी, तुम अपनी चाय में क्या लेना पसंद करोगे—नीबू या क्रीम?"

"क्रीम," आरकादी नें जवाब दिया और फिर, कुछ क्षण की चुप्पी के बाद, प्रश्नसूचक अन्दाज़ में बोला: "दद्दा?"

निकोलाई पेत्रोविच ने, कुछ परेशानी का अनुभव करते हुए, सिर उठाकर देखा।

"क्यों, क्या बात है?"

आरकादी ने अपनी आंखें झुका ली।

"अगर मेरा सवाल कुछ अटपटा मालूम हो तो मुझे माफ़ करना, दद्दा," आरकादी ने कहना शुरू किया, "लेकिन कल जिस साफ़गोई का आपने परिचय दिया था, वह मुझे उकसा रही है कि मैं भी उतनी ही साफ़गोई का परिचय दूं .. आप नाराज़ तो न होगे?"

"कहो जो तुम्हारे मन में हो।"

"आपसे साहस पाकर ही मैं यह पूछ रहा हूं ... क्या इसी कारण न फेनिच ... क्या मेरी मौजूदगी की वजह से ही वह चाय डालने के लिए यहां नही आना चाहती?"

निकोलाई पेत्रोविच ने अपना सिर थोड़ा उसकी ओर से फेर लिया।

"शायद," उसने फिलहाल कहा, "हो सकता है कि वह ... शरमाती हो ..."

आरकादी की आंखें तेज़ी से अपने पिता के चेहरे की ओर उठ गई।

"सच पूछो तो उसके लिए शरमाने की कोई बात नही है। सर्व-प्रथम इस सम्बंध में मेरे विचारों को आप जानते ही हैं," (आरकादी रस लेकर बोल रहा था), "और दूसरे, आपके जीवन के तौर-तरीक़ों और आपकी आदतों में दखल देने के लिए मैं किसी भाव पर तैयार नही हूंगा। इसके अलावा मेरा विश्वास है कि आप ग़लत चुनाव नहीं कर सकते। अगर आपने उसे अपने घर में जगह दी है तो मानना होगा कि वह इसके योग्य है। और सबसे बढ़कर यह है कि एक पुत्र अपने पिता का न्यायकर्ता नही हो सकता – ख़ासतौर से मैं, ख़ासतौर से आप जैसे पिता का जिसने कभी भी, किसी रूप में भी, मेरी आज़ादी पर कोई रोक नही लगाई।"

थरथराती आवाज मे आरकादी ने अपनी बात शुरू की थी। उसे एसा लगा जैसे वह उदारता का परिचय दे रहा है। साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि वह अपने पिता को एक तरह का उपदेश-सा दे रहा है। लेकिन अपनी आवाज़ का भी आदमी पर गहरा असर पड़ता है, और आरकादी ने अपने अन्तिम शब्दों का दृढ़ता के साथ – यहा तक कि शान के साथ – उच्चारण किया।

"शुक्रिया, आरकादी, शुक्रिया!" निकोलाई पेत्रोविच ने फुसफुसी आवाज़ में कहा। उनकी उंगलियां अब फिर उनकी भौहों और माथे को खरोंच रही थी, "तुमने जो कहा वह बिल्कुल ठीक है। निश्चय ही अगर लड़की इस योग्य न होती ... यह कोई मेरे उथले मन की तरंग नही है। इस सम्बंध में तुमसे बातें करना बड़ा अटपटा-सा लगता है। लेकिन, तुम समझते ही हो, वह तुमसे लजाती है – खासतौर से इसलिए कि तुम्हारे यहां आने का आज पहला दिन ही है।"

"अगर ऐसा है तो मैं खुद उसके पास जाऊंगा," उदारता के नये उभार के साथ और अपनी कुर्सी से उछलकर खड़े होते हुए आरकादी ने कहा, "मैं उसके सामने यह एकदम साफ़ कर दूगा कि उसे मुझसे लजाने की ज़रा भी जरूरत नही है।"

निकोलाई पेत्रोविच भी उठकर खड़े हो गए।

"आरकादी," उसने कहना शुरू किया, "देखो, उधर न जाना... सच ... असल में ... मुझे पहले ही तुम्हें बता देता चाहिए था कि ..."

लेकिन आरकादी ने अब कुछ नहीं सुना और भागकर बरामदे से चला गया। निकोलाई पेत्रोविच ने आंखों से उसका पीछा किया और फिर कुर्सी में ढह गए। उनकी समझ ने जवाब दे दिया था और उनका हृदय धड़क रहा था ... क्या वह, उस क्षण, यह अनुभव कर सके कि अपने

पुत्र के साथ उनके भावी सम्बंध अनिवार्यत: कितने विचित्र होने जा रहे है? क्या यह बात उनके दिमाग में आई कि आरकादी, इस पचड़े से अलग रहकर, शायद उनके प्रति अधिक सम्मान प्रकट कर सकता है? क्या उन्होंने, ज़रूरत से ज़्यादा कमज़ोरी दिखाने के कारण, अपने आपको कोंचा? यह सब कहना कठिन है। वह इन सभी भावनाओं का अनुभव कर रहे थे, लेकिन केवल सनसनियों के रूप में, सो भी अस्पष्ट और धुंधली। उनका चेहरा अभी भी तमतमाया हुआ था, उनका हृदय अब भी धड़क रहा था।

तभी तेज़ी से आते डगों की आवाज़ सुनाई दी और आरकादी बरामदे में आ गया।

"हम दोनों मे जान-पहचान हो गई, पिता!" आरकादी ने चिल्लाकर कहा। उसके चेहरे पर जैसे मृदु और कृपापूर्ण विजय के भावों की झलक थी। "फ़ेदोसिया निकोलायेवना की तबीयत आज सचमुच ठीक नहीं है। वह कुछ देर बाद आएंगी। लेकिन तुमने यह क्यों नही बताया कि मेरा एक भाई भी है? कल रात ही मै उसे प्यार करता, जैसा कि अब करके आ रहा हूं।"

निकोलाई पेत्रोविच कुछ कहना चाहते थे, उठना चाहते थे, अपनी बांहों को फैलाना चाहते थे। तभी आरकादी लपककर उनके गले से लिपट गया।

"ओहो, अब फिर दुलार हो रहा है?" पीछे से पावेल पेत्रोविच की आवाज़ सुनाई दी।

इस क्षण उनके आ जाने से पिता और पुत्र दोनों को समान रूप से राहत मिली। कभी कभी भावावेश की स्थितियां ऐसी हो जाती है कि उनसे पीछा छुड़ाकर मानव सुख का अनुभव करता है।

"क्या तुम्हें यह अचरज की बात मालूम होती है?" निकोलाई

पेत्रोविच ने खुशी से हुमकते हुए कहा। "न जाने कब से मै आरकादी की प्रतीक्षा कर रहा था .. और जब से यह आया है, इसे जी भर देख तक नही सका हू।"

"नही, मै अचरज जरा भी नही करता," पावेल पेत्रोविच ने कहा। "मै खुद भी इसे दुलराने से कन्नी काटना नही चाहूंगा।"

आरकादी अपने ताऊजी के निकट पहुंचा और इत्र मे बसी उनकी मूछों की सरसराहट का एक बार फिर अपने गालो पर अनुभव किया। पावेल पेत्रोविच मेज पर बैठ गए। वह अंग्रेजी काट का प्रातःकालीन सूट पहने थे। सिर पर एक छोटी फैज टोपी सुशोभित थी। फैज टोपी और लापर्वाही से बंधा एक छोटा गुलूबंद देहाती जीवन की अकृत्रिमता के सूचक थे, लेकिन उनकी कमीज़ का कडा कालर–अब वह रंगीन कालर पहने थे जो सुबह के इस वक्त के लिए उपयुक्त था–उनकी चिकनी सफाचट ठोड़ी को दुर्निवार रूप में ऊंचा ताने था।

"तुम्हारा वह नया मित्र कहां है?" उन्होंने आरकादी से पूछा।

"घूमने चला गया है। आमतौर से वह जल्दी, तड़के ही, उठ जाता है। मुख्य बात यह है कि उसकी ओर ध्यान देने की ज़रूरत नही। तकल्लुफ़ और दिखावे से वह दूर भागता है।"

"यह तो साफ़ ज़ाहिर है," फुरसत के अन्दाज़ से अपनी रोटी पर मक्खन लगाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। "क्या वह काफी दिनों तक रहेगा?"

"यह परिस्थितियों पर निर्भर है। वह अपने पिता के घर जा रहा है। रास्ते में यहां रुक गया।"

"उसके पिता कहां रहते हैं?"

"हमारे इसी ज़िले में, यहां से क़रीब ५० मील दूर। वहां उनकी एक छोटी-मोटी-सी जागीर है। कभी वह फ़ौज में सर्जन थे।"

"ओह, अब याद आया। काफ़ी देर से मै इस उलझन में था कि यह नाम—बजारोव—मैंने कही सुना है। निकोलाई, अगर मै भूलता नही तो हमारे पिता के डिवीजन में एक डाक्टर था। उसका नाम भी बज़ारोव था। क्यों था न ?"

"हां, याद तो पडता है।"

"यक़ीनन। सो वह डाक्टर ही इसका पिता है। हु: !" अपनी मूंछो में ताव देते और अपनी आवाज को खीचते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "और यह पुत्र बज़ारोव—यह खुद क्या है ?"

"बज़ारोव क्या है ?" आरकादी ने कौतुक का भाव झलकाते हुए कहा। "क्या तुम सचमुच जानना चाहते हो कि वह क्या है, ताऊजी ?"

"हा हां, कहो न, भतीजे !"

"वह निहिलिस्ट है—ध्वंसवादी !"

"ऐ, क्या ?" निकोलाई पेत्रोविच के मुह से निकला। और पावेल पेत्रोविच को तो जैसे एकदम सकता मार गया। चाकू की नोक पर मक्खन का लोदा थामे उनका हाथ हवा मे ही स्थिर रह गया।

"वह निहिलिस्ट है," आरकादी ने फिर दोहराया।

"निहिलिस्ट," निकोलाई पेत्रोविच ने स्पष्ट उच्चारण के साथ कहा। "जहां तक मै समझता हूं, यह लैटिन भाषा का शब्द है। निहिल, अर्थात् 'कुछ नही'। तो क्या इसका मतलब ऐसे आदमी से है जो ... किसी चीज में विश्वास नही करता ?"

"कहिए: 'जो किसी चीज का मान नही करता'," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर मक्खन लगाने के काम मे जुट गए।

"जो हर चीज़ को आलोचक की नज़र से देखता है," आरकादी ने कहा।

"यह भी तो वही बात हुई न ?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही। एक ही बात नही है। निहिलिस्ट वह है जो किसी भी अधिकारी का मुह नही जोहता, आस्था के नाम पर किसी भी – चाहे वह कितना ही ऊंचा क्यों न माना जाता हो– सिद्धान्त को नही स्वीकार करता।"

"सो तो ठीक। लेकिन क्या यह कोई अच्छी बात है?" पावेल पेत्रोविच ने टोका।

"यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है, ताऊजी। कुछ लोगो के लिए यह अच्छा हो सकता है, और कुछ के लिए बहुत बुरा।"

"समझा। लेकिन यह मैं साफ़ देखता हूं कि यह हमारा रास्ता नही है। पुराने ढर्रे के हम लोग – हमारा विश्वास है कि बिना सिद्धान्तों के," (उन्होने इस शब्द का फ़्रेंच लहजे में बहुत ही नरमाई के साथ, उच्चारण किया, जबकि आरकादी ने फटाक से और पहले अक्षर पर ज़ोर देते हुए इसका उच्चारण किया था) "तुम्हारे ही शब्दों में कहना हो तो आस्था के साथ स्वीकार किये गये सिद्धान्तों के बिना एक डग भी नहीं हिला जा सकता, या एक सांस तक नहीं ली जा सकती। Vous avez changé tout cela*, खुदा तुम्हें अच्छा स्वास्थ्य और जेनरलशिप प्रदान करे। हम लोगों के लिए इतना ही बहुत है कि अलग खड़े देखते और सुख लेते रहें, मौसिये ला .. भला क्या कहते हैं उन्हें?"

"निहिलिस्ट," आरकादी ने पूरी स्पष्टता के साथ उच्चारण किया।

"हां, ठीक। हमारे ज़माने में हेगेलवादी हुआ करते थे, अब निहिलिस्ट होते हैं। देखना है कि तुम लोग नास्ति में, शून्य में, किस तरह जीवन का ठाठ बांधते हो। लेकिन भैया निकोलाई पेत्रोविच, अब तुम ज़रा घंटी तो बजा दो। मेरे कोको पीने का वक़्त हो गया।"

---

* तुम उलटी गंगा बहा चुके हो। (फ़्रेंच) – सं०

निकोलाई पेत्रोविच ने घंटी बजाते हुए आवाज़ दी : "दुन्याशा!" लेकिन दुन्याशा की जगह खुद फ़ेनिचका बरामदे पर आ मौजूद हुई। युवती स्त्री—क़रीब तेईस वर्ष की आयु। गोरी-चिट्टी, नाजुक सांचे में ढली। काले बाल और काली आंखें। बालकों जैसे भरे-पूरे होंठ और छोटे छोटे नाजुक हाथ। छीट की खूब साफ़-सुथरी पोशाक पहने। गोल-मटोल कंधों पर नीले रंग का नया रूमाल अछुवाया-सा पड़ा हुआ। हाथ मे कोको का एक बड़ा-सा प्याला लिए। प्याला उसने पावेल पेत्रोविच के सामने रख दिया और लाज की पुतली बनी, सुन्दर चेहरे की अपनी कोमल त्वचा को गर्म रक्त के आवेग से गहरा लाल लिए, वहीं खड़ी रह गई। उसने अपनी आंखें झुका लीं, और उंगलियो की कोरों पर हल्के से झुकी, मेज के पास खड़ी हो गई। लगता था जैसे वह इस लाज के मारे गड़ी जा रही हो, कि वह यहां आई क्यों, साथ ही यह भी जैसे वह अनुभव कर रही हो कि उसका अधिकार था इसी लिए वह यहा आई है।

पावेल पेत्रोविच ने आक्रोश से अपनी भौहें चढ़ा ली और निकोलाई पेत्रोविच ने उलझन का अनुभव किया।

"गुडमौर्निंग, फ़ेनिचका," वह बुदबुदाए।

"गुडमौर्निंग," सुस्पष्ट किन्तु स्थिर आवाज़ मे फ़ेनिचका ने कहा और आरकादी की ओर कनखियों से एक नज़र डाली। आरकादी भी मित्र-भाव से मुस्करा दिया। इसके बाद वह चुपचाप लौट गई। उसकी चाल में एक हल्की डगमगाहट थी, लेकिन वह भी भली मालूम हो रही थी।

कुछ क्षणों तक बरामदे में निस्तब्धता छाई रही। पावेल पेत्रोविच ने अपनी कोको की चुस्की ली। फिर सहसा सिर उठाकर मन्द स्वर में कहा :

"यह लीजिए, मिस्टर निहिलिस्ट भी आ रहे है।"

और सचमुच बाग़ मे लम्बे डग भरता, फूलो की क्यारियों को लाघता, बज़ारोव चला आ रहा था। उसका डक-कोट और पतलून दोनों कीचड़ में सने थे। उसके पुराने गोल हैट के कुल्ले के इर्द-गिर्द दलदली सरपत लिपटी हुई थी। दाहिने हाथ मे वह एक छोटा-सा थैला लिए था जिसमे कोई जानदार चीज किलबिला रही थी। वह जल्दी ही बरामदे के पास आ गया और थोडा सिर झुकाकर अभिवादन करते हुए बोला :

"गुडमौर्निंग, सज्जनो। अफसोस कि चाय पर आने मे मुझे देर हो गई। मै अभी आया, जरा इन बंदियो को ठीक-ठिकाने से रख आऊं।"

"क्या है उसमे—जोंकें ?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही, मेढक।"

"क्या तुम उन्हें खाते हो या पालते हो ?"

"अपने प्रयोगों के लिए मै इनका इस्तेमाल करता हूं," बजारोव ने असंलग्न भाव से कहा और भीतर घर में चला गया।

"वह इनकी चीर-फाड़ करेगा," पावेल पेत्रोविच ने कहा। "वह सिद्धान्तों में विश्वास नही करता, मेंढकों में विश्वास करता है।"

आरकादी ने कुछ इस तरह अपने ताऊजी की ओर देखा जैसे उनपर तरस खा रहा हो। निकोलाई पेत्रोविच ने नमालूम-से अन्दाज़ में अपने कंधे बिचकाए। पावेल पेत्रोविच को खुद यह अनुभव करते देर नहीं लगी कि उनका वार ख़ाली गया है। बात बदलते हुए उन्होंने फ़ार्म और नये कारिन्दे का जिक्र छेड़ दिया जिसने हाल ही में उनसे शिकायत की थी कि फ़ोमा—जो किराये पर काम करनेवाले मजूरों में से एक था—"झगड़ालू आसामी" है और क़ाबू से एकदम बाहर हो गया है। "वह पूरा फितरती है," अन्य बातों के अलावा उसने कहा था, "उसने अपने आपको एक बदनाम 'शोहदा' बना रखा है। बहुत ही बुरा अंजाम होगा उसका, मेरी यह बात गांठ बांध लो।"

बज़ारोव लौट आया, मेज़ पर बैठा और जल्दीबाज़ी के साथ चाय
ने लगा। दोनों भाई चुपचाप उसको देखते रहे। उधर आरकादी की
खें, छिपे तौर से, ताऊजी से पिता और पिता से ताऊजी की ओर
क्कर लगाती रही।

"क्या दूर निकल गए थे?" आख़िर निकोलाई पेत्रोविच ने बज़ारोव
पूछा।

"चिनार के झुरमुट के पास यहां एक छोटा-सा दलदल है। मेरी
ाहट पाते ही पांच चाहा पक्षी फुर्र से उड़ गए। तुम्हारे लिए शिकार
ा अच्छा मौका है, आरकादी।"

"क्या तुम्हें शिकार का शौक नही है?"

"नही।"

"सुना है, तुम भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो?"

"हां, भौतिक विज्ञान का, मोटे तौर से समूचे पदार्थ-विज्ञान
का।"

"ग्यूश्लांदरों ने इस क्षेत्र में काफ़ी प्रगति की है।"

"हां, इस विषय में जर्मन हमारे गुरु हैं," बजारोव ने अनमनेपन
से जवाब दिया।

पावेल पेत्रोविच ने जर्मनों के बजाय ग्यूश्लांदरों शब्द का प्रयोग
व्यंग के लिए किया था। लेकिन उसपर किसी का ध्यान नही गया।

"क्या आपकी राय में जर्मन इतने ऊंचे है?" पावेल पेत्रोविच
ने जैसे-तैसे अपनी आवाज को नर्म बनाते हुए पूछा।

उनके हृदय में, भीतर ही भीतर, झुझलाहट ने सिर उठाना
शुरू कर दिया था। बजारोव की निरी असंलग्नता ने उनकी रईसाना

प्रवृत्ति को भड़का दिया था। फ़ौजी जर्राह का यह छोकरा, अदब-लिहाज़ तो दूर, बेमन से और मुंहफट जवाब देता था, और उसके लहजे से गंवारपन की–करीब क़रीब गुस्ताखी पर उतरी–ध्वनि निकलती थी :

"उनके वैज्ञानिक अमली जीव होते है।"

"बस, बस। और मै समझता हूं कि रूसी वैज्ञानिकों के बारे में तुम्हारी राय बहुत अच्छी न होगी। क्यों, ठीक बात है न?"

"है तो ऐसा ही।"

"वाह, कितनी सराहनीय निःस्वार्थता है!" अपने बदन को सीधा तानते और सिर को पीछे की ओर फेंकते हुए पावेल पेत्रोविच ने पलटकर जवाब दिया। "लेकिन आरकादी निकोलायेविच हमें अभी अभी बता रहे थे कि आप किसी अधिकारी को–चाहे जो भी वह हो–नहीं मानते और उनका विश्वास नहीं करते।"

"मानने और विश्वास करने की इसमें क्या बात है, मैं क्यों उन्हें मानूं, क्यों किसी पर विश्वास करूं? जब कोई समझ की बात करता है तो मै सहमत हो जाता हूं। सीधी-सी बात है।"

"क्या जर्मन सब समझ की बात करते है?" पावेल पेत्रोविच ने बुदबुदाकर कहा और उनके चेहरे पर एक ऐसा निर्लिप्त और निस्संगता का भाव छा गया, मानो उनके विचार गूलर के फूल बटोरने चले गए हों।

"नहीं, सब नही करते," बजारोव ने जमुहाई को दबाते हुए जवाब दिया। स्पष्ट था कि शब्दों के इस खिलवाड़ को वह जारी नहीं रखना चाहता था।

पावेल पेत्रोविच ने आरकादी की ओर इस तरह देखा मानो कहना चाहते हों : "तुम्हारे इस मित्र के सलीके की दाद देनी चाहिए!"

फिर, प्रयास के साथ वह कहते गये:

"जहां तक मेरा अपना सम्बंध है, मुझे अपना भी अपराध स्वीकार करना चाहिए कि मैं जर्मनों को नापसंद करता हूं। रूसी जर्मनों को मैं छोड़े देता हूं। उनके कैण्डे से हम परिचित हैं। यहां तक कि जर्मनी के जर्मनों को भी मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। पुराने ज़माने के तो फिर भी ग़नीमत थे– उन्हें एक हद तक बरदाश्त किया जा सकता था, तब उनके पास अपने ... तुम जानते ही हो, शिलर और ग्येटे थे... मेरे यह भाई साहब, मिसाल के लिए, उन्हें बहुत बड़ा मानते है ... लेकिन अब तो वे सब रसायनशास्त्री और भौतिकवादी बन गए हैं ..."

"बढ़िया रसायनशास्त्री किसी भी कवि से बीस गुना अधिक उपयोगी होता है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

"क्या सचमुच?" अपनी पलकों को थोड़ा उठाते और उनीदेपन का भाव दिखाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। "तो, मेरी समझ में, कला को आप नहीं मानते ?"

"धन कमाने की कला, या बवासीर को मार भगाने की कला!" खिल्ली-सी उड़ाते हुए बज़ारोव ने कहा।

"बस बस, जनाब। समझा, आपको मजाक सूझा है। तो आप हर चीज़ का खण्डन करते हैं–क्यों, ठीक है न? अच्छा ऐसा ही सही। इसका मतलब यह कि आप केवल विज्ञान में विश्वास करते हैं?"

"पहले ही बता चुका हूं कि मैं किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता। और विज्ञान–सामान्य विज्ञान–है क्या? जैसे अन्य धंधे और पेशे है, वैसे ही भांति के विशेष विज्ञान हैं। इनके अलावा सामान्य विज्ञान जैसी चीज़ का कही कोई अस्तित्व नहीं है।"

"बहुत खूब, जनाब। लेकिन अन्य मान्यताओ के बारे मे आप क्या कहेंगे – उनके बारे मे जिन्हें मानव समाज अपनी परम्परा मे स्वीकार कर चुका है। क्या उनके प्रति भी आप वही नकारात्मक रवैया बरतते है?"

"आखिर मामला क्या है, कटघरे का जीव समझकर क्या जिरह की जा रही है?" बज़ारोव ने प्रतिवाद किया।

पावेल पेत्रोविच का रंग कुछ पीला पड़ गया... निकोलाई पेत्रोविच को लगा कि अब बीचबचाव करना ज़रूरी है।

"प्रिय येवगेनी वसीलियेविच, इस विषय पर और किसी दिन तुमसे अधिक विस्तार के साथ बातें करेंगे। तुम्हारे विचार सुनेंगे, अपने सुनाएंगे। जहां तक मेरा अपना सम्बंध है, यह जानकर मैं बहुत खुश हूं कि तुम पदार्थ-विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो। सुना है कि धरती की उत्पादनशीलता के बारे में लीबिग ने कुछ शानदार आविष्कार किये है। कृषि-कार्य में तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम्हारी सलाह मेरे लिए उपयोगी हो सकती है।"

"मैं तो आपकी सेवा में हाजिर हूं, निकोलाई पेत्रोविच। लेकिन लीबिग तक पहुंचना अभी बहुत दूर की बात है। पढ़ना शुरू करने से पहले क-ख-ग सीखना होता है। हमने तो अभी अक्षरो पर नज़र जमाना भी नही सीखा।"

"इसमें शक नहीं, हो तुम निहिलिस्ट," निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा। फिर कहा:

"फिर भी, मौक़ा आने पर, मैं तुम्हें परेशान किये बिना न रहूंगा। उम्मीद है, इसका तुम मुझे अधिकार दोगे। हां तो भाई साहब, मैं समझता हूं कि कारिन्दे से मिलने का समय हो गया। चलिए, उधर चलें।"

पावेल पेत्रोविच अपनी जगह से उठकर खड़े हो गये।

"हा," किसी की भी ओर खासतौर से न देखते हुए बोले, "हमारी तरह, युग के महान मस्तिष्कों के सम्पर्क से वंचित, पांच पांच या इससे भी अधिक सालों तक देहात में रहना बडी बदक़िस्मती है। अनायास-अनजाने ही आदमी गधा बन जाता है। चाहे जितनी कोशिश करो कि जो कुछ सीखा है वह भूल न जाओ, लेकिन तभी – एक दिन पता चलता है – कि तुम्हें जंग लग गया है, लोग कहते हैं कि इस तरह की मामूली मामूली बातों पर समय बरबाद करना समझदारी का लक्षण नही, और यह कि तुम खुद, बुढ़भस का शिकार हो गए हो। आह, लगता है जैसे युवा पीढ़ी ने चतुराई में हमें पछाड़ दिया है।"

पावेल पेत्रोविच धीरे धीरे अपनी एड़ियों के बल मुड़े और धीरे ही धीरे बाहर चले गए। निकोलाई पेत्रोविच ने भी उनका अनुसरण किया।

"क्या वे हमेशा से ही ऐसे हैं," दोनों भाइयों के जाने के बाद दरवाजे के बंद होते ही बज़ारोव ने शान्त भाव से पूछा।

"सुनो येवगेनी," आरकादी ने कहा, "इससे इन्कार नही किया जा सकता, और तुम भी यह जानते हो कि तुमने उन्हें बुरी तरह रौंद डाला है। तुमने उनका अपमान किया है।"

"नही बाबा, इन गंवार रईसों को गुदगुदाना, उनकी लल्लो-चप्पो करना मेरे बूते की बात नही। खोखले दम्भ, खोखली आदतों और खोखली टीमटाम के सिवा इनमें और कुछ नही है। अगर वह अपने को इतना गिनता है तो पीतर्सबर्ग मे ही क्यों नही बना रहा... लेकिन बहुत हो चुका, अब छोड़ो उसे। मैंने एक पनियल गोबरैला पकड़ा

है, एक दुर्लभ नमूना, Dytiscus marginatus, कभी सुना है यह नाम? मैं तुम्हें दिखाऊंगा।"

"मैंने वायदा किया था कि तुम्हें उनकी कहानी सुनाऊंगा..." आरकादी ने कहना शुरू किया।

"गोबरैले की कहानी?"

"बस बस, बहुत बनो नहीं, येवगेनी। अपने ताऊजी की कहानी। तुम खुद जान जाओगे कि जैसा तुम समझे हो, वैसे आदमी वह नही हैं। उपहास और तानों के नही, वह सहानुभूति के अधिकारी हैं।"

"मैं कब इससे इन्कार करता हूं। लेकिन तुम उनका राग अलापने के लिए क्यों इतना तुले हो?"

"हमें किसी के प्रति अन्याय नहीं करना चाहिए, येवगेनी।"

"मतलब...?"

"सो कुछ नही। बस सुनो..."

और आरकादी ने उसे अपने ताऊजी की कहानी सुनाई। यह कहानी पाठकों को अगले परिच्छेद में मिलेगी।

७

अपने छोटे भाई निकोलाई की भांति पावेल पेत्रोविच किरसानोव की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई थी, और इसके बाद सामन्तों के सैन्य प्रशिक्षण-केन्द्र में। छुटपन से ही वह अत्यन्त सुन्दर था। इसके अलावा उसमें आत्मविश्वास था, एक तीखा मसखरापन था, वह लोगों को, बिना चूके खुश करना जानता था। फ़ौजी अफ़सरी का कमीशन मिलते ही उसने समाज में पांव रखना शुरू किया। लोगों ने उसे खूब बढ़ाया-चढ़ाया और वह दुनिया-भर के मनमाने कौतुक

रचता, अपनी हर प्रकार की उचित-अनुचित इच्छा पूरी कर लेता, खूब नकले उतारता, और इन सबके लिए भी उसे वाहवाही मिलती। स्त्रियां उसे देखकर पागल हो उठती, पुरुष उसे 'कुड़क-मुर्ग' कहते और मन ही मन उससे जलते। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वह अपने भाई के साथ उसी घर में रहता था। वह उसे हृदय से चाहता था, हालांकि दोनों में ज़रा भी साम्य नहीं था। निकोलाई पेत्रोविच के पांव में एक हल्का-सा कज था, उसका चेहरा-मोहरा छोटा, देखने में सुहावना लेकिन कुछ उदास-सा था। उसकी आंखें छोटी और काली थीं, बाल मुलायम और महीन। वह चीज़ों को सहज भाव से ग्रहण करना पसंद करता था, लेकिन वह पढ़ने का शौकीन था और सोसायटी से बचता था। पावेल पेत्रोविच सांझ होते ही कभी घर पर न टिकता, साहस और चुस्ती में वह मशहूर था (सोसायटी के युवकों में जिमनास्टिक का शौक उसी ने चलाया था) और पांच या छे से अधिक फ़्रेंच पुस्तकें उसने नही पढ़ी थीं। अठारह वर्ष की आयु में ही उसने कप्तानी प्राप्त कर ली थी और भविष्य का शानदार मानचित्र उसकी आंखों के सामने खुला था। सहसा सभी कुछ उलट गया।

उन दिनों सन्त पीतर्सबर्ग की सोसायटी में एक स्त्री थी जो विरल मौक़ों पर ही प्रकट होती थी। यह थी राजकुमारी 'र' जिसकी याद अभी भी बहुतों के हृदय में ताज़ा है। उसका पति बहुत ही सलीकेदार, प्रतिष्ठित, लेकिन अपेक्षाकृत भावशून्य था। उसके बच्चे नहीं थे। मोटे तौर पर यह कि वह कुछ अजीब जीवन बिताती थी। अचानक विदेशों के लिए चल पड़ती, और फिर अचानक ही रूस लौट आती। वह एक छिछली स्वच्छन्द युवती के रूप में प्रसिद्ध थी, मौज-मजे के भंवर में बरबस कूद पड़ती, इतना नाचती

कि निढाल हो जाती, युवा लोगों से हंसी-ठिठोली करती, धुंधली रोशनी से युक्त अपने ड्राइंगरूम में — दावत से पहले — उनका मन बहलाती। लेकिन रात को वह रोती और प्रार्थना करती। उसे चैन न मिलता। वह, आवेग-उद्वेग से भरी, अपने कमरे में चक्कर लगाते लगाते बहुधा सुबह कर देती, वेदना से अपने हाथों को मरोड़ती, या धर्म-पुस्तक खोले, पीली और सर्द, स्थिर बैठी रहती। दिन निकलता और वह एक बार फिर फ़ैशन की पुतली बन जाती, मित्रों के यहां चक्कर लगाती., हंसती और बतियाती, जी बहलाने का ज़रा-सा भी अवसर पाने पर उसमें कूदने के लिए तैयार नज़र आती। उसका आकार-प्रकार बहुत ही शानदार था। उसके बाल घने और सुनहरे थे। गुंथी हुई चोटियां जब घुटनों के नीचे तक लटकतीं तो ऐसा मालूम होता जैसे सोने की नागिनें बल खा रही हों। लेकिन फिर भी उसे कोई सुन्दर नहीं कह सकता था। उसके चेहरे में केवल एक ही चीज़ अच्छी थी — उसकी आंखे; और आंखें भी इतनी नहीं — इसलिए कि वे कंजी और कुछ बड़ी नही थी — बल्कि उनकी नजर, जो बहुत ही गतिशील और गहरी थी, दुनिया से बेपरवाह उपेक्षा का भाव लिए, उदासीनता की हद तक असम्भव उमगों-आकांक्षाओं में डूबी — एक ऐसी नज़र जिसकी थाह नही मिलती थी। उनमें, उसकी उन आंखों में, एक अजीब चमक थी जो उस समय भी उसका साथ नही छोड़ती थी जब वह बेमानी लतीफ़ो का तूमार बांधती थी। अत्यन्त नफ़ासत के साथ वह कपड़े पहनती थी। एक नृत्य-समारोह में पावेल पेत्रोविच की उससे मुठभेड़ हुई, उसके साथ माज़ुर्का नृत्य में वह शामिल हुआ और इस नृत्य के दौरान में एक भी शब्द उसके मुंह से ऐसा नहीं निकला जिसमें कोई तत्व हो। पावेल पेत्रोविच जी-जान से उसपर न्योछावर हो गया। सहज विजय पाने में वह माहिर था। यहां

भी जल्दी ही उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। लेकिन सफलता से उसका जोश ठंडा न पड़ा, बल्कि इस स्त्री के साथ उसका लगाव और भी अधिक प्रबल तथा कसकपूर्ण हो गया। कारण कि इस स्त्री में, पूर्ण आत्मसमर्पण के क्षणों में भी, कोई ऐसी चीज बच रहती थी जो अनुल्लंघनीय तथा पहुंच से बाहर रह जाती थी, ऐसी जिसे कोई नही छू सकता। उसकी आत्मा में कुछ था जो रहस्यमय था, सिवा परमात्मा के जिसे अन्य कोई नही जान सकता था। ऐसा लगता था जैसे उसमें किन्ही दैवी शक्तियों का वास हो जिनकी थाह वह ख़ुद भी नहीं पा सकती थी, जो उसे अपने इशारे पर नचाती थी और जिनकी मनमानी के सामने उसकी दीन-हीन समझ की कोई हस्ती नहीं थी। उसका आचरण क्या था, असंगतियों का बेतुक मेल था। वह पत्र भी लिखती तो एक ऐसे आदमी को जो उसके लिए क़रीब क़रीब अपरिचित था। इन पत्रों के सिवा और कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो उसके पति के जायज सन्देहों को उकसाती। उसका प्रेम शोक में डूबा होता। जिसे वह अपने प्रेम का पात्र चुनती, उसके साथ न कभी वह हंसती, न मजाक़ करती, बस चुपचाप सुनती और अचरज का भाव लिए उसकी ओर ताकती रहती। कभी कभी, और अधिकांशतः अचानक, अचरज का यह भाव कण्टकित कर देनेवाले भय में बदल जाता। उसके चेहरे पर एक मुर्दनी-सी छा जाती, वहशियों जैसी वह दिखने लगती। वह अपने आपको शयनकक्ष में बंद कर लेती और उसकी दासी, ताली के छेद पर कान लगाकर, घुटी हुई उसकी सुबकियों की आवाज़ सुनती। मृदु प्रेम-क्रीड़ा के बाद जब कभी किरसानोव उसके पास से अपने कमरे में लौटकर आता तो, अदबदाकर, पूर्ण विफलता की भावना से उसका हृदय मरोड़ खाता, प्रतारणा की भावना उसके हृदय को बुरी तरह कचोटती। उसका हृदय वेदना में डूब जाता और

वह अपने से पूछता : "आखिर मैं और क्या चाहता हूं ? "एक बार उसने उसे एक अंगूठी भेंट की जिसके नग पर स्फिंक्स * का चित्र अंकित था।

"यह क्या है ?" उसने पूछा। "स्फिंक्स है ?"

"हां," उसने कहा, "और यह स्फ़िंक्स तुम हो।"

"मैं ?" उसने प्रश्न किया और, धीरे धीरे, अपनी उसी अभेद्य नजर से उसकी ओर देखा। फिर, अपनी उसी विचित्र नजर से देखते हुए, अस्पष्ट व्यंग्य के स्वर में बोली : "यह बहुत अधिक चापलूसी का प्रदर्शन है, समझे !"

पावेल पेत्रोविच उस समय भी यंत्रणा पाता था जब राजकुमारी 'र' उससे प्रेम करती थी, लेकिन जब वह उसकी ओर से ठंडी पड़ गई— और यह जल्दी ही हुआ—तो इसने उसे क़रीब क़रीब पागल ही बना दिया। प्रेम और ईर्ष्या ने उसे झंझोड़ डाला। वह उसे सताता, जहां भी वह जाती उसका पीछा करता। उसकी हरकतों से तंग आकर वह विदेश चली गई। उसने अपने कमीशन से त्यागपत्र दे दिया। मित्रों ने समझाया, अफसरों ने हुज्जत की, लेकिन बेकार। वह भी राजकुमारी के पीछे पीछे चल दिया। चार साल तक उसने विदेशो की ख़ाक छानी—कभी राजकुमारी के साथ लगा रहता, कभी उसे जान-बूझकर आंखों से ओझल हो जाने देता। वह अपने आपको ख़ुद अपनी नज़रों में गिरा हुआ अनुभव करता, अपने हृदय की इस अस्थिरता से घृणा करता... लेकिन सब बेकार। उसकी वह छवि—

---

*ग्रीक पौराणिक गाथाओं में वर्णित एक ऐसा प्राणी जिसका धड़ शेरनी का और सिर स्त्री का है।—सं०

चकरा देनेवाली, क़रीब क़रीब बेहूदा, लेकिन मुग्धकारी छवि—उसके हृदय में ख़ूब गहरे उतर चुकी थी। बाडेन में, संयोगवश, पुराने स्तर पर वे फिर एक-दूसरे के निकट आ गए। ऐसा मालूम होता था जैसे राजकुमारी ने इतना प्यार पहले कभी उसपर न्योछावर नहीं किया था ... लेकिन अभी मुश्किल से एक महीना भी न बीता होगा कि सब कुछ ग़ायब हो गया—प्रेम की लौ जैसे आख़िरी बार भड़ककर सदा के लिए बुझ गई। यह अनुभव कर कि विच्छेद के सिवा अब और कोई चारा नही है, उसने चाहा कि वह, कम से कम, उसका मित्र ही बना रहे, मानो उस जैसी स्त्री से मित्रता बनाए रखना सम्भव हो... लेकिन वह बाडेन में उसे चकमा देकर खिसक गई और इसके बाद उससे कतराती रही। किरसानोव रूस लौट आया। उसने कोशिश की कि अपने पुराने जीवन को फिर शुरू करे, लेकिन पुरानी चूल में बैठना उसके लिए सम्भव नही हुआ। अभिशप्त की भांति कभी वह यहां जाता, कभी वहां। सभा-सोसायटी में भी वह निकलता, दुनियादारी का भी परिचय देता, यहां तक कि दो या तीन नयी विजयों का सेहरा बांधने में भी वह सफल हुआ, लेकिन खुद अपने या दूसरों के लिए भरी-पूरी आशा-आकांक्षाओं से—उमंगों की रवानी से—उसका हृदय सूना हो चुका था, और अपनी स्थिति को बेहतर बनाने का वह कोई प्रयास नहीं करता था। वह बूढ़ा हो चला, सिर के बाल सफ़ेद होने लगे। सांझ को किसी क्लब में जाकर बैठना, झुझलाहट भरी ऊब या घरवाली-विहीन मित्रों के साथ गप्पें हांकने में समय बिताना उसके लिए ज़रूरी हो गया। निश्चय ही यह कोई अच्छा लक्षण नही। ऐसी हालत में, कहने की आवश्यकता नही, घर बसाने का सवाल ही नही उठता—यह बात उसके मन से कोसों दूर थी। इस तरह दस साल गुज़र गए—बेरंग, बंजर, और गतिवान—

भयानक रूप से गतिवान! रूस में समय जितनी तेजी से गुजरता है, उतनी तेजी से अन्य कहीं नहीं, और कैदखाने में—लोग कहते हैं—वह और भी तेज़ी से गुजरता है। एक दिन, उस समय जबकि वह क्लब मे भोजन कर रहा था, पावेल पेत्रोविच ने राजकुमारी 'र' की मृत्यु का समाचार सुना। करीब करीब पागलपन की स्थिति मे पेरिस में उसकी मृत्यु हुई थी। वह मेज पर से उठ गया और क्लब के कमरों में इधर से उधर टहलने लगा। फिर, उस जगह जहां लोग ताश खेल रहे थे, वह इस तरह रुककर खड़ा हो गया मानो पत्थर की मूर्ति हो। यह सब होने पर भी उस दिन, अन्य दिनों की अपेक्षा, वह कुछ पहले घर नहीं लौटा। इसके कुछ दिन बाद उसे एक छोटा-सा पारसल मिला। इसमें वही अंगूठी थी जो उसने राजकुमारी 'र' को दी थी। स्फ़िंक्स के चित्र पर क्रास का चिन्ह बना था और पावेल पेत्रोविच के लिए उसने कहला भेजा था कि क्रास ही उसकी पहेली का जवाब है।

यह १८४८ के प्रारम्भ की घटना है। ठीक उन्हीं दिनों अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, निकोलाई पेत्रोविच सन्त पीतर्सबर्ग पहुंचा। देहात में जाकर निकोलाई पेत्रोविच के बसने से लेकर अब तक पावेल पेत्रोविच अपने भाई की ख़ैर-ख़बर से करीब क़रीब एकदम बेगाना था। निकोलाई पेत्रोविच का विवाह, संयोग की बात, उन्ही दिनों हुआ था जिन दिनों कि राजकुमारी 'र' के साथ पावेल पेत्रोविच के परिचय का शुरुआत चल रहा था। विदेशों में भटकने के बाद वह अपने भाई के पास गया था। उसका इरादा था कि अपने भाई के दाम्पत्य सुख की छाया में कुछ महीने वह गुज़ार देगा। लेकिन वह इसे एक सप्ताह से अधिक नहीं सह सका। दोनों भाइयों की स्थिति का अन्तर जरूरत से ज्यादा उभर आया। १८४८ में यह अन्तर उतना नही उभरा। निकोलाई पेत्रोविच

अपनी पत्नी को गंवा चुका था, पावेल पेत्रोविच की स्मृतियों का भी अब कोई अवशेष नही रहा था। राजकुमारी की मृत्यु के बाद उसने उसे अपनी स्मृति से निर्वासित करने की भरसक कोशिश की थी। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच को यह सुख-सन्तोष तो था कि उसका जीवन भली भांति गुज़रा – एक बेटा था जो उसकी आंखों के सामने बढ़ रहा था। उधर पावेल – ठीक इसके प्रतिकूल – एकाकी और विधुर, जीवन के उस धुधलके में प्रवेश कर रहा था जिसमें आशाएं खेद का स्थान ले लेती हैं और खेद आशाओं का स्थान ले लेता है, जब कि युवावस्था तो विदा हो जाती है लेकिन वृद्धावस्था का अभी पदार्पण नही होता।

जीवन का यह काल यों सभी के लिए कठिन होता है, लेकिन पावेल के लिए तो और भी भारी पड़ा। कारण कि अतीत के साथ उसने अपना सर्वस्व – अपना सभी कुछ – खो दिया था।

"तुम्हें अब मारिनो चलने का न्योता नही दूंगा," निकोलाई पेत्रोविच ने एक समय उनसे कहा (जागीर का यह नाम उसने अपनी पत्नी के सम्मान में रखा था), "जब मेरी प्रिय पत्नी जीवित थी, तभी तुम वहां ऊब उठे थे, और अब तो मुझे डर है कि तुम्हारा एकदम दिल ही बैठ जाएगा।"

"उन दिनों न तो मेरा चित्त ठिकाने था न बुद्धि," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया था, "अब बुद्धि चाहे ठिकाने पर न आई हो, लेकिन चित्त ज़रूर आ गया है। अब वह बात नही, और अगर तुम्हे ऐतराज़ न हो मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहना पसंद करूंगा।"

निकोलाई पेत्रोविच ने इसका जवाब उसे अपनी बाहों में भर-कर दिया। लेकिन, इस बातचीत के बाद भी डेढ़ साल गुज़र गया,

तब कहीं जाकर पावेल पेत्रोविच अपने इरादे को कार्यरूप में परिणत कर सका। और एक बार जब वह देहात में आकर बस गया, उसके बाद वह फिर कभी वहा से नही हिला — उन तीन जाड़ो में भी नही जब कि निकोलाई पेत्रोविच अपने पुत्र के पास पीतर्सबर्ग मे जाकर रहा था। उसने पुस्तकें — अधिकाशत: अंग्रेजी — पढ़ने में मन लगाया। यों, सच पूछो तो उसका समूचा जीवन ही अंग्रेज़ी साचे में ढला था। वह बिरले ही अपने पड़ोसियों से मिलता था, केवल चुनाव के दिनों मे ही बाहर निकलता था, और तब भी — आमतौर से — अपना मुह नही खोलता था, और अगर खोलता भी था तो उस समय जब अपनी उदार फब्तियों से वह पुराने ज़माने के जागीरदार कुलीनो को चिढ़ाना और चौंकाना चाहता था। इसी के साथ साथ वह नयी पीढ़ी से भी कन्नी काटता था। दोनों ही दल उसे अहंकारी समझते, लेकिन दोनों ही उसकी इज्ज़त भी करते। उनके ऊपर उसकी बेदाग़ कुलीन नफ़ासत का, उसकी 'विजयों' की ख्याति का, कपड़े पहनने के उसके उत्कृष्ट ढंग और सर्वश्रेष्ठ होटलों के उत्कृष्ट कमरों में उसके ठहरने का, भोजन करने के उसके बढ़िया तौर-तरीक़े का और इस तथ्य का कि एक बार लुई फिलिप की मेज़ पर वह वैलिंगटन के साथ भोजन कर चुका था, रौब छाया हुआ था। वह हमेशा अपने साथ असली चांदी का ड्रैसिंग केस और मुसाफ़िरी बाथ-टब (स्नान करने का पात्र) लेकर चलता था, उसका बदन एक खास — बहुत ही शानदार — इत्र में बसा रहता था, ताश खेलने में वह बेजोड़ था और मज़ा यह कि हमेशा उसमें हारता था — इन सब बातों के लिए, और अन्त में इस बात के लिए भी कि वह अपने ईमान का एकदम पक्का था, सब उसका मान करते थे। स्त्रियां उसे उदासी में खोया एक आकर्षक व्यक्ति समझतीं, लेकिन वह उनकी संगत पाने का प्रयत्न न करता...

"सो देखा, येवगेनी," अपने वर्णन को पूरा करते हुए आरकादी ने कहा, "अब तुम ख़ुद समझ सकते हो कि ताऊजी के साथ तुमने कितना अन्याय किया है। इस बात का मै ज़िक्र नही करूंगा कि कितनी बार उन्होंने मेरे पिता को कठिनाइयों में से उबारा, अपनी सारी पूजी उन्हें सौंप दी–तुम्हें शायद मालूम न हो, लेकिन ज़ागीर का हिस्सा-बांट नही हुआ है– फिर भी वह हर किसी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और हमेशा किसानों की तरफ़दारी करते है। हां, यह सच है कि जब वह किसानों से बात करते हैं तो नाक बिचकाते और इत्र की महक छोड़ते हैं ..."

"दिमागी सनक–इसमें शक नही!" बजारोव ने बीच मे ही कहा।

"हो सकता है, लेकिन उनका हृदय ठिकाने पर है। इसके अलावा, उन्हें मूर्ख भी किसी तरह नही कहा जा सकता। उन्होंने जाने कितनी नेक सलाहें मुझे दी हैं ... ख़ासतौर से ... खासतौर से स्त्रियों के बारे में।"

"ओह, अपने दूध से ख़ुद को जलाने के बाद दूसरों के ठंडे पानी पर फूंक मारना। यह सब हम ख़ूब जानते हैं।"

"संक्षेप में यह कि," आरकादी कहता गया, "विश्वास करो, वह बेहद दुःखी हैं। उनसे घृणा करना शर्म की बात है।"

"लेकिन उनसे घृणा कौन करता है?" बज़ारोव ने प्रतिवाद किया। "फिर भी, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह आदमी जिसने एक स्त्री के प्रेम के दांव पर अपना समूचा जीवन लगा दिया और जो, दांव में हार जाने के बाद टुकड़े टुकड़े हो जाता है और अपने आपको बर्बाद होने देता है– इस तरह का जीव आदमी नहीं है, उसे मर्द नहीं कहा जा सकता। तुम कहते हो कि वह दुःखी हैं।

तुम से ज़्यादा यह और कौन जानेगा। लेकिन उस सारी खुराफ़ात से अभी तक उनका पीछा नहीं छूटा है। मेरा यह पक्का विश्वास है कि वह अपने आपको सचमुच चतुर समझते हैं। सिर्फ़ इसलिए कि वह गालिगनानी जैसे चिथड़ा-पत्र पढ़ते हैं और कभी कभी, भूले-भटके, किसी दहकान को कोडों की मार से बचा लेते हैं।"

"लेकिन तुम्हें यह भी याद रखना चाहिए कि किस तरह की शिक्षा-दीक्षा उन्हें मिली है और किस जमाने में उन्हें जीवन बिताना पड़ा है!" आरकादी ने कहा।

"शिक्षा-दीक्षा?" बजारोव बोल उठा। "हर आदमी खुद अपने को शिक्षित करता है—मिसाल के लिए जैसे कि मैं... और जहां तक ज़माने का सम्बंध है, मैं क्यों उसपर निर्भर रहूं? अच्छा यही है कि वह मुझपर निर्भर रहे। नहीं, मेरे प्यारे साथी, यह सब कुछ नही। यह निरा ह्रास है, खोखलापन है। और जरा यह तो बताओ कि पुरुष और स्त्रियों के बीच के उन रहस्यमय सम्बंधों का भला इससे क्या वास्ता? हम शरीर-विज्ञानशास्त्री इन सम्बंधों का सारा रहस्य जानते हैं। ज़रा आंख की बनावट का अध्ययन करके तो देखो, वह भेद-भरी चितवन तुरत हवा हो जायेगी जिसके पीछे तुम मरते हो। यह सब रोमाण्टिकता है, बकवास है, कूड़ा-करकट और मन का भुलावा है। इससे तो यह कहीं अच्छा है कि चलो, ज़रा अपने गोबरैले को देखें।"

और वे दोनों बजारोव के कमरे की ओर चल दिए। कमरे से एक विचित्र प्रकार की अस्पताली तथा सस्ते तम्बाकू की मिश्रित गंध आ रही थी।

जागीर के कारिन्दे के साथ अपने भाई की बातचीत के समय पावेल पेत्रोविच अधिक देर तक वहां नही टिके। कारिन्दा लम्बे कद और छरहरे बदन का आदमी था। क्षयग्रस्त-सी मीठी उसकी आवाज़ थी और आंखों से पाजीपन झलकता था। अपने मालिक की सभी बातों के जवाब में एक ही अलाप उसके मुह से निकलता – "क्यों नहीं, मालिक! बेशक, मालिक!" और सभी किसानों को वह पियक्कड़ तथा चोर जताने का प्रयत्न करता। हाल ही में नये ढर्रे पर ढाला गया फ़ार्म बिना तेलियाए छकड़े की भांति चूं-चरर करता और घर के बने कच्ची लकड़ी के सामान की भांति तड़क चला था। निकोलाई पेत्रोविच नाउम्मीद तो नही हुए, लेकिन वह रह रहकर उसासें छोड़ते और सोच में पड़ जाते। उन्होंने अनुभव किया कि बिना पूंजी के गाड़ी नही चल सकती, लेकिन पास की जमा-पूजी क़रीब क़रीब सब ख़त्म हो चुकी थी। आरकादी ने सच ही कहा था। पावेल पेत्रोविच एक से अधिक बार अपने भाई को उबार चुके थे। अधिकतर जब वह उन्हे चूर चूर होते तथा मुसीबतों से छूटने के लिए सिर खपाते देखते तो वह धीमे डगों से खिड़की के पास जाकर खड़े हो जाते और अपनी जेबों में हाथ खोंसते हुए बुदबुदाते – "Mais je puis vous donner de l'argent*," और उन्हे कुछ धन दे देते। लेकिन उस दिन खुद उनके पास कुछ नही था, इसलिए उन्होंने वहां से खिसक जाना ही अच्छा समझा। कारबार की चिन्ताओं से उन्हें बेहद ऊब मालूम होती थी। इसके अलावा यह सन्देह भी उन्हें बराबर कुरेदता रहता था कि अपने

---

*मेरी जेब तुम्हारे लिए बराबर खुली रहेगी। (फ़्रेंच)–सं०

तमाम जोश और क्रियाशीलता के बावजूद निकोलाई पेत्रोविच चीज़ो को ठीक ढंग से नही सभाल पाते। हालांकि यह वह खुद भी नहीं बता सकते थे कि वह कहां गलती करते है। "मेरा भाई काफ़ी व्यवहार कुशल नही है," वह मन ही मन अपने से कहते, "उसे धोखा दिया जा रहा है।" इसके प्रतिकूल निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की समझ-बूझ की भारी कद्र करते थे और हमेशा उनसे सलाह लेते थे। "मैं एक मुलायम और कमज़ोर इरादे का आदमी हूं। मेरा सारा जीवन इन पिछड़े इलाक़ों में ही गुज़रा है," वह कहते, "जबकि तुम्हारा लोगों से खूब रब्त-ज़ब्त रहा है और तुम उनकी रग रग पहचानते हो। तुम्हारी दृष्टि गिद्ध की भांति पैनी है।" जवाब में पावेल पेत्रोविच केवल मुह फेर लेते, अपने भाई के मस्तिष्क को ठिकाने पर लाने का प्रयत्न न करते।

निकोलाई पेत्रोविच को अपने अध्ययन कक्ष में छोड़ वह उस गलियारे में निकल आए जो घर के अग्रभाग को उसके पिछले हिस्से से अलग करता था और एक नीचे दरवाज़े के सामने चिन्तित मुद्रा में ठिठककर खड़े हो गए। उन्होने अपनी मूंछों को नोचा और दरवाज़े को खटखटाया।

"कौन है? आइए, भीतर चले आइए," फ़ेनिचका की आवाज़ आई।

"मै हूं," दरवाज़े को खोलते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा।

फ़ेनिचका कुर्सी पर अपने बच्चे को लिए हुए बैठी थी। वह उछलकर खड़ी हो गई। उसने बच्चे को एक लड़की के हाथों में थमा दिया जो उसे लेकर तुरत कमरे से बाहर चली गई। फ़ेनिचका ने फ़ुर्ती से अपने सिर का रूमाल ठीक किया।

"बाधा देने के लिए क्षमा करें," उसकी ओर देखे बिना ही पावेल

पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "मुझे तुमसे केवल एक बात कहनी थी... मेरा विश्वास है कि आज कोई न कोई शहर जा रहा होगा... मेहरबानी हो अगर मेरे लिए कुछ हरी चाय मंगवा दो।"

"बहुत अच्छा, मालिक," फ़ेनिचका ने जवाब दिया, कितनी चाहिए?"

"ओह, मेरे ख़याल में आधा पौंड काफ़ी होगी," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर इर्द-गिर्द तथा फ़ेनिचका के चेहरे पर भी एक उड़ती-सी नज़र डालते हुए बोले, "आज तो यहां कुछ परिवर्तन नज़र आ रहा है।" यह देखकर कि वह समझ नहीं पाई है, उन्होंने फिर कहा—"ये पर्दे..."

"अरे हां, ये पर्दे, मालिक! निकोलाई पेत्रोविच ने मुझे दिए थे। लेकिन ये तो काफ़ी दिनों से टंगे है।"

"हां, और तुम्हारे कमरे में आए भी मुझे काफ़ी दिन हो गए। अब यह बढ़िया हो गया।

"यह सब निकोलाई पेत्रोविच की कृपा का फल है," फ़ेनिचका ने बुदबुदाकर कहा।

"अपने पुराने कमरे के मुकाबिले में यहां तो ज्यादा आराम से हो न?" बहुत ही विनम्रता के साथ, अपने होंठों पर ज़रा-सी मुसकराहट लाए बिना, पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"हां, मालिक।"

"तुम्हारे पुराने कमरे में अब कौन है?"

"धोबीघर की दासियां।"

"ओह!"

पावेल पेत्रोविच चुप हो रहे। "अब ये जा रहे है," फ़ेनिचका ने सोचा, लेकिन वह गए नहीं। फ़ेनिचका उनके सामने, अपनी

उसी जगह पर, स्थिर खड़ी अपनी उंगलियों को तोड़ती-मोड़ती रही।

"बच्चे को तुमने बाहर क्यों भेज दिया?" आखिर पावेल पेत्रोविच ने कहा। "बच्चों का मुझे शौक है। ज़रा बुलवाओ न उसे।"

घबराहट और आनन्द से फ़ेनिचका के गालों पर लाली दौड़ गई। पावेल पेत्रोविच से उसे डर लगता था। बिरले ही वह उससे बोलते थे।

"दुन्याशा!" उसने आवाज़ दी, "जरा मित्या को यहां ले आओ!" (घर में किसी को भी वह 'तू' से सम्बोधित नहीं करती थी), "नहीं, ज़रा ठहरो। पहले उसे कपड़े तो पहना लो।" फ़ेनिचका दरवाज़े की ओर बढ़ी।

"अरे छोड़ो भी।"

"अभी आई। बस, एक मिनट।" फ़ेनिचका ने जवाब दिया और ओझल हो गई।

अकेले रह जाने पर पावेल पेत्रोविच ने कमरे का सावधानी से पर्यवेक्षण किया। छोटा-सा नीची छतवाला यह कमरा बहुत ही सुहावना और साफ़-सुथरा था। ताजा रंगे हुए फ़र्श के तख्तों से, कामोमिले तथा मेलिसा की खुशबू आ रही थी। दीवारों के सहारे पंखेनुमा पीठवाली कुर्सियां रखी थीं। स्वर्गीय जेनरल ने इन्हें लड़ाई के दिनों में पोलैण्ड में ख़रीदा था। एक कोने में पलंग बिछा था जिसके ऊपर मसलिन का चंदोवा तना था। उसी से सटा मेहराबदार ढक्कनवाला एक सन्दूक था जिसमें पत्तियां जड़ी थीं। इसके सामनेवाले कोने में, सन्त निकोलाई की एक बड़ी काली प्रतिमा के आगे एक छोटा-सा दीप जल रहा था। आलोक-मण्डल से एक लाल फ़ीता लटका था। इसके दूसरे छोर पर चीनी का एक छोटा-सा

कुमकुमा बंधा था जो सन्त के वक्ष पर झूल रहा था। खिड़कियों की ओटक पर, जिनका हरा रंग चमक रहा था, मर्तबान रखे थे। इनमें पिछले साल के अचार-मुरब्बे भरे थे। इनके मुह, बड़ी सावधानी से, काग़ज़ से बंद थे और फ़ेनिचका ने, अपनी टेढ़ी-मेढी लिखावट में, काग़ज़ पर लिख रखा था: "गूज़बैरी"। निकोलाई पेत्रोविच को यह मुरब्बा ख़ासतौर से पसंद था। छत से बंधी रस्सी में एक पिंजरा लटका था। उसमें टुंडी दुमवाला सिसकिन पक्षी निरन्तर चहचहा रहा था, इधर से उधर फुदक रहा था, और पिंजरा लगातार हिल और डोल रहा था। पटुवा के बीज फ़र्श पर गिरकर पटापट की आवाज़ कर रहे थे। खिड़कियों के बीच की दीवार पर, खानेवाली एक छोटी अलमारी के ऊपर, विभिन्न मुद्राओं में निकोलाई पेत्रोविच के कुछ रद्दी-से फोटो लटके थे। उन्हें किसी मामूली फ़ोटोग्राफ़र ने उतारा था। इनकी बग़ल मे ही खुद फेनिचका का एक फ़ोटो लटका था जो एकदम वाहियात था। छोटे-से काले चौखटे के भीतर से एक अंधा और अस्वाभाविक मुसकान से युक्त चेहरा झांक रहा था, बाक़ी सब लिप-पुतकर बराबर हो गया था। फ़ेनिचका के चित्र के ऊपर सिरकासी ढंग का नम्दे का चोगा पहने जेनरल येरमोलोव का चित्र था। अपनी भौंहों को सिकोड़, दूर हवा मे अटके काकेशी पहाड़ों को वह घूर रहे थे। जूते की शक्ल का एक रेशमी पिनकुशन उनकी भौंहों के आगे झूल रहा था।

पांच मिनट हो गए। बराबरवाले कमरे में सरसराहट और फुसफुसाहट-सी हो रही थी। पावेल पेत्रोविच ने अलमारी में से एक किताब उठाई जो अंगूठे के धब्बों से भरी थी। यह मस्साल्स्की कृत 'शाही स्त्रेल्त्सी' की कोई जिल्द थी। उन्होंने उसके पन्ने पलटने शुरू किए... तभी दरवाज़ा खुला और अपनी बांहों में मित्या को लिए

हुए फ़ेनिचका ने प्रवेश किया। उसने उसे एक छोटी-सी लाल कमीज़ पहना रखी थी जिसके कालर में ज़री की बेल कढ़ी थी। उसके बाल संवारे हुए थे और मुंह साफ़ किया हुआ था। वह हांफ रहा था, अपने बदन को किलबिला और छोटे-छोटे हाथों को हिला रहा था जैसा कि सभी स्वस्थ बच्चे करते हैं। अपनी लक़दक कमीज़ में, साफ़ मालूम होता था, कि वह एक रोब का अनुभव कर रहा है – उसका नन्हा गुदगुदा बदन आनन्द से खिला पड़ता था। फ़ेनिचका ने भी अपने बालो को संवार लिया था और रूमाल भी बदल डाला था, हालांकि इतना कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। कारण स्पष्ट है। गोद मे हृष्ट-पुष्ट शिशु लिए सुन्दर युवती मां से अधिक मुग्धकर चीज़ इस दुनिया में और क्या हो सकती है?

"वाह, मेरे नन्हे पहलवान!" दुलार में भरकर मित्या की दोहरी ठोड़ी को अपनी तर्जनी उंगली के नाखून से गुदगुदाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। बच्चे ने सिसकिन पक्षी की ओर ताकते हुए हुमक-कर किलकारी भरी।

"अरे देख, ताऊजी हैं," उसे एक हल्का-सा झटका देते और अपना मुंह झुकाकर उसके निकट ले जाते हुए फ़ेनिचका ने कहा। दुन्याशा ने खिड़की की ओटक के ऊपर ताम्बे की मुद्रा पर धूपबत्ती जलाकर रख दी।

"यह कितने महीने का है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"छै महीने का। ग्यारह तारीख़ से सातवां लग जाएगा।"

"सातवां क्यों, आठवां नहीं लगेगा, फ़ेदोसिया निकोलायेवना?" दुन्याशा ने दबे अन्दाज़ में कहा।

"नही, एकदम सातवां!"

बच्चा फिर गुदगुदा उठा। सन्दूक से उसकी आंखें जा चिपकीं

ग्रौर फिर, अचानक, एक साथ अपनी पांचों उंगलियों से मां की नाक तथा होंठों को पकड़ लिया।

"पाजी, पाजी कहीं का!" अपना मुह हटाने का प्रयत्न न करते हुए फ़ेनिचका ने कहा।

"अरे यह तो मेरे भाई जैसा है," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"उन जैसा नही होगा तो कैसा होगा?" फ़ेनिचका ने मन में कहा।

"हां," पावेल पेत्रोविच कहता गया, जैसे अपने से ही बातें कर रहा हो, "सच, रत्ती-भर भी फ़र्क़ नहीं!"

उन्होंने बड़े ध्यान से, क़रीब क़रीब उदासी पर उतरे भाव से, फ़ेनिचका की ओर देखा।

"इधर देख... ताऊजी!" फ़ेनिचका ने दोहराया, इस बार फुसफुसाती आवाज़ में।

"ओह, पावेल। सो आप यहां हैं!" सहसा निकोलाई पेत्रोविच की आवाज़ सुनाई दी।

पावेल पेत्रोविच, भौंहों में बल डाले, घूमकर मुड़ गए। लेकिन उनका भाई कुछ इतने अकृत्रिम उल्लास तथा गदगद भाव से उनकी ओर देख रहे थे कि जवाब में वह भी मुसकराए बिना नहीं रह सके।

"तुम्हारा यह नन्हा बहुत ही प्यारा है," कहते हुए उन्होंने अपनी घड़ी की ओर देखा। "अपने लिए थोड़ी चाय मंगानी थी। सोचा, कहता चलूं।"

और लापरवाही का सा भाव दिखाते हुए तुरत कमरे से चले गए।

"वह ख़ुद अपने आप आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने फ़ेनिचका से पूछा।

"हां। उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया, और बस भीतर आ गए।"

"ठीक। और क्या आरकादी भी फिर तुम्हारे पास आया था?"

"नहीं। लेकिन, निकोलाई पेत्रोविच, क्या यह अच्छा न होगा कि मैं फिर अपने पुराने कमरे में लौट जाऊं?"

"सो किस लिए?"

"मैं सोच रही थी कि मौजूदा सूरत में यह सबसे अच्छा होगा।"

"नहीं... नहीं," कुछ हकलाते और अपने माथे पर उंगलियां फेरते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "ऐसा ही था तो सब पहले सोच लेना चाहिए था।" फिर, सहसा हुमकते और बच्चे के पास जाकर उसके गाल का चुम्बन लेते हुए कह उठे, "हैल्लो, मेरे लोटन कबूतर!" इसके बाद, थोड़ा झुककर, उन्होंने अपने होंठों से फ़ेनिचका के हाथ का स्पर्श किया जो बच्चे की लाल कमीज़ से सटा मक्खन की भांति सफ़ेद मालूम होता था।

"ओह नहीं, यह आप क्या कर रहे हैं, निकोलाई पेत्रोविच?" अपनी आंखों को नीचे गिराते और उन्हें फिर धीरे धीरे उठाते हुए फ़ेनिचका ने उखड़ी-सी आवाज़ में कहा ... उस समय उसके चेहरे की मुद्रा बहुत ही प्यारी लग रही थी। उसकी पलकें झुकी थीं, होंठों पर मुसकान कांप रही थी और वह, हत-बुद्धि-सी झुकी पलकों के झरोखे में से झांक रही थी।

जिन परिस्थितियों में निकोलाई पेत्रोविच का फ़ेनिचका से मिलन हुआ, वे इस प्रकार हैं:

कोई तीन साल पहले की बात है। एक दिन, किसी दूरस्थित देहाती कस्बे की सराय में, उन्हें रात बितानी पड़ी। अपने कमरे की सफ़ाई और बिछावन की ताज़गी देखकर वह मुग्ध रह गए। "सराय की मालकिन निश्चय ही जर्मन होगी," उन्होंने मन में सोचा; लेकिन

वह रूसी ही निकली। आयु क़रीब पचास वर्ष, साफ़-सुथरे कपड़े पहने, चेहरे पर बुद्धिमानी की झलक, बोलने में गम्भीर। चाय के समय उससे बातचीत करने का मौक़ा मिला। वह उनपर रीझ गई। उन दिनों निकोलाई पेत्रोविच ने अपन नये घर में रहना शुरू किया ही था। और चूकि अपने इर्द-गिर्द वह बंधक-दासों की फ़ौज खड़ी करना नही चाहते थे, इसलिए उन्हें वेतन पर काम करनेवाले नौकरों की तलाश थी। उधर सराय की मालकिन मुसाफ़िरों की कमी से परेशान और बुरे दिनों से तंग थी। निकोलाई पेत्रोविच ने प्रस्ताव किया कि वह घर का काम-काज संभाल ले। उसने स्वीकार कर लिया। उसका पति बहुत पहले ही मर गया था और सन्तान के नाम पर केवल एक लड़की—फ़ेनिचका —छोड़ गया था। एक पखवारे के भीतर ही अरीना साविशना (नयी भण्डारिन का यही नाम था) अपनी लड़की के साथ मारिनो आ गई और घर के छोटे हिस्से में उसने अपना आसन जमा लिया। निकोलाई पेत्रोविच की पसंद अच्छी सिद्ध हुई। देखते-न-देखते अरीना ने घर की शक्ल निखार दी। फ़ेनिचका तब सत्रह साल की थी। वह बिरले ही दिखाई देती, और न ही उसका कभी कोई ज़िक्र चलता। वह अलग-थलग और चुपचाप रहती और केवल रविवार के दिनों में ही, बस्ती के गिरजाघर के किसी कोने में, निकोलाई पेत्रोविच को ताज़गी लिए उसके चेहरे की कोमल रेखाओं की झलक मिलती। इस तरह एक साल से भी कुछ अधिक गुजर गया।

एक दिन, सुबह के समय, अरीना उनके अध्ययनकक्ष में आई और अपनी आदत के अनुसार नीचे तक झुककर अभिवादन करते हुए बोली कि उसकी लड़की की आंख में तन्दूर से उड़कर एक चिंगारी गिर गई है। ज़रा उसे देख लें। सभी घर-जीवियों की भांति निकोलाई

पेत्रोविच भी थोड़ी-बहुत घरेलू डाक्टरी कर लेते थे और होमियोपैथी की दवाइयों का एक बकसा भी उन्होंने अपने पास रख छोडा था। उन्होंने हुक्म दिया कि रोगी को तुरत उनके पास लाया जाय। फ़ेनिचका ने जब यह सुना कि मालिक उसे बुला रहे हैं तो वह डर के मारे सिकुड़ गई, लेकिन फिर भी अपनी मां के साथ चली गई। निकोलाई पेत्रोविच उसे खींचकर खिड़की के पास ले गए और अपने दोनों हाथों में उसका सिर थाम लिया। उसकी सूजी हुई आंख को सावधानी से देखने के बाद उन्होंने एक लोशन तजवीज़ा, उसे ख़ुद तैयार किया और अपने रूमाल से धज्जियां फाड़कर बताया कि उसे किस तरह इस्तेमाल करना होगा। सब कुछ सुन लेने के बाद फ़ेनिचका जाने के लिए मुडी। "अरी पगली, मालिक का हाथ तो चूम!" अरीना ने कहा। निकोलाई पेत्रोविच ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया और, वह ख़ुद भी सकपका उठे थे, – उन्होंने उसके झुके हुए सिर की मांग पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। फ़ेनिचका की आंख जल्दी ही ठीक हो गई। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच के मन पर उसने जो छाप छोड़ी थी, वह जल्दी मिटनेवाली नहीं थी। उसका वह निश्छल, मधुर और ऊपर को उठा हुआ कम्पनशील चेहरा भुलाए न भूलता। हर घड़ी उसकी याद आती, अपनी हथेलियों में उसके मुलायम बालों के स्पर्श का वह अभी भी अनुभव करते, उसके उन अद्भुत, थोड़े खुले हुए होंठों का चित्र उनकी आंखों के सामने मूर्त हो उठता जिनके भीतर से ओस के मोतियों की भांति उसके दूधिया दांत सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। गिरजे में उन्होंने उसे अब और भी लगन के साथ देखना शुरू किया, उससे बातचीत करने की भी कोशिश की। पहले-पहल तो वह लाज के मारे जैसे धरती में समा जाना चाहती। एक सांझ – उस समय जब वह राई के खेत में से निकली एक संकरी

पगडंडी पर चले आ रहे थे—तो वह राई, वर्मवुड और कौर्नफ़्लावर के एक घने ऊंचे झुरमुट में छिप गई, इस डर से कि कहीं वह उनके सामने न पड़ जाय। लेकिन राई की सुनहरी जाली के बीच से उन्हें उसके सिर की झलक दिखाई दी। किसी नन्हे जंगली जीव की भांति वह उनकी ओर ताक रही थी।

"गुडईवनिंग, फ़ेनिचका! डरो नहीं, मैं तुम्हें काट नहीं खाऊंगा!" उन्होंने मुलायम स्वर में कहा।

"गुडईवनिंग," उसने अस्फुट आवाज में कहा और वहीं दुबकी रही।

धीरे-धीरे वह उनकी अभ्यस्त हो गई, लेकिन उनकी उपस्थिति में उसका शरमाना अभी दूर नहीं हुआ। सहसा उसकी मां अरीना हैजे में चल बसी। अब वह क्या करती? क़ायदे से रहना, सहज बुद्धि, और गम्भीरता उसने अपनी मां से प्राप्त की थी, लेकिन वह इतनी कम-उम्र, इतनी अकेली और निकोलाई पेत्रोविच इतने भले और इतने नम्र थे... इसके बाद जो हुआ सो प्रत्यक्ष है...

"हां तो भाई साहब दर असल तुमसे मिलने आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने उससे पूछा। "दरवाज़ा खटखटाया और बस चले आए?"

"हां, मालिक।"

"सच, यह बहुत अच्छा हुआ। लाओ, ज़रा मित्या से खेल लिया जाय।"

और निकोलाई पेत्रोविच ने उसे उछालना शुरू किया—इतना कि वह छत को छूता मालूम होता। बच्चा तो खुशी से किलकारी मारता और मां की जैसे जान सूख जाती। हर बार, जब भी वह

ऊपर जाता, वह उसके उघरे हुए छोटे छोटे पांवों को पकड़ने के लिए अपनी बांहें फैलाकर रह जाती।

उधर पावेल पेत्रोविच लौटकर अपने ठाटदार अध्ययन कक्ष में चले आए जिसकी दीवारों पर बहुत ही नफ़ीस सलेटी अबरी चढ़ी थी और रंगबिरंगे ईरानी कालीन पर हथियार लटके थे। गहरे रंग के हरे नुमाइशी मखमल की गद्दियों से लैस अखरोट की लकड़ी का फ़र्नीचर सजा था। एक रिनेसा किताबघर था जो पुराने काले बलूत की लकड़ी का बना था। एक शानदार डैस्क पर कांसे की मूर्तियां सजी थी और आगदानी के पास बैठने की बहुत ही सुहावनी जगह थी। अध्ययन कक्ष में आकर वह एक सोफ़े पर ढह गए और हाथों को सिर के नीचे रख निश्चल पड़े रहे और क़रीब क़रीब गहरी निराशा में डूबी नज़र से छत की ओर ताकते रहे। फिर, शायद दीवारों तक से अपने चेहरे का भाव छिपाने के लिए—या अन्य किसी वजह से—वह उठे और खिड़कियों के भारी पर्दे गिराने के बाद सोफ़े पर आ पड़े।

९

उसी दिन बज़ारोव का भी फ़ेनिचका से परिचय हो गया। आरकादी के साथ वह बाग़ में टहल रहा था और उसे यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कुछ पेड़, ख़ासतौर से बलूत के पौधे, क्यों अच्छी तरह नहीं पनप सके।

"तुम्हें यहां अधिकतर सफ़ेद चिनार, फर और शायद लैम के पेड़ लगाने और उनमें चिकनी उपजाऊ मिट्टी डालनी चाहिए थी। तुम्हारा वह कुंज अच्छा हरा-भरा है," उसने कहा, "कारण कि बबूल और लिलक के पौधों में अपने आपको स्थिति के अनुकूल ढालने की क्षमता

होती है। उन्हें अधिक पालने-पोसने की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन ठहरो, उधर कोई मालूम होता है!"

कुंज में फ़ेनिचका, दुन्याशा और मित्या मौजूद थे। बज़ारोव ठिठककर खड़ा हो गया। आरकादी ने, पुराने जान-पहचानी की भांति, अभिवादन में थोड़ा सिर झुका दिया।

"यह कौन है?" आगे बढ़ जाने पर बज़ारोव ने पूछा। "ओह कितनी सुन्दर!"

"कौन?"

"बिल्कुल प्रत्यक्ष है। केवल एक ही सुन्दर लड़की तो वहां है।"

आरकादी ने, कुछ परेशानी के साथ ही सही, थोड़े में उसे बता दिया कि फ़ेनिचका कौन है।

"ओह," बज़ारोव ने कहा, "बड़े मार्के की परख है उनकी—तुम्हारे पिता की। सच, मै मुग्ध हूं उनपर। यह वही कर सकते थे। लेकिन छोड़ो," उसने कहा और उसके पांव कुंज की ओर लौट चले, "उससे परिचय तो कर लें।"

"येवगेनी!" आरकादी ने सकपकाते हुए कहा। "खुदा के लिए इसमें अपनी टांग न अड़ाओ।"

"घबराओ नहीं," बज़ारोव ने कहा, "हम लोग कोई नये रंगरूट नहीं हैं, शहर के रहनेवाले हैं।"

फेनिचका के निकट पहुंच उसने अपनी टोपी उतारी और सलीके से झुककर अभिवादन करते हुए बोला:

"इजाज़त हो तो अपना परिचय दूं। मैं हूं आरकादी निकोलायेविच का मित्र—एक बहुत ही निरीह जीव!"

फ़ेनिचका बैंच पर से उठ खड़ी हुई और चुपचाप उसकी ओर देखती रही।

"बहुत ही प्यारा बच्चा है," बज़ारोव कहता गया। "चिन्ता न करो, इसे मेरी नजर नही लग सकती। अरे, इसके गाल इतने लाल क्यों है। क्या दात निकल रहे है?"

"हां, श्रीमान," फ़ेनिचका बुदबुदाई, "चार निकल चुके है, और अब फिर इसके मसूड़े फूले है।"

"जरा देखू... डरो नही, मैं डाक्टर हूं।"

बजारोव ने बच्चे को अपनी बांहो मे ले लिया। फ़ेनिचका और दुन्याशा दोनों हैरान थी कि बिना किसी प्रतिरोध या भय के वह उसके पास चला गया।

"ओह ठीक... सब ठीक। इसके दांत बड़े सुन्दर होंगे। अगर कुछ गड़बड़ हो तो मुझे ख़बर करना। और तुम... तुम तो अच्छी तरह हो न?"

"हां बिल्कुल अच्छी तरह। ख़ुदा का शुक्र है।"

"ख़ुदा का शुक्र... इससे बढ़कर और कुछ नहीं। और तुम कैसी हो?" दुन्याशा की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा।

दुन्याशा जो घर के भीतर भारी-भरकम तथा बाहर बहुत ही शैतान बन जाती थी, जवाब में खिलखिलाकर रह गई।

"बहुत ख़ूब! अच्छा तो यह लो, अब अपने पहलवान को संभालो।"

फ़ेनिचका ने बच्चे को उससे ले लिया।

"तुम्हारी गोद में यह कितना शान्त था," फ़ेनिचका ने धीमी आवाज़ में कहा।

"मेरे साथ सभी बच्चे शान्त रहते है," बज़ारोव ने जवाब दिया। "एक नन्ही चिड़िया मेरे कान में इसका मंत्र फूक गई थी।"

"बच्चे भांप जाते हैं कि उन्हें कौन प्यार करता है," दुन्याशा ने कहा।

"यही बात है," फ़ेनिचका ने समर्थन किया। "मित्या को ही लो। कुछ लोगों के पास वह कभी नही जाएगा, चाहे कितना ही फुसलाओ।"

"मेरे पास आएगा?" आरकादी ने पूछा। वह कुछ दूर खड़ा था, अब उनके निकट आ गया। उसने हाथ पसारकर उसे अपनी गोदी में लेना चाहा। लेकिन मित्या ने सिर झटककर पीछे कर लिया और ज़ोरों से चीख़ उठा। फ़ेनिचका बुरी तरह त्रस्त हो उठी।

"अगली बार आएगा, जब मुझे ज़रा और अच्छी तरह पहचान लेगा," आरकादी ने दुलार जताते हुए कहा, और दोनों मित्र वहां से चल दिए।

"भला क्या नाम बताया था तुमने उसका?" बज़ारोव ने पूछा।

"फ़ेनिचका... फ़ेदोसिया," आरकादी ने जवाब दिया।

"और उसका पितृ नाम? वह भी जानना चाहिए न?"

"निकोलायेवना।"

"Bene*। उसकी यह बात मुझे बड़ी पसंद आई कि वह सकपकाती नहीं। हो सकता है कि कुछ लोग इसे दोष समझें। एकदम वाहियात! भला वह क्यों सकपकाए? वह मां है—और यह बिल्कुल वाजिब है।"

"सो तो है," आरकादी ने कहा, "लेकिन मेरे पिता, तुम्ही देखो..."

"वह भी ठीक हैं," बजारोव ने बीच में ही कहा।

"लेकिन मैं ऐसा नहीं कह सकता।"

"समझा, एक अतिरिक्त वारिस तुम्हें पसंद नहीं।"

"मेरे सिर पर ऐसे विचारों को थोपते तुम्हें शर्म भी नहीं मालूम

---

*अच्छा। (लैटिन)—सं०

होती ?" आरकादी ने गर्म होते हुए जवाब दिया। "अपने पिता को इस वजह से मैं ग़लत नहीं कहता। मैं समझता हूं कि उन्हें उससे विवाह कर लेना चाहिए था।"

"ओह-ओ!" बज़ारोव ने शान्त भाव से कहा। "सो यही है हमारे विचारों की उदारता। तुम अब भी विवाह पर आस लगाए बैठे हो। मुझे तुमसे इसकी उम्मीद न थी!"

कुछ देर तक दोनों मित्र चुपचाप चलते रहे।

"मैंने तुम्हारे पिता का समूचा धंधा देखा है," बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया। "फ़ार्म के मवेशी गए-बीते हैं, घोड़े मरियल टट्टू बने है, इमारतें उन दिनों को पार कर चुकी हैं जब कि वे अच्छी थीं, नौकर-चाकर एकदम लोफरों का झुंड मालूम होते हैं, और तुम्हारा कारिन्दा – या तो वह पक्का बदमाश है या मूर्ख, – मैं कुछ ठीक से नहीं समझ सका कि वह क्या है।"

"आज तो तुम सबकी ख़बर लेने पर तुले हो, येवगेनी वसीलियेविच।"

"और तुम्हारे ये किसान जो इतने सीधे-सादे नज़र आते हैं, यह तुम निश्चय ही समझ रखो कि वे तुम्हारे पिता के कपड़े तक उतार लेंगे। यह कहावत तो तुम जानते ही हो – 'रूसी दहकान ख़ुदा को भी अपनी अण्टी में लिए घूमता है।'"

"ताऊजी की राय से मैं भी अब सहमत हो चला हूं," आरकादी ने कहा, "कि रूसियों के बारे में तुम्हारी राय सिवा काले पुचारे के और कुछ नहीं है।"

"इससे क्या? रूसियों के पक्ष में सबल बात यही है कि वह अपने बारे में बहुत ही बुरी राय रखता है। असल में तत्व की बात यह है कि दो और दो मिलकर चार होते हैं। बाक़ी सब भुलावा है।"

"तो क्या प्रकृति भी भुलावा है?" दूर क्षितिज के पास नीचे उतरते सूरज के मृदु आलोक से रंजित खेतों की पट्टियों की ओर उदास भाव से देखते हुए आरकादी ने पूछा।

"हां, यह प्रकृति भी भुलावा है—जिस रूप में कि तुम उसे समझते हो। प्रकृति उपासना का मन्दिर नहीं बल्कि एक कारखाना है और मानव इस कारखाने का एक मज़दूर है।"

तभी, घर की ओर से आते, संगीत के अलस स्वर उन्हें सुनाई दिए। कोई वायोलीन पर शुबर्ट कृत 'प्रत्याशाएं' की धुन बजा रहा था। बजाने में अनाड़ीपन भले ही हो, लेकिन हृदय जैसे उमड़ा पड़ रहा था। मनोहर गीत के रुपहले स्वर हवा में तैर रहे थे।

"यह क्या?" बजारोव ने पूछा।

"मेरे पिताजी हैं।"

"क्या तुम्हारे पिता वायोलीन बजाते है?"

"हां।"

"खूब। उनकी अब उम्र क्या होगी?"

"चवालीस।"

बज़ारोव सहसा हंस पड़ा।

"क्यों, हंस क्यों पड़े?"

"बाप रे! चवालीस वर्ष की उम्र, pater familias,* देहात का जीवन, और वायोलीन-वादन!"

बज़ारोव अभी भी हंस रहा था। लेकिन आरकादी—इस आदर्श मित्र का चाहे जितना भी रौब उसपर छाया हो—इस बार मुसकराया तक नहीं।

---

*परिवार का मुखिया। (लैटिन)—सं०

क़रीब दो सप्ताह गुजर गए। मारिनो का जीवन पूर्ववत अपने उसी ढर्रे पर चलता रहा। आरकादी ऐश व आराम के जीवन में मगन था और बज़ारोव काम करता था। घर के लोग उसके, उसकी आकस्मिक हरकतों और रंग-ढंग के, उसकी दो-टूक और मुहफट बोल-चाल के, आदी हो गए थे। सच तो यह है कि ख़ुद फ़ेनिचका इस हद तक उससे अपनत्व बरतती कि एक रात – उस समय जबकि मित्या को ऐंठन हो रही थी – उसने उसे सोते से जगवाया। उसने भी चूं-चां नहीं की, क़रीब दो घंटे तक वह उसके पास बैठा रहा, अपनी आदत के अनुसार आधा बतियाता और आधा जमुहाइयां लेता रहा, और बच्चे को उसने चंगा कर दिया। लेकिन पावेल पेत्रोविच, अपने हृदय की समूची शक्ति से, उससे घृणा करते थे। वह उसे दम्भी, गुस्ताख, मानव-द्रोही और कमीना समझते थे। उन्हें शक था कि बज़ारोव उनकी इज्ज़त नहीं करता – बल्कि कहिए कि वह उन्हें, पावेल किरसानोव को, नीची नजर से देखता है, उन्हें तुच्छ समझता है। निकोलाई पेत्रोविच पर उसका – इस युवक निहिलिस्ट का – कुछ रौब-सा छाया था। साथ ही उन्हें यह भी आशंका थी कि आरकादी पर उसकी संगत का कोई भला असर नही पड़ रहा है। लेकिन फिर भी वह उसकी बातें सुनने के लिए ख़ुशी से तैयार हो जाते, उसके भौतिक तथा रासायनिक प्रयोगों के दर्शक बनने से आनाकानी न करते। बज़ारोव अपने साथ एक खुर्दबीन लाया था और घंटों उसके साथ चिपका रहता था। नौकर-चाकर भी – बावजूद इसके कि उन्हें चिढ़ाने में उसे मज़ा आता था – उससे हिलमिल गए थे और उन्हें लगता जैसे वह उन्हीं की पांत का जीव हो, कुलीनों की पांत का नहीं। दुन्याशा उसके साथ

खिलखिलाने से बाज़ न आती और जब कभी उधर से गुजरती तो कनखियों से भेदभरी नज़र उसपर डालती। प्योत्र, जो ज़रूरत से ज़्यादा घमंडी और मूर्ख था, जो तुनुक मिजाजी में भौहें चढ़ाए मंडराता रहता था, जिसकी एक मात्र ख़ूबी यह थी कि वह सलीके से पेश आना जानता था, एक एक अक्षर मिलाकर पढ़ लेता था और जो अपनी आदत से मजबूर रह रहकर अपने कोट को कपड़े के झाड़न से बड़ी लगन से झाड़ता रहता था – इस प्योत्र तक की बत्तीसी चमक उठती जब बज़ारोव उसकी ओर नज़र डालता। और फ़ार्म में बसनेवाले बच्चों की बरात पिल्लों के झुड की भांति, 'डाक्टर बाबू' के साथ साथ लगी रहती थी। सिर्फ़ बूढ़ा प्रोकोफ़िच उसे कतई पसंद नहीं करता था, उसे 'पाजी' और 'लुच्चा' कहता था और उसके गलमुच्छों की ओर संकेत कर झाड़ी में छिपे सुअर से उसकी तुलना करता था। प्रोकोफ़िच, अपने ढंग से, पूरा रईस था – एकदम पावेल पेत्रोविच का जोड़ीदार!

साल के सबसे अच्छे, जून के प्रारम्भिक दिन शुरू हो गए। मौसम असाधारण रूप से बढ़िया था। खतरा था कि हैज़े का प्रकोप फिर से न फूट पड़े, लेकिन ज़िले के लोग उसके आदी-से हो गए थे। बज़ारोव आमतौर से तड़के ही उठता और डेढ़-दो मील तक निकल जाता – घूमने के लिए नही, खाली, बिना किसी मतलब, सैर करने का वह शौकीन नही था – बल्कि जड़ी-बूटिया और कीड़े-मकोड़े बटोरने के लिए। कभी कभी वह आरकादी को भी अपने साथ ले जाता। लौटते समय अक्सर कोई बहस छिड़ जाती जिसमें, अधिकतर, आरकादी को बुरी तरह मात खानी पड़ती, बावजूद इसके कि वही सबसे ज्यादा बोलता था।

एक दिन वापिस लौटने मे उन्हें अपेक्षाकृत देर हो गई। उन्हें खोजने निकोलाई पेत्रोविच बाग़ की ओर गए। कुज की बग़ल में पहुंचे ही थे कि सहसा उन्हें तेज़ी से उठते डगों और दोनों युवकों के बोलने

की आवाज़ सुनाई दी। वे कुंज की दूसरी ओर से आ रहे थे और निकोलाई पेत्रोविच को देख नहीं सकते थे।

"तुम मेरे पिताजी को अभी ढंग से जानते ही कहां हो?" आरकादी कह रहा था।

निकोलाई पेत्रोविच एकदम स्थिर खड़े हो गए।

"तुम्हारे पिता बहुत ही भले आदमी हैं," बज़ारोव ने कहा, "लेकिन पिछड़े हुए हैं। अब उनकी फाखता नहीं उड़ सकती।"

निकोलाई पेत्रोविच ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की... आरकादी ख़ामोश रहा।

'पिछड़े हुए' निकोलाई पेत्रोविच एक या दो मिनट तक निश्चल खड़े रहे, फिर उनके डग धीरे धीरे लौट चले।

"उस दिन मैंने देखा कि वह पुश्किन पढ़ रहे थे," बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया। "तुम्ही उन्हें समझाओ कि यह एकदम समय को बरबाद करना है। आख़िर वह बच्चे नहीं हैं, कम से कम अब तो इन वाहियातों से बाज़ आएं। हमारे इस युग में भी यह रोमांटिकता! उन्हें कोई ऐसी चीज़ पढ़ने को दो जो किसी मसरफ़ की हो।"

"तुम उन्हे क्या देते?" आरकादी ने पूछा।

"मेरी पूछते हो? मैं शायद बुखनर कृत 'स्टौफ़ उण्ड क्राफ़्ट'* से शुरू करता।"

"ठीक, मेरी भी यही राय है," आरकादी ने रजामन्दी प्रकट की। "'स्टौफ़ उण्ड क्राफ़्ट' लोकप्रिय शैली में लिखी हुई है।"

---

*'पदार्थ और शक्ति'। (जर्मन) – सं०

"कुछ सुना तुमने," उसी दिन, भोजन के बाद, अपने भाई के अध्ययन कक्ष में निकोलाई पेत्रोविच उन्हें बता रहे थे, "कि हम, तुम और मै, अब क्या हो गए है? हम अब पिछड़े हुए बन गए हैं, फाखता उडाने के हमारे दिन हवा हो चुके हैं। अच्छा, यही सही। हो सकता है कि बजारोव का कहना ठीक हो। लेकिन एक बात मुझे कहनी पड़ेगी जिसका मुझे भारी दुःख है। आशा करता था कि ठीक यही वह मौक़ा है जबकि आरकादी और मैं घनिष्ठ मित्र बन सकते हैं। लेकिन लगता है कि मैं पीछे पड़ गया हूं और वह आगे निकल गया है, और अब हम एक-दूसरे को समझ भी नहीं सकते!"

"तुमने कैसे जाना कि वह आगे निकल गया है?" पावेल पेत्रोविच ने व्यग्रता से कहा। "और जरा यह भी बताने की कृपा करो कि वह किस प्रकार हमसे भिन्न है? यह सारी खुराफ़ात उसके दिमाग में उस तुर्क ने – उस निहिलिस्ट ने – भरी है। मैं उससे – डाक्टर की उस मनहूस दुम से – घृणा करता हूं। अगर मुझसे पूछो तो वह निरा ढोंगी है। सच मानो कि अपने समूचे मेंढक-प्रेम के बावजूद शरीर-विज्ञान में भी उसकी कोई ख़ास गति नहीं है।"

"नहीं, भैया, नहीं, इतनी आसानी से उसे रद्द नही किया जा सकता। बज़ारोव चतुर और काफ़ी पढ़ा-लिखा आदमी है।"

"और भयानक रूप में स्वाभिमानी!" पावेल पेत्रोविच ने फिर अधीरता से कहा।

"हां," निकोलाई पेत्रोविच ने सहमत होते हुए कहा, "वह स्वाभिमानी बहुत है। लेकिन, मेरी समझ से, यह कोई ऐसी अनहोनी बात नहीं। फिर भी एक चीज़ मेरी समझ में नहीं आती। समय का साथ देने के लिए अपनी ओर से मैंने कुछ भी उठा नहीं रखा – किसानों को मैने बसा दिया है, एक फ़ार्म भी मैने शुरू किया है, समूचा

ज़िला मुझे 'लाल' कहता है; मैं पढ़ता हूं, अध्ययन करता हूं और, आमतौर से, हर आधुनिक चीज़ के लिए अपना दिमाग खुला रखता हूं, फिर भी वे कहते है कि मेरे फाखता उड़ाने के दिन बीत गए। और सच भाई, मैं ख़ुद भी कुछ ऐसा ही सोचने लगा हूं।"

"सो कैसे?"

"हां तो सुनो। तुम खुद ही फैसला करना। आज बैठा हुआ मैं पुश्किन की रचना पढ़ रहा था ... मुझे याद है, रचना का नाम था 'खानाबदोश'... तभी, एकदम अचानक, आरकादी मेरे पास आया और बिना कुछ कहे, और अपनी उसी सहृदय अनुकंपा-भरी नज़र से देखते हुए, कुछ ऐसी मुलायमियत से उसने मेरे हाथ से किताब ले ली मानो मैं कोई बच्चा हूं, और मेरे सामने एक दूसरी – जर्मन – पोथी रख दी... फिर वह मुसकराया और चला गया। पुश्किन की पुस्तक भी वह अपने साथ लेता गया।"

"बाप रे! और वह कौन-सी पुस्तक थी जो तुम्हें दे गया?"

"यह देखो।"

और निकोलाई पेत्रोविच ने अपनी पिछली जेब से बुखनर की बदनाम पुस्तक का नवां संस्करण निकालकर सामने कर दिया।

पावेल पेत्रोविच ने पुस्तक को अपने हाथों में लेकर उलट-पुलट कर देखा।

"हुंः!" वह भुनभुनाया। "आरकादी निकोलायेविच को तुम्हें शिक्षित करने की चिन्ता है, इसमें सन्देह नहीं। हां, तो तुमने इसे पढ़ने की कोशिश की?"

"की।"

"तो ...?"

"या तो मैं ख़ुद मूर्ख हूं, या यह पुस्तक निरी बकवास है। शायद मैं ही मूर्ख हूं।"

"तुम्हारा जर्मन का अभ्यास कुन्द तो नहीं हो गया, क्यों?"

"नही, मै जर्मन समझ लेता हूं।"

पावेल पेत्रोविच ने पुस्तक को फिर अपने हाथों में उलटा-पलटा और भौहों के नीचे से अपने भाई पर एक नजर डाली। लेकिन कहा कुछ नही। दोनों चुप रहे।

"हां, याद आया," आख़िर निकोलाई पेत्रोविच ने ख़ामोशी तोड़ी और, स्पष्ट ही, विषय को बदलने के लिए कहा: "कोल्याज़िन का मेरे पास एक पत्र आया है।"

"मातवेई इलिच का?"

"हां। ज़िला का सरकारी मुआइना करने की ग़रज़ से वह शहर आया है। अब वह एक बड़ा आदमी बन गया है। लिखा है कि कुटुम्बी के नाते वह हमसे मिलने के लिए इच्छुक है। उसने हम दोनों और आरकादी को शहर आने का बुलावा दिया है।"

"क्या तुम जा रहे हो?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नहीं। और तुम?"

"मैं भी नही। मेरे सिर पर क्या भूत सवार हुआ है जो बिना मतलब तीस-चालीस मील की धूल फांकूं। यह Mathieu* पूरी शान के साथ हमें अपना रौब दिखाना चाहता है। शैतान कहीं का। हमारे गए बिना भी उसकी आरती उतारनेवाले लोग वहां ढेरों मिल जाएंगे। बड़ा आदमी, प्रीवी कौन्सिलर, वाह! अगर मैंने नौकरी न छोड़ी होती और उसी मूर्खतापूर्ण घिस घिस में जुता रहता तो मैं अब तक एडजुटैण्ट जेनरल

---

* मातवेई। (फ़्रेंच) – सं०

हो जाता। फिर भी, यह न भूल जाना, कि तुम और मैं अब पिछड़े हुए लोग हैं!"

"हां भाई, अब समय आ गया है कि ताबूतसाज को बुलाकर अपने नाप का ताबूत बनवा डालें!" एक उसांस-सी छोड़ते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा।

"कुछ भी हो, मैं इतनी जल्दी कब्र मे सोने के लिए तैयार नही हूं," उनके भाई ने बुदबुदाकर कहा। "मुझे लगता है कि डाक्टर की उस दुम से अभी दो दो हाथ होना बाक़ी है।"

और दो दो हाथ उनमें हुए, उसी सांझ, चाय पीने के दौरान में। पावेल पेत्रोविच पहले से ही आस्तीन चढ़ाकर, बहस के मैदान में कूदने का दृढ़ निश्चय करके, ड्राइंगरूम में आए थे। दुश्मन पर टूट पड़ने के लिए उन्हें केवल एक बहाने की टोह थी, और बहाना मिलने में देर लगी। बज़ारोव, आमतौर से, गांव के इन 'खूसट चौधरियों' (किरसानोव बन्धुओं को वह ऐसा ही कहता था) की उपस्थिति में अधिक नहीं बोलता था और उस सांझ, कुछ अस्तव्यस्त-सा होने के कारण, वह चुपचाप एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाए जा रहा था। पावेल पेत्रोविच भीतर ही भीतर उमड़-घुमड़ रहा था, कोई राह न मिलने के कारण उसका दम घुटा जा रहा था। आखिर उसे मौक़ा मिल ही गया।

बातचीत के दौरान में पड़ोस के एक ज़मींदार का नाम उभर आया। बजारोव इस आदमी से सन्त पीतर्सबर्ग में मिल चुका था। बज़ारोव ने यों ही एक चुटकी में उसे उड़ा दिया:

"एक सड़ा हुआ और मनहूस रईस!"

"क्या मैं एक बात पूछ सकता हूं?" थरथराते हुए होंठों से पावेल पेत्रोविच ने पूछा। "तुम्हारे कहने के मुताबिक क्या 'सड़ा हुआ' और 'रईस' एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं?"

"मैंने 'मनहूस रईस' कहा था," अलस भाव से चाय की चुस्की लेते हुए बज़ारोव ने जवाब दिया।

"वही तो, और मै समझता हूं कि 'रईसों' के बारे में भी तुम्हारी राय वही है जो कि 'मनहूस रईसों' के बारे में। मै तुम्हें बता देना अपना फ़र्ज़ समझता हूं कि मै तुमसे सहमत नहीं हूं। साथ ही मैं यह कहने का भी साहस करता हूं कि हर कोई मुझे उदार विचारों का आदमी मानता तथा प्रगति का हिमायती समझता है। और ठीक इसी वजह से मैं रईसों की–सच्चे कुलीनों की–इज़्ज़त करता हूं। ज़रा याद करो, श्रीमान," (इन शब्दों को सुनते ही बज़ारोव की आंखें पावेल पेत्रोविच के चेहरे की ओर उठ गई) "हां, ज़रा याद करो, श्रीमान," उन्होंने और भी जोरों से दोहराया, "अंग्रेज़ी कुलीनों को। वे अपने अधिकारों को तिल-भर भी नहीं छोड़ते, और इसी लिए वे दूसरों के अधिकारों की इज़्ज़त करते है। उनकी मांग है कि लोग उनके प्रति अपने दायित्वों को पूरा करें, और ठीक इसी लिए वे दूसरों के प्रति ख़ुद अपने दायित्वों को पूरा करते हैं। कुलीनों के इस वर्ग न ही इंग्लैण्ड को उसकी आज़ादी दी है, और वह उस आज़ादी को ऊंचा उठाए है।"

"यह राग हम पहले भी सुन चुके हैं," बज़ारोव ने जवाब दिया। "लेकिन इस सबसे आप सिद्ध क्या करना चाहते हैं?"

"सुनिए जनाब, मै सिद्ध जो करना चाहता हूं वह यह है," (जब पावेल पेत्रोविच गुस्सा होते थे तो जान-बूझकर व्याकरण को तोड़ने-मरोड़ने लगते थे। उनकी यह सनक सिकन्दरी परम्परा का अवशेष थी। उन दिनों के अमीर-उमरा, उन विरल अवसरों पर जब कि वे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते थे, उनकी ज़बान बहुत ही भद्दा रूप धारण कर लेती थी, मानो वे कह रहे हों: हम देशज रूसी हैं तो क्या, लेकिन हम ग्रान्दी (अमीर-उमरा) भी तो हैं जिनके लिए व्याकरण का उल्लंघन

करना जायज़ है।) "हा तो मैं जो कुछ सिद्ध करना चाहता हूं वह यह है कि जब तक आदमी में आत्मसम्मान और निजी गौरव की भावना न हो—और ये भावनाएं कुलीनों में खूब विकसित रूप में मिलती हैं—तब तक सामाजिक... bien public* ...सामाजिक ढांचे की कोई सुरक्षित नींव नहीं हो सकती। व्यक्तित्व ही, समझे जनाब, मुख्य चीज़ है। व्यक्तित्व को चट्टान की भांति दृढ़ होना चाहिए, कारण यही वह नीव है जिसपर समूची इमारत खड़ी होती है। मिसाल के लिए मुझे यह भली भांति मालूम है कि तुम्हें मेरी आदतें, मेरा पहनावा, यहा तक कि मेरी निजी नफ़ासत भी, मजाक़ की चीज़ मालूम होती है। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि ये चीजें आत्मसम्मान का, कर्तव्य का—हां, जनाब, कर्तव्य का— विषय है। मैं देहात का, पिछड़े हुए क्षेत्र का, निवासी हूं। लेकिन मैं अपने आत्मसम्मान को, निजी गौरव की भावना को, तिलांजलि नही दूगा।"

"बुरा न मानें, पावेल पेत्रोविच," बज़ारोव ने कहा, "आप आत्मसम्मान की बातें करते हैं, और इधर-उधर बैठकर मक्खियां मारते हैं—समय गंवाते हैं। ज़रा यह तो बताइए कि इससे bien public का क्या हित होता है? यह काम तो आप आत्मसम्मान की भावना के बिना भी कर सकते हैं।"

पावेल पेत्रोविच का चेहरा पीला पड़ गया।

"यह बिल्कुल दूसरी बात है। और इस क्षण तुम्हारे सामने यह सफ़ाई देने के लिए मैं बाध्य नहीं कि मैं क्यों—जैसा कि तुम कहते हो—मक्खियां मारने में समय गंवाता हूं। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि कुलीनत्व एक सिद्धान्त की चीज़ है, और केवल अनैतिक या छिछले

---

* सामाजिक कल्याण। (फ़्रेंच)—सं०

दिमाग के लोग ही आजकल बिना सिद्धान्तों के जी सकते हैं। यहां आने के बाद अगले दिन मैंने आरकादी के सामने भी यही कहा था, और यही मैं आज तुमसे कह रहा हूं। क्यों, ठीक है न, निकोलाई?"

निकोलाई पेत्रोविच ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"कुलीनत्व, विचारों की उदारता, प्रगति, सिद्धान्त," बजारोव इधर कह रहा था, "ओह, विदेशी शब्दों की कितनी बड़ी ... और कितनी बेकार–फौज है यह! मुफ़्त में मिलें, तब भी रूसियों के लिए इनकी दरकार नहीं!"

"तो फिर उन्हें किस चीज़ की दरकार है–ज़रा यह तो बताओ? तुम्हारे कहने के मुताबिक तो हम मानवता से, उसके विधि-विधानों से, बाहर हैं। मेरी समझ से तो इतिहास के तर्क का यह तक़ाज़ा है कि..."

"किसे दरकार है आपके इस तर्क की? उनके बिना भी हमारा काम चल रहा है।"

"मतलब?"

"यही तो मैं कह रहा हूं। आपको, मेरा विश्वास है, भूख लगने पर मुंह में रोटी का निवाला डालने के लिए किसी तर्क का सहारा लेने की ज़रूरत नहीं होती। आख़िर इन हवाई विचारों से भला क्या काम निकलता है?"

पावेल पेत्रोविच ने हवा में अपने हाथ फेंके।

"इसके बाद तुम्हें समझना मेरे बूते से बाहर है। तुम रूसियों का अपमान करते हो। मेरी समझ में नहीं आता कि सिद्धान्तों और आदर्श वाक्यों से कोई कैसे इन्कार कर सकता है? आख़िर तुम किस चीज़ से प्रेरणा पाते हो?"

"यह तो, ताऊजी, मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि हम किसी अधिकारी को प्रमाण नहीं मानते।" आरकादी ने बीच में ही कहा।

"जिसे हम उपयोगी समझते हैं," बजारोव ने कहा, "उसी से हमें प्रेरणा मिलती है। आजकल खण्डन अन्य सब चीजों से अधिक उपयोगी है, इसलिए हम खण्डन करते हैं।"

"हर चीज़ का?"

"हां, हर चीज का।"

"क्या-आ? केवल कला, कविता का ही नही, बल्कि... उफ़, कहते भी ज़बान लरजती है...*"

"हां, हर चीज़ का।" विचलित कर देनेवाले अविचलित भाव से बज़ारोव ने दोहराया।

पावेल पेत्रोविच आंखें फाड़े उसकी ओर ताक रहे थे। उन्हें इसकी आशा नहीं थी। आरकादी के गाल खुशी से दमक रहे थे।

"लेकिन ज़रा इधर ध्यान दो," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "तुम हर चीज का खण्डन करते हो—या, सही शब्दों में, तुम हर चीज़ का नाश करते हो ... तब फिर निर्माण कौन करेगा?"

"वह हमारा काम नही ... पहले मलबा साफ़ करना है।"

"जनता की मौजूद स्थिति का यही तक़ाजा है," आरकादी ने गर्वीले अन्दाज से कहा। "हमें इस तक़ाज़े को पूरा करना है। अपने अहं के साथ खिलवाड़ करते रहने का हमें कोई अधिकार नहीं है।"

आरकादी की बात का अन्तिम अंश प्रत्यक्षतः बज़ारोव को अच्छा नहीं लगा। उसमें दार्शनिकता का—बल्कि कहिए कि रोमाण्टिकता का—पुट था। कारण, बजारोव दर्शन को भी रोमान्सवाद मानता था। लेकिन उसने अपन युवा शिष्य का खण्डन नहीं किया।

"नहीं, हर्गिज़ नहीं!" सहसा आवेश में आते हुए पावेल

---

*यहां तत्कालीन शासन-व्यवस्था से लक्ष्य है।—सं०

पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा। "मैं यह मानने के लिए कतई तैयार नहीं कि तुम लोग सचमुच रूसी जनता को जानते हो, उसकी ज़रूरतों और आशा-आकांक्षाओं के प्रतिनिधि हो। नहीं, रूसी जनता वह नहीं है जैसा कि तुम उसकी कल्पना करते हो। उसके मन में परम्परा के प्रति श्रद्धा का भाव है, वह पितृसत्ता पर आधारित है, बिना आस्था के वह जी नहीं सकती..."

"यह सब लेकर मुझे झगड़ा करने की ज़रूरत नहीं," बज़ारोव ने बीच में ही कहा। "बल्कि, मैं तो आपसे सहमत होने तक आगे बढ़ सकता हूं कि आपने जो कहा वह ठीक है।"

"अगर ऐसा है तो फिर ..."

"फिर यह कि इससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता।"

"यही तो, इससे कुछ भी सिद्ध नही होता," शतरंज के एक पक्के खिलाड़ी की भांति जो अपने प्रतिपक्षी की घातक चाल को पहले ही भांप चुका है और इसलिए ज़रा भी विचलित नहीं है, आरकादी ने भी स्वर में स्वर मिलाया।

"यह तुम कैसे कहते हो?" पावेल पेत्रोविच ने आश्चर्य से हकलाते हुए कहा। "कुछ भी कैसे सिद्ध नहीं होता? तो तुम अपने देश की जनता के खिलाफ़ जा रहे हो?"

"जा भी रहा हूं तो इससे क्या?" बज़ारोव ने चिल्लाकर कहा। "बादलों की गरज सुनकर लोग विश्वास करते हैं कि पैगम्बर इलियास आकाश में अपना रथ दौड़ा रहे हैं। अब बोलिए? क्या कहेंगे कि मुझे भी इससे सहमत होना चाहिए? हां, वे रूसी है, लेकिन क्या मैं भी रूसी नहीं हूं?"

"नहीं, तुम रूसी नहीं हो। तुमने जो कुछ कहा, वह इसका साक्षी है। मैं तुम्हें रूसी नही मान सकता।"

"मेरे दादा हल चलाते थे," बजारोव ने उद्धत गर्व से कहा। "अपने यहां के किसी दहकान से पूछ देखिए कि हममें से किसे वह अधिक तत्परता के साथ अपना देश-भाई मानने के लिए राजी होता है— आपको, या मुझे? और तो और, आप यह तक नहीं जानते कि एक दहकान से कैसे बातचीत की जाती है।"

"और तुम एक साथ दोनों काम कर सकते हो—बातचीत भी, और घृणा भी।"

"अगर उसमें घृणा की बात हो तो? आप मेरे दृष्टिकोण पर आगबबूला होते हैं, लेकिन यह आपने कैसे समझ लिया कि मैंने इसे यों ही कहीं से अपना लिया है, और यह कि यह भी ठीक उसी राष्ट्रीय भावना से उद्भूत नहीं है जिसकी आप इतनी जी-जान से हिमायत करते हैं?"

"मानता हूं। लेकिन इन निहिलिस्टों से किसी का क्या भला हो सकता है?"

"जहां तक उनसे भला होने या न होने का सम्बन्ध है, इसका निर्णय करना हमारा काम नहीं। यों, अगर धृष्टता न समझी जाय तो मैं कह सकता हूं कि आप भी, एक तरह से, अपने आपको उपयोगी समझते हैं।"

"बस बस, सज्जनो, व्यक्तिगत आक्षेप नहीं!" अपनी जगह से उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा।

पावेल पेत्रोविच मुसकराए, और अपने भाई के कंधे पर हाथ रखते हुए दबाकर उन्हें फिर कुर्सी पर बैठा दिया।

"आप निश्चिन्त रहें," उन्होंने कहा, "मैं अपनी सुध नहीं बिसरा सकता—आत्मसम्मान की ठीक उसी भावना के कारण जिसका हमारे मित्र ... हमारे यह डाक्टर मित्र ... इतनी बेरहमी से मज़ाक़

उड़ाते हैं। माफ़ करना," बज़ारोव की ओर मुड़ते हुए उन्होंने फिर कहना शुरू किया, "कहीं आपको यह ग़लतफ़हमी तो नहीं कि आप अपने इन सिद्धान्तों को नया समझ बैठे है? अगर ऐसा है तो आप अपने को धोखा दे रहे हैं। जिस भौतिकवाद का आप प्रचार करते हैं, उसकी हवा अनेक बार पहले भी बह चुकी है, लेकिन वह कभी अपने पांव न जमा सकी ..."

"फिर वही विदेशी राग!" बज़ारोव बीच में ही बोला। उसका दिमाग़ अब गरमा चला था और उसके चेहरे का रंग कच्चे ताम्बे जैसा हो गया था। "सबसे पहली बात तो यह कि हम किसी चीज़ का प्रचार नही करते, हमारा यह चलन नहीं है..."

"तो आप क्या करते हैं?"

"बताता हूं। अभी एकदम हाल तक हम अपने अफ़सरों की घूसखोरी की, सड़कों के अभाव की, व्यापार की दयनीय स्थिति की तथा न्याय की अदालतों की चर्चा करते थे ..."

"ओह, ठीक, ठीक। बेशक, आप लोग – अगर मै भूलता नही तो – पर-निन्दक है। क्यों ठीक यही कहा जाता है न? तुम्हारी पर-निन्दा की बहुत-सी बातों से मैं ख़ुद भी सहमत हूं, लेकिन ..."

"फिर हम चेते। हमने देखा कि अपनी बुराइयों को लेकर सिर्फ़ बातें बघारना अपने ही गले की ताक़त नष्ट करना है। छिछलेपन और कोरे सिद्धान्तवाद के सिवा इससे और कुछ पल्ले नहीं पड़ता। हमने देखा कि हमारे चतुर साथी – वे जो आगे बढ़े हुए और पर-निन्दक कहलाते थे – किसी काम के नहीं हैं, और यह कि कला के बारे में, अचेतन सृजन-शक्ति के बारे में, धारासभावाद, न्यायतंत्र और जाने अन्य कितनी अलायों-बलायों के बारे में बेकार की बातें बघारकर हम लोग अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं, सो भी उस समय जब कि सीधे सीधे

लोगों के लिए दो-जून रोटी मोहैया करने का सवाल हमारे सामने था, जबकि घोर अंधविश्वास हमारा गला घोट रहे थे, जबकि हमारी सारी स्टाक-कम्पनियां केवल इसलिए धूल में मिल रही थी कि ईमानदार लोगों का अकाल पड़ गया था, जबकि दासों की मुक्ति तक से – जिसका सरकार इतना ढोल पीट रही थी – कोई भला होनेवाला नहीं था, कारण ताड़ी के एक कुल्हड़ में डूबने के लिए हमारा दहकान बड़ी ख़ुशी से अपना घर तक फूकने को तैयार हो जाएगा!"

"सो," पावेल पेत्रोविच ने टोका। "सो इन सब बातों को अपने दिल में बैठाने के बाद अब आपने यह निश्चय किया है कि किसी भी चीज को संजीदगी से हाथ नही लगाएंगे।"

"और हमने निश्चय किया कि किसी भी चीज को हाथ नही लगाएंगे," बज़ारोव ने, गम्भीर मुद्रा में, पलटकर उन्ही के शब्दों को वापिस फेंक दिया। एकाएक, इस कुलीन के सामने अपनी ज़ुबान के इस तरह बेकाबू हो जाने पर उसे अपने से बड़ी कुढ़न मालूम हुई।

"और निन्दा के सिवा और कुछ नही करेगे?"

"हां, निन्दा के सिवा और कुछ नहीं करेंगे।"

"और इसी को निहिलिज़्म कहते है?"

"हां, इसी को निहिलिज़्म कहते है," बज़ारोव ने, इस बार तीखी उद्दंडता के साथ, दोहराया।

पावेल पेत्रोविच ने अपनी आंखों को थोड़ा सिकोड़ लिया।

"तो यह बात है!" विलक्षण रूप से शान्त आवाज़ में उन्होंने कहा। "निहिलिज़्म हमारे सभी रोगों की दवा है और आप – आप लोग हमारे मुक्तिदाता, हमारे नायक हैं। ठीक। लेकिन, आप दूसरों को आड़े हाथों क्यों लेते हैं – मिसाल के लिए जैसे

पर-निन्दकों को? क्या आप भी उन सब लोगों की तरह ही बलबलाते नहीं फिरते?"

"हममें और दोष चाहे जो हों, लेकिन यह हममें नहीं है," बजारोव ने बुदबुदाते हुए कहा।

"नहीं है तो फिर? क्या तुम लोग अमल करते हो? अमल करने का इरादा रखते हो?"

बजारोव ने कोई उत्तर नही दिया। पावेल पेत्रोविच ने एक बल-सा खाया, लेकिन अपने को संभाल लिया।

"हुं:! अमल करना, तोड़ना-गिराना... " वह कहते गए, "लेकिन जब क्यों या किस लिए तक मालूम न हो, तब तोड़ने-गिराने के काम में क्यों कर जुटोगे?"

"हम एक शक्ति हैं जिसका काम तोड़ना-गिराना है!" आरकादी ने कहा।

पावेल पेत्रोविच ने अपने भतीजे को एक नज़र तौला और व्यंग से मुसकराए।

"हां, एक शक्ति—एक निर्बाध शक्ति," अपने आपको सीधा करते हुए आरकादी ने कहा।

"कम्बख़्त छोक़रे!" अपने को और अधिक क़ाबू में न रख पावेल पेत्रोविच उबल पड़े। "कम से कम एक बार रुककर तुझे यह तो सोचना चाहिए कि अपने इस रटे-रटाए 'सत्य' को दोहराकर रूस में किस चीज का समर्थन तू कर रहा है। तेरी यह बात फ़रिश्तों तक का सब्र आज़माने के लिए काफ़ी है। शक्ति! शक्ति तो जंगली कालमीकों और मंगोलों में भी है, लेकिन कौन चाहता है उसे? हम सभ्यता को अपने हृदयों में संजोए हैं, समझे जनाब, और साथ ही सभ्यता के सुफलों को भी। यह न कहना कि ये सुफल नगण्य हैं। एक

रद्दी से रद्दी चित्रकार भी, un barbouilleur*, एक सस्ता पियानोवादक भी, जो सिर्फ पाच कोपेक में रात को महफ़िल में पियानो बजाने चला आता है, तुम लोगों से कही अच्छा है। कारण, वह सभ्यता का प्रतिनिधि है, बर्बर मंगोल शक्ति का नही। तुम लोग अपने आपको एक प्रगतिशील तत्व समझते हो, लेकिन तुम किसी कालमीकी तम्बू के जीव बनने के सिवा और किसी लायक़ नही हो। शक्ति! और शक्ति के पुजारी महानुभावो, यह न भूलना कि एक ओर तुम्हारी बिरादरी जो सिर्फ़ मुट्ठी भर लोगों की है, वहा दूसरी ओर लाखों लोग है। उनके पवित्र विश्वासो को तुम कभी अपने पांवो तले नही रौंद सकोगे! हां, वे लोग तुम्हें कुचलकर रख देंगे!"

"अगर हम कुचल दिए जाते है तो अपने ही किए का फल भुगतेंगे," बज़ारोव ने कहा। "लेकिन यह कहना आसान है, करना कठिन ... फिर हम इतने कम भी नहीं है जितने कि आप सोचते है।"

"क्या-आ? क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि तुम समूची क़ौम के विरुद्ध खड़े हो सकोगे?"

"दो पैसे की मोमबत्ती ने ही समूचे मास्को को जलाकर खाक कर दिया था, यह आपसे छिपा नही है," बज़ारोव ने जवाब दिया।

"समझा। पहले तो यह रौब कि हम ही है जो दुनिया को प्रकाश देते है, फिर हर चीज़ की खिल्ली उड़ाना। सो यह है वह नवीनतम 'हवा' जो नयी पौध को लगी है, अनुभवहीन छोकरों की कल्पना को जो अपने साथ बहा ले जाती है। इन्ही युवकों में से एक, वह देखो, ठीक तुम्हारी बग़ल में विराजमान है, देखो न, जैसे

---

*वह जो सिर्फ़ पुचारा फेरना जानता है। (फ़्रेंच) —सं०

तुम्हारे पांव की धूल अपने माथे लगाने के लिए तैयार हो!" (भौहों में बल डाल आरकादी ने मुंह फेर लिया।) "और यह महामारी काफ़ी व्यापक रूप से फैल भी चुकी है। मैंने सुना है कि रोम में हमारे चित्रकार वैटीकन के भीतर कभी पांव तक नही रखते। रैफ़ल को वे निरा पोंगा समझते हैं, क्योंकि–तुम्ही देखो न –वह चित्रकला का माना हुआ आचार्य है जबकि वे ख़ुद बुरी तरह बेजान और बंजर हैं। उनकी कल्पना, लाख सिर मारने पर भी, 'फौवारे के पास खड़ी युवती' से आगे उन्हें नहीं ले जाती। और उसे भी वे अत्यन्त घिनौने ढंग से चित्रित करते है। अब, अगर तुम्हारी चले तो, तुम इन्ही को आदर्श कहोगे? क्यों, ठीक है न?"

"मेरे अनुसार," बजारोव ने कहा, "रैफ़ल दो कौड़ी का भी नही है, और न ही मै उन्हें अच्छा कहूंगा।"

"वाह, खूब! कुछ सुना, आरकादी ... यह आज के युवकों के बात करने का नमूना है! भला, क्यों न वे तुम्हें अपना आदर्श मानें? पहले युवा लोगों को अध्ययन करना होता था, वे नही चाहते थे कि उन्हें कोई बुद्धू समझे। सो वे बरबस गहरी मेहनत करते थे। लेकिन अब तो केवल इतना ही उगल देना काफ़ी है–'दुनिया की हर चीज़ बकवास है!' और बस, करिश्मा हो गया। वाहवाही के लिए आपस में ही एक-दूसरे की पीठ ठोंक ली। सच तो यह है कि कल तक जो कूढ़-मग़ज़ थे वे ही अब–रातोंरात–निहिलिस्ट बन बैठे हैं।"

आरकादी तमतमा उठा, उसकी आंखें आग उगलने लगीं। लेकिन बज़ारोव अविचलित था।

"सो, निज गौरव की अपनी सुप्रशंसित भावना को भी आपने ताक पर रख दिया," बजारोव ने कहा। "लगता है कि बहस कुछ ज़रूरत से ज्यादा आगे बढ़ गई ... अच्छा हो कि उसे बंद कर दिया

जाय। और फिर," उठते हुए बज़ारोव ने कहा, "मैं आपसे सहमत होने के लिए भी तैयार हूं। लेकिन तभी जब हमारे इस राष्ट्रीय जीवन के सामाजिक या घरेलू क्षेत्र मे आप हमें एक भी ऐसी संस्था दिखा देंगे जिसे एकदम और अत्यन्त बेरहमी के साथ रद्द करने की जरूरत न हो।"

"एक नही, मै तुम्हे लाखो ऐसी संस्थाएं दिखा सकता हूं," पावेल पेत्रोविच ने चीख़कर कहा, "हां, लाखो। मिसाल के लिए हमारी गांव की बिरादरी को ही लो।"

बज़ारोव के होठों पर घृणा से बल पड़ गए।

"जहां तक गांव की बिरादरी का सम्बंध है," उसने कहा, "अच्छा होता अगर अपने भाई से ही पूछ लेते। गांव की बिरादरी का, एक-दूसरे के प्रति दायित्व का, दारूबंदी और इसी तरह के अन्य ढकोसलों का, मेरी समझ में उन्हें काफ़ी निजी ज्ञान है।"

"और परिवार? हमारे किसानों में परिवार जिस रूप में आज भी मौजूद है, उसके बारे में क्या कहते हो?" पावेल पेत्रोविच चिल्ला उठे।

"यह भी एक ऐसा विषय है जिसे, मेरी समझ में अधिक बारीकी से जांचना ख़ुद आपके ही हित में अच्छा न होगा। शायद अपनी ही पतोहू से मुंह काला करने की बात आपसे छिपी न होगी। मेरी बात मानिए, पावेल पेत्रोविच, और एक-दो दिन का समय ज़रा ख़र्च कीजिए, मेरा दावा है कि आप एक भी संस्था आसानी से खोजकर सामने नहीं रख सकेंगे। हमारे सभी वर्गों और श्रेणियों को देख डालिए, एक एक की ध्यान से खोजबीन कीजिए, और इस बीच आरकादी और मैं..."

"हर चीज़ की ख़िल्ली उड़ाते रहें, यही न?" पावेल पेत्रोविच ने बीच में ही कहा।

"नहीं, मेंढकों की चीर-फाड़ करें। चलो, आरकादी। अच्छा नमस्कार।"

दोनों मित्र चले गए। दोनों भाई, अकेले रह जाने पर, शुरू में कुछ देर तक चुपचाप केवल एक-दूसरे को देखते रहे।

"देखा तुमने," आखिर पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "ऐसी है हमारी यह युवा पीढ़ी। ऐसे हैं हमारे ये उत्तराधिकारी!"

"उत्तराधिकारी," निकोलाई पेत्रोविच ने उदासी से एक लम्बी सांस भरते हुए दोहराया। बहस के समूचे दौरान में वह जैसे काटों पर बैठे थे और नज़र छिपाकर, व्यथित भाव से, जब-तब आरकादी की ओर देख लेते थे। "जानते हैं भाई साहब, मैं क्या सोच रहा था? एक बार अपनी प्यारी अम्मा से मेरा झगड़ा हुआ। वह थीं कि बस चिल्लाए जाती थीं, और मेरी एक नही सुनती थी ... आखिर मैंने उनसे कहा कि वह मेरी बात नही समझ सकतीं, कि हम दो भिन्न पीढ़ियों के जीव हैं। वह बुरी तरह कटकर रह गई, और मैंने सोचा—'और चारा भी क्या है। गोली कड़ुवी ज़रूर है, पर बिना निगले निस्तार नहीं।' वैसे ही अब हमारी बारी है, और हमारे उत्तराधिकारी हमसे कह सकते हैं: 'तुम हमारी पीढ़ी के नहीं हो। यह कड़ुवी गोली निगलनी ही पड़ेगी।'"

"तुम कुछ ज़रूरत से ज्यादा भले और विनयशील हो," पावेल पेत्रोविच ने प्रतिवाद किया। "इसके प्रतिकूल मेरा विश्वास है कि इन युवा लोगों की अपेक्षा तुम और मैं कहीं ज़्यादा सही हैं, हालांकि हम—शायद—अपने आपको पुराने ढंग से व्यक्त करते है, vieilli*, और हममें वह मुंहजोरी नहीं है जो कि उनमें है... लेकिन आज की यह नयी पीढ़ी कितनी मुहज़ोर है। अगर तुम इनमें से किसी से पूछो—'बोलो, कौन-सी मदिरा लोगे—लाल या सफ़ेद?'

---

* पुराने ढंग से। (फ़्रेंच)—सं०

तो वह बहुत ही गहरी आवाज़ में और चेहरे को कुछ ऐसा गम्भीर बनाकर, मानो उस क्षण सारा भूमण्डल उसी की धुरी पर घूम रहा हो, कहेगा – 'जी, मेरा रंग तो लाल है...'"

"क्या आप और चाय लेंगे?" तभी, दरवाजे में से झांकते हुए फ़ेनिचका ने पूछा। जब तक बहस की आवाज आती रही, वह ड्राइंगरूम में आने का साहस नहीं कर सकी थी।

"नहीं। उनसे कहो, समोवार यहा से उठा ले जाए।" उससे मिलने के लिए उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने जवाब दिया। पावेल पेत्रोविच ने संक्षेप में "Bon soir" * कहा और अपने अध्ययन-कक्ष में चले गए।

११

आधे घंटे बाद निकोलाई पेत्रोविच बाग़ में निकल आए, अपने उसी प्रिय कुज में। उदास विचारों ने उन्हें घेर लिया। केवल अब उन्होंने पूरी तीव्रता से अनुभव किया कि वह और उनका लड़का अलग जा पड़े हैं। उन्होंने देखा कि समय के साथ साथ स्वरों की यह भिन्नता, यह दरार, उत्तरोत्तर अधिक होती जाएगी। इसका मतलब यह कि जाड़ों के दिनों में सन्त पीतर्सबर्ग में दिन-रात नयी पुस्तकों में उनका सिर खपाना बेकार हुआ, बेकार ही वह युवा लोगों की बातों को इतना कान लगाकर सुनते थे और उनकी बहसों की तेज़ रवानी में अपनी ओर से भी एकाध शब्द डालकर इतनी ख़ुशी का अनुभव करते थे। "भाई साहब कहते हैं कि हम सही हैं," उन्होंने सोचा। "दम्भ की बात नहीं, मैं सचमुच यह सोचता हूं कि वे लोग

---

* शुभ संध्या। (फ़्रेंच) – सं०

हमसे भी कहीं ज्यादा सत्य से दूर है, फिर भी मैं अनुभव करता हूं कि उनके पास कुछ है जो हमारे पास नहीं है, उनका पक्ष हमसे प्रबल है... क्या इसलिए कि उनके पास युवावस्था है? नही, केवल इतना ही नहीं। तो क्या इसलिए कि उनमें कुलीनता का वह दम्भ नही है जो कि हममें है?"

निकोलाई पेत्रोविच का सिर झुककर उनके सीने को छूने लगा। उन्होंने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"लेकिन कविता को रद्द करना," उन्होंने फिर सोचना शुरू किया, "कला और प्रकृति के प्रति अनुभूतिशून्य होना ..."

और उन्होंने अपने चारों ओर देखा, मानो यह हृदयंगम करना चाह रहे हों कि प्रकृति के प्रति कोई कैसे अनुभूतिशून्य हो सकता है। सांझ घिरती आ रही थी। सूरज आस्पेन वृक्षों के एक छोटे से झुरमुट के पीछे छिप गया था जो बाग़ से कोई एक-तिहाई मील दूर होगा। उसकी छाया निस्पंद खेतों को पार कर लगातार रेंगती आ रही थी। झुरमुट की बग़लवाली सड़क काली पट्टी की भांति मालूम हो रही थी और सफ़ेद टट्टू जैसे घोड़े पर सवार एक किसान धीमी चाल से उसपर चला आ रहा था। हालांकि वह झुट-पुटे में था, फिर भी उसका समूचा आकार-प्रकार साफ़ दिखाई पड़ रहा था, यहां तक कि वह थेगली भी जो उसके कंधे पर पड़ी थी। फुर्ती से उठती घोड़े की अलग अलग टांगें बड़ी चित्रमय मालूम हो रही थीं। दूर ओट में छिपे सूरज की किरनें झुरमुट को बींधती हुई आस्पेन वृक्षों के तनों को कुछ ऐसी गुलाबी आभा में रंग रही थीं कि वे सनोवर के वृक्षों जैसे मालूम होते थे; उनकी हरियाली ने मानो नीली चादर ओढ़ ली थी। ऊपर, पीलापन लिए नीला आकाश छिपते हुए सूरज की आभा से धुंधला गुलाबी होता जा रहा था। ऊंचे, खूब ऊंचे अबाबीलों के झुंड उड़ रहे थे। वायु थम गई थी। इक्की-दुक्की पीछे छूटी मधु-मक्खियां, लिलक के

फूलों के पास अभी तक अलस और उनीदे भाव से भनभना रही थीं। नीचे लटक आई एक एकाकी टहनी पर मच्छरो और भुनगों की एक पांत टूटी पड़ रही थी। "ओह मेरे भगवान, कितना सुन्दर है यह सब!" निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा, और उनके प्रिय छन्द उनके होंठों पर थिरक आए, लेकिन तभी आरकादी तथा, 'स्टौफ़ उण्ड क्राफ़्ट' की याद ने जैसे उनका गला घोंट दिया। उनका गुनगुनाना रुक गया, और वह वैसे ही स्थिर बैठे रहे—उदास और सुहानी तन्मयता में डूबे हुए। विचारों-स्मृतियों में बहना उन्हें अच्छा लगता था, देहात के जीवन ने उनमें इस प्रवृत्ति को विकसित कर दिया था। अभी उस दिन, छोटी-सी सराय में बैठे जब वह अपने लड़के की बाट जोह रहे थे, तब भी वह इसी प्रकार दिवा-स्वप्नों में रम गए थे। लेकिन तब से अब में एक परिवर्तन आ गया है। उन सम्बंधों ने जो तब धुंधले थे, अब एक आकार—सुनिश्चित आकार—ग्रहण कर लिया है। उन्हें एक बार फिर अपनी मृत पत्नी की याद हो आई, लेकिन घरेलू पत्नी और घर की मालकिनवाले उस रूप में नहीं, जिससे कि वह इतने बरसों से परिचित थे—बल्कि एक लोचदार युवती के रूप में जिसकी आंखों में निश्छल कौतुक खेलता था, जिसकी आंखें बड़ी मासूमियत से कुछ पूछती नजर आती थीं और जिसकी बच्चों जैसी कोमल गरदन पर कसी हुई चोटी झूलती थी। उन्हें अपने पहले मिलन की याद हो आई। वह तब पढ़ते थे। निवासालय के ज़ीने पर उनकी उससे मुठभेड़ हुई। अनजाने उससे टकराने पर माफ़ी मांगने के लिए वह मुड़े और बड़ी मुश्किल से, अचकचाते हुए, इतना ही उनके मुंह से निकल सका: "Pardon, monsieur*!" उसने अपना सिर झुका लिया, होंठों-ही-होंठों में

---

* माफ़ करना, श्रीमान! (फ़्रेंच)—सं०

मुसकराई और फिर, जैसे एकाएक डरकर, भाग निकली और ज़ीने के एक मोड़ पर रुककर निकोलाई पेत्रोविच पर उसने एक तेज़ नज़र डाली, अपनी मुद्रा को उसने कुछ गम्भीर-सा बनाया और उसके गाल लाल हो उठे। और फिर, डरते-सहमते, शुरू शुरू का वह मिलना-जुलना, अधबोले शब्द और अधखुली मुसकानें, असमंजस, उदासी, चाहतें, और अन्त में बेसुध कर देनेवाला वह उल्लास ... सब जाने कहां लोप हो गए? वह उनकी पत्नी बनकर घर में आई और उन्होंने वह सुख देखा जो दुनिया में बिरलों को ही नसीब होता है ... "लेकिन," उन्होंने सोचा, "सुख के वे पहले मधुर क्षण, क्यों नहीं वे इतने अमर हो सके कि चिरकाल तक जीवित रहते?"

उन्होंने अपनी भावनाओं का विश्लेषण करने का प्रयत्न नहीं किया, वह शान्ति और सुख से भरपूर उन दिनों को किसी ऐसी चीज से बांध रखना चाहते थे जो स्मृति से ज्यादा मज़बूत हो, वह एक बार फिर अनुभव करना चाहते थे जैसे मरीया उनके पास आकर खड़ी हो गई हो, जैसे वह उसके सुहावने स्पर्श का अनुभव कर रहे हों, उसकी सांसें उन्हें छू रही हों, और उन्हें लगा जैसे मरीया की मौजूदगी उन्हें अभिभूत करती जा रही है...

तभी, कहीं पास से ही, फ़ेनिचका की आवाज़ सुनाई दी:

"निकोलाई पेत्रोविच, कहां हैं आप?"

वह चौंक उठे। लेकिन वह त्रस्त नहीं हुए, न ही उन्होंने कोई घबराहट अनुभव की... कहां उनकी पत्नी, और कहां फ़ेनिचका; दोनों की तुलना करने की बात कभी सपने तक में उनके दिमाग़ में नहीं आती थी। लेकिन उन्हें इसका खेद था कि फ़ेनिचका ने उन्हें खोज निकाला। उसकी आवाज़ ने उन्हें फिर वास्तविकता में ला पटका—पके हुए बालों और ढलती हुई आयु की वास्तविकता में ...

जिस जादुई दुनिया का जाल अतीत की धुंधली तरंगों से उन्होंने बुना था और जिसमें वह अब प्रवेश करने जा ही रहे थे, ग़ायब हो चुकी थी।

"यहां हूं," उन्होंने जवाब दिया। "तुम चलो, मैं अभी आया।" साथ ही, बिजली की भांति, उनके दिमाग़ में कौंधा: "ओह, यही तो है वह अभिजात्य का—कुलीनत्व का—दम्भ, जो छोड़े नहीं छूटता!" फ़ेनिचका ने, बिना कुछ कहे, झांककर देखा और ग़ायब हो गई। उन्हें यह देखकर अचरज हुआ कि वह सपनों में ही खोए रहे और रात घिर आई। चारों ओर अंधेरा और निस्तब्धता छाई थी। और फ़ेनिचका का चेहरा जो इतना छोटा और कुम्हलाया-सा दिख रहा था, तैरकर विलीन हो गया। घर लौटने के लिए वह उठे, लेकिन उनका हृदय कुछ इतना तरल हो उठा था और भावों से इतना भरा था कि वह बाग़ में ही धीरे धीरे टहलने लगे। कभी वह, चिन्तित-से, धरती की ओर देखते, कभी उनकी आंखें आकाश की ओर उठ जातीं जहां सितारों के झुरमुट चमक और टिमटिमा रहे थे। वह टहलते रहे, थककर एकदम चूर भी हो गए, लेकिन बेचैनी की वह भावना जो उनके हृदय को घेरे थी—एक तरह की ललक, एक धुंधली, उदासी का संचार करनेवाली व्यग्रता—फिर भी कम नहीं हुई। ओह, अगर बज़ारोव को यह मालूम हो जाता कि इस समय उनके अन्तर में क्या हलचल मची है, तो वह कितनी खिल्ली उड़ाता! और आरकादी भी इसका समर्थन न करता। उनकी आंखों में आंसू उमड़ आए, अवांछित आंसू,—वह, चवालीस साल का आदमी, एक फ़ार्म का मालिक, नौकरों-चाकरों का स्वामी, और ये आंसू! यह तो वायोलीन बजाने से भी सौ गुना बदतर है!

निकोलाई पेत्रोविच बाग़ में टहलते रहे, और अपने जी को इतना कड़ा न बना सके कि घर की ओर डग बढ़ा सकें। घर, उनका वह शान्त और सुहावना आवास, रोशनी से आलोकित अपनी सारी खिड़कियों से

मुसकराता हुआ उनकी ओर निहार रहा था। लेकिन वह अंधेरे से, बाग़ से, चेहरे पर ताज़ी हवा के दुलार-भरे स्पर्श से, हृदय की कसक और व्यग्रता से पीछा छुड़ाकर अपने आपको अलग नहीं कर सके ...

पगडंडी के एक मोड़ पर पावेल पेत्रोविच से वह टकरा गए।

"बात क्या है?" उन्होंने निकोलाई पेत्रोविच से पूछा। "चेहरा इतना पीला पड़ गया है कि एकदम छाया-से नज़र आते हो। क्या तबीयत ठीक नही है? जाकर बिस्तर पर आराम क्यों नहीं करते?"

निकोलाई पेत्रोविच ने गिने-चुने शब्दों में अपनी मानसिक स्थिति का परिचय देकर उनसे छुट्टी ली। पावेल पेत्रोविच टहलते हुए बाग़ के छोर पर पहुंचे और वह भी विचारों में खो गए, उन्होंने भी अपनी आंखें उठाकर आकाश की ओर देखा। लेकिन उनकी सुन्दर काली आंखों में तारों की चमक के सिवा और कुछ प्रतिबिम्बित नहीं हुआ। रोमाण्टिकता उनकी घुट्टी में नहीं पड़ी थी और उनकी वह नफ़ासत पसन्द, नीरस, किन्तु अनुरागमयी, आत्मा – जो इस हद तक फ़्रेंच थी कि अन्य सब को नीची नज़र से देखती थी – सपने देखने की आदी नहीं थी।

उसी रात बज़ारोव आरकादी से कह रहा था:

"जानते हो, मुझे एक अनोखी बात सूझी है। तुम्हारे पिता आज एक निमंत्रण की बात कर रहे थे। वही जो तुम्हारे एक नामी सम्बंधी ने उनके पास भेजा है। तुम्हारे पिता जा नही रहे हैं। बोलो, तुम क्या कहते हो? क्यों न एक चक्कर शहर का भी लगा लिया जाय। उन्होंने तुम्हें भी बुलाया है। देखो न, कितना बढ़िया मौसम है। चलो, शहर की सैर कर आएं। पांच या छे दिन तक वहां ख़ूब घूमें-फिरेंगे, बड़े मज़े से समय बीतेगा।"

"तो तुम भी मेरे साथ ही लौटोगे न?"

"नहीं, मुझे अपने पिता के पास जाना है। तुम जानते ही हो, वह शहर से क़रीब बीस मील दूर रहते हैं। मुद्दत हो गई उनसे मिले, और मां से भी। बूढ़ों को उनके इस सुख से क्यों वंचित किया जाए। बहुत ही नेक लोग हैं, ख़ासतौर से पिता। सच, बूढ़ा बड़ा मजेदार है। फिर जानते ही हो, मैं उनका इकलौता लड़का ठहरा! बस, सन्तान के नाम पर एक मैं ही हूं, और कोई नही!"

"क्या वहां अधिक दिन रुकोगे?"

"ऐसी उम्मीद तो नहीं है। तबीयत भी वहां अधिक नही लगेगी।"

"तो वहां से लौटते समय यहां आओगे?"

"कह नहीं सकता ... देखा जाएगा। हां तो बोलो, क्या कहते हो? चलोगे न?"

"जैसा तुम कहो," आरकादी ने बिना किसी उछाह के कहा।

असल में अपने मित्र के प्रस्ताव से वह बेहद खुश था, लेकिन अपने सच्चे भावों को तुरत प्रकट करना उसे ठीक नहीं जंचा। आख़िर वह भी तो निहिलिस्ट ही था न?

अगले दिन वह और बज़ारोव शहर के लिए चल दिए। मारिनो के युवा प्राणी उनके जाने से उदास थे। दुन्याशा की आंखों में तो सचमुच आंसू आ गए... लेकिन बड़े-बूढ़ों ने राहत का अनुभव किया।

१२

जिस शहर की ओर हमारे मित्रों ने रुख किया वह एक नौजवान गवर्नर के मातहत था। गवर्नर प्रगतिशील भी थे और निरंकुश भी, जैसा कि हमारे इस पुराने रूस में अक्सर देखने में आता है। सूबे की बागडोर अपने हाथ में लेने के पहले साल में ही कुलीनों के सूबाई मार्शल और

अपने मातहतों, दोनों से, उनका झगड़ा हुआ। मार्शल घोड़सवार गारद सेना के अवकाश-प्राप्त कैप्टेन, एक घोड़ा-पालन-केन्द्र के मालिक और बहुत ही रंगीन तबीयत के मेज़बान थे। झगड़ा, और उसके फलस्वरूप तनातनी, यहां तक बढ़ी कि अन्त में सन्त पीतर्सबर्ग के मंत्रालय को मौक़े पर पहुंचकर जांच करने के लिए एक कमिश्नर भेजने का फ़ैसला करना पड़ा। इसके लिए मातवेई इलिच कोल्याज़िन को चुना गया। यह उन्हीं कोल्याज़िन के सुपुत्र थे जिनकी निगरानी में किरसानोव बन्धु किसी समय सन्त पीतर्सबर्ग में रह चुके थे। मातवेई इलिच कोल्याज़िन भी 'युवा स्कूल' के थे, मतलब यह कि हाल ही में उन्होंने चालीसवें साल में पांव रखा था। राज-पुरुष बनने का लक्ष्य साधना उन्होंने शुरू कर दिया था और अपने वक्ष के दोनों ओर एक एक स्टार लगाते थे। इनमें से एक, इसमें शक नहीं, कोई विदेशी पदक था और उसका ऐसा कोई महत्व नहीं था। गवर्नर की भांति, जिनका फ़ैसला करने का काम उन्हें सौंपा गया था, वह ख़ुद भी प्रगतिशील माने जाते थे और 'बड़ों' में गिनती होने पर भी वह अधिकांश 'बड़ों' से भिन्न थे। अपने बारे में उनकी बहुत ही ऊंची राय थी। उनकी अहंमन्यता की भी कोई सीमा नहीं थी। लेकिन उनके ठाठ-बाट में बनावट नहीं थी, देखने में वह सहृदय मालूम होते थे, दया-भाव के साथ औरों की सुनते थे, और इतने भले स्वभाव के साथ हंसते थे कि देखनेवाला पहली नज़र में ही कह उठे: "आदमी खरा मालूम होता है।" लेकिन, जरूरत पड़ने पर, जैसी कि कहावत है—वह रौब गांठना भी जानते थे। "शक्ति ही मूल मंत्र है," ऐसे मौक़ों पर वह कहते, "L'énergie est la première qualité d'un homme d'état*," लेकिन,

---

*शक्ति ही सरकारी आदमी का प्रधान गुण है। (फ़्रेंच)—सं०

इस सबके बावजूद, उनकी शक्ति अक्सर जवाब देती नज़र आती और ऐसा एक भी – थोड़ा अनुभव रखनेवाला – अफ़सर नहीं था जो नाक पकड़कर उन्हें मनचाही दिशा में न मोड़ सकता हो। मातवेई इलिच गुइज़ोत के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा प्रकट करते थे और छोटे-बड़े सभी लोगों पर यह छाप डालने का प्रयत्न करते थे कि लकीरपंथी और प्रतिगामी अफ़सरशाही से उनका कोई वास्ता नहीं है, और यह कि सार्वजनिक जीवन के किसी भी पहलू को वह आंखों की ओट नही होने देते... इस तरह के टकसाली कथनों से वह खूब परिचित थे। इतना ही नही, आधुनिक साहित्य के रुझान पर भी वह नज़र रखते थे, लेकिन एक गर्वीली उपेक्षा के अन्दाज़ से, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि एक वयस्क आदमी, बाज़ार में छोटे लड़कों का जलूस देखकर, कभी कभी उनके साथ हो जाता है। सच पूछो तो मातवेई इलिच अलेक्सान्द्र के दिनों के उन अफ़सरों की स्थिति से कुछ आगे नहीं बढ़ पाए थे, जो सन्त पीतर्सबर्ग में, मदाम स्वेचीना के सैलून में होनेवाले संध्या-समारोह में शामिल होने के लिए सुबह ही सुबह कोन्दिलाक की पोथी के पन्नों पर नज़र दौड़ाते थे। अगर अन्तर था, तो इतना ही कि मातवेई इलिच के तरीक़े उनसे भिन्न और अधिक आधुनिक थे। वह मंजे हुए दरबारी थे, खूब चतुर-चालाक, इसके सिवा और कुछ नहीं। काम-काजी मामलों में वह अयोग्य थे और सूझ-बूझ में कमज़ोर। लेकिन अपने निजी मामलों में वह पूरे चौकस थे, एक मक्खी तक वह अपनी नाक पर नहीं बैठने देते थे – क्या मजाल जो कोई उन्हें इधर से उधर मोड़ दे। और, अन्ततः, यही मुख्य – सबसे बड़ी चीज़ है।

मातवेई इलिच ने आरकादी का स्वागत बड़ी मिलनसारी से किया, – ऐसी मिलनसारी से जो कि उन्नत लोगों की एक अपनी विशेषता होती है। इतना ही नहीं, हम तो कहेंगे कि उन्होंने काफ़ी

हंसमुखपन का परिचय दिया। लेकिन, साथ ही, उन्होंने बड़ी हैरानी भी प्रकट की जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उनके सम्बंधी—बावजूद इसके कि उन्हें भी निमंत्रण दिया गया था—नही आए, वे देहात में ही रह गए।

"तुम्हारे दद्दा शुरू से ही कुछ अजीब जीव रहे हैं," अपने भड़कीले मखमली ड्रैसिंग गाउन के फुन्दनों को झुलाते हुए उन्होंने फ़ब्ती कसी और फिर, एकाएक, उस युवक अफ़सर की ओर मुड़ते हुए, जो चुस्ती से बटन-कसी वर्दी में सलीकेदारी का अवतार बना खड़ा था, व्यस्त-सी मुद्रा और पैनी आवाज़ में पूछा: "क्यों, क्या है?" युवक अफ़सर के होंठ, सुदीर्घ अर्से से बोलने के अनभ्यस्त, एक-दूसरे से जुड़े थे। वह अपने पांवों पर खड़ा हुआ और सकपकाई-सी मुद्रा में अपने आला अफ़सर की ओर देखने लगा... अपने मातहत को निष्प्रभ कर देने के बाद मातवेई इलिच फिर जैसे उसे भूल ही गए। हमारे बड़े लोग, आमतौर से, अपने मातहतों को चकरा देने में एक ख़ास रस लेते हैं। इसके लिए तरह तरह के तरीक़े वे अपनाते हैं। इनमें से एक तरीक़ा, जो कि बहुत ही प्रचलित है या जैसा कि अंग्रेज़ लोग कहते हैं, "is quite a favourite", उस समय देखने में आता है जब उच्चाधिकारी, एकाएक, अपने मातहत के अत्यन्त सीधे शब्दों को भी समझने से इन्कार कर देता है और ऐसा बन जाता है जैसे वह बहरा हो। मिसाल के लिए वह पूछेगा:

"आज कौनसा दिन है?"

अत्यन्त विनय के साथ मातहत जवाब देगा:

"आज शुक्र है, म-हा-म-हि-म!"

"ऐं? क्या? क्या कहा? शुक्र क्या? कैसा शुक्र..?"

"शुक्र म-हा-म-हि-म, शुक्रवार—सप्ताह का एक दिन।"

"हां हां शुक्र, समझा! अब और कौनसा पाठ पढ़ाओगे मुझे!"

मातवेई इलिच भी, आखिर उच्चाधिकारी ही थे, हालांकि उन्हें उदार माना जाता था।

"मेरी सलाह मानो, मित्र," उन्होंने आरकादी से कहा, "और गवर्नर से भी मिलो। तुम तो जानते ही हो, यह सलाह मैं इसलिए नहीं दे रहा हूं कि मेरे विचार पुराने फ़ैशन के है और तदनुसार जो सत्ताधारी हैं उनके आगे सलामी दागनी चाहिए, बल्कि केवल इसलिए कि गवर्नर बहुत ही नफ़ीस आदमी है। इसके अलावा शायद तुम स्थानीय उच्च समाज से भी परिचय करना चाहोगे... मैं समझता हूं, तुम भालू नहीं हो! परसों वह एक बहुत ही शानदार नाच का आयोजन कर रहे हैं।"

"क्या आप भी नाच में होंगे?" आरकादी ने पूछा।

"यही तो। नाच का आयोजन मेरे ही सम्मान में हो रहा है," मातवेई इलिच ने क़रीब क़रीब खेद में डूबे स्वर में जवाब दिया, "तुम तो नाचना जानते हो न?"

"हां, मगर कुछ यों ही।"

"तब घाटे में रहोगे। यहां कुछ बहुत ही सुन्दर लड़कियां हैं, और इसके अलावा यह शर्म की बात है कि कोई युवक नाचना न जाने। लेकिन, यह न समझ बठना कि इस मामले में मेरी धारणाएं पुराने फ़ैशन की हैं। नहीं, एक क्षण के लिए भी मैं यह नहीं सोचता कि आदमी की बुद्धि उसके पांवों में होनी चाहिए। लेकिन बायरनवाद एक बेहूदा चीज़ है, il a fait son temps*।"

"लेकिन, सच पूछो तो चाचा, सवाल बायरनवाद का नहीं है..."

---

*उसका ज़माना बीत चुका। (फ़्रेंच) – सं०

"चलो, यहां की कुलीनवर्गीय पुतलियों से तुम्हारे हाथ मिलवाऊंगा," मातवेई इलिच ने बीच में ही कहा और फिर अपने आप में सन्तुष्ट हंसी के साथ बोला, "मेरे अपने आदमी की हैसियत से तुम वहां सबपर छा जाओगे। काफ़ी गरमी मिलेगी तुम्हें, सच!"

तभी एक नौकर ने आकर प्रशासन-चैम्बर के अध्यक्ष के आने की सूचना दी। वह वृद्ध थे– आंखों में मिठास और चेहरे पर झुर्रियां लिए। वह प्रकृति के अत्यन्त शौक़ीन थे, ख़ासतौर से ग्रीष्म के सुहावने दिनों के, जबकि–उन्ही के शब्दों में–"हर नन्ही मक्खी हर नन्हे फूल से कुछ-न-कुछ घूस लिए बिना नहीं मानती..." आरकादी वहां से चला आया।

बजारोव वही सराय में मौजूद था, जहां वे ठहरे थे। गवर्नर के यहां चलने के लिए काफ़ी देर तक उसे मिन्नत करनी पड़ी। आख़िर बज़ारोव राजी हो गया। "अच्छी बात है, चलो," उसने कहा, "जब उंगली थमाई है तो कलाई भी सही। इन ज़मींदार कुलीनों का भी रंग देख लिया जाए। और फिर आए भी तो हम इसीलिए हैं।" गवर्नर बड़े चाव से उनसे मिले, मगर न तो उन्होंने उनसे बैठने के लिए कहा और न ख़ुद ही बैठे। वह हमेशा ही किसी न किसी अटपटी व्यस्तता और चहल-पहल का बुख़ार चढ़ाए रहते थे। सुबह होते ही वह सबसे पहले चुस्त कसी हुई वर्दी चढ़ाते-डाटते, और गुलूबंद को बेहद कसकर गले में लपेटते। खाने-पीने का उन्हें कोई ध्यान न रहता और फ़रमान जारी करने की चिरन्तन धुन और चहल-पहल में सोने तक का नाम न लेते। समचे सूबे में लोगों ने उनका नाम 'बूरदालू' रख छोड़ा था। इसकी प्रेरणा उन्होंने इसी नाम के सुप्रसिद्ध फ़्रेंच प्रचारक से नही, बल्कि बूरदा नाम

के एक बदज़ायका पेय से, ली थी। उन्होंने किरसानोव और बज़ारोव को अपने यहां नाच में शरीक होने का निमंत्रण दिया और इसके दो मिनट बाद ही, दोनों को भाई समझते और 'कैसारोव' नाम से सम्बोधित करते हुए, उन्हें फिर एक नया निमंत्रण दिया।

गवर्नर के यहां से अपने ठिकाने पर लौटते समय पास से गुजरती एक ड्रौश्की गाड़ी में से सहसा एक आदमी कूदा। वह नाटे कद का आदमी था और पान-स्लाविस्ट* ढंग की जाकेट पहने था। "येवगेनी वसीलियेविच, येवगेनी वसीलियेविच!" पुकारता वह बज़ारोव की ओर लपका।

"अरे तुम हो, हर्र सितनिकोव!" बज़ारोव ने कहा। "तुम यहां कैसे टपक पड़े?" और बज़ारोव सड़क की पटरी पर चलता रहा।

"सच, ऐसे ही, एकदम संयोगवश," उसने जवाब दिया और फिर गाड़ीवान की ओर मुड़ते हुए कम से कम छे बार उसने हाथ हिलाया और गुनगुनाते हुए बोला—"चले आओ, गाड़ीवान, हमारे साथ-साथ चले आओ!" फिर, नाली को छलांगते हुए, उसने कहना जारी रखा: "मेरे पिता का कुछ काम-काज था यहां। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं ही उसे निबटा आऊं। आज ही सुना कि तुम यहां हो और मैंने तुम्हारे ठिकाने का पता भी लगा लिया..." (सचमुच, अपने कमरे में लौटने पर दोनों मित्रों ने देखा कि एक विज़िटिंग-कार्ड पड़ा है जिसके कोने मुड़े हैं और जिसके एक ओर फ़्रेंच में और

---

*पान-स्लाविस्ट, १६ वीं शती के रूसी सामाजिक आन्दोलन में एक प्रतिक्रियावादी विचारधारा के पोषक थे। उन्होंने रूस के विकास के लिए एक "विशिष्ट पथ" के सिद्धान्त की स्थापना की।—सं०

दूसरी ओर स्लाव लिखावट में सितनिकोव नाम लिखा है।) "मैं समझता हूं कि गवर्नर के यहां से तुम लोग नहीं आ रहे हो?"

"अपनी इस समझ को तुम ताक पर रखो, हम सीधे वहीं से आ रहे हैं।"

"ओह, तब तो मैं भी उनके यहां हाज़िरी दे आऊंगा," सितनिकोव ने कहा। "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, परिचय तो करा दो ज़रा... अपने इनका..."

"यह हैं सितनिकोव, और यह किरसानोव," एक ही सांस में बुदबुदाते हुए बजारोव ने कहा।

"अहो भाग्य! सच, बड़ी ख़ुशी हुई आपसे मिलकर!" कहते कहते सितनिकोव का बदन डोल गया और एक अटपटी-सी मुसकान उसके होंठों पर खेल गई। हाथों में पहने बेहद नफ़ीस दस्तानों को जल्दी जल्दी उतारते हुए बोला: "आपके बारे में बहुत कुछ सुन चुका हूं... येवगेनी वसीलियेविच से मेरा बहुत पुराना परिचय है, बल्कि कहिए कि मैं इनका शिष्य हूं। अपनी 'दीक्षा' के लिए मैं इन्हीं का ऋणी हूं..."

आरकादी ने बज़ारोव के शिष्य को परखा। उसके बने-संवरे चेहरे की रेखाएं – नाक-नक्श – छोटे किंतु बुरे न थे। लगता था जैसे किसी चिन्ता ने उन्हें कुण्ठित कर दिया हो। उसकी आंखें छोटी और भीतर को धंसी थी और बेचैन-सी नज़र से एकटक ताकती मालूम होती थीं। और उसकी हंसी भी एक बेचैन-सी हंसी थी – तीखी, काष्ठवत् हंसी।

"शायद तुम यक़ीन न करो," वह कहता गया, "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच के मुंह से जब पहली बार मैंने यह सुना कि हमें किसी अधिकारी को प्रमाण नहीं मानना चाहिए तो मेरा रोम रोम खिल उठा... लगा जैसे मेरे अन्तर की आंखें खुल गई हों! मैंने सोचा, यही तो है वह आदमी जिसकी जाने कब से मुझे तलाश थी! लेकिन

छोड़ो। और सुनो, येवगेनी वसीलियेविच, सब काम छोड़कर भी यहां तुम एक महिला से ज़रूर मिलना। वह तुम्हारी बातों को पूर्णतया समझ सकेगी और तुमसे भेंट करके उसे हार्दिक आनन्द प्राप्त होगा। मैं समझता हूं, तुमने उसके बारे में सुना भी होगा।"

"वह कौन है?" बजारोव ने बिना किसी उत्साह के पूछा।

"कूक्शिना, Eudoxie – येवदोक्सीया कूक्शिना। वह एक शानदार चरित्र है – सच्चे मानी में emancipée*, एक प्रगतिशील नारी। और सुनो, अगर उसके पास हम सब अभी चले चलें तो कैसा हो?" वह पास ही रहती है। वहीं भोजन करेंगे। मैं समझता हूं, अभी तुमने भोजन किया भी न होगा?"

"नहीं, अभी नही किया।"

"तब तो और भी अच्छी बात है। वह अपने पति के साथ नहीं रहती, तुम जानो – एकदम स्वतंत्र है।"

"सुन्दर है?" बज़ारोव ने पूछा।

"सुन्दर... सो तो नहीं कहा जा सकता।"

"तो फिर हमें वहां क्यों घसीटे लिए जा रहे हो?"

"हा-हा, वह खूब है... शैम्पेन की बोतल से स्वागत करेगी।"

"सो तुरत पहुंचो। मतलबी आदमी छिपाए नहीं छिपता। लेकिन यह तो बताओ, तुम्हारे बुढ़ऊ क्या कर रहे हैं? क्या अब भी ठेके की दलाली कर रहे हैं?"

"हां," चिचियाती-सी हंसी के साथ सितनिकोव ने उतावली में कहा। "तो चल रहे हो न?"

---

* उन्मुक्त नारी। (फ्रेंच) – सं०

"ठीक कह नही सकता।"

"तुम यहां के लोगों को देखना चाहते थे। जाओ, हो आओ," आरकादी ने धीमे स्वर में कहा।

"और तुम, किरसानोव, तुम खुद अपने बारे में क्या कहते हो?" सितनिकोव ने कहा। "ऐसे नही होगा। तुम्हें भी चलना पड़ेगा।"

"जान न पहचान, हम सब उसके यहां एकाएक कैसे धमक सकते हैं?"

"सो कोई बात नहीं। तुम कूक्शिना को जानते नहीं। एकदम हीरा है।"

"तो वहां शैम्पेन की एक बोतल खुलेगी न?" बज़ारोव ने पूछा।

"एक नहीं, तीन!" सितनिकोव चहका। "उसका ज़िम्मा मैं लेता हूं।"

"ऐसे नहीं, कुछ बाज़ी लगाते हो?"

"तो मेरा सिर हाजिर है।"

"सिर नहीं, अपने बाप की थैलियां हारो तो कुछ बात भी बने... अच्छा तो चलो।"

१३

मास्को शैली के एक छोटे-से मकान में आवदोत्या निकितिश्ना (या येवदोक्सीया) कूक्शिना रहती थी। यह उस सड़क पर था जिसे हाल ही में आग ने नष्ट कर दिया था। सभी जानते है कि हमारे सूबाई शहर, हर पांच साल में एक बार सचमुच की अग्नि-परीक्षा देते है। दरवाज़े पर एक तिरछे-से नाम-कार्ड के ऊपर घंटी

बजानेवाली डोरी लगी थी। हाल में पहुंचने पर घर की नौकरानी से – या वह मालकिन की सखी थी? – भेंट हुई। वह बेलदार टोपी पहने थी जो, निस्संदेह, मालकिन की प्रगतिशील रुचि का ऐलान कर रही थी। सितनिकोव ने पूछा:

"आवदोत्या निकितिश्ना घर पर ही है न?"

"अरे, क्या तुम हो, Victor?" बराबरवाले कमरे में से सीटी-जैसी आवाज़ सुनाई दी। "आओ, चले आओ।"

टोपीवाली स्त्री खिसक गई।

"मैं अकेला नहीं हूं," सितनिकोव ने कहा। चुस्ती के साथ आरकादी और बजारोव की ओर एक नज़र देखा और फ़ुर्ती के साथ अपनी प्रतीकात्मक जाकेट उतार डाली। नीचे, किसानों के ढंग का, बिना आस्तीन का एक अजीब-सा कपड़ा पहने था, ऐसा कि जिसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता।

"कोई बात नहीं," भीतरवाली आवाज़ ने जवाब दिया, "Entrez*।"

तीनों युवक भीतर पहुंचे। यह कमरा ड्राइंगरूम से ज़्यादा अध्ययनकक्ष मालूम होता था। काग़ज-पत्तर, चिट्ठियां, मोटे-ताज़े रूसी पत्र-पत्रिकाएं, अधिकांशतः अनखुले, धूल-छाई मेज़ों पर इधर-उधर बिखरे थे। सिगरेट के टोटे, जहां भी नजर डालो, वहीं छितरे नज़र आते थे। चमड़े के सोफ़े पर एक महिला अधलेटी-सी बैठी थी। उसका यौवन अभी विदा नहीं हुआ था। गोरा चम्पई रंग और सुनहरे बाल, बनाव-सिंगार कुछ बिखरा हुआ सा, रेशमी चोगा पहने जिसे एकदम निर्दोष नहीं कहा जा सकता, ठूंठ-सी

---

* चले आओ। (फ़्रेंच) – सं०

बांहों में बड़े बड़े कड़े और सिर पर बेल-बूटेदार रूमाल। वह सोफ़े से उठी और सुनहरे एर्मिन-फर की गोट लगे मखमली चोगे को लापर्वाही से अपने कंधों पर खीचती हुई अलस अन्दाज़ में गुनगुनाई:

"गुडमोर्निंग, विक्टर!" और यह कहते हुए उसने सितनिकोव से हाथ मिलाया।

"यह हैं बज़ारोव, और यह किरसानोव," बज़ारोव के संक्षिप्त ढंग का अनुसरण करते हुए सितनिकोव ने छोटा-सा परिचय दिया।

"बड़ी खुशी हुई मिलकर," कूक्शिना ने जवाब दिया। अपनी गोल-मटोल आंखों को, जिनके बीच थोड़ी ऊपर को उठी उसकी गुलाबी नाक एकाकी दुबकी-सी बैठी थी, बज़ारोव पर टिकाते हुए बोली, "मै आपके बारे में सुन चुकी हूं।" और फिर उससे भी हाथ मिलाया।

बज़ारोव ने मुह बिचकाया। अटपटे से कपड़े पहने इस उन्मुक्त नारी के संक्षिप्त से आकार-प्रकार में ऐसा कुछ नहीं था जो मुंह फेरनेवाला हो, लेकिन उसके चेहरे का भाव नागवार असर डालता था। उसे देखकर पूछने को जी चाहता था–"बात क्या है, क्या आज खाने को नहीं मिला? या तुमपर ऊब सवार है? या दिमाग किसी उलझन में फंसा है? आख़िर क्यों तुमने यह अजीब–हास्यास्पद–सूरत बना रखी है?" ऐसा मालूम होता था जैसे वह भी सितनिकोव की भांति, ग़लत चेहरे से हंसती है। उसके बोलने और चलने-फिरने में एक नुमाइशी लापर्वाही का भाव था, लेकिन भोंडापन लिए हुए। साफ़ था कि वह अपने आपको खुशमिज़ाज और भले हृदय का जीव समझती थी। फिर भी, जो कुछ भी वह करती थी, हमेशा उसकी एक ही छाप मन पर पड़ती थी–यानी यह कि जो वह नहीं करना चाहती, ठीक वही कर रही है। वह हर काम किसी उद्देश्य से करती

मालूम होती थी, अर्थात सीधे-सादे और सहज-स्वाभाविक ढंग से नहीं।

"हां हां, बज़ारोव, मैं आपके बारे में सुन चुकी हूं," उसने दोहराया। (मुफ़स्सिल और मास्को की कतिपय कुलीन वर्गीय महिलाओं की भांति उसकी यह आदत थी कि पुरुषों को, परिचय के पहले दिन से ही, उनके सरनाम से सम्बोधित करने लगती थी।) "सिगरेट पिएंगे?"

"सिगरेट से यों हमें कोई वैर नहीं," सितनिकोव ने जवाब दिया जो अब, एक टांग को अपने घुटने पर टिकाए, आराम कुर्सी में कुनमुना रहा था। "लेकिन पहले कुछ कलेवा तो कराओ। बुरी तरह भूख लगी है। साथ में शैम्पेन भी हो तो क्या कहने!"

"बोतलानन्दी!" येवदोक्सीया ने कहा और हंस पड़ी। (जब वह हंसती थी तो उसके ऊपर के मसूड़े तक दिखने लगते थे।) "यह पूरा बोतलानन्दी है बज़ारोव! क्यों है न?"

"मैं जीवन को आनन्द में डुबाने का हामी हूं," सितनिकोव ने शान के साथ कहा, "और इससे मेरी उदारपंथी में कोई बाधा नहीं पहुंचती!"

"जी नही, पहुंचती है, बाधा पहुंचती है," येवदोक्सीया ने तुरत कहा, और साथ ही अपनी दासी को भोजन तथा शैम्पेन दोनों का प्रबंध करने का आदेश भी दे दिया। फिर बज़ारोव की ओर मुड़ते हुए बोली, "आपकी क्या राय है?" मैं समझती हूं, आप मुझसे सहमत होंगे।"

"कतई नहीं," बज़ारोव ने जवाब दिया, "रोटी के टुकड़े से मांस की बोटी कहीं बेहतर है। रसायन-विज्ञान तक यही सिद्ध करता है।"

"तो क्या रसायन-विज्ञान आपका विषय है? ओह, मैं उसपर जान देती हूं। मैंने खुद अपने एक लेप का भी आविष्कार किया है।"

"लेप? और आपने?"

"हां, मैंने। और जानते हैं, किसलिए? गुड़ियों के सिर के लिए जिससे उनमें पक्कापन आ जाए—वे टूटे नही। देखा तुमने, मैं भी एक अमली जीव हूं। लेकिन वह अभी तैयार नही हुआ है। ज़रा देखना होगा, लीबिग क्या लिखता है। हां, याद आया, क्या आपने 'मोस्कोव्स्कीए वेदोमोस्ति' में प्रकाशित नारी-श्रमिकों की स्थिति पर किसल्याकोव का लेख देखा? ज़रूर देखिए। स्त्रियो के अधिकार की समस्या में तो आप दिलचस्पी लेते हैं न? और स्कूलों की समस्या में भी? आपके मित्र क्या करते है? क्या नाम भला है इनका?"

एक अलस लापर्वाही के साथ मदाम कूक्शिना ने अपने सवालों की अनवरत झड़ी लगा दी थी, जवाब मिले चाहे न मिले। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि मुंह चढ़े बच्चे अपनी आया पर बातों की बौछार करते रहते हैं।

"जी, मुझे आरकादी निकोलायेविच किरसानोव कहते हैं," आरकादी ने कहा, "और मैं काम-धाम कुछ नहीं करता।"

येवदोक्सीया ठठाकर हंस पड़ी।

"है न अद्भुत बात! लेकिन आप सिगरेट पीजिए न? और सुनते हो विक्टर, आज मैं तुमसे नाराज़ हूं।"

"किस लिए?"

"मैंने सुना है कि तुम फिर जार्ज सैण्ड का राग अलापने लगे हो। अनुन्नत विचारों की स्त्री—इसके सिवा और क्या है उसमें? इमर्सन से उसकी भला क्या तुलना? न वह शिक्षा के बारे में कुछ जानती है, न शरीर-विज्ञान के, और न ही अन्य किसी चीज़ के।

ग्रौर मेरा विश्वास है कि भ्रूण-विज्ञान का तो उसने नाम तक न सुना होगा। ग्राज के इस ज़माने में है न यह मजे की बात!" (कहते हुए येवदोक्सीया ने हवा में ग्रपने हाथ तक उछाले।) "ग्रोह, इस विषय पर येलिसेविच ने कितना सुन्दर लेख लिखा है! सचमुच प्रतिभा है उस सज्जन में!" (जहां 'ग्रादमी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए वहां येवदोक्सीया बराबर 'सज्जन' शब्द का प्रयोग कर रही थी।) "बज़ारोव, यहां ग्राग्रो, इधर मेरे पास सोफ़े पर बैठो। शायद ग्रापको पता न हो, लेकिन मुझे ग्रापसे भयानक डर लगता है..."

"सो क्यों, मैं पूछ सकता हूं?"

"ग्राप एक ख़तरनाक सज्जन हैं: ग्रालोचना की साकार प्रतिमा। हे भगवान! मैं भी क्या दूर गांव की पिछड़ी हुई देहातिन की भांति बातें करने लगी। लेकिन सच पूछो तो मैं एक जागीरदारिन महिला हूं। ग्रपनी जागीर की मैं खुद देख-भाल करती हूं ग्रौर शायद तुम विश्वास न करो, मेरा कारिन्दा येरोफ़ेई भी एक शानदार चरित्र है—ठीक कूपर के 'राहखोजी' की भांति। एक तरह की सहज-सादगी—भोलापन—उसके रोम रोम में बसी है। ग्रब मैं हमेशा के लिए यहां बस गई हूं। बड़ा मनहूस नगर है यह, क्यों है न? लेकिन, किया भी क्या जाए!"

"जैसे दूसरे नगर वैसा ही यह भी," बज़ारोव ने शान्त भाव से कहा।

"तुच्छ स्वार्थों में फंसा हुग्रा। यही यहां सबसे बुरा है। जाड़े मैं मास्को में बिताया करती थी... लेकिन मेरे पति, मौसिये कूक्शिन ने ग्रब वहां ग्रपना डेरा जमा लिया है। इसके ग्रलावा मास्को ग्रब... जाने क्यों, पहले जैसा नहीं रहा। मुझे ग्रब कुछ विदेश जाने की धुन सवार है, ग्रौर पारसाल तो बस जाते जाते ही रह गई!"

"निश्चय ही पेरिस के लिए, क्यों?" बज़ारोव ने पूछा।

"पेरिस और हीडेलबर्ग के लिए।"

"हीडेलबर्ग के लिए क्यों?"

"ओह, वहां बुनसन जो है!"

बजारोव खोया हुआ सा उसका मुंह ताकने लगा।

"Pierre सापोजनिकोव... जानते हो न उन्हें?"

"नहीं।"

"ओह, मैंने कहा, Pierre सापोजनिकोव–जो चौबीसों घंटे लीदिया खोस्तातोवा के यहां जमा रहते हैं।"

"मैं इस महिला को भी नहीं जानता।"

"हां तो वह भी मेरे साथ चलने को तैयार हो गए। शुक्र है खुदा का, मै स्वतंत्र हूं, बाल-बच्चों की बला से मुक्त हूं... भला, क्या कहा था मैंने?–शुक्र है ख़ुदा का! लेकिन ज़रा सोचकर देखो तो शुक्र कुछ नहीं।"

तम्बाकू के धुंवे से पीली पड़ी अपनी उंगलियों से येवदोक्सीया ने ताज़ी सिगरेट तैयार की, जीभ फेरकर उसे नम किया, कश लेकर उसे जांचा और सुलगाकर पीने लगी। तभी दासी एक ट्रे लिए हुए आ गई।

"यह लीजिए, खाना आ गया। लेकिन पहले कुछ डाल ली जाए। विक्टर, बोतल का काग खोलो–इसमें तुम माहिर हो।"

"हां, सो तो है ही," सितनिकोव बुदबुदाया और फिर चिचियाता-सा हंस पड़ा।

"आस-पास में क्या सुन्दर लड़कियों का अकाल है?" तीसरा गिलास ख़ाली करते हुए बज़ारोव ने पूछा।

"अकाल क्यों है?" येवदोक्सीया ने जवाब दिया। "लेकिन

सब की सब ख़ाली-दिमाग़ हैं। मिसाल के लिए mon amie* ओदिनत्सोवा को ही लो—देखने में बुरी नहीं। गड़बड़ यही है कि उसकी शोहरत ज़रा कुछ... लेकिन सो कुछ नही। असल बात यह है कि उसकी नज़र व्यापक नही, उसके अपने कुछ स्वतंत्र विचार नहीं, बस, एकदम कोरी है। अपनी समूची शिक्षा-प्रणाली को बदलने की ज़रूरत है। मैं इस बारे में सोच रही हूं। हमारी स्त्रियों को शिक्षा-दीक्षा के बहुत ही बेढंगे सांचे में ढाला गया है।"

"एकदम लाइलाज," सितनिकोव बोल उठा, "हिक़ारत के सिवा वे और किसी योग्य नहीं, और यही मैं उनके प्रति अनुभव करता हूं—अखण्ड और अटूट हिक़ारत!" (हिक़ारत के भाव का अनुभव करने और इस भाव को व्यक्त करने में सितनिकोव ख़ूब रस लेता था। ख़ासतौर से स्त्रियों पर चोट करने में वह और भी आनन्द लेता था, और उस समय एक क्षण के लिए भी वह यह अनुभव नहीं करता था कि कुछ ही महीनें बाद वह ख़ुद अपनी पत्नी के सामने नाक रगड़ता नज़र आएगा, सो भी सिर्फ़ इसलिए कि वह राजकुमारी दुरदोलेओसोवा के घर की कन्या है।) वह कहता गया: "एक भी उनमें ऐसी नहीं मिलेगी जो हमारी बातचीत तक समझ सके, जिसके लिए हम संजीदा पुरुषों का सिर खपाना व्यर्थ न कहा जा सके।"

"लेकिन यह कतई ज़रूरी नहीं कि वे हमारी बातचीत समझें ही," बज़ारोव ने कहा।

"यह किस चीज़ के बारे में बात हो रही है?" येवदोक्सीया ने पूछा।

---

*मेरी सखी। (फ़्रेंच)—सं०

"सुन्दर स्त्रियों के बारे में।"

"क्या-आ? तो आप भी प्रूडोन के मत के है?"

बज़ारोव का बदन एकदम सीधा सतर हो गया।

"मैं किसी के मत का नहीं हूं। मैं खुद अपना मत रखता हूं।"

उस आदमी की उपस्थिति में, जिसका कि वह भोंपू बना हुआ था, साहसपूर्ण बात कहने का अवसर गले से लगा सितनिकोव चिल्ला उठा:

"अधिकारियों का नाश हो!"

"लेकिन मैकॉले भी..." कूक्शिना ने कहना शुरू किया।

"मैकॉले मुर्दाबाद!" सितनिकोव ने गला फाड़ा, "तुम भी किन लहंगाधारियों की हिमायत करने लगीं!"

"लहंगाधारियों की नहीं, स्त्रियों के अधिकारों की। बदन में आखिरी बूंद तक जिनकी रक्षा करने का मैंने प्रण किया है।"

"मुर्दा..." कहते कहते सितनिकोव रुक गया और बुदबुदाते हुए बोला: "मेरा इनसे विरोध नहीं!"

"नहीं, मैं साफ़ देख रही हूं कि तुम पान-स्लाविस्ट हो!"

"नहीं, मैं पान-स्लाविस्ट नहीं हूं, हालांकि इसमें शक नहीं कि..."

"नहीं, नहीं, नहीं! तुम पान-स्लाविस्ट हो। तुम दोमोस्त्रोई* के हिमायती हो। बस, तुम्हारे हाथ में घोड़े का चाबुक देने की और जरूरत है!"

---

*दोमोस्त्रोई – सोलहवीं शताब्दी में लिखी गई पुस्तक का नाम, जिसमें उस काल के रूसी परिवारों के लिए सही ढंग के जीवन का आदर्श उपस्थित किया गया था। अब इस शब्द का अर्थ हो गया है: "पारिवारिक ज़ुल्म और तानाशाही"। – सं०

"घोड़े का चाबुक बुरी चीज नहीं," बज़ारोव ने कहा, "लेकिन यहां तो आखिरी बूंद तक..."

"आख़िरी बूंद किस की?" येवदोक्सीया ने पूछा।

"शैम्पेन की, मेरी प्रिय आवदोत्या निकितिश्ना, शैम्पेन की– तुम्हारे रक्त की नहीं!"

"स्त्रियों का जब कोई अपमान करता है तो मैं सह नहीं सकती," येवदोक्सीया कहती गई, "यह भयानक है, भयानक। उनपर धावा बोलने के बजाय अच्छा हो कि तुम मिशले की लिखी पुस्तक De l'amour* पढ़ जाओ। अद्भुत पुस्तक है यह! हां तो सज्जनो, अच्छा हो कि हम प्रेम के बारे में बातें करें।" कहते कहते येवदोक्सीया ने अपनी बांह अलस भाव से सोफ़े की सिलवट-भरी गद्दी पर रख दी।

सहसा कमरे में नीरवता छा गई।

"नहीं, प्रेम की बातें छोड़ो," बजारोव ने कहा। "आपने अभी अभी ओदिनत्सोवा का जिक्र किया था... अगर मैं भूलता नहीं तो यह नाम लिया था न आपने? हां तो वह कौन है?"

"ओह, वह बड़ी लुभावनी है, देखते ही प्यार करने को जी चाहे!" सितनिकोव चिचियाया। "तुमसे परिचय कराऊंगा। बहुत ही चतुर लड़की है, काफ़ी मालदार, और विधवा। बदक़िस्मती से अभी बुद्धि का कुछ विकास नहीं हुआ। उसे हमारी येवदोक्सीया से घना संसर्ग बढ़ाना चाहिए। हां तो, Eudoxie, यह जाम तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए। आओ, गिलास खनकाएं! "Et toc, et toc et tin-tin-tin! Et toc, et toc, et tin-tin-tin!!"

"Victor, आखिर तुम अपनी ठठोलियों से कभी बाज़ नहीं आते!"

भोजन बड़ी देर तक चला। शैम्पेन की पहली बोतल के बाद

---

* प्रेम के बारे में। (फ्रेंच)–सं०

दूसरी आई, दूसरी के बाद तीसरी, और फिर चौथी भी... येवदोक्सीया बराबर चहकती रही और सितनिकोव बराबर उसका भोंपू बना रहा। शादी के बारे में उन्होंने दुनिया-भर की बातें कीं— यह कि शादी कोई पूर्वाग्रह है या अपराध, यह कि लोग मां के पेट से ही एक-से होकर पैदा होते हैं या नहीं, और यह कि व्यक्तित्व क्या चीज़ है। आखिर नौबत यहां तक पहुंची कि येवदोक्सीया, नशे से अंगारा बनी और चपटे नाखूनवाली अपनी उंगलियों से बेसुरे पियानो के पर्दों को ठकठकाती फटी हुई सी आवाज़ में गाने लगी। पहले उसने खानाबदोशों के कुछ गीत गाए और फिर सीमूर-शिफ़ कृत रोमांज़ा 'ग्रनादा निद्रा निमग्न है' सुनाया। सितनिकोव अपने सिर के चारों ओर एक रूमाल लपेटकर विरह-पीड़ित प्रेमी का अभिनय करने लगा। जब गानेवाली ने यह पंक्ति गाई:

"प्रिय कर दो अपने होंठों से
मेरे होंठों पर एक अग्निमय—
चुम्बन अंकित!"

तो आरकादी से यह सहन नहीं हुआ। ज़ोरों से बोला:

"सज्जनो, अब यह कमरा बेडलाम* बनता जा रहा है!"

बज़ारोव जो भूले-भटके एकाध व्यंग-बाण छोड़ देता था, अन्य सब कुछ भूल अपनी शैम्पेन में ही मस्त था। उसने अब सीधे जमुहाई ली, खड़ा हुआ और मेज़बान से विदा तक लिए बिना कमरे से बाहर हो गया। आरकादी ने भी उसका अनुसरण किया। सितनिकोव उन दोनों के पीछे लपका।

---

*लंदन में एक पागलखाना।—अनु०

"हां तो बोलो, क्या कहते हो, कैसी लगी वह तुम्हें ?" कभी इधर और कभी उधर फुदकते-उचकते हुए वह कह रहा था। "मैंने पहले ही कहा था न ? कितनी शानदार औरत है ! काश कि ऐसी ही कुछ और भी होतीं ! ओह, कितना नैतिक बल है ! एक तरह से अनुकरणीय !"

"और तेरे बाप का वह व्यापार भी नैतिक बल का एक नमूना है न ?" एक दारूघर की ओर इशारा करते हुए–जिसके पास से वे उस समय गुज़र रहे थे–बजारोव ने पूछा।

सितनिकोव फिर अपनी उस चिचियाती-सी हंसी में फूट पड़ा। अपनी वंश-बेल से वह परिचित था और उसकी याद कर मन ही मन लज्जा से गड़ जाता था। लेकिन इस समय वह निश्चय नहीं कर सका कि बज़ारोव के इस आकस्मिक घनिष्ठता-प्रदर्शन को बड़ाई मानकर उसे ख़ुश होना चाहिए अथवा बुराई मानकर नाराज़।

१४

कई दिन बाद गवर्नर के घर नाच हुआ। कोल्याज़िन उस दिन के 'दूल्हा' थे। कुलीनों के मार्शल ने यह जताने में किसी को नहीं छोड़ा कि वह, सच पूछो तो, केवल उनके सम्मान की ख़ातिर नाच में शामिल हुए हैं। उधर गवर्नर थे कि वह, नाच के दौरान में भी और उस समय भी जबकि वह, सांस लेने के लिए एक ओर स्थिर खड़े होते थे, अपनी कार्यव्यस्तता का प्रदर्शन करने से–यह या वह फ़रमान जारी करने से–नहीं चूकते थे। कोल्याज़िन का शाहाना अन्दाज़ और उनकी मिलनसारी दोनों एक-दूसरे से होड़ लेते मालूम होते थे। वह सभी पर अपनी मुसकानों की वर्षा कर रहे थे–किसी पर

थोड़े अनमनेपन के साथ, और किसी पर आदर की हल्की-सी चाशनी चढ़ाकर। महिलाओं के साथ तो वह en vrai chevalier français * बने हुए थे। और, जैसा कि राजपुरुष को शोभा देता है, उनके अन्तर से अपरिवर्तनशील वेगवती हंसी का अनवरत झरना फूट रहा था। उन्होंने आरकादी की पीठ थपथपाई और उसे इतनी ऊंची आवाज़ में 'प्रिय भतीजे' कहकर सम्बोधित किया कि सभी सुन लें। बज़ारोव की ओर जो अपेक्षाकृत पुराना ड्रैस-सूट डाटे था, उन्होंने एक उड़ती हुई, सूनी किन्तु कृपा-भरी नजर डाली और एक अस्पष्ट किन्तु भली-सी आवाज़ में कुछ कांखा जिसमें से, 'मैं' और 'सदा की भांति' के सिवा और कोई शब्द पल्ले नहीं पड़ा। सितनिकोव की ओर उन्होंने अपनी उंगली बढ़ाई, एक मुसकान भी उसपर न्योछावर की, लेकिन अपने सिर को इस बार दूसरी ओर मोड़े हुए। और कूक्शिना को जो पिचका हुआ सा घाघरा और मैले-से दस्ताने पहने थी—अलबत्ता बालों में उसने 'स्वर्ग के पक्षी' के पर ज़रूर खोंस रखे थे—बुदबुदाकर उन्होंने enchanté ** तक कहा। हॉल में तिल रखने की जगह नहीं थी। युगल-नृत्य में शामिल होने के लिए पुरुषों की कमी नही थी। ग़ैर-फ़ौजी लोग, ज़्यादातर, अलग खड़े 'दीवार की शोभा' बढ़ा रहे थे, जबकि फ़ौजी लोग पूरे जोश से नाच में हिस्सा ले रहे थे, खासतौर से उनमें से एक के जोश का तो ठिकाना ही नहीं था जो पेरिस में छै सप्ताह बिता आया था और वहां से "zut", Ah fichtrrre", "pst, pst, mon bibi" आदि फ़्रेंच भाषा के कुछ चटुल उद्‌गार बटोर लाया था। वह बड़ी नफ़ासत से, एकदम पेरिस के ढंग से, उनका उच्चारण करता था। लेकिन फिर भी

---

*एक सच्चे फ़्रांसीसी भद्रजन की तरह। (फ़्रेंच)—सं०

** फ़िदा हूं। (फ़्रेंच)—सं०

"si j'avais" की जगह "si j'aurais" का और "निश्चय ही" की जगह "absolument"* का प्रयोग कर जाता। संक्षेप यह कि वह फ़्रेंच भाषा का बिगड़ा हुआ रूसी रूप बोलता जिसे सुनकर फ़्रेंच लोगों के पेट में बल पड़ जाते हैं, खासतौर से उस हालत में जबकि उन्हे, हमारे इन देश भाइयों को खुश करने के लिए, यह विश्वास दिलाने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ता कि हम उनकी भाषा को 'फ़रिश्तों की भांति' – "comme des anges" – बोलते हैं।

आरकादी, जैसा कि हम जानते हैं, कुछ अच्छा नही नाचता था। और बज़ारोव का तो नाच से कोई वास्ता ही नही था। वे दोनों एक कोने में बैठ गए और सितनिकोव भी उनके साथ आ मिला। चेहरे पर उपहास का भाव लिए और व्यंगपूर्ण छीटे कसते हुए रस में पगी उसकी नज़र कमरे का चक्कर लगा रही थी और वह अपने आपमें अत्यन्त मगन मालूम होता था। सहसा उसके चेहरे का रंग बदल गया और आरकादी की ओर मुड़ते हुए अचकचाती-सी मुद्रा में बुदबुदाया :

"ओदिनत्सोवा आ रही है।"

आरकादी मुड़ा। काला गाउन पहने एक लम्बे क़द की स्त्री पर उसकी नज़र पड़ी। वह हॉल की चौखट पर पांव रखे थी। उसका राजसी ठाठ देखते ही बनता था। उसकी उघड़ी हुई बांहें बहुत ही कमनीय अन्दाज़ में लता सदृश उसके बदन के दोनों ओर झूल रही थीं। उसके आबदार बालों में खुंसी फूशिया की एक टहनी बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में उसके ढलुवां कंधों पर झुक आई थी। निखरी हुई और थोड़ा बाहर को झुक आई भौंहों के नीचे उसकी पारदर्शी आंखें

---

* बिल्कुल। (फ्रेंच) – सं०

झांक रही थी। उनमें प्रतिभा ग्रौर स्थिरता की—हां स्थिरता की, उदासी की नहीं—झलक थी। होंठों पर मुसकराहट का स्पर्श था, लेकिन बहुत ही नामालूम-सा। चेहरे से बहुत ही मृदु ग्रौर कोमल ग्रोज की किरनें फूट रही थी।

"क्या तुम इसे जानते हो ?" ग्रारकादी ने सितनिकोव से पूछा।

"भली-भांति। तुम परिचय करना चाहोगे?"

"क्यों नही... इस नाच के बाद।"

बजारोव का ध्यान भी ग्रोदिनत्सोवा की ग्रोर खिंचा।

"यह चिड़िया कौन है?" उसने पूछा। "ग्रौरों से कुछ निराली मालूम होती है।"

नाच के बाद सितनिकोव ग्रारकादी को ग्रोदिनत्सोवा के पास ले गया। लेकिन उसके साथ उसका परिचय उस जोश-ख़रोश के ग्रनुकूल सिद्ध नही हुग्रा जिससे कि उसने ग्रारकादी को ग्राश्वासन दिया था। उसका बोल उलझ गया ग्रौर ग्रोदिनत्सोवा ने ग्रचरज-भरी नज़र से उसे देखा। लेकिन ग्रारकादी का नाम सुनते ही उसके चेहरे पर ग्रान्तरिक दिलचस्पी के भाव उभर ग्राए। पूछा :

"क्या ग्राप निकोलाई पेत्रोविच के पुत्र तो नहीं?"

"जी, हूं तो।"

"ग्रापके पिता से मैं दो बार मिली हूं ग्रौर बहुत कुछ उनके बारे में सुना है," वह कहती गई, "ग्रापसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

तभी कोई सहायक फ़ौजी ग्रफ़सर लपककर उसके पास ग्राया ग्रौर साथ में नाचने के लिए उससे ग्राग्रह करने लगा। उसने स्वीकार कर लिया।

"तो तुम नाचती हो ?" ग्रारकादी ने ग्रदब से पूछा।

"हां। लेकिन यह आपने कैसे सोचा कि मैं नाचती नही ? क्या मैं इतनी बूढ़ी लगती हूं ?"

"ओह नही, सच, ऐसी कोई बात नही... लेकिन... तब तो मैं भी माजुर्का नृत्य की आशा कर सकता हूं।"

ओदिनत्सोवा कृपापूर्वक मुसकराई।

"बहुत अच्छा," उसने कहा और आरकादी की ओर ठीक अभिभावक की नजर से तो नही, लेकिन ऐसी नजर से देखा जैसे कि ब्याही हुई बहनें अपने अति छोटे भाइयों को देखती हैं।

ओदिनत्सोवा आरकादी से उम्र में अधिक बड़ी नही थी–वह उनतीस की थी–लेकिन उसकी उपस्थिति में उसे ऐसा लगा जैसे वह निरा स्कूली लड़का, एक अनुभवहीन छात्र हो, जैसे उन दोनों की आयु में काफ़ी अन्तर हो। राजसी ठाठ के साथ मातवेई इलिच उसके–ओदिनत्सोवा के–पास आए और बातों की मिसरी-सी घोलने लगे। आरकादी पीछे की ओर हट गया, मगर उसकी आंखें बराबर उसी पर जमी रहीं और उसे नाच में शामिल होते देखती रहीं। नृत्य के अपने जोड़ीदार से भी वह उसी सहज भाव से बतिया रही थी जिस सहज भाव से उसने राजपुरुष से बातें की थीं। बड़ी कोमलता से उसने सिर हिलाया और अपनी आंखों को फेर लिया। एक या दो बार वह मृदुलता से हंसी भी। नाक उसकी कुछ मांसल थी, जैसी कि अक्सर रूसी नाकें हुआ करती हैं। और रंग भी उसका एकदम निखरा हुआ नहीं था। फिर भी आरकादी को यह निश्चित मालूम हुआ कि उसने इससे अधिक लुभावनी स्त्री पहले कभी नहीं देखी। उसकी आवाज़ संगीत बनकर बराबर उसके कानों में गूंजती रही। उसके गाउन की हर लहर में उसे एक जादू मालूम होता था, ऐसा जो अन्य किसी स्त्री में नहीं था। उसे लगा जैसे उसमें अधिक कमनीयता

और प्रवाह है। उसकी हर हरकत उसे बहुत ही स्वच्छंद और बनावट से अछूती मालूम हुई।

और उस समय जब माजुर्का की धुन बजनी शुरू हुई, आरकादी के रोम रोम में एक संकोच-सा समा गया। वह उस स्त्री के पास, उसके बराबर में, बैठ गया। उसने चाहा कि बातचीत शुरू करे, लेकिन उसके मुह से बोल न निकला और उलझन में अपने बालों पर थपकियां देता रह गया। लेकिन उसका यह संकोच और परेशानी अधिक देर तक नहीं टिक सकी। ओदिनत्सोवा की स्थिरता ने उसे सहारा दिया और पन्द्रह मिनट बीतते न बीतते सहज भाव के साथ वह उससे बातें करता नज़र आने लगा—अपने पिता के बारे में, ताऊ-जी के बारे में, सन्त पीतर्सबर्ग और देहात में अपने जीवन के बारे में। ओदिनत्सोवा विनम्र सहानुभूति के साथ उसकी बातें सुनती और अपनी पंखी की पंखुड़ियों को थोड़ा खोलती और बन्द करती रही। रह रहकर ओदिनत्सोवा को नाच का बुलावा मिलता और तब आरकादी की बातों का सिलसिला टूट जाता। औरों की बात छोड़िए, खुद सितनिकोव ने ही उसे दो बार नाच का निमंत्रण दिया। नाच के बाद वह फिर उसी जगह पर आ बैठती, अपनी पंखी को उठाती, नाच की उत्तेजना का ज़रा भी चिन्ह उसकी सांसों में नज़र न आता और आरकादी, उसके निकट बैठने के आल्हाद से भरा, अपनी बातचीत का सिलसिला फिर शुरू कर देता। वह उससे बातें करता, उसकी आंखों में झांकता, उसकी नफ़ीस भौंहों को निहारता, उसके गम्भीर और प्रतिभावान् चेहरे की समूची मधुरता में एक अजीब उल्लास का अनुभव करता। वह खुद बहुत ही कम बोलती थी, लेकिन जब भी बोलती तो उसके शब्दों में दुनिया की जानकारी झलकती। उसकी कुछेक बातें तो ऐसी थीं जिनसे आरकादी को लगा

कि यह युवा स्त्री जीवन में काफ़ी गहरे गई है, और बहुत कुछ उसने सोचा-समझा है...

"वह आपके साथ कौन खड़े थे?" उसने आरकादी से पूछा, "उस समय जब सितनिकोव आपको मेरे पास लेकर आए थे।"

"ओह, तो क्या आपका ध्यान उसपर भी गया था?" अब आरकादी ने पूछा। "बहुत ही नफ़ीस चेहरा है उसका, है न? उसका नाम है बजारोव, मेरा मित्र है।"

और आरकादी ने अपने मित्र को लेकर पुल बांधने शुरू कर दिए। इतने विस्तार और इतने उछाह के साथ उसने अपने मित्र का जिक्र किया कि ओदिनत्सोवा ने मुड़कर बड़े ध्यान से उसे परखा। इस बीच माजुर्का नृत्य भी पूरा हो चला। आरकादी का जी भारी हो गया—यह सोचकर कि अब उसे अपनी नृत्य-संगिनी से अलग होना पड़ेगा। ओह, कितने आनन्द के साथ बीती थीं ये घड़ियां! यह सच था कि इस समूचे काल में वह बराबर यह अनुभव करता रहा जैसे उसके हर व्यवहार में दया का एक भाव छिपा हो, एक ऐसा भाव जिसके लिए उसे उसका कृतज्ञ होना चाहिए... लेकिन युवा हृदय इस तरह की सनसनाहटों से त्रस्त नहीं होते।

संगीत थम गया।

"Mersi*," उठते हुए ओदिनत्सोवा ने कहा। "मेरे यहां आने का आपने वायदा किया है। साथ में अपने मित्र को भी लेते आइए। ऐसे आदमी को देखने के लिए, जो इतना साहसी है कि किसी चीज में विश्वास नहीं करता, मेरा मन भारी कौतुक से भरा है।"

---

* शुक्रिया। (फ्रेंच) —सं०

तभी गवर्नर ओदिनत्सोवा के पास आए, सूचना दी कि भोजन तैयार है और व्यस्त-से अन्दाज में सहारा देने के लिए अपनी बांह उसकी ओर बढ़ा दी। ओदिनत्सोवा उनके साथ खिसक चली, मुसकराते हुए आरकादी की ओर मुड़ी और थोड़ा सिर हिलाकर विदा का संकेत किया। आरकादी भी झुक गया और दूर हटते हुए उसके आकार को देखता रहा (ओह, सुरमई चमकवाली बदन से सटी काली रेशमी पोशाक में उसकी काठी कितनी सुघर मालूम होती थी!) और यह सोचकर कि उसे अब मेरा भला क्या ध्यान होगा, एक मृदु उदासी में वह डूब चला...

"कहो," जैसे ही आरकादी कोने में पहुंचा, बज़ारोव ने उससे पूछा, "मज़े से तो गुज़री न? अभी अभी एक सज्जन मुझसे कह रहे थे कि यह स्त्री—ओह-हो-हो-हो! लगता था जैसे वह काठ के उल्लू हों! तुम अपनी राय बताओ। क्या वह सचमुच ओह-हो-हो-हो है?"

"यह व्याख्या कुछ ठीक से पल्ले नहीं पड़ी," आरकादी ने जवाब दिया।

"बस बस, इतने भोले न बनो!"

"अच्छा तो सुनो। तुम्हारे वह सज्जन मेरी पकड़ से बाहर हैं। इसमें शक नहीं कि ओदिनत्सोवा अत्यन्त लुभावनी है। लेकिन वह इतनी सर्द और अपने आपमें इतनी सिमटी है कि..."

"यानी स्थिर पानी का स्रोत गहरा होता है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा। "तुम कहते हो, वह सर्द है। यही तो सबसे बड़ी खूबी है। आइसक्रीम के तो तुम शौक़ीन हो, हो न?"

"हो सकता है," आरकादी बुदबुदाया। "फिर मैं कोई पारखी भी नहीं हूं। जो हो, वह तुमसे जान-पहचान करना चाहती

है। मुझसे अनुरोध किया है कि तुम्हें लेकर उसके यहां किसी दिन पहुंचूं।"

"मैं सहज ही कल्पना कर सकता हूं कि कितना रंगीन बनाकर तुमने मुझे उसके सामने उछाला होगा। जो हो, तुमने अच्छा ही किया। चला चलूंगा। वह चाहे जो भी हो—बन की शेरनी अथवा कूक्शिना की तरह उन्मुक्त—इसमें शक नही कि उसके कंधों का ढाल बेजोड़ है, ऐसा जो एक मुद्दत से मैंने नहीं देखा था।"

बजारोव का यह औघड़पन आरकादी को बहुत बुरा मालूम हुआ, लेकिन—जैसा कि अक्सर होता है—उसने अपने मित्र को एक ऐसी चीज़ के लिए भला-बुरा कहना शुरू किया जो उस बात से सर्वथा भिन्न थी जिसे कि उसने वस्तुतः उसमें नापसंद किया था। दबे स्वर में बोला :

"तुम क्यों यह मानना नहीं चाहते कि स्त्रियां भी अपने स्वतंत्र विचार रख सकती हैं?"

"इसलिए मेरे मुन्ना, कि केवल उन्हीं स्त्रियों को अब मैंने स्वतंत्रता की ध्वजा फहराते देखा है जो सूखकर एकदम अमचुर हो गई हैं।"

इसके बाद बातचीत आग नहीं बढ़ी। भोजन के बाद दोनों युवक तुरत वहां से चल दिए। उनके मुड़ते ही कूक्शिना विचलित और कुत्सा-भरी—लेकिन असल में अपने भीतर एक खटक छिपाए—हंसी में फूट पड़ी। इस बात ने उसके अहम् को बुरी तरह घायल कर दिया था कि उन दोनों में से एक का भी उसकी ओर ध्यान नहीं गया। नाच में वह सबके बाद तक जमी रही। रात के तीसरे पहर, तीन बज़े के बाद, ठेठ पेरिस के स्टाइल में, सितनिकोव के साथ उसने पोल्का-माज़ुर्का नृत्य किया और इस नृत्य के साथ चरम उत्कर्ष पर पहुंचकर गवर्नर का शानदार आयोजन सम्पूर्ण हुआ।

१५

"चलो, इसे भी देख लें कि स्तनपायी प्राणियों में यह किस कोटि की जीव है," ओदिनत्सोवा से मिलने के लिए उसके होटल के ज़ीने पर चढ़ते हुए बज़ारोव ने अगले दिन आरकादी से कहा। "बहुत कुछ है जो वह अपने बाहरी आवरण के भीतर छिपाए है।"

"तुम भी अजीब आदमी मालूम होते हो," आरकादी ने भन्नाकर कहा। "क्या इसका यह मतलब है कि तुम्हारी, यानी बज़ारोव की, बुद्धि संकीर्ण है—इतनी कि तुम समझ बैठे हो ..."

"बस बस, ज्यादा भोंदूपन न दिखाओ!" बज़ारोव ने बीच में ही लापर्वाही से कहा। "तुम्हें अभी तक इतना भी मालूम नहीं कि हमारे बात करने का यह एक ढंग है जिसका मतलब होता है—मामला चौकस है। यह सब हमारी चक्की का दाना है। ख़ुद तुम्हीं उसके विवाह की अजीब परिस्थितियों का आज मुझसे ज़िक्र कर रहे थे, हालांकि किसी मालदार बूढ़े से शादी करना—अगर सच पूछो तो—ऐसी कोई अजीब बात भी नहीं, बल्कि समझदारी की निशानी है। शहर की कानाफूसी का मैं विश्वास नहीं करता, बल्कि मुझे तो, अपने रोशन दिमाग़ गवर्नर के शब्दों में, यह सोचना अच्छा लगता है कि इसमें कुछ है ज़रूर!"

आरकादी ने कुछ नही कहा और दरवाज़े को खटखटाया। वर्दी से लैस युवा नौकर दोनों मित्रों को एक बड़े कमरे में लिवा ले गया। कमरे की साज-सज्जा में, रूसी होटलों के अन्य सभी कमरों की भांति, यहां भी सुरुचि पर पानी फिरा था, लेकिन फूलों की भरमार जरूर थी। ख़ुद ओदिनत्सोवा जल्दी ही आ गई। वह प्रातःकाल की सीधी-सादी पोशाक पहने थी। वसन्त के सूरज की रोशनी

में वह और भी युवा मालूम हो रही थी। आरकादी ने बज़ारोव का परिचय कराया और यह देखकर मन ही मन उसे अचरज हुआ कि जहां बज़ारोव कुछ अचकचा-सा गया, वहा ओदिनत्सोवा पूर्णतया शान्त और स्थिर रही, ठीक वैसी ही जैसे कि वह पिछली रात थी। अपनी इस अचकचाहट का अनुभव कर बजारोव मन ही मन झुंझला उठा। "यह क्या हिमाकत है," उसने अपने आपसे कहा, "एक पेटीकोट तुम्हें इतना पस्त कर दे!" और फिर, एकदम सितनिकोव की भांति बेहाल, आरामकुर्सी में समाते हुए अतिरंजित बेपर्वाही के साथ बातें करने लगा। उधर ओदिनत्सोवा, एकटक, अपनी पारदर्शी आंखों से उसे निहारती रही।

अन्ना सेर्गेयेवना ओदिनत्सोवा के पिता सेर्गेई निकोलायेविच लोक्तेव थे। वह सुन्दर, रसिक, दुस्साहसी और जुआरी थे। पन्द्रह साल तक वह सन्त पीतर्सबर्ग और मास्को में जमे और धूम मचाते रहे। अन्त में, रंग-पानी में अपना धन स्वाहा करने के बाद, मजबूरन उन्हें देहात की शरण लेनी पड़ी। इसके कुछ ही दिन बाद उनका देहान्त हो गया, अपनी दोनों कन्याओं के नाम—अन्ना बीस साल की और कातेरीना बारह की—जायदाद नहीं के बराबर छोड़कर इस दुनिया से चल बसे। लड़कियों की मां जो एक निर्धन ड्यूक परिवार की बेटी थी, बहुत पहले ही, उस समय जबकि पति का जीवन पूरे उभार पर था, सन्त पीतर्सबर्ग में मर चुकी थीं। पिता की मृत्यु हो जाने पर अन्ना को भारी मुसीबत का सामना करना पड़ा। सन्त पीतर्सबर्ग में उसने बहुत ही बढ़िया शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन घर को संभालने, जायदाद का काम-काज देखने और सबसे अलग-थलग निपट देहाती जीवन की अन्य ढेर सारी चिन्ताओं का बोझ ढोने में इस शिक्षा ने सहारा नहीं दिया। पूरे जवार में एक भी जीव ऐसा नहीं था जिसे वह जानती

हो, जिससे वह कुछ पूछ-ताछ कर सके। उसके पिता अपने पास-पड़ौसियों से दूर रहते थे। वह अपने पड़ौसियों से और पड़ौसी उनसे, अपने अपने तरीक़े से, नफ़रत करते थे। लेकिन उसने, फिर भी, जी नही छोड़ा और अपनी मां की बहिन राजकुमारी अवदोत्या स्तेपानोवना को तुरंत अपने पास बुला लिया। वह बुरे कैण्डे में ढली, नक-चढ़ी, वृद्ध महिला थी। अपनी भतीजी के घर में पाव रखने के बाद उन्होंने सबसे अच्छे सभी कमरों पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया। सुबह से लेकर रात तक कोड़े-से फटकारतीं और झींकतीं-झल्लातीं, और अपने एकमात्र मुह झुलसे चाटुकार दास को हाज़िरी में लिए बिना कभी बाग़ में टहलने न जातीं। वह हरे रंग की तार तार हुई वर्दी और उसके ऊपर नीले-आसमानी रंग का पट्टा कसे रहता, सिर पर तिर्छी टोपी लगाता। अन्ना ने बड़े धीरज से अपनी मौसी की मनमानी झक्कों को सहा और फ़ुरसत से अपनी बहिन की शिक्षा-दीक्षा में लगी रही। ऐसा मालूम होता था जैसे इस सूने में अपना यौवन खोने की सम्भावना के आगे उसने आत्मसमर्पण कर दिया हो... लेकिन विधाता कुछ और ही सोच रहे थे। ओदिनत्सोव नाम के एक व्यक्ति की नज़र उसपर पड़ी, और वहीं उलझकर रह गई। वह बहुत ही मालदार आदमी था, और आयु साठ ऊपर चार। झक्की, तुनकमिज़ाज, तगड़ा, वज़न का भारी, चिड़चिड़ा। लेकिन यों स्वभाव का बुरा नहीं था, न ही बेवक़ूफ़ था। अन्ना के प्रेम में फंसकर उसने विवाह का प्रस्ताव किया। वह उसकी पत्नी बनने को राज़ी हो गई। क़रीब छे साल तक वह उसके साथ रहा और मरते समय अपनी समूची सम्पत्ति उसे दे गया। उसके मरने के बाद एक साल तक अन्ना देहात में ही बनी रही, इसके बाद अपनी बहिन को लेकर वह विदेश यात्रा के लिए चल पड़ी, लेकिन जर्मनी के अलावा और कहीं न जा

सकी। घर की याद ने सताया और वह अपने प्यारे निकोलस्कोये गांव में वापिस लौट आई। गांव 'एन' नगर से पच्चीस मील दूर था। यहां उसका एक ठाठदार और रईसाना मकान था, बहुत ही बढ़िया बगीचे और लताकुंजों से लैस। स्वर्गीय ओदिनत्सोव ने अपने ऐश व आराम के मामले में कोई कसर नही छोड़ी थी। अन्ना सेर्गेयेवना बिरले ही शहर का चक्कर लगाती थी। आमतौर से जब काम होता तभी वह जाती, सो भी थोड़े समय के लिए ही। ज़िले में उसका मान नही था। ओदिनत्सोव के साथ उसके विवाह ने एक अच्छी-खासी हलचल पैदा कर दी थी और उसे लेकर अनेक मनगढ़न्त कहानियों का जाल बन गया था। लोगों ने कहा कि अपने पिता के पेशे में वह हाथ बंटाती थी और एक पाप का मुंह बन्द करने के लिए ही उसे विदेश जाना पड़ा... भेद-भरे अन्दाज़ में वे इशारा करते: "बस, अब अपनेआप समझ लो," इधर की उधर लगानेवाले, हृदय में जलन लिए अपनी बात को समेटते हुए कहते। "वह आग और पानी में से गुज़र चुकी है," उसके बारे में कहा जाता, और देहात का कोई लाल बुझक्कड़ इसपर चाशनी चढ़ाता: "और खौलते हुए तेल में से भी!" ये सारी ख़ुराफ़ातें उसके कानों तक पहुंचतीं, लेकिन वह उन्हें अनसुना कर देती। वह स्वतंत्र और अपेक्षाकृत दृढ़ प्रकृति की महिला थी।

ओदिनत्सोवा अपनी कुर्सी से पीठ टिकाए और दोनों हाथों को एक-दूसरे से सटाए बज़ारोव की बातें सुन रही थी। अपनी आदत के ख़िलाफ़ बज़ारोव आज ज़रूरत से ज़्यादा बातूनी बना था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह मज़ेदार बातों से अन्ना का जी बहलाने पर तुला हो। आरकादी को इससे और भी हैरत हो रही थी। वह कुछ समझ नहीं सका कि बज़ारोव अपने इस लक्ष्य में पूरा हो रहा है या नहीं। अन्ना के चेहरे से कुछ पता नहीं चलता था कि उसके मस्तिष्क में क्या गुज़र

रहा है। उसकी अडिग नफ़ासत में ज़रा भी बल नहीं पड़ा था—वह एकदम भली और सूक्ष्म बनी बैठी थी। उसकी ख़ूबसूरत आंखों में एकाग्रता की चमक थी, लेकिन यह एकाग्रता भी एकदम स्थिर थी। बज़ारोव की बातों ने, शुरू के कुछ क्षणों में अच्छा असर नही डाला था। उसकी तबीयत कुछ भिनक गई थी—जैसे कोई बदबू का झोंका या किरकिरी आवाज़ आ टकराई हो। लेकिन उसने तुरत ही यह भांप लिया कि वह कुछ सकपका गया है, और इससे वह मन ही मन ख़ुश भी हुई। उसे केवल बाज़ारू बातों से चिढ़ थी, और बज़ारोव बाज़ारू बातों से अछूता था। आरकादी की हैरत का कोई अन्त नहीं था। उस दिन, एक के बाद एक, अनेक अचरज की बातें उसने देखीं। वह उम्मीद करता था कि ओदिनत्सोवा जैसी चतुर स्त्री से बज़ारोव अपने विश्वासों और धारणाओं की बात करेगा। सच पूछो तो ख़ुद ओदिनत्सोवा भी इसी लिए उसकी ओर खिंची थी—ऐसे आदमी को देखने की उसने उत्सुकता प्रकट की थी जो "इतना साहसी है कि किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता"। लेकिन बज़ारोव था कि उस सबके बदले डाक्टरी दवाइयों, होमियोपैथी और वनस्पति विज्ञान के बारे में बातें कर रहा था। और ओदिनत्सोवा ने भी, मालूम हुआ, देहात के निरालेपन में अपना समय यों ही नहीं गंवाया था। उसने कुछ अच्छी पुस्तकें पढ़ी थीं और रूसी भाषा पर उसका अधिकार देखते ही बनता था। बातचीत का सिलसिला उसने संगीत की ओर मोड़ दिया। लेकिन यह देखकर कि बज़ारोव कला को रद्द करता है, वह बड़ी नफ़ासत के साथ फिर वनस्पति विज्ञान की ओर लौट आई—हालांकि इस बीच आरकादी ने लोक-संगीत के गुणों का बखान शुरू भी कर दिया था। ओदिनत्सोवा का उसके प्रति व्यवहार अभी भी छोटे भाई जैसा ही था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह निरी सहृदयता और किशोर-सुलभ अल्हड़पन के सिवा किसी और चीज़ का अस्तित्व उसमें न देखती हो। बिना किसी उतावली

के, तरह तरह के विषयों पर और सरगर्मी के साथ, तीन घंटे से भी अधिक देर तक बातों का सिलसिला चलता रहा।

आख़िर हमारे मित्र विदा लेने के लिए उठे। अन्ना सेर्गेयेवना ने स्निग्ध नज़र से उनकी ओर देखा, दोनों की ओर अपना गोरा-चिट्टा सुन्दर हाथ बढ़ाया और, क्षण भर तक कुछ सोचते हुए, ढुलमुल लेकिन मधुर मुसकान के साथ कहा:

"हां तो सज्जनो, अगर ऊबने का डर न हो तो कभी निकोलस्कोये आकर दर्शन दीजिए।"

"ओह, सच कहता हूं, अन्ना सेर्गेयेवना," आरकादी ने चहकते हुए कहा, "इससे बढ़कर ख़ुशी मेरे लिए और कोई नही हो सकती..."

"और आप, मौसिये बज़ारोव?"

बज़ारोव केवल सिर झुकाकर रह गया, और विदाई के समय एक नये आश्चर्य के रूप में आरकादी ने देखा कि उसके मित्र के गाल लाल होते जा रहे है।

"अब बोलो," गली में निकल आने पर उसने पूछा। "क्या तुम अब भी यही समझते हो कि वह बड़ी ओह-हो-हो है?"

"कुछ पल्ले नही पड़ा कि वह क्या है और क्या नहीं! एकदम बर्फ़ की सिल्ली है, कम्बख़्त!" बज़ारोव ने पलटकर जवाब दिया, और फिर कुछ रुककर बोला: "मलिका-महारानी, पूरी बेगम साहिबा! बस, सिर पर ताज और पीछे दामन-बरदारों की फ़ौज और होती तो कोई कसर न रह जाती!"

"लेकिन हमारी मलिका-महारानियां इतनी बढ़िया रूसी नही बोलतीं," आरकादी ने टीका की।

"वह चक्की में पिस चुकी है, मेरे मुनुआ, उसे हमारी रोटियों का स्वाद मालूम है।"

"तुम कुछ भी कहो, लेकिन है वह बड़ी मीठी!"

"कितना हरा-भरा बदन है," बज़ारोव कहता गया, "शरीर-रचना-शास्त्रियों के अध्ययन के लिए बहुत ही बढ़िया सामग्री!"

"बस बस, ख़ुदा के लिए यह बंद करो, येवगेनी! जानते हो, हर चीज़ की एक हद होती है।"

"अच्छी बात है, इतना नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं, मेरे भोले मित्र! मानता हूं, वह एक नम्बर है। ज़रूर उसके गांव चलेंगे।"

"कब?"

"कल का दिन छोड़कर परसों। क्यों, कैसा रहेगा? यहां पड़े रहने से क्या फ़ायदा? कूक्शिना के साथ शैम्पेन पीना? या तुम्हारे उस उदारपंथी सम्मानित रिश्तेदार के सामने कान फटफटाना? तो परसों का तय समझो। और सुनो, मेरे पिता की जागीर भी वहां से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है। यह वही निकोलस्कोये है न जो 'एन' सड़क पर पड़ता है?"

"हां।"

"Optime*, अलसाने से काम नहीं चलेगा। केवल मूर्ख अलसाते हैं, और बुद्धिमान पंछी। भई ख़ूब, क्या हरियल बदन पाया है उसने!"

तीन दिन बाद दोनों मित्रों ने निकोलस्कोये गांव की राह पकड़ी। दिन उजला था। गर्मी कोई ख़ास नहीं थी। सराय-गाड़ी के नाटे चिकने घोड़े तेज़ चाल से दौड़ रहे थे। उनकी पूंछें लटदार और गुंथी हुई थीं। आरकादी ने दूर तक सड़क पर नज़र डाली और जाने क्यों उसके होंठों पर मुसकराहट खेल गई।

---

* अति उत्तम। (लैटिन) – सं०

"अरे, मुझे बधाई दो!" सहसा बज़ारोव छलछला उठा। "आज बाईस जून है, मेरे इष्ट-सन्त का दिन। देखना है, उनका वरदान क्या फल देता है। घर पर मेरा इन्तजार हो रहा होगा," बज़ारोव ने कहा और फिर अपनी आवाज़ को धीमी करता हुआ बोला: "लेकिन कोई बात नहीं। करने दो उन्हें इन्तजार!"

१६

अन्ना सेर्गेयेवना की गढ़ी, जिसमें वह रहती थी, खुले पहाड़ी बाजू पर स्थित थी। यहां से पास ही ईंटों का एक पक्का गिरजा था। गिरजा पीला पुता हुआ था और उसपर हरी छत छाई थी। उसके खंभे सफ़ेद थे और सदर दरवाज़े पर भित्ति चित्र अंकित थे जिनमें, इतालवी ढंग से, महात्मा ईसा के कब्र से जी उठने के दृश्य दिखाए गए थे। अग्र भाग में लोहे की टोपी पहने सांवले योद्धा की एक विनत आकृति थी। उसके बदन की रेखाओं की गोलाई देखते ही बनती थी। गिरजे से परे दो पांतों में गांव फैला था। कहीं कहीं, छतों के ऊपर उठी धुवां निकलने की चिमनियों की छतरियां दिखाई दे रही थी। गढ़ी और गिरजा एक ही शैली के बने थे—उस शैली के जिसे आमतौर से अलेक्सान्द्रियन शैली कहा जाता है। गिरजे की भांति गढ़ी भी पीली पुती थी और उसके ऊपर हरी छत छाई थी। उसके खंभे भी सफ़ेद थे और अग्र भाग ज़िरहबख्तरी चिन्ह से सजा था। प्रदेश के इमारत-साज़ ने, स्वर्गीय ओदिनत्सोव की मर्ज़ी से, इन दोनों का डिज़ाइन तैयार किया था। गड़बड़झाले और कल्पना की कलाबाज़ियों को—जैसा कि नयी चाल के विचारों को ओदिनत्सोव कहता था—वह कतई बरदाश्त नहीं करता था। मकान के अग़ल-बग़ल, दोनों ओर, एक पुराने बाग़ के घने पेड़ छाए थे।

सामने फाटक तक जानेवाला रास्ता दोनों ओर छंटे-संवरे फर के वृक्षों से सजा था।

हमारे मित्र वहां पहुंचे। घर के बड़े हॉल में दो प्यादों ने उनका स्वागत किया था। प्यादे तगड़े और वर्दी से लैस थे। उनमें से एक उसी क्षण भंडारी को खोजने चला गया। भंडारी एक स्थूलकाय आदमी था, काला फ़ाक-कोट पहने हुए। वह तुरत आ गया और मेहमानों को कालीन-बिछे ज़ीने से उस कमरे में ले गया जहां उन्हें ठहराना था। कमरे में दो पलंग बिछे थे, साज़-सिंगार का अन्य सारा सामान मौजूद था। देखते ही हृदय पर क़ायदे और क़रीने की छाप पड़ती थी। हर चीज़ चुस्त और दुरुस्त थी; हर चीज़ – बड़ी होशियारी से – एक भीनी सुगंध में पगी हुई। लगता था जैसे किसी मंत्रालय का बैठक-घर हो।

"अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रार्थना की है कि आप आधे घंटे ठहरने की कृपा करें," भंडारी ने आकर सूचना दी, "तब मैं आपको उनके पास ले चलूंगा। इस बीच अगर आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं सेवा में हाज़िर हूं।"

"नहीं, भाई, कुछ नहीं चाहिए," बजारोव ने जवाब दिया। "हां! तुम्हारा भला होगा, अगर गला तर करने के लिए ज़रा एक गिलास वोदका ले आओ।"

"अच्छा, श्रीमान!" भंडारी ने कुछ सकपकाकर कहा और वापिस लौट गया। जाते समय उसके जूते मचमचा रहे थे।

"क्या रईसी शान है!" बज़ारोव ने आवाज़ कसी। "क्यों तुम्हारी रईसी जमात में यही कहा जाता है न? आख़िर राजरानी जो ठहरी!"

"और राजरानी भी कितनी बेजोड़," आरकादी ने चुटकी ली, "जो एक झोंक में तुम और मुझ जैसे बेशकीमती कुलीनों की जोड़ी को निमंत्रण दे डालती है!"

"ख़ासतौर से मुझे – जिसके बाप हड्डीसाज़ थे, बेटा भी हड्डीसाज़ बनने जा रहा है और जिसके दादा गिरजे में छोटे पादरी थे ... क्यों, तुम्हें मालूम है न कि मैं छोटे पादरी का पोता हूं?" और फिर, थोड़ा रुककर, अपने होंठों में बल डालते हुए बोला: "स्पेरान्स्की की भांति। लेकिन, यह मानना पड़ेगा कि है वह सिर-चढ़ी, तुम्हारी वह राजरानी, सच! हमें भी अब अपने ड्रैसिंग सूट में लैस हो जाना चाहिए, क्यों?"

आरकादी ने केवल अपने कंधे बिचकाए ... लेकिन वह भी अटपटा-सा अनुभव कर रहा था।

आधे घंटे बाद आरकादी और बज़ारोव नीचे ड्राइंगरूम में पहुंचे। यह एक खुला-सा, हवादार, रईसी ठाठ में सजा कमरा था। लेकिन सजावट कोई ख़ास सुरुचिपूर्ण नहीं थी। बेलबूटेदार किशमिशी काग़ज से मढ़ी दीवारों के सहारे, ठेठ रस्मी तरीक़े से, वज़नी तथा बेशकीमती फ़र्नीचर – मेज़, कुर्सियां, सोफ़ा, आदि – सजा था। अपने एक मित्र और एजेण्ट की मारफ़त, जो शराब का व्यापारी था, स्वर्गीय ओदिनत्सोव ने मास्को से यह फ़र्नीचर मंगवाया था। मुख्य तख़्तपोश के ऊपर किन्हीं हृष्ट-पुष्ट सुनहरे बालोंवाले श्रीमान का चित्र लगा था। ऐसा मालूम होता था जैसे उन्हें आगन्तुक न रुचे हों और चढ़ी हुई नज़रों से उन्हें घूर रहे हों।

"यह खुद बुढ़ऊ ही मालूम होते हैं," बज़ारोव ने आरकादी के कान में फुसफुसाकर कहा और अपनी नाक में सलवटें डालता हुआ बोला: "अच्छा हो कि यहां से उलटे-पांव खिसक चलें।"

इसी समय मालकिन ने कमरे में पांव रखा। वह हल्की आबेरवां की पोशाक पहने थी। बाल बहुत ही सुथराई के साथ संवार-

कर कानों के पीछे कर लिए गए थे जिससे उसके चेहरे की ताजगी और निश्चलता में एक बाल-सुलभ निखार आ गया था।

"मेरी मेहमानी मंजूर करने का वायदा आपने पूरा किया, इसके लिए धन्यवाद," उसने कहना शुरू किया। "यों यह बुरी जगह नहीं हैं, सच। अपनी बहिन से मैं तुम्हारा परिचय कराऊंगी। वह बहुत बढ़िया पियानो बजाती है। आपको तो, मौसिये बजारोव, इसमें कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन मौसिये किरसानोव – मै समझती हूं – संगीत पसंद करते हैं। बहिन के अलावा मेरी एक बूढ़ी मौसी भी यहीं रहती हैं, और कभी कभी ताश खेलने के लिए हमारा एक पड़ौसी भी आ जाता है। कुल मिलाकर यही हमारी मंडली हैं। अच्छा तो अब बैठ जाएं हम लोग।"

ओदिनत्सोवा ने अपना यह छोटा-सा सम्भाषण एक निराली सफ़ाई के साथ दिया, जैसे उसने इसे रट रखा हो। फिर वह आरकादी की ओर मुड़ी। पता चला कि उसकी मां आरकादी की मां को जानती थी और निकोलाई पेत्रोविच के प्रेमाभिसार के काल में उसने 'मन की मीत' का काम किया था। आरकादी बड़े चाव के साथ अपनी मां के बारे में बातें करने लगा और बज़ारोव ने चित्रों के अलबमों को देखना शुरू किया। "मैं भी क्या मेमना बन गया हूं," वह मन ही मन सोच रहा था।

एक खूबसूरत बोरज़ोई कुत्ता, गले में नीला पट्टा डाले, ड्राइंगरूम में लपक आया और अपने पंजों को फ़र्श पर थपथपाकर आवाज़ करन लगा। उसके पीछे पीछे अठारह वर्ष की एक लड़की ने प्रवेश किया जिसके बाल काले और रंग बादामी था; कुछ गोलाई लिए, मगर आकर्षक, चेहरा और छोटी छोटी काली आंखें। वह फूलों से भरी एक डलिया लिए थी।

"यह है कात्या, मेरी बहिन," गरदन हिलाकर उसकी ओर इशारा करते हुए ओदिनत्सोवा ने कहा।

सलीके से उसने घुटने झुकाए और अपनी बहिन की बग़ल में बैठ कर फूलों को छांटने लगी। बोरज़ोई कुत्ता, जिसका नाम फिफ़ी था, बारी बारी से दोनों अतिथियों के पास गया और पूछ हिलाते हुए अपनी ठंडी थूथनी से उनके हाथों को दुलराया।

"क्या ये सब फूल तुम्हीं ने चुने हैं?" ओदिनत्सोवा ने पूछा।

"हां," कात्या ने जवाब दिया।

"मौसी चाय पीने आ रही हैं न?"

"हां, आ रही हैं।"

बोलते समय कात्या बहुत ही मुग्ध, सलज्ज और सरल भाव से मुसकराती थी। आंखों में एक रोचक ताड़ना लिए वह अपनी भौंहों के नीचे से देखती थी। उसकी हर चीज़ में— उसकी आवाज़ में, उसके चेहरे के कोमल ढलाव, उसके गुलाबी हाथों की पीत भंवरियों और कुछ सकुचे से उसके कंधों में एक ताजगी और अकृत्रिमता थी ... वह सांस खीचे थी और उसके चेहरे पर रंगों की लहरियां निरन्तर बदल रही थीं।

ओदिनत्सोवा बज़ारोव की ओर मुड़ी।

"केवल शाइस्तगी के नाते आप उन चित्रों में सिर खपा रहे हैं, येवगेनी वसीलियेविच," उसने कहा, "उनमें भला आपका क्या मन लगेगा? छोड़िए उन्हें, और इधर हमारे पास खिसक आइए, कुछ बातचीत कीजिए।"

बज़ारोव ने अपनी कुर्सी निकट खिसका ली।

"कहिए, क्या बातचीत करना चाहती हैं?"

"जो भी आप चाहें। और यह पहले से जान रखिए कि बहस के मामले में मैं भी काफ़ी शहज़ोर हूं।"

"आप?"

"हां मैं। क्यों, अचरज होता है क्या? आख़िर किस लिए?"

"इसलिए कि जहां तक मैं समझ सका हूं, आप ठंडे और शान्त स्वभाव की हैं, और बहस के लिए कुछ गर्मी की—भावावेश की—जरूरत होती है।"

"लगता है, आपने मुझे बहुत जल्दी पहचान लिया। पहली बात तो यह कि मैं अधीर और हठीली हूं, न हो, कात्या से पूछ देखिए। दूसरे, मै बड़ी आसानी से आवेश में बहना जानती हूं।"

बज़ारोव ने अन्ना सेर्गेयेवना की ओर देखा।

"शायद, आप ही जानें। तो आप बहस करना चाहती हैं—अच्छी बात है। आपकी अलबम में मै सैक्सोनियन स्विज़रलैण्ड के दृश्य देख रहा था। आपने रिमार्क कसा कि उनमें मेरा क्या मन लग सकता है। यह आपने इसलिए कहा कि आप मुझे कलात्मक रुचि से शून्य समझती हैं। यह सच भी है, मुझमें कलात्मक रुचि नहीं है। लेकिन उन दृश्यों में मेरी दिलचस्पी हो सकती है—भूतत्व की दृष्टि से। मिसाल के लिए जैसे पहाड़ों की चट्टानी बनावट के अध्ययन के रूप में।"

"माफ़ कीजिए। भूतत्व के लिए आपको किसी पुस्तक की ओर, या इस विषय के किसी अन्य ग्रंथ की ओर, लपकना चाहिए, न कि चित्रों की ओर।"

"जिस चीज को पुस्तक के दस पन्ने भी मूर्त नही कर पाते, उसे चित्र एक ही झलक में मूर्त कर देते हैं।"

कुछ देर तक अन्ना सेर्गेयेवना चुप रही। फिर मेज़ पर कोहनियों के बल झुकते और अपने चेहरे को बज़ारोव के और अधिक निकट लाते हुए बोली:

"क्या सचमुच आपमें कोई कलात्मक रुचि नही है? उसके बिना भला कैसे चल सकता है?"

"पहले यह बताइए, आखिर किस मसरफ़ की चीज़ है वह?"

"तो सुनिए। और भी कुछ नहीं तो उससे लोगों को जाना जा सकता है, उनका अध्ययन किया जा सकता है।"

बज़ारोव व्यंग से मुसकराया।

"पहली बात तो यह कि इसकी पूर्ति अनुभव कर देता है। दूसरी यह कि, आप समझ रखिए, व्यक्तियों का अध्ययन करना अपना समय बरबाद करना है। सभी लोग एक से होते हैं। शरीर से भी, और आत्मा से भी। हममें से प्रत्येक के पास उसका एक मस्तिष्क होता है, जिगर होता है, हृदय होता है और फेफड़े होते हैं। ये सब समान क्रम से सजे होते हैं। और जिन्हें नैतिक गुण कहा जाता है, वे सब भी हममें समान रूप से होते हैं, यों थोड़े हेर-फेर से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मानव जाति का एक नमूना जांच के लिए काफ़ी है। जैसा वह, वैसे सब और। लोग जंगल के पेड़ों की भांति हैं। कोई भी वनस्पति-शास्त्री प्रत्येक बर्च-वृक्ष की जांच करने का पागलपन नहीं करेगा।"

कात्या ने, जो अब तक बेफ़िक्री के साथ गुलदस्ते के लिए फूल चुनने में व्यस्त थी, चकित मुद्रा में बज़ारोव की ओर देखा और उसकी तेज बेपर्वाह नज़र का सामना होने पर उसके गाल कानों तक लाल रंग गए। अन्ना सेर्गेयेवना ने अपना सिर हिलाया।

"जंगल के पेड़ों की भांति?" उसने दोहराया। "तो आपकी राय में मूर्ख और चतुर, भले और बुरे व्यक्ति के बीच कोई अन्तर नहीं है?"

"नहीं, अन्तर है। वैसा ही जैसा कि एक रोगी और स्वस्थ व्यक्ति के बीच होता है। क्षयग्रस्त फेफड़ों की हालत वही नहीं होती जो कि आपके या मेरे फेफड़ों की, हालांकि बनावट उनकी भी वैसी ही होती है जैसी कि सबकी। शरीर में रोग पैदा करनेवाले कारणों को हम क़रीब क़रीब जानते हैं। नैतिक रोग बुरी शिक्षा और उन सारी

ख़ुराफ़ातों के नतीजे होते हैं जो बचपन से ही लोगों के दिमाग़ों में ठूंसी जाती हैं। संक्षेप में यह कि समाज की अधन्य स्थिति ही इन सब की जड़ है। समाज को बेहतर बनाओ, बीमारियां ग़ायब हो जाएंगी।"

यह सब बज़ारोव ने कुछ ऐसे अन्दाज़ में कहा जैसे उसने अपने मन में सोच लिया हो: "मानो या न मानो, इसकी मुझे रत्ती-भर पर्वाह नहीं।" अपनी लम्बी उंगलियों की धीमी हरकत से वह अपने गलमुच्छों को संवार रहा था, और उसकी आंखें बेचैनी से सारे कमरे में तैर रही थीं।

"तो आपका विश्वास है कि," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "समाज की सुधरी हुई अवस्था में न कोई मूर्ख रहेगा, न बद?"

"जो हो, यह तय है कि समाज की सुसंगत व्यवस्था हो जाने पर किसी व्यक्ति के मूर्ख या चतुर, भले या बुरे होने से कोई ख़ास फ़र्क नहीं पड़ेगा।"

"जी, मैं समझी। तब हम सबका गुर्दा एक-सा होगा।"

"बिल्कुल ठीक, मदाम!"

ओदिनत्सोवा आरकादी की ओर मुड़ी।

"और आपकी राय क्या है, आरकादी निकोलायेविच?"

"वही जो येवगेनी की," उसने जवाब दिया।

कात्या ने भौंहों में बल डाले उसकी ओर देखा।

"सज्जनो, अजीब मालूम होते हैं आप लोग," ओदिनत्सोवा ने कहा। "लेकिन छोड़िए, इसपर फिर कभी बात करेंगे। आहट से मालूम होता है, मौसी चाय के लिए आ रही हैं। उनके कानों को हमें रिहाई देनी चाहिए।"

अन्ना सेर्गेयेवना की मौसी, राजकुमारी 'ऐक्स', कमरे में दाख़िल हुई। एक मुख़्तसिर-सी, दुबली-पतली महिला, झुर्रियों से चुरमुर छोटा-सा

चेहरा, घूरती हुई कुत्सापूर्ण आंखें, सिर पर नोची-खरोची-सी भूरे बालों की टोपी। नामालूम-से अन्दाज़ में अतिथियों के प्रति सिर झुकाकर वह एक चौड़ी मखमली आरामकुर्सी पर बैठ गई। इस कुर्सी पर सिवा उनके और कोई बैठने का साहस नहीं कर सकता था। कात्या ने उनके पांव के नीचे एक स्टूल डाल दिया। वृद्धा ने उसे धन्यवाद नहीं दिया, आंखें उठाकर देखा तक नहीं, केवल उनके हाथों ने पीले शाल के भीतर थोड़ी-सी हरकत की जिसमें उनका मुख़्तसिर-सा शरीर क़रीब क़रीब पूर्णतया लिपटा था। पीला रंग राजकुमारी 'ऐक्स' को प्रिय था। उनकी टोपी के फीते तक उजले पीले रंग के थे।

"नीद कैसी आई, मौसी?" ओदिनत्सोवा ने अपनी आवाज़ को ऊंची करते हुए पूछा।

"ओह, यह कुत्ता, फिर यहां आ पहुंचा," वृद्धा गुर्राई और यह देखकर कि फ़िफ़ी झिझकता-सा कई डग उनकी ओर बढ़ आया है, वह चिल्लाई: "श्शू . . . श्शू!"

कात्या ने फ़िफ़ी को बुलाकर दरवाज़ा खोल दिया।

फ़िफ़ी प्रसन्नता से छलांग मारकर बाहर हो गया, इस उमंग से कि खूब घूमे-खेलेगा, लेकिन बाहर अपने आपको अकेला पाकर वह दरवाजे को खरोंचने और कीं कीं करने लगा। राजकुमारी के तेवर चढ़ गए और कात्या अधमनी होकर सोच रही थी कि बाहर लपक जाऊं. . .

"मेरे ख़याल से चाय तैयार है," ओदिनत्सोवा ने कहा, "चलिए, सज्जनो, चलें। आओ मौसी, चाय पी लें।"

राजकुमारी 'ऐक्स' चुपचाप अपनी कुर्सी से उठीं और सबसे पहले कमरे से बाहर निकलीं। अन्य सब भी उनके पीछे पीछे भोजन-घर में पहुंचे। वर्दी से चुस्त-दुरुस्त एक लड़के—नौकर—ने वैसी ही अस्पर्श्य तथा गद्दीदार आरामकुर्सी खींचकर बाहर निकाली और राजकुमारी ने उसपर आसन

जमा लिया। कात्या ने—चाय डालने का काम उसी के ज़िम्मे था—सबसे पहले मौसी के प्याले में चाय उंडेली। प्याले पर सामन्ती शौर्य की सजावट थी। वृद्धा ने अपनी चाय में थोड़ा शहद मिलाया (चाय के साथ चीनी लेना उन्हें गुनाह और फिजूलख़र्ची मालूम होती थी, हालांकि अपनी गांठ से किसी चीज़ के लिए भी वह एक फूटी कौड़ी तक ख़र्च नहीं करती थीं) और अचानक बैठी हुई सी आवाज में पूछा :

"और राजकुमार इवान ने क्या लिखा है ?"

जवाब में किसी ने कुछ नहीं कहा। बज़ारोव और आरकादी से यह छिपा नहीं रहा कि वृद्धा की बातों पर कोई ध्यान नही देता, हालांकि उसके साथ सब सम्मान से पेश आते हैं। "राजघराने की इस तलछट को," बज़ारोव ने सोचा, "इन्होंने ख़ाली नुमाइश के लिए रख छोड़ा है!"

चाय के बाद अन्ना सेर्गेयेवना ने बगीचे में टहलने का सुझाव रखा। लेकिन तभी फुहारें पड़ने लगी और मण्डली, सिवा राजकुमारी के, ड्राइंगरूम में लौट आई। इस बीच ताश खेलने का शौक़ीन पड़ौसी भी आ गया। वह मोटा-सा आदमी था। नाम पोरफ़िरी प्लातोनिच। स्थूलकाय, सफ़ेद बाल, छोटी छोटी टांगें जो ऐसी मालूम होती थीं जैसे उसकी नाप के अनुसार तराशी गई हों; बहुत ही सलीकेदार और आसानी से खुश हो जानेवाला। अन्ना सेर्गेयेवना ने, जो इस बीच अधिकांशतः बज़ारोव से ही बातें करने में जुटी थी, उससे पूछा कि क्या वह पुरानी चाल का 'तरजीह' खेल खेलना पसंद करेंगे। बजारोव तैयार हो गया। कहा, देहात में जब डाक्टरी करनी है तो इसके लिए अपने को तैयार करना भी जरूरी है।

"लेकिन ज़रा सचेत रहना," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "पोरफ़िरी प्लातोनिच और मैं—हम दोनों तुम्हें मात देने जा रहे हैं।

श्रौर तुम कात्या," उसने कहा, "श्रारकादी के लिए कुछ बजाकर सुनाश्रो। वह संगीत के शौक़ीन हैं। लगे हाथ हम भी सुन लेंगे।"

कात्या अनमनी-सी पियानो पर पहुंच गई। श्रौर श्रारकादी, बावजूद इसके कि वह संगीत का शौक़ीन था, बेमन से उसके साथ हो लिया। उसके मन में सन्देह था कि श्रोदिनत्सोवा उसे टाल रही है। फिर भी उसका हृदय–जैसा कि उसकी श्रायु के हर युवक के साथ होता है–प्रेम के बुखार की भांति किसी धुधली श्रौर श्रलसा देनेवाली भावना से कुड़मुड़ा रहा था।

कात्या ने पियानो का ढक्कन उठाया श्रौर बिना श्रारकादी की श्रोर देखे धीमी श्रावाज़ में पूछा:

"श्राप क्या सुनना पसन्द करेंगे?"

"वही जो श्राप चाहें," श्रारकादी ने श्रनमनेपन से जवाब दिया।

"श्राप कैसा संगीत पसन्द करते है?" कात्या ने श्रपनी उसी मुद्रा में फिर पूछा।

"शास्त्रीय संगीत," श्रारकादी ने उसी लहजे मे जवाब दिया।

"क्या श्राप मोज़ार्त पसन्द करते हैं?"

"हां।"

कात्या ने मोज़ार्त की सोनाटा की एक गत की स्वरलिपि निकाली। वह बहुत श्रच्छा बजाती थी। हां, उसके बजाने में नफ़ासत तो ख़ूब थी, पर भाव-प्रवीणता नही। श्रांखें उसकी स्वरलिपि पर जमी थीं श्रौर होंठ कसकर भिंचे थे। बदन को लकड़ी की भांति कड़ा किए वह सीधी बैठी थी। केवल श्रन्त में, उस समय जबकि वह सोनाटा की श्रन्तिम कड़ी बजा रही थी, उसके चेहरे पर कुछ चमक दिखाई दी श्रौर उसकी एक लट, घुंघराले बालों से छिटककर, उसकी भौंहों के ऊपर लहरा गई।

सोनाटा के अन्तिम अंश ने आरकादी को ख़ासतौर से मुग्ध किया जहां मदिर-मस्त संगीत की आल्हादपूर्ण प्रफुल्लता अचानक खण्ड खण्ड होकर बहुत ही तीखे – एकदम दुःखद – शोक में फूट पड़ती है... लेकिन मोज़ार्त के संगीत की स्वर-लहरियों ने जिन भावों से उसे अभिभूत किया, कात्या से उनका कोई वास्ता नहीं था। उसकी ओर देखकर उसने महज़ यही सोचा: "कुलीन घराने की यह युवती कतई बुरा नहीं बजाती, और देखने में भी यह ऐसी बुरी नहीं है।"

सोनाटा को बजाने के बाद कात्या ने – उसकी उंगलियां अभी भी पियानो की पटरियों पर रखी थीं – आरकादी से पूछा:

"बस, या और कुछ?"

आरकादी ने कहा कि आपको और अधिक कष्ट देना मेरे बूते से बाहर है, और उसने मोज़ार्त के बारे में उससे बातचीत शुरू कर दी। उसने पूछा: "यह सोनाटा खुद आपने अपनी पसंद से चुनी है या किसी के सिफ़ारिश करने से?" अस्फुट से शब्दों में कात्या ने इसका कुछ जवाब दिया और अपने में सिमटकर मूक-सी हो गई। और एक बार अपने घोंघे में सिमट जाने के बाद, आमतौर से, वह बड़ी मुश्किल से काफ़ी देर में बाहर निकलती थी। ऐसे मौक़ों पर उसके चेहरे पर एक हठ का – क़रीब क़रीब पथराया हुआ सा – भाव छा जाता था। उसे एकदम शरमीली नहीं कहा जा सकता। उसमें एक अविश्वास-सा भरा था और बहिन की सरपरस्ती ने उसे कुछ दब्बू-सा बना दिया था, हालांकि बहिन को इसका, कहने की आवश्यकता नही, कभी सपने में भी आभास नही होता था। इस अटपटे मौन को भरने के लिए आरकादी ने फ़िफ़ी को पुचकारा जो अब फिर कमरे में आ गया था, और भलमनसाहत से मुसकराते हुए उसका सिर थपथपाने लगा। कात्या फिर अपने फूलों में खो गई।

उधर बज़ारोव मात पर मात खा रहा था—हार का दण्ड भर रहा था। अन्ना सेर्गेयेवना चतुर खिलाड़ी थी, और पोरफ़िरी प्लातोनिच भी ताश के मैदान में मोर्चे से डिगनेवाला जीव नही था। बज़ारोव की हार, नगण्य होते हुए भी, सुखद नही थी। ब्यालू के समय अन्ना सेर्गेयेवना ने वनस्पति-विज्ञान की चर्चा फिर छेड़ दी।

"चलिए, कल सुबह हम टहलने निकले," उसने कहा, "मै चाहती हूं कि जंगली पौधों के लैटिन नाम और उनके गुणों के बारे मे आप मुझे बताएं।"

"लैटिन नाम जानकर आप क्या करेंगी?" बजारोव ने पूछा।

"इसलिए कि क़ायदे से हर चीज़ मालूम होनी चाहिए।"

"कितनी अद्भुत स्त्री है यह अन्ना सेर्गेयेवना!" अपने कमरे के एकान्त में आरकादी ने अपने मित्र से छलछलाकर कहा।

"हां," बजारोव ने जवाब दिया, "कम्बख़्त का दिमाग़ बड़ा काइयां है। और मेरी यह बात भी तुम गांठ बांध रखो, वह निपट कोरी नही, बल्कि दुनिया-देखी मालूम होती है।"

"यह तुम किस अर्थ में कह रहे हो, येवगेनी वसीलियेविच?"

"अच्छे अर्थ में, मेरे प्यारे साथी, अच्छे अर्थ में। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह अपनी जागीर का काम-काज भी ठाठ से संभालती होगी। लेकिन अद्भुत वह नहीं, बल्कि उसकी बहिन है।"

"क्या-आ? वह सांवली टुइयां-सी लड़की?"

"हां, वह सांवली टुइयां-सी लड़की। समूची ताज़गी, समूची निश्छलता, संकोच तथा सहम, और अन्य सभी कुछ जैसे एक उसी में सिमटकर समा गया है। ध्यान देने लायक़ चीज़ है। अभी भी

ऐसी है कि चाहे जिस सांचे में उसे ढाल लो। लेकिन दूसरी सारे दांव-पेंच से वाक़िफ़ है।"

आरकादी ने कुछ नहीं कहा और दोनों, अपने अपने विचारों में डूबे, बिस्तरों पर पड़ रहे।

अन्ना सेर्गेयेवना भी, उस रात, अपने मेहमानों के बारे में सोचती रही। बज़ारोव उसे अच्छा लगा, इसलिए कि बनावट का उसमें अभाव था और बेलाग ढंग से बातें करता था। उसमें उसे एक नयापन, कुछ ऐसा जो उसने पहले नहीं देखा था, मालूम हुआ। और उत्सुकता तो उसकी आदत में शामिल थी ही।

अन्ना सेर्गेयेवना अपेक्षाकृत एक निराली जीव थी। दुराग्रहों से वह मुक्त थी, यहां तक कि उसमें ऐसा कोई विश्वास नहीं था जिसे दृढ़ कहा जा सके। इसलिए न तो वह कभी कुछ हारती थी, और न कभी कुछ जीतती थी। कितनी ही चीज़ों को वह साफ़ देखती थी, कितनी ही चीज़ों में उसे दिलचस्पी मालूम होती थी, लेकिन पूर्णतया वह किसी चीज़ से सन्तुष्ट नहीं होती थी। न ही पूर्णतया सन्तुष्ट होने की वह कभी आशा करती थी। उसका मस्तिष्क एक साथ उत्सुक भी था, और उदासीन भी। उसके सन्देह कभी इस हद तक शान्त नहीं होते थे कि वह उन्हें भूल जाए, और न ही कभी इस हद तक बढ़ते थे कि चिन्ता बनकर उसके दिमाग़ पर सवार हो जाएं। अगर वह सम्पन्न और स्वतंत्र न होती तो शायद वह भी भंवर में कूद पड़ी होती और उसे भी पता चल गया होता कि हृदय का कुड़मुड़ाना-कसमसाना क्या होता है... लेकिन वह इन सब झंझटों से मुक्त, निश्चिंत जीवन बिताती थी, हालांकि कभी कभी वह ऊब ज़रूर जाती थी। उसके दिन, इस प्रकार, समतल प्रवाह से बीत रहे थे और कभी कभी ही उनमें विह्वलता की लहरियां उठती थीं। कभी कभी

उसकी कल्पना गुलाबी बाना धारण कर उसकी आंखो के सामने अपना रंग-बिरंगा सपनों का जाल बुनती, लेकिन उसके धुधला पड़ते ही वह फिर अलसा जाती और उनके विलीन हो जाने का उसे कोई मलाल न होता। कभी कभी, अपनी कल्पना के बहाव में, वह उन सीमाओं को भी लांघ जाती जिन्हें परंपरागत नैतिकता ने खड़ा किया है। लेकिन ऐसा होने पर भी उसका रक्त उसके लोचदार स्थिर शरीर की शिराओं में उसी अलस गति से—बिना किसी तेज़ी के—प्रवाहित होता रहता। कभी कभी सुगंधित स्नान से बाहर निकलने के बाद, हृदय में गरमाहट और अंग-अंग में मृदुता लिए, वह जीवन की तुच्छता, उसके शोक और सन्ताप, उसके कष्टों और बुराइयों के बारे में सोचने लगती... उसके हृदय में अचानक साहसिक कार्य करने की एक हूक-सी उठती, शुभ्र आकांक्षाओं की आभा से वह दमकने लगती; लेकिन अध-खुली खिड़की में से हवा का एक झोंका आता और अन्ना सेर्गेयेवना सिहरकर सिकुड़ती तथा कोसती और गुस्से के मारे क़रीब क़रीब आपे से बाहर हो जाती। उस समय सिवा इसके वह और कुछ न चाहती कि हवा के उस कुत्सित झोंके को उसके बदन का स्पर्श करने से रोक दिया जाए।

प्रेम से अनजान सभी स्त्रियों की भांति उसके हृदय में भी किसी चीज़ के लिए एक हूक-सी उठती, लेकिन यह वह खुद भी न जानती कि जिस चीज़ की उसे चाह है, वह क्या है। सच तो यह है कि वह कुछ नहीं थी, हालांकि उसे लगता यह था कि वह हर चीज़ चाहती है। स्वर्गीय ओदिनत्सोव के घर में अभी उसने रहना शुरू ही किया था (उसके लिए यह एक सहूलियत की शादी थी, हालांकि उसने, शायद, तब तक उसकी पत्नी बनना मंजूर नहीं किया जब तक कि उसे उसके नेक आदमी होने का विश्वास नहीं हो गया)

कि उसके हृदय में सभी पुरुषों के लिए एक गुप्त घृणा समा गई। उन्हें वह सदा गंदगी में रमनेवाले, बोझिल और बोदे जीवों का, बेहद उबा देनेवाला समुदाय समझती। विदेश में किसी जगह स्वीडन के निवासी एक सुन्दर युवक ने—जिसके चेहरे से शौर्य टपकता था और जिसकी नीली आंखों में स्पष्टवादिता की झलक थी—हृदय पर अत्यन्त गहरा असर डाला, लेकिन वह भी उसे रूस लौटने से नहीं रोक सका।

"विचित्र जीव है यह... यह भावी डाक्टर!" अपने शानदार बिस्तरे पर लेटे-लेटे बदन को हल्की रेशमी रज़ाई से ढके और बेल-टंके तकिए पर अपना सिर टिकाए, उसने सोचा... पिता की ऐशपसन्दी का कुछ अंश अन्ना सेर्गेयेवना में भी आ गया था। ऐयाशी में डूबे लेकिन बहुत ही सहृदय अपने पिता को वह ख़ूब चाहती थी, लेकिन वह भी उसे अपनी आंखों में संजोकर रखते थे, बराबर का बरताव करते थे और अपनी मित्रतापूर्ण फुल-झड़ियों से उसका मनोरंजन करते थे और बिना किसी हिचक के उसे अपने मन की बात बता देते थे। मां की उसे बहुत ही धुधली-सी याद थी।

"विचित्र जीव है वह!" उसने मन ही मन दोहराया। अपने बदन को सीधा किया, मुसकराई, सिर के पीछे ले जाकर हाथों को गूंथा, फिर एक वाहियात-से फ़्रेंच उपन्यास के एक या दो पन्नों पर अपनी आंखें दौड़ाई, और उसे पटककर सो गई—एकदम ताज़ा और शीतल, महक में बसे अपने अल्प-वस्त्रों में ढकी-अनढकी।

अगली सुबह, नाश्ता करने के तुरत बाद, अन्ना सेर्गेयेवना बज़ारोव के साथ वनस्पतियों की उधेड़-बुन करने निकल गई और दोपहर के भोजन का समय होने तक नहीं लौटी। आरकादी कहीं नहीं गया और क़रीब एक घंटा कात्या के साथ रमा रहा। उसकी संगत में उसे जरा भी ऊब नहीं मालूम हुई। खुद कात्या ने ही कलवाली सोनाटा को दोहराने का प्रस्ताव किया था। लेकिन अन्त में जब

ओदिनत्सोवा लौटकर आई और आरकादी की उसपर नज़र पड़ी तो उसने क्षण-भर के लिए एक कसक का अनुभव किया... थके हुए से डगों से वह बाग की ओर से लौट रही थी, उसके गाल दमक रहे थे और सींकों के गोल हैट के नीचे उसकी आंखें अन्य दिनों से अधिक उजली आभा से चमक रही थी। किसी जंगली फूल की कोमल टहनी लिए वह उससे खेल रही थी। सिर की जाली खिसककर उसकी कोहनियों पर आ गई थी, और उसकी टोपी के चौड़े सुरमई फीते उसके वक्ष पर फरफरा रहे थे। बज़ारोव उसके पीछे-पीछे आ रहा था—वैसा ही अपने आपमें पूर्ण और मस्त। लेकिन आरकादी को उसके चेहरे का भाव अच्छा नही लगा, हालाकि उसमें प्रफुल्लता और यहां तक कि मृदुता भी थी। दांतों के बीच से गुडमोर्निंग बुदबुदाकर बज़ारोव अपने कमरे में चला गया। ओदिनत्सोवा ने खोए-से अन्दाज़ से आरकादी से हाथ मिलाया और वह भी अपनी राह आगे बढ़ गई।

"गुडमोर्निंग," आरकादी ने सोचा, "मानो आज सुबह से मुलाक़ात ही न हुई हो!"

१७

हम सभी जानते हैं कि समय कभी हवा की गति से गुज़र जाता है और कभी उसके पांव में ढाई ढाई मन के पत्थर बंध जाते हैं, लेकिन मानव के सुखदतम क्षण वही होते हैं जिनमें समय की गति का कोई भान नहीं रहता। ठीक इसी अवस्था में आरकादी और बज़ारोव ने ओदिनत्सोवा के यहां पन्द्रह दिन बिताए। अंशतः यह जीवन के उस सुव्यवस्थित क्रम का नतीजा था जो ओदिनत्सोवा ने घर में चालू कर रखा था। जीवन के इस नियमित ढंग का वह सख़्ती से पालन करती थी और दूसरों से भी करवाती थी। दिन के क्रम में हर चीज़ के लिए

उसका एक अपना समय नियत था। सुबह, ठीक आठ बजे, पूरी संगत चाय के लिए जमा होती। चाय और नाश्ते के बीच जिसे जो करना होता करता, और मालकिन अपने कारिन्दे (जागीर का संचालन वह ठेके पर करती थी), भंडारी तथा प्रधान गृह-संचालिका से काम-काज की बातें निबटाती। दोपहर के भोजन से पहले बतियाने या कुछ पढ़ने के लिए मण्डली एक बार फिर जमा होती। संध्या सैर करने, ताश खेलने या गाने-बजाने में बीतती। साढ़े दस बजे अन्ना सेर्गेयेवना अपने कमरे में चली जाती, अगली सुबह के लिए आदेश देती और बिस्तरे की शरण लेती। दैनिक जीवन की यह एकरसता और अनुष्ठानी नियमितता बज़ारोव को न सुहाती। "लगता है जैसे हम लीकों से बंधे हों," वह कहता। वरदीधारी दरबान-प्यादे और गम्भीरता का चोला डाटे भंडारी उसकी जनवादी रुचि पर चोट-सी करते। उसका ख़याल था कि अगर अंग्रेज़ियत दिखानी है तो सोलहों आना अंग्रेज़ क्यों न बना जाए—उन्ही की भांति भोजन किया जाए, एड़ी से चोटी तक रस्मी लिबास पहनकर और गले में सफ़ेद गुलूबन्द कसकर। और एक दिन अन्ना सेर्गेयेवना से उसने इसकी चर्चा शुरू की। अन्ना सेर्गेयेवना का कुछ ऐसा स्वभाव था कि उसके सामने अपने मन की बात खुलकर कहने में किसी को हिचक नहीं होती थी। बज़ारोव की बात पूरी तरह सुनने के बाद बोली: "जिस नजर से आप देखते हैं उसके अनुसार शायद आपकी बात ठीक हो सकती है, और मुझे आप मलिका-महारानी कह सकते हैं। लेकिन देहात में अगर आपने बेक़ायदा और अनियमित जीवन बिताने का दुस्साहस किया तो ऊब के मारे नाक में दम आ जाएगा।" और जीवन अपने उसी लगे-बंधे ढर्रे पर चलता रहा। बज़ारोव भुनभुनाया, लेकिन उसे और आरकादी दोनों को, जो ओदिनत्सोवा के यहां जीवन इतना सहज-सुखद मालूम हुआ उसका

कारण ठीक यही था कि वह 'बंधी लीकों पर' चलता था। सच तो यह है कि निकोलस्कोये में उनके आगमन के पहले दिन से ही उनमें एक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। बजारोव में, जिसे अन्ना सेर्गेयेवना बावजूद इसके कि वह बिरले ही उससे सहमत होती थी, प्रत्यक्षत: अधिक पसन्द करती थी, एक ऐसी बेचैनी घर करती जा रही थी जो उसके लिए सर्वथा नयी चीज़ थी। वह चिड़चिड़ा-सा हो गया था, बात करता था तो अनमनेपन से। मुह उसका चढ़ा रहता था और एक अजीब कुलबुलाहट तथा अधीरता उसे घेरे रहती। उधर आरकादी, जिसके मन में यह निश्चय रूप से समा गया था कि वह ओदिनत्सोवा से प्रेम करता है, निश्चल उदासी में डूबता-उतराता। लेकिन, इस उदासी के बावजूद, कात्या से उसके मेलजोल बढ़ाने में कोई बाधा नहीं आई। बल्कि इस उदासी ने कात्या के साथ बहुत ही घनिष्ठ तथा मित्रतापूर्ण सम्बन्ध क़ायम करने के लिए उसे और भी उकसाया। "वह मेरी कद्र नहीं करती, नहीं करती है न? अच्छी बात है, न करे ... लेकिन यहां एक और भी नाज़ुक जीव है जो मुझे नहीं ठुकराती," आरकादी सोचता और उसका हृदय एक बार फिर सारी तिक्तता भूल उदार भावनाओं की मधुरता से भर जाता। कात्या को बहुत ही धुँधला-धुंधला-सा आभास था कि आरकादी उसकी संगत में राहत खोजता है, और वह न तो अपने आपको और न ही उसे इस अर्द्ध-लजीली और अर्द्ध-विश्वासी मित्रता के निश्छल आनन्द से वंचित रखने का प्रयत्न करती। अन्ना सेर्गेयेवना की मौजूदगी में वे परस्पर बतियाने से कतराते। अपनी बहिन की पैनी नज़र के आगे कात्या हमेशा सिकुड़-सिमट-सी जाती जबकि आरकादी, ठीक प्रेमासक्त व्यक्ति की भांति प्रेमिका जब सामने हो तो सिवा उसके अन्य सभी कुछ बिसरा देता। लेकिन सच यही है कि राहत उसे केवल कात्या की संगत में ही

मिलती। वह यह जान चुका था कि ओदिनत्सोवा को खुश करना उसके बूते की बात नहीं है। अकेले में वह सकुचा जाता और उसके मुह से बोल तक न निकलता, और खुद अन्ना भी न समझ पाती कि वह उससे क्या कहे। वह उससे बहुत छोटा था। इसके प्रतिकूल कात्या की संगत में वह पूर्ण अपनत्व का अनुभव करता था। वह ढील से काम लेता और संगीत से, किसी पुस्तक को पढ़ने या कविता के पाठ अथवा ऐसी ही अन्य छोटी-मोटी बातों से, अनुप्राणित अपने भावों को व्यक्त करने की काप्या को पूरी छूट देता, और उसे भान तक न रहता कि इन छोटी-मोटी बातों में वह खुद भी रस लेता है। कात्या भी, अपनी ओर से, जब वह खोया-सा किसी सोच में डूबा होता तो कभी उसे न छेड़ती। आरकादी को कात्या का संग अच्छा लगता, और ओदिनत्सोवा को बजारोव का। और अक्सर ऐसा होता कि दोनों जोड़े एक साथ बाहर निकलते और इसके बाद अपना अलग अलग रास्ता पकड़ते, ख़ासतौर से उस समय जब वे टहलने जाते। कात्या प्रकृति को जी-जान से चाहती थी, आरकादी को भी प्रकृति से प्रेम था, हालांकि यह स्वीकार करने का उसे कभी साहस नहीं होता था। ओदिनत्सोवा प्रकृति की ओर से उदासीन थी, और यही हाल बज़ारोव का भी था। और हमारे मित्रों के इस तरह अलग रहने का कुछ नतीजा न हो, यह भला कैसे हो सकता था। उनके सम्बन्धों में एक क्रमिक परिवर्तन हो चला। बज़ारोव अब आरकादी से ओदिनत्सोवा के बारे में कोई बात न करता और उसके 'रईसाना अन्दाज़ों' की आलोचना करना उसने छोड़ दिया। कात्या की वह अब भी खूब तारीफ़ करता और अपने मित्र को सलाह देता कि वह उसकी भावुकता पर थोड़ा अंकुश रखे। लेकिन उसकी तारीफ़ में एक उतावलापन और सलाह में एक रूखापन होता—कुल मिलाकर यह कि पहले की निस्बत

वह आरकादी से कम बोलता-चालता... ऐसा लगता जैसे वह उससे कतरा रहा हो, जैसे किसी शर्म का अनुभव कर रहा हो...

आरकादी यह सब देखता, और अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखता। किसी से कहता कुछ नहीं।

इस 'नये रुख' का असल कारण वह भावना थी जिसका ओदिनत्सोवा ने बजारोव के हृदय में संचार कर दिया था। यह भावना उसके हृदय को मथती और उसे पागल-सा बनाए रहती, लेकिन इसके अस्तित्व से इन्कार करने के लिए जैसे वह तुला बैठा रहता। अगर कोई धुंधला-सा भी इस ओर इशारा करता कि उसके हृदय में क्या उमड़-घुमड़ रहा है, तो वह उसकी खिल्ली उड़ाता और खीझ-भरे व्यंग-वाणों से उसकी चिन्दियां बिखेरने के लिए तैयार हो जाता। यों बज़ारोव स्त्री-जाति का उपासक था, लेकिन भावना-मूलक प्रेम की—या जैसा कि वह कहा करता था रोमाण्टिक प्रेम की—वह खिल्ली उड़ाता था, उसे बेकार की चीज़ और अक्षम्य हिमाकत समझता था। शौर्य को वह एक तरह की वीभत्सता या बीमारी मानता था और इस बात पर एक से अधिक बार आश्चर्य प्रकट कर चुका था कि प्रेम का राग अलापनेवाले इन चारणों और भाटों को पागलखाने में क्यों न बन्द कर दिया गया—उनकी वंश-बेल क्यों बढ़ने दी गई। "अगर तुम किसी स्त्री को पसन्द करते हो," वह अक्सर कहता, "तो बेलाग अपना मतलब साधो। सफलता न मिले तो उंगलियां चटखाकर उसे धता बताओ। आखिर यह जिन्स ऐसी नहीं जिसका इस दुनिया में अकाल हो।" ओदिनत्सोवा उसके मन में रमी थी। उसके बारे में फैली हुई तरह तरह की अफ़वाहों, उसके उन्मुक्त तथा आला विचारों और बज़ारोव के प्रति उसके प्रत्यक्ष

पक्षपात, इन सब चीज़ों को देख-सुनकर यह ख़याल हो सकता है कि बज़ारोव के लिए इससे अच्छा मौक़ा और क्या होगा। लेकिन शीघ्र ही उसे इस तथ्य का चेत हो गया कि उसके साथ 'बेलाग मतलब नही साधा' जा सकता, और जहां तक उंगलियां चटखाकर उसे धता बताने का सवाल है, उसने निराशा से देखा कि यह भी वह नहीं कर सकता। उसके ख़याल मात्र से ही उसकी नाड़ी की गति तेज हो जाती। अपनी नाड़ी को तो खैर वह आसानी से संभाल भी लेता, लेकिन उसके साथ कुछ और भी हो गया था, कुछ ऐसा जिसे उसने कभी स्वीकार नहीं किया, जिसका हमेशा उसने मज़ाक़ उड़ाया और जिसके ख़िलाफ़ उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठता था। अन्ना सेर्गेयेवना के सामने, उससे बातें करते समय, हर रोमाण्टिक चीज़ के प्रति वह पहले से भी ज़्यादा बेपर्वाही के साथ उपेक्षा का प्रदर्शन करता, लेकिन अकेले में ख़ुद अपने ही हृदय में मौजूद रोमांस के स्पर्श से झनझना उठता। ऐसा होने पर वह जंगल की ओर निकल जाता, निरुद्देश्य भटकता, चलते-चलते पेडों की टहनियां तोड़ डालता, सांसों ही सांसों में अपने आपको और उसे – दोनों को – कोसता ; या फिर पुआल की गंजी में रेंग जाता, हठपूर्वक आंखें बंद किए ज़बर्दस्ती नींद को गले लगाने का प्रयत्न करता और भूले-भटके ही इसमें सफल हो पाता। सहसा उसकी कल्पना उजागर हो उठती, वह देखता कि उसकी अछूती बांहें उसके गले से लिपटी हैं, उसके गर्वीले होंठ उसके चुम्बनों के लिए फरफरा रहे हैं, उसकी धीर-गम्भीर आंखें मृदुता से – हां, मृदुता से ही – उसकी आंखों में उतर रही हैं। और उसका सिर चकराने लगता, क्षण-भर के लिए वह बेसुध हो जाता और फिर विक्षोभ उसे अपने चंगुल में जकड़ लेता। दुनिया-भर के 'मनहूस' विचार उसे घेर लेते, लगता जैसे शैतान उसका मुंह चिढ़ा रहा हो।

कभी कभी तो यहां तक होता कि ओदिनत्सोवा में भी उसे एक परिवर्तन का आभास-सा मालूम होता, लगता जैसे उसके चेहरे में कुछ है जो पहले नही था, जैसे वह... लेकिन बहुधा इससे आगे वह न सोच पाता, धरती पर अपना पांव पटकता या दांत पीसता और खुद अपने चेहरे के आगे ही अपना घूंसा तानता।

और सचमुच, बजारोव एकदम ग़लत भी नही था। उसने ओदिनत्सोवा की कल्पना को जगमगा दिया था। उसकी दिलचस्पी को उसने उकसा दिया था और वह बहुत कुछ उसके बारे में सोचती थी। उसकी ग़ैरहाजिरी में वह ऊबती नही थी, न ही उसे यह खलता था, लेकिन उसके सामने आते ही वह चेतन हो उठती थी, ख़ुशी से वह उसके साथ अकेली रहती और ख़ुशी के साथ वह उससे बातें करती, और उस समय भी इसमें कोई फ़र्क़ नही पड़ता जब वह उसे नाराज़ कर देता या उसकी परिष्कृत रुचि तथा नफ़ीस सलीकेदारी को ठेस पहुंचाता। ऐसा मालूम होता जैसे वह परखकर, और साथ ही खुद अपने को भी जांचकर, देख लेना चाहती हो।

एक दिन, उस समय जबकि वह उसके साथ बाग़ में टहल रहा था, सहसा उदास आवाज़ में बज़ारोव ने ऐलान किया कि उसे जल्दी ही गांव में अपने पिता के पास जाना है... ओदिनत्सोवा का चेहरा फ़क पड़ गया, जैसे किसी टीस ने उसके हृदय को बीध दिया हो। कसक इतनी तेज़ थी कि खुद उसे अचम्भा हुआ और इसके बाद भी काफ़ी देर तक वह अचरज करती रही कि आखिर इसका क्या मतलब हो सकता है। अपनी विदा का ऐलान बज़ारोव ने उसकी परीक्षा लेने के लिए, यह देखने के लिए कि इसका क्या नतीजा निकलता है, नहीं किया था। इस तरह के छल-छन्दों का वह कभी सहारा नहीं लेता था। उस दिन, सबेरे ही, अपने पिता के कारिन्दे

तिमोफ़ेइच से उसकी भेंट हो चुकी थी। यह तिमोफ़ेइच – छुटपन में बज़ारोव जिसकी देख-भाल में रहता था – बदहवास-सा एक जानदार बूढ़ा था। मुख़्तसिर-सा बदन, बालों का रंग उड़कर पीला पड़ गया था, धूप-पानी से तपा-निखरा चेहरा, चुरमुर-सी आंखों में नमी की बूंदें तैरती हुई। मोटे और मज़बूत कपड़े तथा पक्के सलेटी-नीले रंग का मुख़्तसिर-सा देहाती कोट पहने, उसके ऊपर चिथड़ा-सी पुरानी पेटी कसे और पांवों में स्याही पुते बूट डाटे, वह अचानक आ मौजूद हुआ।

"कहो, बुढ़ऊ, क्या हाल है?" बजारोव ने उसे देखते ही कहा।

"गुडमोर्निंग, मालिक येवगेनी वसीलियेविच," बूढ़े ने जवाब दिया और उसका चेहरा झुर्रियों की बन्दनवार तथा प्रसन्न मुसकराहट से एकबारगी खिल उठा।

"कहो, कैसे आए? क्या मुझे लिवाने आए हो, क्यों?"

"ओह नहीं, मालिक, ऐसा नहीं," तिमोफ़ेइच ने बुदबुदाकर कहा, (चलते समय मालिक ने जो सख़्त ताक़ीद कर दी थी, उसका उसे ध्यान था) "मालिक के काम से मैं शहर जा रहा था। सुना कि सरकार यहां हैं। सोचा, सरकार को देखता चलूं। सो इधर मुड़ पड़ा। लेकिन आपको तक़लीफ़ देना... नहीं, वह तो मैं सपने में भी नही सोच सकता, मालिक!"

"क्या सचमुच?" बजारोव ने टोका। "लेकिन यह तो बताओ, क्या यह जगह शहर के रास्ते में पड़ती है?"

तिमोफेइच ने शरीर का भार इस पांव से उस पांव पर बदला, और चुप साधे रहा।

"पिता तो बिल्कुल ठीक है न?"

"हां, मालिक, खुदा का शुक्र है।"

"और मां?"

"अरीना व्लासियेवना भी, खुदा का शुक्र है।"

"वे मेरी राह देख रहे होंगे, क्यों?"

उसने अपने छोटे-से सिर को बाके अन्दाज में झटका।

"आह, येवगेनी वसीलियेविच, राह तो देखना ही था। खुदा गवाह है, तुम्हारे माता-पिता को देखकर कलेजा मुंह को आ जाता है।"

"बस बस, अब ज्यादा लेप न चढ़ाओ। उनसे कहना, मैं जल्दी ही आ रहा हूं।"

"बहुत अच्छा, मालिक," तिमोफ़ेइच ने उसांस छोड़ते हुए जवाब दिया।

वहां से विदा होते समय उसने अपने दोनों हाथों की मदद से सिर पर अपनी टोपी जमाई। दरवाजे पर वह अपनी फटीचर दोपहिया घोडा-गाड़ी छोड़ आया था, उसपर जैसे-तैसे सवार हुआ और चल पड़ा—लेकिन शहर की दिशा में नही।

उसी रात ओदिनत्सोवा अपने कमरे में बजारोव के साथ बैठी थी और आरकादी ड्राइंगरूम में इधर से उधर टहलता कात्या का पियानो बजाना सुन रहा था। मौसी ऊपर अपने कक्ष में चली गई। उन्हें सभी मेहमानों से आन्तरिक चिढ़ थी और इन 'छुट्टा रंगरूटों' से—जैसा कि वह उन्हें कहा करती थीं—तो वह खासतौर से चिढ़ती थीं। बैठक के कमरों में तो वह केवल मुह चढ़ाए रहतीं, लेकिन अपने निजी कक्ष के एकान्त में, अपनी दासी के सामने, कभी कभी अपने गुस्से का सारा ज़हर इतने प्रचंड वेग से उगलतीं कि नकली ज़ुल्फ़ों के साथ साथ उनकी टोपी भी नाचने लगती। ओदिनत्सोवा से यह छिपा नहीं था।

"यह आपको जाने की क्या सूझी?" ओदिनत्सोवा ने कहना शुरू किया, "और आपके वायदे का क्या हुआ?"

बज़ारोव चौंका।

"कैसा वायदा?"

"क्या भूल गए? आप मुझे रसायन-विज्ञान में दीक्षित करना चाहते थे न?"

"उसके लिए मुझे दुःख है। मेरे पिता बाट जोह रहे हैं। अब और देर नही कर सकता। लेकिन आप पेलूज़ तथा फ़ेमी की पुस्तक 'रसायन-विज्ञान के आम सिद्धान्त' पढ़ सकती है। यह अच्छी किताब है, और सीधी-सादी भाषा में लिखी है। जानने लायक़ हर चीज़ उसमें मिल जाएगी।"

"लेकिन क्या आपको याद है, आपने ही तो मुझसे कहा था कि कोई भी पुस्तक उतना काम नही दे सकती जितना कि... ओह, मुझे याद नही पड़ता कि आपने किन शब्दों में उसे व्यक्त किया था... आप जानते हैं कि मै क्या कहना चाहती हूं... आपको याद है न?"

"मुझे इसके लिए दुःख है," बज़ारोव ने दोहराया।

"तो आप जाएंगे ही?" अपनी आवाज़ को धीमा करते हुए ओदिनत्सोवा ने पूछा।

बजारोव ने उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर आरामकुर्सी की पीठ से टिका लिया था और उसकी बांहें, कोहनी तक उघरी, उसके वक्ष पर गुंथी थी। जालीदार काग़ज़ के शेड में से छनकर आती एकाकी बत्ती की रोशनी में वह और भी पीली नज़र आ रही थी। ढीले-ढाले सफ़ेद गाउन की तहें उसके समूचे आकार को ढंके थीं। हाथों की भांति उसके पांव भी जर्ब का चिन्ह बनाए थे और उंगलियों के छोर तक मुश्किल से दिखाई देते थे।

"रुकू भी तो किस लिए?"

"यह किस लिए क्यों? क्या मतलब है आपका? क्या आपको यहां अच्छा नही लग रहा? या आप समझते है कि आपका जाना किसी को खलेगा नही?"

"बिल्कुल, इसमें जरा भी शक नहीं।"

कुछ क्षण तो ओदिनत्सोवा चुप रही।

"आप ग़लत सोचते है। जो हो, मैं आपकी इस बात का विश्वास नहीं करती। संजीदगी से आप ऐसी बात नही कह सकते।"

बज़ारोव में एक बल तक नही पड़ा।

"येवगेनी वसीलियेविच, आप कुछ कहते क्यों नहीं?"

"लेकिन कहने की बात भी तो हो। मैं नहीं समझता कि लोगों की अनुपस्थिति किसी को खल सकती है, फिर मेरे जैसे आदमी की तो और भी नही!"

"सो क्यों?"

"मैं ज़रूरत से ज़्यादा गम्भीर-दिमाग़ और बेरस हूं। सलीके से बातचीत तक नहीं कर सकता।"

"मतलब यह है कि आप अपनी तारीफ़ कराना चाहते हैं, येवगेनी वसीलियेविच!"

"यह मेरी आदत नही। आपको मालूम होना चाहिए कि जीवन की जिन नफ़ासतों को आप जी-जान से चाहती हैं, वे मेरी पहुंच से बहुत बाहर हैं।"

ओदिनत्सोवा ने रूमाल का कोना अपने दांतों से काटा।

"आप कुछ भी सोचें, लेकिन आपके चले जाने पर मुझे तो बड़ा सूना लगेगा।"

"आरकादी तो यहां रहेगा," बजारोव ने दलील दी।

ओदिनत्सोवा ने हल्के से अपने कंधे बिचकाए।

"मुझे सूना लगेगा," उसने दोहराया।

"अरे नही। जो हो, यह सूनापन कुछ अधिक नहीं टिक सकेगा।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"खुद तुम्ही ने तो मुझे बताया था कि तुम केवल तभी ऊबती हो जब तुम्हारा बंधा-बंधाया कार्यक्रम गड़बड़ा जाता है। तुमने अपने जीवन को कुछ इतनी कड़ी नियमितता में ढाला है कि उसमें ऊब या कसक के लिए कोई जगह नही है... किसी भी प्रकार के दु:खद भावों की वहां दाल नही गल् सकती।"

"सो तुम समझते हो कि मै कड़ी हूं... मतलब यह कि मेरा जीवन इस हद तक सुव्यवस्थित है।"

"एक हद तक—बेशक। मिसाल के लिए, देखिए कि अभी कुछ ही मिनटों में दस बज जाएंगे, और मै पहले से ही यह जानता हूं कि आप मुझे चलता कर देंगी।"

"यह नहीं, येवगेनी वसीलियेविच, मैं आपको चलता नही करूंगी। आप रुक सकते है। लेकिन... ज़रा वह खिड़की खोल दीजिए, बड़ी गर्मी है।"

बज़ारोव उठा और खिड़की में एक धक्का दिया। खिड़की के पट आवाज के साथ तुरत खुल गए... उसे उम्मीद नहीं थी कि पट यों अनायास ही खुल जाएंगे। इसके अलावा उसके हाथ कांप भी रहे थे। कोमल अंधियारी रात, स्याही पुता-सा आसमान, पेड़ों की धुंधली सरसराहट और ठंडी मीठी हवा की महक कमरे में तिर आई।

"पर्दा खींच दीजिए और इधर आकर बैठिए," ओदिनत्सोवा ने कहा। "मैं चाहती हूं कि जाने से पहले आपसे कुछ बातें कर ली

जाएं। अपने बारे में कुछ बताइए। इस बारे में आप कभी मुह नही खोलते।"

"मैं आपसे, अन्ना सेर्गेयेवना, उपयोगी विषयों के बारे में ही बातें करने का प्रयत्न करता हूं।"

"आप भी बड़े संकोची हैं... लेकिन मै आपके और आपके परिवार के, और आपके पिताजी के बारे में कुछ जानना चाहती हूं जिनकी ख़ातिर आप हमें छोड़कर जा रहे है।

"आख़िर किस लिए यह सब पूछा जा रहा है?" बजारोव ने मन में सोचा। फिर प्रत्यक्ष रूप में बोला:

"वह सब जरा भी दिलचस्प नही है, ख़ासकर आपके लिए। हम निम्न स्तर लोग..."

"तो मुझे क्या आप कुलीन समझते हैं?"

बजारोव ने पलकें उठाकर ओदिनत्सोवा की ओर देखा। फिर अक्खड़पन जताते हुए बोला:

"हां!"

ओदिनत्सोवा के होंठों में मुसकराहट रेंग गई।

"देखती हूं कि आप मुझे बहुत ही कम जानते हैं, हालाकि दावा आपका यह है कि सब लोग एक से हैं, उनका अध्ययन करने की ज़रूरत नहीं। किसी दिन अपने बारे में आपको बताऊंगी... लेकिन अभी तो पहले अपने बारे में बताइए।"

"मैं आपको बहुत ही कम जानता हूं," बज़ारोव ने दोहराया, "हो सकता है कि आपका कहना ठीक हो, और हर व्यक्ति सचमुच में एक पहेली हो। मिसाल के लिए ख़ुद अपने को ही लीजिए। आप समाज से—सोसायटी से—कतराती हैं, उसे पसन्द नही करतीं, फिर भी अपना मेहमान बनाने के लिए दो छात्रों को निमंत्रण देती है। इतनी

बुद्धि, और इतना रूप लेकर आप यहां – इस देहात में – क्यों पड़ी हैं?"

"क्या-आ? क्या कहा आपने?" ओदिनत्सोवा तुरत बोल पड़ी। "इतना... इतना रूप लेकर?"

बज़ारोव की भौंहों में बल पड़ गए।

"गोली मारिए उसे," बज़ारोव बुदबुदाया, "कहने का मतलब यह, मेरी समझ में नही आता कि आप देहात में क्यों रहती हैं?"

"समझ में नहीं आता... यही आपने कहा न... तब तो आपने इसका कुछ अनुमान लगाने की भी कोशिश की होगी। क्यों, ठीक है न?"

"हां ... मेरा अनुमान है कि स्थायी रूप से एक ही जगह आप इसलिए रहती हैं कि अपने को दुलराना आपको अच्छा लगता है, आराम और आसाइश की आप बेहद शौक़ीन है और बाक़ी सब चीज़ों से कोई वास्ता नही रखना चाहती।"

ओदिनत्सोवा के होंठों पर फिर मुसकराहट रेंग गई।

"आप तो यह मानने से एकदम इन्कार करते हैं कि मैं भी आवेगों-उद्वेगों में बह सकती हूं। क्यों, यही बात है न?"

बज़ारोव ने भौंहों के नीचे से उसपर एक नज़र डाली।

"शायद केवल कौतुकवश, अन्य किसी वजह से नहीं।"

"बेशक! हां तो अब मेरी समझ में आया कि हम दोनों के मित्र बनने का क्या रहस्य है। आप भी मेरी ही भांति हैं।"

"आप और मैं मित्र..." बज़ारोव फुसफुसाया।

"हां... लेकिन यह तो भूल हो गई कि आप जाना चाहते थे।"

बज़ारोव उठ खड़ा हुआ। अंधेरा-घिरे, महकते और बाहरी

विक्षेप से मुक्त कमरे के बीच लैम्प की धीमी लौ टिमटिमा रही थी। फरफराते पर्दे में से हृदय को कुरेदनेवाली रात की ताज़गी और रहस्यमय फुसफुसाहटें कमरे में सरसरा रही थी। ओदिनत्सोवा एकदम स्थिर – निश्चल – बैठी थी, लेकिन एक अज्ञात विह्वलता, अडिग गति से, उसके रोम रोम में छाती जा रही थी... बज़ारोव भी उसके स्पर्श से अछूता नही रह सका। सहसा उसे चेत हुआ कि यह एकान्त, यह सुन्दर युवती और वह...

"किधर चल दिए?" ओदिनत्सोवा ने धीमे से पूछा।

उसने जवाब में कुछ नहीं कहा। चुपचाप फिर अपनी उसी कुर्सी मे धंस गया।

"सो तुम मुझे भावशून्य, दुलराई हुई और लाड़ से मुह-चढ़ी चीज़ समझते हो," उसी एक स्वर में, खिड़की की ओर आंखें जमाए, वह कहती गई। "लेकिन मै कितनी दु:खी हूं, यह मैं ही जानती हूं।"

"तुम ... और दु:खी? क्यों? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि उन गंदी अफ़वाहों को तुम कुछ महत्व देती हो?"

ओदिनत्सोवा की भौंहों में बल पड़ गए। उसे यह अखरा कि उसके शब्दों का उसने यह अर्थ लगाया।

"नहीं, येवगेनी वसीलियेविच, उन अफ़वाहों पर तो मेरा हंसने को भी जी नही चाहता, और मै इतनी गर्वीली हूं कि अपने कान पर जूं तक नहीं रेंगने देती। मै दु:खी हूं... इसलिए कि मुझमें कोई आकांक्षा नहीं है, जीने की कोई चाह नही है। तुम मुझे शंका की नजर से देख रहे हो। शायद तुम सोच रहे हो कि गोटे-ठप्पे से सजा और मखमली आरामकुर्सी पर बैठा यह मेरा 'आभिजात्य' बोल रहा है। मैं उस चीज़ से इन्कार नहीं करती जिसे तुम ऐश-व-आराम कहते हो। मै उसे पसन्द करती हूं, फिर भी जीने की चाह मुझमें नही के बराबर है। अगर

शक्ति हो तो इन असंगतियों में पटरी बैठाने की तुम भी कोशिश कर देखो। जो हो, तुम्हारे लेखे तो यह रोमाण्टिकता है!"

बज़ारोव ने अपना सिर हिलाया।

"अच्छा स्वास्थ्य, आज़ादी, धन—सभी का तो तुम उपभोग करती हो। तुम्हे और किस चीज़ की ज़रूरत है? तुम और क्या चाहती हो?"

"मैं क्या चाहती हूं?" ओदिनत्सोवा ने दोहराया और उसांस लेती हुई बोली, "मैं थक गई हूं, मैं बूढ़ी हो चली हूं, ऐसा मालूम होता है जाने कब से—कितने लम्बे अर्से से—मैं जी रही हूं। हां, मैं बूढ़ी हो चली हूं," अपनी उघरी हुई बांहों पर जाली के छोरों को मृदु भाव से खीचते और बजारोव से आखें मिलने पर थोड़ा लजाते हुए उसने कहा, "जाने कितनी स्मृतियों को मैं छोड़ आई हूं—सन्त पीतर्सबर्ग में जीवन, धन-दौलत, फिर ग़रीबी, इसके बाद पिता की मृत्यु, मेरा विवाह, फिर विदेश की यात्रा, जैसा कि होना चाहिए ... अनेकानेक स्मृतियां हैं, लेकिन ऐसी एक भी नही जिसे याद किया जा सके, और सामने लम्बी—बहुत लम्बी—राह फैली हुई, लेकिन मंजिल कोई नही ... डग आगे बढ़ने से इन्कार करते है।"

"तो क्या तुम इस हद तक अपने सारे भरम गंवा चुकी हो?" बज़ारोव ने पूछा।

"नही," ओदिनत्सोवा ने धीमे से कहा, "लेकिन मै सन्तुष्ट नही हूं। मुझे लगता है कि किसी चीज़ के प्रति—चाहे वह कुछ भी हो—अगर मै गहरा लगाव पैदा कर सकती ..."

"तुम प्रेम में पगना चाहती हो," बज़ारोव ने बीच में ही कहा। "लेकिन प्रेम तुम कर नही सकतीं ... और इसी लिए तुम इतनी सन्तप्त हो।"

ओदिनत्सोवा अपनी जाली की आस्तीनो को देखने मे उलझी थी।

"तुम समझते हो कि मै प्रेम करने में असमर्थ हूं," वह बुदबुदाई।

"मुश्किल ही समझो। केवल एक बात है, मुझे इसे सन्ताप नही कहना चाहिए था। इसके प्रतिकूल, जिस व्यक्ति के सिर पर यह बला सवार होती है, उसे दया का पात्र मानना चाहिए।"

"कौन-सी बला ?"

"यही प्रेम में पड़ने की।"

"तुमने यह कैसे जाना ?"

"लोगों से सुनकर," बजारोव ने अलसाकर जवाब दिया।

"खिलवाड़ कर रही है," बजारोव ने सोचा। "ऊब के मारे जब और कुछ नही सूझा तो सोचा, चलो इसे ही कुरेदा जाए, लेकिन इधर यह हाल है कि ..." सचमुच, बज़ारोव का हृदय छितरा रहा था।

"और फिर," अपने समूचे शरीर को आगे की ओर झुकाते तथा अपनी आरामकुर्सी के छोर से खेल करते हुए बोला, "मेरी समझ में तुम्हारी कसौटी पर खरा उतरना भी टेढ़ी खीर है।"

"हो सकता है। या तो मै हर चीज में विश्वास करती हूं, या फिर किसी चीज़ में नहीं करती। जीवन के बदले जीवन। जो मैं हूं वह तुम लो, जो तुम हो वह मुझे दो। फिर न खेद की गुजाइश हो, न डग वापिस लौटाने की। नही तो दूर रहना ही अच्छा।"

"शर्तें तो तुम्हारी मुनासिब है," बज़ारोव ने कहा, "अचरज की बात यही है कि अब तक ... तुम्हे वह चीज़ नही मिली जो तुम चाहती हो।"

"तो क्या तुम्हारी नज़र में अपने आपको पूरी तरह से समर्पित कर देना इतना आसान है?"

"नहीं, आसान नही है अगर तुम्हारे पांव ठिठककर असमंजस

में पड़ जाएं, अगर तुम समय गंवान और अपने बारे में ज़रूरत से ज़्यादा सोचने–मेरा मतलब यह कि अपने को अनमोल समझने लगो। लेकिन यह एकदम आसान है, अगर तुम बिना सोचे-झिझके डुबकी लगाने के लिए तैयार हो जाओ।"

"यह कैसे हो सकता है कि आदमी अपनी कोई कद्र न समझे? अगर मैं किसी काम की नहीं हूं तो किसी के भी प्रति मेरे समर्पण का फिर क्या मूल्य रह जाता है!"

"यह सब सोचना मेरा काम नहीं। मैं किसी काम का हूं या नहीं, इसका निर्णय करना हो तो दूसरा पक्ष करे। मुख्य चीज़ है समर्पण करने की सामर्थ्य।"

ओदिनत्सोवा अपनी कुर्सी पर आगे की ओर खिसक आई।

"तुम तो इस तरह बातें करते हो," उसने कहना शुरू किया, "जैसे तुम ख़ुद इन सबमें से गुजर चुके हो।"

"मैंने तो अपनी एक राय भर दी है, अन्ना सेर्गेयेवना। यह सब, तुम जानती ही हो, मेरा धंधा नहीं है।"

"लेकिन क्या तुममें अपने को समर्पित करने की सामर्थ्य है?"

"मैं नही जानता, और डींग मारना मै चाहता नही।"

ओदिनत्सोवा ने कोई जवाब नही दिया। बज़ारोव भी चुप हो गया। संगीत के स्वर ड्राइंगरूम से तिरते उनके कमरे में आ रहे थे।

"अरे, इतनी देर हो गई, कात्या अभी तक पियानो बजाने में मगन है," ओदिनत्सोवा ने कहा।

बज़ारोव खड़ा हो गया।

"हां, देर काफ़ी हो गई। तुम्हें अब आराम करना चाहिए।"

"ज़रा ठहरो। ऐसी जल्दी क्या है? तुमसे कुछ कहना है मुझे।"

"सो क्या?"

"एक मिनट ठहरो," ओदिनत्सोवा फुसफुसाई।

उसकी आंखें बजारोव पर जाकर टिक गई। लगता था जैसे वह उसे बारीकी से परख रही हो।

वह कमरे में घूम गया। फिर, अचानक, उसकी ओर मुड़ा, उतावली से 'फिर मिलेंगे' कहा, उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर इतना दबोचा कि वह चीख ही उठती, और तेज़ डगों से बाहर चला गया। कुचली हुई सी अपनी उंगलियो को उठाकर वह होंठों तक ले गई, फूंक मारकर उन्हें सहलाया, सहसा किसी आवेग में आकर कुर्सी से उछल खड़ी हुई और तेज़ी से दरवाज़े की ओर लपकी, मानो बज़ारोव को पुकारकर लौटा लेना चाहती हो... तभी, चांदी की तश्तरी पर बिल्लौरी सुराही रखे, दासी ने प्रवेश किया। ओदिनत्सोवा वही ठिठक गई, दासी को विदा किया, फिर अपनी कुर्सी में बैठ गई और अपने ख़यालों में खो गई। उसकी गुथी हुई लटें खुल गई थीं और नागिन की भांति उसके कंधों पर लहरा रही थी। कमरे का लैम्प बड़ी देर तक जलता रहा और अन्ना सेर्गेयेवना, वैसे ही निश्चल, बड़ी देर तक रात की गहराइयों में उतरती रही। जब रात की ठंडी हवा कचोटी-सी काटती तो, जब-तब अपनी बांहों को सहला भर लेती, और बस।

दो घंटे बाद बज़ारोव ने अपने शयन-कक्ष में पांव रखा— अस्तव्यस्त और उदास, जूते ओस में भीगे हुए। आरकादी लिखने की मेज़ के पास हाथ में कोई किताब खोले बैठा था। कोट के बटन एकदम ऊपर तक बंद थे।

"अभी तक सोए नहीं?" बज़ारोव ने पूछा। उसकी आवाज़ में खीझ का एक हल्का-सा पुट था।

"अन्ना सेर्गेयेवना के साथ आज तुमने बड़ी देर लगा दी," उसके सवाल को अनसुना करते हुए आरकादी ने कहा।

"हां, कात्या के साथ जब तक तुम पियानो बजाते रहे, मैं बराबर वहीं था।"

"मैं नहीं बजा रहा था," आरकादी ने कहना शुरू किया, लेकिन फिर चुप हो गया। उसे लगा जैसे उसकी आंखों में आंसू उमड़े आ रहे हों, और व्यंग और कटाक्षों से भरे अपने मित्र के सामने वह रोना नहीं चाहता था।

१८

अगले दिन जब ओदिनत्सोवा चाय के समय नीचे आई तो बज़ारोव, काफ़ी देर तक, अपने प्याले को निरखने-परखने में उलझा रहा और फिर, एकाएक नज़र उठाकर, उसने ओदिनत्सोवा की ओर देखा ... वह भी उसकी ओर ऐसे मुड़ी जैसे उसने उसे कोहनिया दिया हो। और उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसका—ओदिनत्सोवा का—चेहरा और भी पीला पड़ गया हो। कुछ ही देर बाद वह उठी और अपने कमरे में चली गई। इसके बाद, नाश्ते के समय तक, फिर नीचे नही उतरी। बारिश का सुबह से ही तांता बंधा था। टहलने के लिए बाहर निकलना असम्भव था। समूची मण्डली ड्राइंगरूम में जमा हुई। किसी पत्रिका का नया अंक आरकादी के हाथ पड़ा और वह उसे ज़ोर से पढ़कर सुनाने लगा। मौसी ने, अपनी आदत के अनुसार, पहले तो अचरज का भाव प्रकट किया—जैसे उसने सलीक़े के खिलाफ़ कोई हरकत की हो—फिर कुछ ऐसी नजर से उसे देखा जैसे कच्चा ही चबा जाएगी। लेकिन उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"येवगेनी वसीलियेविच," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "ज़रा मेरे कमरे में चलिए ... मैं पूछना चाहती थी ... कल आपने एक पोथी का जिक्र किया था ..."

वह उठी और दरवाज़े की ओर चल दी। मौसी ने घूमकर उसकी ओर देखा, कुछ ऐसी मुद्रा में जो कहती प्रतीत होती थी, "देखो न, तुमने मुझे कितना चकित कर दिया है!" इसके बाद उसकी नज़र एक बार फिर आरकादी से जा चिपकी। लेकिन उसने केवल अपनी आवाज़ को और भी ऊंचा उठा लिया और पास बैठी कात्या से नज़रों का विनिमय करते हुए अपना पढ़ना जारी रखा।

ओदिनत्सोवा तेज़ी से डग उठाती अपने अध्ययनकक्ष में पहुंची। बज़ारोव भी उसके पीछे ही बढ़ चला, अपनी आंखों को बराबर धरती में गड़ाए। केवल उसके कान तेज़ी से आगे की ओर तिरते उसके रेशमी गाउन के सरसराने तथा फरफराने की धीमी आवाज सुन रहे थे। अध्ययनकक्ष में पहुंच ओदिनत्सोवा फिर उसी कुर्सी में समा गई जिसमें कि वह रात बैठी थी। बजारोव ने भी अपनी पहलेवाली जगह पर आसन जमाया।

"उस किताब का क्या नाम था?" कुछ क्षणों के अवकाश के बाद उसने पूछा।

"Pelouse et Frémy, Notions générales..*" बज़ारोव ने जवाब दिया। "साथ ही एक और पुस्तक की मैं सिफ़ारिश करूंगा—Ganot, Fraité élémentaire de physique expérimentale**। इस पुस्तक के चित्र कहीं अधिक साफ़ हैं और एक पाठ्य-पुस्तक की हैसियत से ..."

---

*फेलूज तथा फ़्रेमी कृत "रसायन-विज्ञान के सामान्य सिद्धान्त"। (फ़्रेंच) —सं०

**गनोत कृत "आरम्भिक प्रयोगात्मक भौतिक विज्ञान"। (फ़्रेंच)—सं०

ओदिनत्सोवा ने अपना हाथ बाहर निकाल लिया।

"माफ़ कीजिए, येवगेनी वसीलियेविच, पाठ्य-पुस्तकों की चर्चा करने के लिए मैंने आपको यह कष्ट दिया हो, सो नहीं। मैं कलवाली बातो को फिर शुरू करना चाहती थी। आप एकदम ही तो चले गए... आप ऊब तो नहीं जाऐंगे, क्यों?"

"मै आपकी सेवा मे हाज़िर हूं, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन कल हम भला किस चीज़ की चर्चा कर रहे थे?"

ओदिनत्सोवा ने कनखियों से उसपर एक नज़र डाली।

"हम लोग, अगर मैं भूलती नहीं तो, सुख के बारे में बात कर रहे थे। मै तुम्हें अपने बारे में बतला रही थी। और जब सुख का ज़िक्र आ ही गया तो ... हां तो यह बताइए कि उस समय भी जब हम, मिसाल के लिए, किसी अच्छे संगीत, या सुन्दर सांझ, या किसी मनचीते व्यक्ति से बातचीत के आनन्द में मगन होते हैं, तब हमें ऐसा क्यों मालूम होता है जैसे यह सब, वास्तविक सुख न होकर, उस व्यापक सुख का एक संकेत मात्र है जो कहीं अन्य हिलोरें ले रहा है, और यह कि जो सुख हमें उपलब्ध है, वह वास्तव में सुख नहीं है? क्यों, ऐसा क्यों होता है? या हो सकता है कि आपने ऐसी किसी चीज़ का कभी अनुभव न किया हो?"

"आपने यह कहावत सुनी होगी—पडोसी की फसल अपनी से ज्यादा सुहानी लगती है," बजारोव ने जवाब दिया। "कल खुद आपने भी यह माना था कि आप सन्तुष्ट नहीं हैं। ऐसी बातें, सचमुच, मेरे दिमाग में नही धंसतीं।"

"शायद आप उन्हें बेहूदा समझते है।"

"नही। बस इतना ही है कि वे मेरे मन को नही छूती।"

"सच? क्या आपको मालूम है, यह जानने के लिए कि आप क्या सोचते हैं, मैं कितनी उत्कंठित हूं!"

"क्या कहा आपने? मै कुछ समझ नहीं सका।"

"तो सुनो। बहुत दिनों से इच्छा थी कि आपसे ज़रा खुलकर बातें करूं। आपको यह बताने की जरूरत नहीं—और यह आप खुद भी जानते है—कि आप आम लोगों में से नहीं हैं। आप अभी युवा हैं—समूचा जीवन आपके आगे खुला है। आप क्या करना चाहते है? भविष्य आपके लिए अपने गर्भ में क्या छिपाए है? मेरा मतलब यह ... कि आपका लक्ष्य क्या है? किस मंज़िल पर आप पहुंचना चाहते है? आपके इरादे क्या हैं? संक्षेप में यह कि आप कौन हैं, और क्या हैं?"

"आप भी अजब बात करती हैं, अन्ना सेर्गेयेवना। आप जानती हैं कि मैं पदार्थ-विज्ञान का अध्ययन कर रहा हूं, और जहां तक यह कि मैं क्या हूं ..."

"हां, आप क्या हैं?"

"यह मै पहले ही बता चुका हूं कि मैं देहात का डाक्टर बनने जा रहा हूं।"

अन्ना सेर्गेयेवना अधीरता से कसमसाई।

"यह आप कैसे कहते है? खुद आप यह विश्वास नही करते। आरकादी के मुह से यह बात शायद ठीक जंचती भी, लेकिन आपके मुह से नहीं।"

"क्यों, आरकादी किस मानी में ..."

"बस, रहने दीजिए। क्या यह सम्भव है कि आप ऐसे बेनाम धंधे से सन्तुष्ट होकर बैठ जाएं, और क्या खुद आप बराबर यह कहते नहीं रहे हैं कि औषधि-विज्ञान में आपका विश्वास नही है? आप, आपका स्वाभिमान—और डाक्टरी, सो भी देहात की! ऐसी बातें करके आप मुझे केवल बहकाना चाहते हैं। कारण, आप मुझपर विश्वास नही करते। क्या आपको मालूम है, येवगेनी वसीलियेविच, कि आपकी बातें समझने की सामर्थ्य मुझमें भी हो सकती है। कभी मैं

भी ग़रीब और स्वाभिमानिनी रह चुकी हूं–ठीक आपकी ही भांति, और शायद मैं भी उन्ही परीक्षाओं में से गुज़री हूं जिनमें से कि आप।"

"यह सब ठीक है, अन्ना सेर्गेयेवना, बहुत ठीक। लेकिन मुझे क्षमा करें ... मैं अपना हृदय उंडेलकर रख देने का आदी नही हूं, और फिर हम दोनों–आप और मैं–एक-दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने..."

"क्यों, दूर कैसे हैं? शायद तुम फिर वही राग अलापना शुरू कर दोगे कि मुझमें 'आभिजात्य' घुसा बैठा है? यह बेहद ज़्यादती है, येवगेनी वसीलियेविच। मेरा विश्वास है कि मैं यह सिद्ध..."

"और इसके अलावा," बज़ारोव ने बीच में ही कहा, "भविष्य के बारे में–एक ऐसी चीज़ के बारे में जो अधिकांशतः हमपर निर्भर नही करती–बातें करना और सोचने से क्या फ़ायदा? अगर कुछ करने का मौक़ा मिलता है तो अच्छा और बहुत अच्छा, लेकिन अगर नहीं मिलता, तब कम से कम यह सन्तोष तो रहेगा कि पहले से ही उसे लेकर हमने चिचियाना शुरू नही कर दिया था!"

"मित्रतापूर्ण बातचीत को आप चिचियाना कहते हैं ... या शायद आप मुझे, एक स्त्री को, अपने विश्वास के उपयुक्त पात्र नही समझते? आप हम सबको, एक सिरे से हिक़ारत की नजर से देखते हैं। क्यों, ठीक है न?"

"आपको, अन्ना सेर्गेयेवना, मैं हिक़ारत की नज़र से नहीं देखता, और यह आप जानती हैं।"

"क्या खाक जानती हूं ... लेकिन छोड़ो। भविष्य के बारे में बातें करने से आपका हिचकना ऐसी चीज़ नहीं जो समझ में न आए। लेकिन अब, इस समय, आपके भीतर क्या-कुछ हो रहा है..."

"क्या-कुछ हो रहा है!" बजारोव ने दोहराया। "गोया मैं कोई राज्य या समाज हूं! जो हो, वह कुछ कहने भर के लिए भी दिलचस्प

नहीं है। इसके अलावा, भीतर 'क्या-कुछ' हो रहा है, क्या यह किसी के लिए हमेशा शब्दों में व्यक्त करना सम्भव हो सकता है?"

"मेरी समझ मे नहीं आता कि अपनी बात व्यक्त करने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?"

"क्या आप कर सकती है?" बजारोव ने पूछा।

"हां ... कर सकती हूं," अन्ना सेर्गेयेवना ने हल्की-सी हिचकिचाहट के साथ कहा।

बज़ारोव ने अपना सिर झुकाया।

"तब आप मुझसे ज़्यादा खुशनसीब है।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"जैसा आप समझे," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहना शुरू किया, "लेकिन मुझे लगता है कि हमारा मिलना निरा आकस्मिक संयोग ही नही है। वह इससे अधिक हमारी घनिष्ठ मित्रता का सूचक है। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा यह ... भला क्या कहते हैं उसे ... तुम्हारा यह तनाव, यह अनबोलपन, अन्ततः गायब हो जाएगा।"

"सो आपको यह पता चल गया कि मुझमें अनबोलपन है ... और, भला यही कहा था न आपने ... कि तनाव है?"

"हां।"

बज़ारोव उठा और खिड़की के पास चला गया।

"और क्या तुम इस अनबोलपन का कारण जानना चाहोगी, क्या तुम जानना चाहोगी कि मेरे भीतर क्या हो रहा है?"

"हां," एक अनबूझ-से भय का अनुभव करते हुए ओदिनत्सोवा ने दोहराया।

"नाराज तो नहीं होगी?"

"नही।"

"नही ?" बज़ारोव उसकी ओर पीठ किए खड़ा था। "तब मै तुम्हे जताना चाहता हूं कि मै तुमसे प्यार करता हूं ... बेहवास और पागल की भांति प्यार करता हूं ... यह लीजिए, आपकी इच्छा पूरी हो गई।"

ओदिनत्सोवा ने अपने दोनों हाथ फैला लिए और बज़ारोव खिड़की के शीशे से अपना सिर सटाकर खड़ा हो गया। उसकी सांस भारी हो गई थी, उसका रोम रोम प्रकट रूप मे थरथरा रहा था। लेकिन यह यौवन की सहज व्रीड़ा का कम्पन नही था, यह उस मधुर अस्तव्यस्तता का सूचक नही था जो प्रेम की प्रथम स्वीकृति के समय अभिभूत कर लेता है। यह वासना का उद्वेग था जो पूरी प्रचण्डता के साथ, उत्ताल तरंगो के रूप में, उमड़ पडा था; एक ऐसा उद्वेग जो क्षुब्ध रोष के समान था, शायद उसी का प्रतिरूप। ओदिनत्सोवा आतंक और उसके लिए दुःख, दोनों का अनुभव कर रही थी।

"येवगेनी वसीलियेविच," वह बुदबुदाई, और उसकी आवाज में कोमलता का पुट अनायास ही आ मिला।

बजारोव तेजी से घूम गया, लील जानेवाली नजर से ओदिनत्सोवा की ओर देखा और उसके दोनों हाथों को थामते हुए अचानक उसे अपनी बांहों में खीच लिया।

उसने अपने आपको तुरत उसके बाहुपाश से मुक्त नही किया। लेकिन, कुछेक क्षण बाद ही, वह दूर कोने में खड़ी बजारोव को ताक रही थी। वह उसकी ओर बढ़ा ...

"आपने मुझे समझा नही," तेज आतंक से वह फुसफुसाई। बस, उसकी दिशा में एक भी डग वह और बढ़ता तो जैसे वह चीख़ पड़ती... बज़ारोव ने होठों में अपने दांत गड़ाए और कमरे से निकल गया।

आध घंटा बाद दासी अन्ना सेर्गेयेवना के पास बजारोव का एक

पुर्ज़ा लेकर आई। पुर्ज़े में एक ही पंक्ति थी: "मैं आज ही चला जाऊं, या कल तक रुक सकता हूं?"

"क्या जाना ही है? न मै आपको समझी, न आप मुझे," ओदिनत्सोवा ने जवाब दिया, मगर मन में सोच रही थी: "मै खुद भी तो अपने को नही समझी।"

दोपहर के भोजन के समय तक वह बाहर नही निकली। बराबर अपने कमरे में ही इधर-से-उधर फ़र्श नापती रही। हाथ कमर के पीछे बांधे हुए। बीच बीच में खिड़की या आईने के सामने, वह ठिठककर खड़ी हो जाती, धीमे से रूमाल को अपनी गरदन से छुवाती, जैसे वहां जलने का दाग़ पड़ गया हो और रह रहकर उसका ध्यान उसकी ओर चला जाता हो। मन ही मन वह अपने से सवाल करती: "किस चीज़ से प्रेरित होकर तूने उसे अपना हृदय उंडेलने के लिए उकसाया? आखिर तेरे हृदय में यह खुदबुद क्यों मची?" फिर अपने आप, स्वगत ही, कहती गई: "कसूर मेरा है। लेकिन यह मैं पहले से कैसे जान सकती थी कि ऐसा होगा।" उसने अपने दिमाग़ में सारी चीजों को उलटा-पलटा और बज़ारोव के उस समय के वहशियो जैसे चेहरे की याद कर लाज से लाल हो उठी जबकि वह उसकी ओर लपका था।

"या फिर ...?" सहसा उसके मुंह से निकला। वह अब, अपनी घुघराली लटो को उछालकर, कमरे में स्थिर खड़ी थी ... आईने में अपनी छवि पर उसकी नज़र गई। पीछे को झुका सिर, अधमुदी पलको और अधखुले होंठों की रहस्यमय मुसकान कुछ ऐसा भेद प्रकट कर रही थी कि वह सकपका-सी गई ...

"नहीं," आख़िर वह निश्चय पर पहुंची, "खुदा जाने, उसका अंजाम क्या हो जाता। यह खिलवाड़ करने की चीज नही। अन्ततः स्थिरता ही इस दुनिया में सबसे अच्छी चीज़ है।"

उसकी स्थिरता अस्तव्यस्त नही हुई थी। फिर भी वह उदास हो उठी, यहां तक कि थोड़ा रोई भी, बिना यह जाने कि क्यों, लेकिन इसलिए नही कि वह किसी अपमान का अनुभव कर रही थी। वह ऐसा कुछ अनुभव नही कर रही थी कि उसकी व्यक्तिगत भावनाओं को ठेस पहुंची है, उलटे अपराध की एक भावना उसके हृदय को कुरेद रही थी। अनेक प्रकार की धुधली भावनाओं, उम्र के यों ही ढलते जाने की चेतना और नयेपन की लालसा ने एक हद तक आगे बढ़ने और परिधि के बाहर क्या है, यह झांकने के लिए उसे उकसा दिया था। और उसने देखा कि वहां अतल गर्त तक नही है, केवल एक सूनापन ... या केवल घिनौनापन है।

१६

हृदय की समूची स्थिरता और मूढ़ाग्रहों से मुक्त होने के बावजूद दोपहर के भोजन के लिए कलेवा-घर में पांव रखते समय ओदिनत्सोवा ने एक परेशानी का अनुभव किया। भोजन तो, खैर, बहुत कुछ तसल्ली के साथ गुज़र गया। पोरफ़िरी प्लातोनिच आ टपका और उसने, अन्य चीज़ों के अलावा, छुटपुट किस्सों का बाजार गर्म रखा। वह अभी शहर से लौटा था। उसने ख़बर सुनाई कि गवर्नर ने, विशेष कमीशन के अपने सदस्यों को, महमेज़ पहनने का आदेश दिया है। यह इसलिए कि उन्हें, किसी अत्यावश्यक काम से, कहीं घोड़े पर भेजना पड़ सकता है। आरकादी दबे स्वर में कात्या से बतियाता रहा और मौसी के प्रति कूटनीतिज्ञ की भांति व्यवहार करता रहा। बज़ारोव अड़ियल और उदास चुप्पी का नक़ाब चढ़ाए रहा। ओदिनत्सोवा ने एक या दो बार, चोरी-छिपे नहीं, बल्कि सीधे उसके गम्भीर, झुंझलाहट भरे चेहरे की ओर देखा: उसकी आंखें झुकी थीं और हर भाव-भंगिमा में अवहेलनापूर्ण दृढ़ता झलक रही

थी, और मन ही मन कहा, "नही .. नही ... नही ..." भोजन के बाद अन्य सब के साथ वह बाहर बाग में चली गई और यह अनुमान कर कि बज़ारोव उससे कुछ कहना चाहता है, एक किनारे खिसककर वही ठिठक गई। बज़ारोव उसके निकट बढ़ आया। उसकी आंखे अभी भी वैसे ही झुकी थी। भरभराई-सी आवाज़ में वह बोला :

"मेरे लिए माफ़ी मांगना ज़रूरी है, अन्ना सेर्गेयेवना। आप निश्चय ही मुझसे सख्त नाराज होगी।"

"नही, मै तुमसे नाराज नही हूं, येवगेनी वसीलियेविच," ओदिनत्सोवा ने जवाब दिया। "लेकिन मै सन्तप्त ज़रूर हूं।"

"यह और भी बुरा है। जो हो, मुझे यो ही काफ़ी सज़ा मिल चुकी है। मेरी स्थिति–यह आप भी मानेगी– हास्यास्पद बन गई है। आपने मुझे लिखा : 'क्या जाना ही है?' मै नही रुक सकता, और न रुकना चाहता ही हूं। मै कल यहां नजर नही आऊंगा।"

"लेकिन, येवगेनी वसीलियेविच, क्यों .."

"यह कि मै क्यो जा रहा हूं?"

"नहीं, मेरा यह मतलब नही।"

"अतीत को लौटाया नही जा सकता, अन्ना सेर्गेयेवना ... और देर या सबेर यह होना ही था। सो, मुझे जाना ही होगा। मेरे जानते केवल एक ही सूरत में मेरा रुकना सम्भव हो सकता था, लेकिन वह सूरत कभी होगी नही। गुस्ताख़ी माफ़,–आप मुझे प्यार नही करतीं,–नही करती हैं न, और न ही कभी करेंगी?"

घनी काली भौंहों के नीचे, क्षण-भर के लिए, बज़ारोव की आंखो में बिजली-सी कौंध गई।

अन्ना सेर्गेयेवना ने कोई जवाब नहीं दिया। सहसा उसके मन में कुछ आभास-सा हुआ–"मै इस आदमी से डरती हूं।"

"अच्छा तो विदा, मदाम!" जैसे उसके मन की बात भापते हुए बजारोव ने कहा और घर की ओर मुड़ गया।

अन्ना सेर्गेयेवना ने भी, धीमे डगों से, उसका अनुसरण किया। उसने कात्या को बुलाया और सहारे के लिए उसकी बांह थामे रही। सांझ तक उसने कात्या को अपने पास ही मौजूद रखा। ताश खेलने से उसने इन्कार कर दिया और सारे समय हंसती रही, लेकिन यह हंसी उसके चेहरे की विवर्ण और त्रस्त-सी मुद्रा से कतई मेल नही खाती थी। आरकादी उसकी ओर देख रहा था और अचरज कर रहा था—जैसा कि युवा लोग करते है, यानी यह कि वह बार बार अपने से पूछ रहा था—"आखिर इस सबका मतलब क्या है?" बजारोव अपने कमरे के पट बंद किए था, चाय के लिए जैसे-तैसे उतर आया। अन्ना सेर्गेयेवना के मन में हुआ कि कोई भली-सी बात उससे कहे, लेकिन उसकी समझ में नही आया कि इस दृढ़ मौन को कैसे भग करे...

एक अप्रत्याशित घटना ने उसे इस असमंजस से उबार लिया। भंडारी ने आकर सूचना दी कि सितनिकोव तशरीफ़ लाए है।

और जिस ताबड़तोड़ ढंग से यह प्रगतिशील युवक कमरे में दाखिल हुआ, उसका वर्णन करना असम्भव है। आचार-विचार को ताक़ पर रखने की अपनी आदत के अनुसार उसने अपने ही मन से निश्चय कर लिया था कि देहात चलकर उस महिला के यहां धमका जाए जिसे वह जानता तक नही था और जिसने कभी उसे आमंत्रित नहीं किया था, लेकिन जो—इधर-उधर से उसने पता चला लिया था—उसके इतने चतुर परिचितों को अपना मेहमान बनाए थी। यह सब होने पर भी वह संकोच के मारे कुछ इस बुरी तरह कटा जा रहा था कि क्षमा-याचना और अभिवादन के उन फ़िकरों को, जिन्हें उसने बाक़ायदा रटा था एकदम भूल गया और अचकचाते हुए जैसे-तैसे वह

इतना ही उगल सका कि येवदोक्सीया ने—यानी कूक्शिना ने—अन्ना सेर्गेयेवना की राज़ी-ख़ुशी का हाल जानने के लिए उसे भेजा है, और यह कि आरकादी निकोलायेविच ने भी बहुत बहुत तारीफ़... यहां तक पहुंचकर वह लड़खड़ा गया और कुछ इस हद तक सकपका गया कि घबराहट में अपनी ही टोपी पर बैठ गया। लेकिन जब किसी ने उसे बाहर निकल जाने के लिए नहीं कहा और अन्ना सेर्गेयेवना ने अपनी मौसी तथा बहिन से उसका परिचय तक कराया तो उसने जल्दी ही अपने को संभाल लिया और भरपूर उछाह से—जितना भी उससे बन सकता था—बातों की पिटारी खोलनी शुरू कर दी। जीवन में अटपटेपन का विक्षेप भी बहुधा अच्छा होता है। अति पर पहुंचा तनाव उससे ढीला पड़ जाता है और आत्मविश्वास फिर ठीक-ठिकाने पर आ जाता है, या कहिए कि हवाई घोड़े पर सवार आत्मप्रवंचना की हमारी भावनाओं को—उनका असली रूप दिखाकर—ठंडा कर देता है। सितनिकोव के आते ही हर चीज़ जैसे अधिक ठस, अधिक बेजान—और अधिक सरल हो गई। यहां तक कि हरेक ने जी लगाकर सांझ का भोजन किया और पूरी मण्डली, और दिनों से आध घंटा पहले ही, सोने के लिए चली गई।

आरकादी अपने बिस्तरे पर पहुंच गया था और बजारोव भी कपड़े उतार चुका था। तभी आरकादी ने उससे कहा:

"एक दिन तुमने मुझसे जो कहा था, वही आज मैं तुम्हारे सामने भी दोहरा सकता हूं: इतने उदास क्यों हो? लगता है जैसे किसी पुनीत कर्तव्य को पूरा करके आ रहे हो।"

दोनों युवा मित्रों के बीच इधर ताने-कटाक्षों में बात करने की आदत का उदय हो गया था जो हमेशा अपने भीतर गुप्त आक्रोश या अज्ञात सन्देह छिपाए होती है।

"कल मैं अपने पिता के पास जा रहा हू," बजारोव ने ऐलान किया।

आरकादी कोहनियों के बल उचक गया। उसे अचरज हुआ और साथ ही, जाने क्यों ख़ुशी भी।

"ओह!" उसने कहा। "तो क्या इसी लिए उदास हो?"

बज़ारोव ने जमुहाई ली।

"उत्सुकता ने बिल्ली को ही मार डाला!"

"और अन्ना सेर्गेयेवना का क्या हाल है?"

"क्यों, उसे क्या हुआ?"

"मतलब यह कि क्या वह तुम्हें जाने दे रही है?"

"गोया मैं उसका बन्धेज हूं, क्यों?"

आरकादी सोच में डूब गया। बजारोव बिस्तरे पर जा लेटा और करवट लेकर मुह दीवार की ओर कर लिया।

कई मिनट तक ख़ामोशी छाई रही।

"येवगेनी," सहसा आरकादी ने कहा।

"क्या है?"

"मैं भी कल चल रहा हूं।"

बज़ारोव ने कुछ नहीं कहा।

"मैं सीधे घर जाऊंगा," आरकादी ने कहा। "ख़ोख़लोव की बस्ती तक हम साथ साथ चलेंगे। वहां फ़ेदोत तुम्हारे लिए सवारी का प्रबंध कर देगा। तुम्हारे घरवालों से मिलने के लिए जी तो मेरा भी करता है, लेकिन डर यही है कि कहीं मैं उनके और तुम्हारे लिए बेकार परेशानी का कारण न बन जाऊं। लौटते समय हमारे यहां फिर आना, आओगे न?"

"मेरी चीजें वहीं तो पड़ी हैं," मुंह फेरे बिना ही बज़ारोव ने जवाब में कहा।

आरकादी ने मन ही मन सोचा:

"यह पूछता क्यों नही कि मैं क्यों जा रहा हूं? सो भी उतना ही अचानक जितना कि वह? जरा सोचो तो सही, मैं क्यों जा रहा हूं और वह क्यों जा रहा है?" आरकादी ने अपने विचारों का पल्ला नही छोड़ा। उसे अपने सवाल का कोई सन्तोषजनक जवाब नही मिला और उसका हृदय एक प्रकार के तीखेपन से भर गया। उसने महसूस किया कि इस जीवन से जिसका वह इतना अभ्यस्त हो गया, अपने को विच्छिन्न करना कितना दुःखदायक होगा। लेकिन फ़क़तदम अकेले यहां टिके रहना भी बड़ा बेतुका मालूम होगा। "उनके बीच ज़रूर कुछ हुआ है," उसने अपने आपसे कहा, "उसके जाने के बाद मैं ही क्यों यहा चिपका रहूं? मेरे रहने से वह केवल और भी चिढ़ जाएगी, और रहा-सहा भी हाथ से जाता रहेगा।" अन्ना सेर्गेयेवना का चित्र उसकी कल्पना में मूर्त्त हो उठा और युवती विधवा की वह सुन्दर छवि, धीरे धीरे, एक दूसरी छवि में परिवर्तित हो गई।

"कात्या भी मेरे हाथ से जाती रहेगी," आरकादी अपने तकिये में फुसफुसाया और निःशब्द आंसू की एक बूद ढुलककर तकिये पर आ गिरी... सहसा उसने अपने बालों को झटका और ज़ोर से कह उठा:

"आखिर वह गधा सितनिकोव यहां क्यों आ टपका?"

बज़ारोव अपने बिस्तरे पर कसमसाया। फिर बोला:

"सुनो बचुवा, देखता हूं कि तुम्हारे दूध के दांत अभी तक नही टूटे। सितनिकोव न हो तो यह दुनिया ठप्प हो जाए। मुझे उस जैसे काठ के उल्लुओं की ज़रूरत है। नही तो क्या तुम, सचमुच, देवताओं से भट्ठा गर्म कराने की आशा करते हो ..!"

"हुंः!" आरकादी ने मन ही मन सोचा और जैसे एक ही कौंध में बज़ारोव के दम्भ की अतल गहराई उसकी आंखों के सामने

उजागर हो गई, "सो तुम और मैं देवता है? या यह कहो कि तुम देवता और मैं तुम्हारा काठ का उल्लू हू!"

"हा," बज़ारोव ने कहा, "तुम अभी तक निरे दुध-मुहे बच्चे हो।"

अगले दिन आरकादी से यह जानकर कि वह भी बज़ारोव के साथ जा रहा है, ओदिनत्सोवा ने कोई ख़ास अचरज प्रकट नही किया। वह कुछ अस्तव्यस्त और थकी-सी मालूम होती थी। कात्या ने चुपचाप और गम्भीर नज़र से आरकादी की ओर देखा। मौसी ने—और आरकादी की आंखे बरबस उधर घूम गई—शाल के भीतर चुपके से क्रास का चिन्ह बनाया। और सितनिकोव—उसका तो जैसे ढेर हो गया। लकदक़ नया सूट डाटे भोजन के लिए वह अभी नीचे आया था और उसका यह सूट, इस बार, स्लाविस्ट ढंग का नही था। एक से एक बढिया कपड़ों का अम्बार वह अपने साथ लाया था, इतना अधिक कि पिछली रात उसकी हाज़िरी के लिए नियुक्त नौकर यह सब देखकर मुह बाए रह गया था। लेकिन अब उसके साथी थे कि उसे मझधार में छोड़े जा रहे थे! पहले तो वह कुछ कुनमुनाया, और इसके बाद जंगल के किनारे तक खदेड़े गए खरहे की भांति इधर-से-उधर लपका-झपका और फिर अचानक, जैसे किसी ने उसे बीध डाला हो, करीब क़रीब चीख-सी भरता कह उठा कि वह भी जा रहा है। ओदिनत्सोवा ने कोई आपत्ति नही की।

इसके बाद, आरकादी की ओर मुड़ते हुए, उस बदकिस्मत युवक ने कहा:

"मेरी गाड़ी खूब आरामदेह है। मैं तुम्हें बैठा ले चलूगा, और येवगेनी वसीलियेविच तुम्हारी तरन्तास ले लेंगे। यह ठीक रहेगा।"

"लेकिन तुम्हें अपने रास्ते से एकदम भटक जाना पड़ेगा। और मेरा घर काफ़ी दूर है।"

"कोई बात नही। समय की मेरे पास कोई कमी नही। इसके अलावा मुझे उधर कुछ काम-काज भी निबटाना है।"

"ठेके पर कमीशन, यही न?" अत्यन्त प्रकट हिक़ारत के लहजे में आरकादी ने कुरेदा।

लेकिन सितनिकोव इतना त्रस्त था कि अपनी टकसाली हंसी होंठों पर नही ला सका।

"सच मानें, गाड़ी बेहद आरामदेह है," वह बुदबुदाया, "और सब कोई मज़े से बैठ सकते हैं।"

"इन्कार करके मौसिये सितनिकोव को दुःखी न करें," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहारा दिया।

आरकादी ने उसकी ओर देखा और भेद-भरे अन्दाज में अपने सिर को तिरछा कर लिया।

भोजन के बाद अतिथि विदा हुए। बजारोव से विदा लेते समय ओदिनत्सोवा उसे अपना हाथ देती हुई बोली:

"फिर मिलते तो रहेंगे, क्यों ठीक है न?"

"जैसा आप चाहें," बज़ारोव ने जवाब दिया।

"तब तो भेंट होगी ही।"

सबसे पहले आरकादी पोर्च की सीढियों पर उतर आया और सितनिकोव की गाड़ी में सवार हो गया। भंडारी ने अदब से उसे सहारा दिया। अच्छा होता अगर वह उसे घूंसा जड़ देता या फूट-फूट कर रोने लगता। बज़ारोव ने तरन्तास में आसन जमाया। ख़ोख़लोव की बस्ती पहुंचने पर आरकादी सरायदार फ़ेदोत के घोड़े

जोतवाने तक रुका रहा। इसके बाद बजारोव के पास गया और अपनी पुरानी मुसकराहट के साथ बोला:

"येवगेनी, मुझे भी अपने साथ ही ले चलो। तुम्हारा घर देखने को जी चाहता है।"

"तो आ जाओ भीतर," बजारोव ने दांतों के भीतर से कहा।

सितनिकोव जो अपने आपमें मगन सीटी बजा रहा था और अपनी गाड़ी के इर्द-गिर्द अलस मुद्रा में टहल रहा था, यह सुनकर हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया। उधर आरकादी ने अविचलित भाव से अपना सामान उठाकर बज़ारोव की गाड़ी में पहुंचाया और खुद भी उसके बराबर में बैठ गया। फिर अदब के साथ अपने साथी की ओर सिर झुकाते हुए चिल्लाकर बोला: "चलो, कोचवान!" तरन्तास उछलती हुई बढ़ चली और जल्दी ही आंखो से ओझल हो गई। सितनिकोव ने, जो पूर्णतया सिटपिटा गया था, छिपी नज़र से अपने कोचवान की ओर देखा। कोचवान बेख़बर-सा आगेवाली घोड़ी की दुम पर अपने चाबुक की डोरी सरसरा रहा था। इसपर सितनिकोव उछल-कर गाड़ी में सवार हो गया, उधर से गुजरते दो किसानों को देख उनपर बरसा: "सिर पर टोपी क्यों नही रखते, अक़्ल के दुश्मनो!" और शहर के लिए रवाना हो गया जहां वह काफ़ी दिन ढले पहुंचा। अगले दिन कूक्शिना को उसने बताया कि वह उन दोनों के— "उन उजड्ड हरामखोरों के"— बारे में क्या सोचता है।

तरन्तास मे बज़ारोव की बग़ल में बैठने के बाद आरकादी ने उसके हाथ को कसकर दबाया और काफ़ी देर तक कुछ न बोला। लगता था जैसे आरकादी का इस तरह हाथ दबाना और मौन धारण कर लेना बजारोव को अच्छा लगा। पिछली रात एक क्षण के लिए भी उसकी पलक नहीं झपकी थी, न ही

उसने सिगरेट पी थी और कई दिन से लगभग पेट में भी कुछ नही डाला था। एकदम आंखों तक खिंची टोपी के नीचे उसके मुख की अर्द्ध-मुद्रा बदहवास-सी और क्षीण दिख रही थी।

"अच्छा तो मित्र," आखिर उसने खामोशी भंग की, "जरा चुरुट तो निकालो... और इधर देखो, क्या मेरी जीभ पीली मालूम होती है?"

"हां, है तो," आरकादी ने जवाब दिया।

"तभी तो... और तुम्हारा यह चुरुट भी बेजायका मालूम होता है। गड़बड़ मशीन में ही है।"

"पिछले कुछ दिनों तुम सचमुच कुछ ठीक नही दिख रहे थे," आरकादी ने कहा।

"कोई चिन्ता नहीं। सब ठीक हो जाएगा। यों है यह कुछ अखरनेवाली बात। मेरी मां कुछ इतनी संवेदनशील जीव है कि जब तक तुम्हारी तोंद बड़ी न हो और दिन में दस बार तुम न खाओ तो वह बुरी तरह परेशान हो उठती है। वैसे पिता भी बुरे नही हैं। कितनी ही जगह घूमे हैं और दुनिया को थोड़ा-बहुत देख आए हैं। नहीं," चुरुट को फेंकते हुए फिर उसने कहा, "मिट्टा मालूम होता है इसे पीना!"

"तुम्हारी जागीर यहा से सोलह-सत्रह मील होगी, क्यों?" आरकादी ने पूछा।

"हां। लेकिन उस लाल बुझक्कड़ से पूछो न?" कहते हुए उसने बोक्स पर बैठे गाड़ीवान की ओर इशारा किया।

लेकिन उस लाल बुझक्कड़ ने कहा:

"कौण जाणे, इध्र की जमीन कबी नापी नई गई," और फुसफुसाती आवाज में अपनी आगेवाली घोड़ी को झिड़कता रहा,

क्योंकि वह "थूथनी नचा रही थी", मतलब यह कि अपने सिर को झटक रही थी।

"हां हां," बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया, "यह तुम्हारे लिए एक सबक़ है, सीख देनेवाला सबक, मेरे युवक मित्र। जहन्नुम में जाए, यह क्या गड़बड़झाला है? हर आदमी कच्चे धागे से लटका है, नीचे अतल गहराई मुह बाकर किसी भी क्षण उसे उदरस्थ कर सकती है, लेकिन वह है कि दुनिया भर के बखेड़े मोल लेता फिरता है, खुद अपने जीवन के साथ तबाही के खेल खेलता है।"

"यह तुम किसकी ओर लक्ष्य कर रहे हो?" आरकादी ने पूछा।

"लक्ष्य-वक्ष्य मै कुछ नहीं कर रहा हूं। मै सीधे तुमसे, पूरी गम्भीरता से, कह रहा हूं कि हम दोनों काठ के उल्लू बनते रहे है। बातें बघारने से कुछ आता-जाता नही। लेकिन अस्पताल में मैंने देखा है कि जिसे दर्द बुरी तरह बौखला देता है, वह निश्चय ही उसपर विजय भी पा लेता है।"

"मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि यह सब तुम क्यों कह रहे हो," आरकादी ने कहा। "शिकायत की ऐसी कोई बात तो तुममें नज़र नही आती।"

"अच्छा, चूकि तुम मुझे कुछ समझ नहीं पा रहे हो, इसलिए सुनो, मै तुम्हे बताता हूं: मेरी राय में सड़क के किनारे पत्थर तोड़ना कही अच्छा है, बनिस्बत इसके कि किसी स्त्री के चक्कर में पड़कर तुम अपनी कानी उंगली पर भी कोई आंच आने दो। बस, सौ बात की यही एक बात है..." बजारोव का प्रिय शब्द 'रोमान्टिकता' बाहर निकलने के लिए उसकी जुबान की नोक पर मचल रहा था कि उसने अपने आपको रोक लिया और बोला: "निरी ख़ुराफ़ात! तुम

शायद अभी विश्वास न करो, लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूं: तुम और मैं दोनों स्त्रियो की संगत में रहे है और उसमें आनन्द भी हमने लिया है। लेकिन ऐसी संगत से छुटकारा पाना वैसा ही है जैसे गर्मी से तप्त दिन में ठंडी फुहारों में स्नान करना। ऐसी फ़िजूल बातों में गंवाने के लिए आदमी के पास समय कहां है? स्पेन की एक बहुत ही अच्छी पुरानी कहावत है: 'आदमी वही है जो निर्बंध हो'।" फिर कोचबोक्स पर बैठे दहकान की ओर मुड़ते हुए बोला: 'ऐ, इधर देखो लाल बुझक्कड़, क्या तुम्हारे बीवी है?"

देहाती गंवार ने अपनी चिपचिपी आंखोंवाला चपटा चेहरा हमारे मित्रों की ओर घुमाया।

"बीवी कह्या न? बिशक मेरे कूं बीवी है।"

"उसे पीटते भी हो?"

"बीवी कूं, पीटता। जस लोग, तस भोग। पण बे-बात कब्भी नहीं पीटता।"

"बहुत खूब। लेकिन यह बताओ, क्या वह तुम्हें कभी पीटती है?"

उसने अपनी रास को झटका।

"जाणे कैसा-क्या बोलता मालिक! मज्जाक करता..."

साफ़ था कि उसे बुरा लगा।

"सुना तुमने, आरकादी निकोलायेविच! और तुम और मै है कि चाबुकों की मार खाकर आ रहे हैं... यही शिक्षित होने का फ़ायदा है।"

आरकादी ने जबर्दस्ती हंसने का प्रयत्न किया। उधर बजारोव ने अपना मुंह मोड़ लिया और फिर रास्ते भर मुंह न खोला।

सोलह-सत्रह मील का रास्ता आरकादी को ऐसा मालूम हुआ

जैसे बढ़कर तीस-बत्तीस मील बन गया हो। आखिर, पहाड़ी ढलुवान पर, एक गांव दिखाई दिया। यहीं बजारोव के माता-पिता रहते थे। पास ही, नये बर्च वृक्षों के एक झुरमुट में, एक छोटा-सा घर था जिसपर फूस का छप्पर छाया था। पहली झोंपड़ी के आगे सिर पर टोपी डाटे दो किसान झड़प रहे थे। "सण्डमुस्टण्ड सुअर," एक दूसरे से कह रहा था, "जहां-तहां मुह मारते फिरते हो!" दूसरे ने नहला पर दहला रखते हुए जवाब दिया: "और तुम्हारी बीवी – वह डायन है, डायन!"

"देखा तुमने," बज़ारोव ने आरकादी को बताते हुए कहा, "इनके निर्बंध व्यवहार और चुटकियों-भरी बातों से पता चल जाता है कि मेरे पिता के किसान कुछ ऐसे रौदे-कुचले और पस्त नही है। यह लो, वह ख़ुद भी सामने मौजूद है। घर की पैड़ियो पर आ गए है। घंटियो की टुनटुन कानों में पड़ी होगी। वही हैं – हां, वही हैं, उनका ढांचा साफ़ कह रहा है कि वही हैं। टट टट! लेकिन देखो, बालों पर सफ़ेदी आ चली है न उनके, ओह!"

२०

बजारोव तरन्तास से बाहर झुक आया, आरकादी ने भी अपनी गरदन उचकाकर मित्र के पीठ-पीछे से देखा। लम्बे क़द के एक छरहरे-से आदमी पर उसकी नज़र पड़ी। बाल उलझे हुए, बढ़िया तोते-जैसी नाक, बदन पर पुराना फौजी कोट जिसके बटन खुले थे। टांगें चौड़ी किए, मुह में लम्बी डंडी का पाइप लगाए और सामने से पड़ती सूरज की धूप के मारे आंखों को सिकोड़े वह पोर्च की सीढ़ियों पर खड़े थे।

घोड़े रुक गए।

"आखिर तुम आ ही गए," बजारोव के पिता ने कहा और वैसे ही तम्बाकू पीते रहे, हालाकि चिबुक—लम्बी डंडी का पाइप—उनकी उंगलियों में थिरक और अच्छा-ख़ासा नाच-सा-नाच रहा था। "अच्छा तो अब उतर आओ, उतर आओ, और जरा एक चुम्मा तो दो।"

उन्होंने अपने बेटे को कलेजे से लगा लिया .

"येवगेनी, मेरे मुन्ना येवगेनी," किसी स्त्री की थरथराती हुई आवाज़ आई। दरवाजा फटाक से खुला और सफ़ेद टोपी तथा चटक रंगों की छोटी जाकेट पहने एक गोल-मटोल बहुत ही प्यारी वृद्ध महिला ड्योढ़ी में दिखाई दी। उसका हृदय चीख उठा, बदन ने एक झोंका खाया, और अगर बजारोव ने उसे थाम न लिया होता तो शायद वह गिर पड़ती। देखते न देखते उसकी गुदगुदी बाहे बजारोव के गले से लिपट गई, सिर उसकी छाती से जा चिपका और चारो ओर की हर चीज़ जैसे सांस रोककर निस्तब्ध हो गई। वृद्धा की टूटी हुई सुबकियो के सिवा और कुछ सुनाई नही पड़ रहा था।

वृद्ध बज़ारोव भारी सांस ले रहे थे और पहले की भाति—बल्कि उससे भी अधिक—अपनी आंखों को सिकोड़े थे।

"बस बस, अरीशा, अब बस करो," उन्होने कहा और उनकी आंखें आरकादी से जा मिली जो गाडी से सटा खड़ा था और कोचवान ने तो अपना मुह तक फेर लिया। "सच, यह एकदम बेकार है। कृपया बंद भी करो अब!"

"आह वसीली इवानिच," वृद्धा हकलाती-सी बोली, "कितनी मुद्दत के बाद मेरे कलेजे का टुकड़ा, मेरी आंखों का तारा, आज दिखाई दिया है..." और अपनी बांहो के बंधन को ढीला किए बिना ही

उसने आंसुओं से भीगा और झुर्रियां-पड़ा दमकता हुआ चेहरा कुछ पीछे खींच लिया, अटपटे-से अन्दाज में चाव-भरी नज़र से उसे देखा और फिर उसके गले से लिपट गई।

"हां ठीक . बेशक ठीक... ऐसा ही होता है," वसीली इवानिच ने कहा, "लेकिन अच्छा हो कि अब हम भीतर चले। देखता हूं, येवगेनी अपने साथ एक मेहमान को भी लाया है।" फिर पाव को थोड़ा फटफटाकर आरकादी की ओर मुड़ते हुए बोले: "माफ कीजिएगा, जानते ही है कि स्त्रियो का—तिस पर भी मां का—हृदय बिल्कुल मोम होता है..."

लेकिन खुद उनके होठ और भौहे बल खा रही थी और ठोड़ी थरथरा रही थी... साफ़ मालूम होता था कि वह अपने भावों को बस में रखने का प्रयास कर रहे है, क़रीब करीब तटस्थता का अभिनय करने के हद तक।

आरकादी ने सिर झुकाकर नमस्कार किया।

"चलो मा चलो, तुम तो सचमुच," बजारोव ने कहा और भावो से अभिभूत वृद्धा को सहारा देकर घर मे लिवा ले गया। उसे आरामदेह कुर्सी में बैठाकर उतावली के साथ वह एक बार फिर अपने पिता के गले से लिपट गया और आरकादी का परिचय कराया।

"आपसे मिलकर आन्तरिक खुशी हुई," वसीली इवानिच ने कहा, "यहां जो कुछ भी रूखा-सूखा है, आपके लिए हाजिर है। सादा जीवन हम बिताते है, फौजियों के ढर्रे पर। अरीना व्लासियेवना, अब तो शान्त हो जाओ, सच। इतना मुलायम होना भी ठीक नही। देखो न, ये सज्जन भी जाने क्या सोचेंगे तुम्हारे बारे में।"

"प्रिय महोदय," वृद्धा ने आंसुओं के बीच लड़खड़ाती आवाज़ मे कहा, "आपका नाम जानने की खुशी से मै अभी तक. "

"आरकादी निकोलायेविच," वसीली इवानिच ने गम्भीर भाव से इशारतन बताया।

"माफ़ करें, मैं भी बस योंही हूं," कहते हुए वृद्धा ने अपनी नाक साफ़ की, और अपने सिर को पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर झुकाते हुए सावधानी के साथ बारी बारी से अपनी आखों को पोंछा। फिर बोली: "माफ़ करना। सच, मुझे कुछ ऐसा लग रहा था कि अपने कलेजे के टु... क... टुकड़े को बिना देखे ही मेरे प्राण छूट जाएगे।"

"लेकिन अब तो वह तुम्हारे सामने है, मदाम," वसीली इवानिच ने कहा और फिर तेरह वर्ष की नगे पाव और चटक लाल रग की सूती फ़्राक पहने एक लड़की की ओर जो सहमी-सी दरवाजे की ओट में से झाक रही थी, मुडते हुए बोला: "तान्या, मालकिन के लिए एक गिलास पानी तो ले आओ, और देखो, तश्तरी में रखकर लाना, समझी! और आप महानुभावो," पुराने ढंग की खुशमिजाजी के साथ उसने फिर कहा, "आप लोग पैन्शन प्राप्त इस पुराने सैनिक के अध्ययनकक्ष को पवित्र करने की कृपा करें।"

"प्यारे येवगेनी, जरा इधर आओ, तुम्हें एक बार और दुलार लूं," अरीना व्लासियेवना बुदबुदाई। बजारोव झुककर नीचे हो गया। "सच, कैसा फूल-सा जवान बन गया है तू!"

"चाहे फूल-सा हो या न हो," वसीली इवानिच ने टीप की, "लेकिन ओम्फ़े* तो है ही – जैसी कि कहावत है। और अब, अरीना व्लासियेवना, आशा है कि तुम्हारा मां का हृदय तृप्त हो गया होगा, सो हमारे प्यारे मेहमानों का पेट भरने की भी कुछ जुगत करो। कारण, तुम जानती ही हो कि मीठी बातों से पेट नहीं भरता।"

---

* ओम्फे (फ़्रेंच homme fait) – मर्द-बच्चा। – सं०

वृद्धा अपनी आरामकुर्सी से उठ खड़ी हुई।

"अभी, एक मिनट मे, दस्तरखान बिछ जाता है, वसीली इवानिच। मैं खुद जाकर रसोई को संभालती हूं और समोवर गरम करवाती हूं। मै खुद हर चीज की देख-भाल करूंगी। जरा सोचो तो, पूरे तीन साल बाद उसे अपनी आंखों से देखने और उसकी ज़रूरतों को पूरा करने का यह दिन आया है।"

"बस बस, जाकर सब ठीक कर दो, हमारी प्रिय मेज़बान। लेकिन इसका ध्यान रखना, हमें लजाना न पड़े। और आप महानुभावो, कृपया मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें। ओहो, यह देखो येवगेनी, तुम्हारा अभिनन्दन करने तिमोफेइच भी आ गया। मैं समझता हूं, खुशी के मारे यह भी फूला न समाता होगा। पुराना चाकर जो ठहरा। क्यों, तुम खुश हो न, बुढऊ? हां इधर, कृपया इधर से आइए।"

और वसीली इवानिच, अपने घिसे-पिटे सलीपरों को फटफटाते तथा सटर-पटर करते तेजी से बढ़ चले।

समूचे घर में कुल जमा छै छोटे छोटे कमरे थे। इन्ही में से एक, जिसमें वह मेहमानों को ले गए, अध्ययनकक्ष कहलाता था। दोनों खिड़कियों के बीच की समूची लम्बाई में, दीवार से सटी, भारी पायों की एक मेज बिछी थी। मेज पर काग़ज़ बिखरे थे और धूल की न जाने कितनी पुरानी तह से वह काली — एकदम कारिखपुती-सी — हो गई थी। दीवार पर तुर्की अस्त्र-शस्त्र, घोड़सवारी के चाबुकों की मूठे, दो फ़ौजी नक़्शे, अवयव सम्बन्धी कुछ चार्ट, गुफ़लैण्ड का एक छविचित्र, काले चौखटे में बालों से बुना मोनोग्राम, और कांच से रक्षित एक प्रमाण-पत्र टंगे थे। करेलियन बर्च की लकड़ी के दो भीमाकार किताबों की आलमारियों के बीच चमड़े का एक सोफ़ा रखा था जिसमें जगह जगह गढ़े और दरारे पड़ी हुई थी। खानो में किताबें,

छोटी सन्दूकचिया, भूसा-भरी चिड़ियां, मर्तबान और छोटी-मोटी शीशिया बेतर्तीबी से पड़ी थी। एक कोने मे बिजली की टूटी हुई मशीन खडी थी।

"मेरे प्रिय मेहमान," वसीली इवानिच ने कहना शुरू किया, "मैने पहले आपको चेता दिया था कि हम लोग यहा – जैसा कि कहते है – सैनिको के पडाव जैसा जीवन बिताते है . ."

"बस, रहने दीजिए," बजारोव ने बीच मे ही कहा, "आखिर यह माफीनामा खोलने की क्या ज़रूरत है? किरसानोव अच्छी तरह जानते है कि हम कोई कुबेर नही है, और यह कि हम महल में नही रहते। सवाल यह है कि इन्हें टिकाया कहा जाएगा?"

"यह कौन बड़ी बात है, येवगेनी। सच, बाजू में एक छोटा-सा बहुत ही शानदार कमरा है। तुम्हारे मित्र के लिए काफी आरामदेह रहेगा।"

"तो यह कहो कि एक नया बाजू बनवा लिया है, क्यो?"

"इसमें भी क्या शक है, मालिक। जहां गुसलखाना है न, मालिक," तिमोफ़ेइच ने कहा।

"यानी, गुसलख़ाने की बगल में," वसीली इवानिच ने उतावली से कहा, "आजकल गर्मियों के दिन हैं . मै अभी लपककर सब ठीक कराए देता हू। और तुम, तिमोफ़ेइच, इस बीच इन सज्जन का सामान उठा लाओ। और तुम येवगेनी, कहने की ज़रूरत नहीं कि मेरे अध्ययनकक्ष में ही अपना आसन जमाओगे। Suum cuique*।"

वसीली इवानिच के कमरे से जाते ही बज़ारोव कह उठा:

"देखा तुमने, कितना मज़ेदार है यह बूढ़ा, और उतना ही

---

* जिसे जो भावे, सो पावे। (लैटिन) – सं०

स्नेह-भरा जितना कि कोई हो सकता है। तुम्हारे पिता की भाति यह भी कुछ सनकी हैं, लेकिन भिन्न प्रकार के। हालाकि बातूनी बेहद है।"

"और तुम्हारी मा—मुझे तो वह अद्भुत मालूम होती है," आरकादी ने राय दी।

"हा, एकदम निश्छल आत्मा। देखना, क्या क्या भोजन कराती है।"

"हम नही जानते थे, मालिक, कि आप आज आ रहे है," तिमोफेइच ने जो अभी बजारोव का सूटकेस लेकर आया था कहा, "इसलिए बाजार से कोई खास मांस-वांस नही मंगा सके।"

"उसके बिना भी चल जाएगा। अगर नही है, तो न सही। कहते है न—गरीबी कोई पाप नही।"

"तुम्हारे पिता कितने भू-दासों के स्वामी है?" सहसा आरकादी ने पूछा।

"जागीर उनकी नहीं, मां की है। जहां तक याद पड़ता है, पन्द्रह होंगे।"

"ओह नही, कुल मिलाकर बाईस है," तिमोफेइच नाखुश-सा बीच में ही बोल उठा।

तभी सलीपरों के फटफटाने की आवाज़ सुनाई दी और वसीली इवानिच आ मौजूद हुए।

"आपका कमरा अभी कुछ मिनटों में ही ठीक हो जाएगा," गम्भीरता से उन्होंने ऐलान किया, "आरकादी ... निकोलायेविच? क्यों, ठीक है न?" फिर सिर के बाल छंटे और कोहनियों पर से फटा नीला झगला तथा किसी दूसरे के जूते पहने एक लड़के की ओर इशारा करते हुए बोले: "और यह आपकी खिदमत में रहेगा। इसका

नाम है फेदिया। मेरे बेटे को तो मेरी यह बात कतई गवारा न होगी, लेकिन मुझे कहने दीजिए कि ... कि इससे अच्छा हम और कुछ आपको पेश नही कर सकते। आपका पाइप तो यह भर ही सकता है। आप तम्बाकू तो पीते है न, क्यों?"

"अक्सर मै चुरुट ही पीता हूं," आरकादी ने जवाब दिया।

"और यह आप बड़ी बुद्धिमानी करते है। मै खुद भी चुरुट ही पसंद करता हूं, लेकिन इन निराले इलाको मे उनका मिलना मुश्किल है।"

"बस बस, ज़्यादा भिखारी का नाटक न करो," बज़ारोव ने इस दफ़ा फिर टीका की। "अच्छा हो कि यहा सोफ़े पर आकर बैठो जिससे जी-भरकर तुम्हें एक बार फिर देख तो सकें।"

वसीली इवानिच मुह के भीतर-ही-भीतर हंसे और सोफ़े पर बैठ गए। उनकी शक्ल अपने बेटे से आश्चर्यजनक रूप में मिलती थी, सिवा इसके कि उनका माथा उतना ऊंचा और प्रशस्त नहीं था और उनका मुह अधिक चौड़ा था। वह निरन्तर कसमसाते और कंधों को सिकोड़ते रहते थे मानो उनके कपड़े, बग़ल के पास, ज़रूरत से ज़्यादा तंग हों। वह निरन्तर आंखों को मिचमिचाते, गले को साफ़ करते और उंगलियों को मरोड़ते रहते थे। इसके प्रतिकूल उनका बेटा एक बेपर्वाह किस्म की निश्चलता का दामन पकड़े मालूम होता था।

"भिखारी का नाटक," वसीली इवानिच ने दोहराया, "यह न समझो येवगेनी, कि मैं अपने मेहमानों के दिलों को हिला-डुलाकर, जैसा कि कहते हैं, उनमें एक तरह की दया उपजाना चाहता हूं, कुछ इस रूप में कि देखो, कितनी मनहूस जगह है यह जहां हम रहते हैं। नहीं, इसके प्रतिकूल मेरा मत यह है कि एक क्रियाशील मस्तिष्क के लिए मनहूस जगह जैसी कोई चीज़ नहीं होती। जो हो, मै इस बात

के लिए कठिन से कठिन प्रयत्न करता हूं कि मुझपर, जैसा कि कहते हैं, काई न जमने पाए, और ज़माने की रफ़्तार में सबसे आगे रहूं।"

वसीली इवानिच ने अपनी जेब मे से नींबू के रग का रूमाल निकाला जिसे उन्होने आरकादी के कमरे मे जाते समय अपने कमरे में से ले लिया था और उससे पंखा-सा झलते हुए कहने लगे:

"इस तथ्य का मै कुछ नही कहता कि मैंने, मिसाल के लिए, खुद काफी घाटा उठाकर भी, अपने किसानों को काश्तकार किसान बना दिया है और आधी फसल मुझे देने की शर्त के साथ अपनी भूमि उनके नाम कर दी है। इसे मैं अपना कर्तव्य और बहुत ही न्यायसंगत चीज समझता हूं, हालांकि अन्य भूपति इसका सपना तक नहीं देख सकते। मेरा मतलब विज्ञान और शिक्षा के हितों से है।"

"सो तो है। देखता हूं, उधर १८५५ का 'स्वास्थ्य-मित्र' भी आपने रख छोडा है," बजारोव ने कहा।

"मेरे एक मित्र, पुराने दिनों की याद मे, इसे भेज देते है," वसीली इवानिच ने उतावली से कहा, "लेकिन हम कुछ और भी दिलचस्पी रखते हैं, मिसाल के लिए जैसे मस्तिष्क-विज्ञान के बारे में," उन्होंने इस तरह कहा जैसे आरकादी के लाभ के लिए बोल रहे हो, और शेल्फ़ पर रखे सिर के एक छोटे साचे की ओर इशारा किया जिसपर लकीरें खीचकर अनेक वर्ग बने हुए थे और इन वर्गो में नम्बर पड़े हुए थे। फिर बोले–"ऐसा नही है कि हम, मिसाल के लिए, शेनलीन या रादेमाखर से एकदम अपरिचित हो।"

"तो क्या इस गुबेर्निया मे रादेमाख़र का नाम अब उछाला जाता है?" बज़ारोव ने पूछा।

वसीली इवानिच खांसने लगे।

"ऐं ... ऐं ... इस गुबेर्निया ... इसमें क्या शक कि आप

महानुभाव ज्यादा जानकार हैं। आप हमसे कही आगे है। आखिर हमारे वारिस जो ठहरे। अपने जमाने मे हमे भी हौफमैन जैसे विकारवादी या ब्राउन जैसे जीवनतत्ववादी का जिक्र तक बडा बेहूदा मालूम होता था, हालांकि एक समय इन लोगों ने काफी तहलका मचा दिया था। अब आप लोगों ने रादेमाखर को बेदखल करनेवाली किसी नयी विभूति का दामन पकड़ा है और अब आप उसकी आरती उतारते हैं, लेकिन लगभग बीस वर्ष मे शायद वह बेहूदगी का पिटारा बनकर रह जाएगा।"

"आपको यह जानकर तसल्ली होगी," बजारोव ने कहा, "कि हम चिकित्साशास्त्र मात्र को बेहूदगी का पिटारा मानते हैं और किसी भी चीज की आरती नही उतारते।"

"क्या मतलब? आप खुद भी तो डाक्टर बनने जा रहे है, क्यों, ठीक है न?"

"हां, बनने जा रहा हूं। लेकिन इससे कुछ सिद्ध नहीं होता।"

वसीली इवानिच ने अपने पाइप की कटोरी में गर्म राख को बिचली उंगली से दबाया और कहना शुरू किया.

"हो सकता है, यह भी हो सकता है, बहस में मै नही पड़ूंगा। आखिर मैं क्या हूं? एक अवकाशप्राप्त फ़ौजी सर्जन – बस और कुछ नहीं, और अब मैं किसानी मे डूबा हूं। मै आपके दादा की ब्रिगेड में रह चुका हूं," उन्होंने एक बार फिर आरकादी को सम्बोधित किया, "हां श्रीमान, अपने ज़माने में मैंने भी थोड़ी-बहुत दुनिया देखी है। सभी तरह की सोसाइटियों में रहा हूं, सभी तरह के लोगों से वास्ता पड़ा है। यह शख़्स जो आपके सामने मौजूद है – यानी मैं – प्रिन्स वितगेनश्तेइन और कवि जुकोवस्की जैसे लोगों की नाड़ी पर अपनी उंगली रख चुका है। और दक्खिनी फ़ौज के लोगों का जहां तक सम्बंध है –

उनका जो चौदह दिसम्बर* की घटनाओं की जड़ थे," (यहां वसीली इवानिच ने अपने होंठ भेद-भरे अन्दाज में बिचकाए) "सच, उनमे से प्रत्येक को मैं जानता था। यों, कहने की जरूरत नही, उनसे मेरा कोई सरोकार नही था, मेरा काम तो बस नश्तर संभालना था, इससे अधिक और कुछ नही। लेकिन आपके दादा का बेहद मान था, और वह सच्चे सैनिक थे।"

"बस रहने दीजिए," बजारोव कुनमुनाया, "साफ साफ क्यो नही कहते कि वह कुन्द-दिमाग़ थे।"

"बाप रे! तुम भी अजीब फिकरे इस्तेमाल करते हो, येवगेनी! सच ... इसमें शक नही ... जेनरल किरसानोव उन लोगों में से नही थे जो . "

"छोड़िए उन्हे," बजारोव ने बीच में ही कहा, "यहां आते समय यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि बर्च वृक्षो का आपका कुज खूब पनपा है।"

वसीली इवानिच का चेहरा खिल उठा।

"और मेरे बगीचे को भी देखना, कितना बढ़िया है। हर पेड को खुद अपने हाथों से मैंने रोपा है। फल है, रसभरियां है और तरह तरह की जड़ी-बूटियां है। तुम नयी पीढ़ी के लोग चाहे जो कहो, लेकिन बाबा पारासेल्सस का यह कथन पुनीत सत्य को ही व्यक्त करता है — in herbis, verbis et lapidibus...** मै अब डाक्टरी का धंधा नही करता —

---

* उसका संकेत दिसेम्ब्रिस्टो के गुप्त क्रान्तिकारी समाज ('दिसेम्ब्रिस्टो का दक्षिणी समाज') के सदस्यों से है। उक्त समाज का अध्यक्ष पेस्टेल था (१७९३–१८२६)। – सं०

** जड़ी-बूटियो, शब्दो और पत्थरों से। (लैटिन) –सं०

तुम जानते ही हो—लेकिन हफ़्ते में एक या दो बार फिर भी डुबकी लगा ही लेता हूं। लोग सलाह के लिए आते हैं, और उन्हें लात मारकर एकदम खदेड़ा भी नही जा सकता। जब-तब कोई न कोई कंगला आ टपकता है, और इलाज के लिए सिर पड जाता है। और फिर आस-पास डाक्टर है भी नही। शायद तुम यक़ीन न करो, हमारे एक पड़ौसी है—अवकाशप्राप्त मेजर। वह भी डाक्टरी करते है। एक दिन मैंने किसी से पूछा—क्या उन्होने कभी डाक्टरी पढ़ी है? नही—जवाब मिला—उन्होंने डाक्टरी नहीं पढ़ी। खैराती डाक्टर है ... हा, हा, खैरात की भावना से डाक्टर बने है! क्यों, है न अद्भुत! हा-हा-हा-हा!"

"फ़ेदिया, मेरा पाइप तो भर ला!" बजारोव ने कड़ी आवाज में कहा।

"या इधर के एक और डाक्टर को लो," वसीली इवानिच ने एक तरह की निराशा भरे स्वर में कहना शुरू किया। "वह मरीज को देखने आते हैं। मालूम होता है कि मरीज़ अपने पुरखों के पास पहुंच चुका है। नौकर उन्हें भीतर पांव तक नही रखने देते कि अब आपकी जरूरत नहीं। डाक्टर अचकचाकर रह जाते है। उन्हें इसकी उम्मीद नहीं थी। पूछते हैं: 'भला यह तो बताओ, मरने से पहले क्या मालिक को हिचकियां आई थी?' 'हां सरकार, आई थी।' 'क्या ज्यादा हिचकियां आई थीं?' 'हां, बहुत।' 'ओह ठीक, यह अच्छा लक्षण है।' और वह नौ दो ग्यारह हो गए। हा-हा-हा!"

वृद्ध अकेले ही हंस रहे थे। आरकादी मुसकराहट में बल खाकर रह गया। बज़ारोव केवल अपने पाइप से कश खींचता रहा। इस प्रकार क़रीब एक घंटे तक बातचीत चलती रही। आरकादी इस बीच अपने कमरे में चला गया जो कि असल में ग़ुसलखाने का ही एक प्रकोष्ठ

था, लेकिन यों साफ़-सुथरा और आरामदेह था। आख़िर तान्या ने आकर सूचित किया कि भोजन तैयार है।

वसीली इवानिच सबसे पहले उठे।

"चलिए, महानुभावो! इतनी देर तक आप लोगों को उबाने के लिए मै तहे दिल से माफी चाहता हूं। शायद हमारी मेजबान इसकी कसर पूरी कर दे।"

बावजूद उसके कि जल्दी मे तैयार किया गया था, फिर भी भोजन बढिया था, बल्कि कहिए कि ठाठदार था, एक मदिरा को छोड़कर—जो कुछ जमी नही। अपनी जान-पहचान के किसी दलाल से तिमोफ़ेइच यह शेरी ख़रीद लाया था। रंग उसका क़रीब क़रीब काला पड़ गया था और इसके ज़ायके मे ताम्बे ऐसा कसैलापन था, या कहिए कि बिरोजे ऐसा। और मक्खियां भी बड़ी बेहूदा मालूम होती थी। साधारणतया एक भूदास छोकरा बड़ी-सी हरी टहनी से इन मक्खियो को उड़ाता रहता था। लेकिन वसीली इवानिच ने आज इस डर से उसे छुट्टी दे दी थी कि कही उन्हें नयी पीढ़ी की मलामत का निशाना न बनना पड़े। अरीना [illegible] इस बीच खूब लक़दक़ बन गई थी। सिर पर वह रेशमी डोरियां बंधी ऊंची घरेलू टोपी पहने थी, और कंधों पर आसमानी रंग का शाल डाले थी जो खूब बेल-बूटों से सजा था। अपने प्यारे येवगेनी को देखकर एक बार फिर उसकी आंखों में आंसू तिर आए, लेकिन इससे पहले कि पति उसे झिड़कने का मौक़ा पाता, उसने जल्दी से अपने आंसुओं को पोंछ लिया। इसलिए और भी कि कही उसका शाल गीला न हो जाए। दोनों युवकों ने अकेले ही खाया, कारण कि मेजबान बहुत पहले ही भोजन कर चुके थे। फ़ेदिया ने परसने का काम किया। नाप से बड़े उसके जूते, प्रत्यक्षतः, उससे संभाले नहीं संभल रहे

थे। मदद के लिए अनफ़ीसुश्का नाम की एक स्त्री उसका हाथ बंटा रही थी। वह एक आख की कानी थी और चेहरा-मोहरा मर्दो-जैसा था। घर का काम-काज, मुर्गियों की देख-भाल और कपड़े धोना—एक साथ सभी काम वह करती थी। भोजन के समूचे दौरान मे वसीली इवानिच कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर टहलते रहे। उनके चेहरे पर असाधारण, करीब करीब नैसर्गिक, उल्लास झलक रहा था और वह नैपोलियन की नीति तथा इटालियनों के उत्पात को लेकर गहरी आशंकाएं प्रकट कर रहे थे। अरीना व्लासियेवना आरकादी की ओर से बेखबर थी, और उसकी खातिर-तवाजो की ओर भी उसका ध्यान नही गया। वह तो बस अपने गोल-मटोल चेहरे को अपने हाथों पर टेके, अपने बेटे पर ही नजर जमाए रही और रह रहकर ठंडी उसासे छोडती रही। गदराए हुए लाल चेरी जैसे उसके होठों तथा गाल और भौहो के ऊपर पड़े तिलो ने उसकी मुखमुद्रा को बहुत ही भला—सुहावना—बना दिया। उसकी जान यह जानने के लिए छटपटा रही थी कि वह कितने दिन टिकेगा, लेकिन उससे पूछते डरती थी। "अगर वह कह बैठा कि दो दिन, तब क्या होगा?" इसी सोच मे उसका दिल बैठा जा रहा था।

भुने मांस के दौर के बाद वसीली इवानिच कुछ क्षणों के लिए वहां से ओझल हो गए और हाथों मे शैम्पेन की खुली हुई आधी बोतल लेकर लौटे।

"यह देखिए," उन्होंने छलछलाकर कहा, "भले ही हम निपट देहात में रहते हों, लेकिन खुशी के मौक़ो पर दिल को गरमाने का साज़-सामान यहां भी मौजूद है!"

उन्होंने तीन बड़े गिलासों और एक छोटे गिलास में मदिरा उंडेली, अपने 'अनमोल मेहमानों' के स्वास्थ्य की कामना की और फौजी अन्दाज से, एक ही घूट में, अपना गिलास खाली कर दिया। और अरीना

व्लासियेवना के गले में भी, गिलास की आखिरी बूंद तक, उंडेलकर ही उन्होंने दम लिया।

फिर मुरब्बो की बारी आई। आरकादी को मीठी चीजें नही भाती थी, लेकिन लिहाज में आकर उसे चार तरह की ताज़ा तैयार की गई 'नफ़ासतो' को गले के नीचे उतारना पड़ा, ख़ासतौर से इसलिए कि बजारोव ने उन्हे छूने से इन्कार कर दिया था और चुरुट सुलगाकर कश खीचना शुरू कर दिया था। इसके बाद क्रीम, मक्खन और केकों के साथ चाय का नम्बर आया। अन्त मे, संध्या का आनन्द लेने के लिए, वसीली इवानिच ने सबको बगीचे मे चलने का निमंत्रण दिया। एक बैंच के पास से गुजरते समय उन्होंने आरकादी से फुसफुसाकर कहा, "यही वह जगह है जहां बैठकर मै छिपते हुए सूरज को देखा करता हूं और थोड़ी-बहुत दार्शनिकता में डूबता-उतराता हूं। एकान्तवासी के लिए यह बहुत ही माकूल धंधा है। और वहा, थोडा आगे, मैंने कुछ पेड़ लगाए है जो होरेस के प्रिय माने जाते है।"

"किस क़िस्म के पेड़?" बजारोव ने पूछा। वह भी उनकी बात सुनता रहा था।

"अरे वही बबूल के पेड़।"

बजारोव जमुहाई लेने लगा।

"मै समझता हूं," वसीली इवानिच ने कहा, "हमारे मुसाफिरों को अब मौरफ़्यूस की गोद में चलना चाहिए।"

"दूसरे शब्दों में यह कि सो जाना चाहिए," बजारोव ने तुरन्त बात को पकड़ा, "अच्छा सुझाव है। सचमुच समय हो गया।"

बजारोव ने, सोने के लिए विदा होने से पहले, अपनी मां का माथा चूमा। मां ने उसे अपने गले से लगाया और उसके पीठ फेरने पर चुपचाप तीन बार क्रास का चिन्ह बनाकर उसे आसीस दी।

वसीली इवानिच आरकादी को छोड़ने उसके कमरे तक उसके साथ गए और कामना प्रकट की, "तुम्हे भी वैसी ही मुबारिक नींद प्राप्त हो जिसका कि मै – उन दिनों जब मै तुम्हारी आयु का था – उपभोग करता था।" और सचमुच, स्नानघर के साथवाले उस कमरे मे आरकादी जैसे घोड़े बेचकर सोया। कमरा पीपरमिण्ट ऐसी भीनी गध से भरा था और तन्दूर के पीछे दो झिल्लिया उनीदी-सी आवाज में झकार रही थी। वसीली इवानिच अपने अध्ययनकक्ष मे लौट आए और वहां, अपने बेटे के पैताने, सोफ़े पर जम गए। स्पष्ट ही उनके मन में बाते करने की इच्छा थी। लेकिन बजारोव ने उन्हे तुरत विदा कर दिया। कहा कि उसकी पलके झपकी जा रही है, हालांकि सच यह था कि वह सोया नही, पौ फटने तक जागता रहा। उसकी आखे बरबट्टा-सी खुली थी, और रोष के साथ वह अंधेरे में ताक रहा था। बचपन की स्मृतियों मे उसके लिए कोई आकर्षण नही था, इसके अलावा हाल के दु:खद अनुभवों-अनुभूतियों से वह अभी तक नहीं उबर सका था। अरीना व्लासियेवना जी भरकर दुआ-प्रार्थना करने के बाद बहुत देर तक अनफ़ीसुश्का से बातें करती रही। अपनी मालकिन के आगे अनफीसुश्का ऐसे खड़ी थी जैसे उसे वही जाम कर दिया गया हो, और अपनी एकमात्र आंख की द्रवीभूत टकटकी द्वारा, रहस्यमय कम्पनों और फुसफुसाहटों के रूप में, येवगेनी वसीलियेविच सम्बन्धी अपने तमाम विचारों और भावनाओ को व्यक्त कर रही थी। एक तो इतनी खुशी, तिस पर मदिरा और सिगार का धुवां – वृद्धा मालकिन का सिर चक्कर खा रहा था। उसके पति ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई नतीजा न निकलते देख हट गए।

अरीना व्लासियेवना पहले ज़माने के रूस के कुलीन वर्ग की महिलाओं की सच्ची यादगार थी। उन्हे दो सौ साल पहले, प्राचीन मास्को के

दिनो में, होना चाहिए था। वह बहुत ही धर्मभीरु और गुणवती थी। दुनिया भर के सगुन-असगुनों, भाग्य-रेखाओं, जन्तर-मन्तरों और सपनों में विश्वास करती थीं। वह ख़ब्ती कठमुल्लों, घरेलू देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों, दिशाशूलों और राह के असगुनों, टोने-टोटकों, जड़ी-बूटियों, खैरात के लिए शुभ बृहस्पति के लिए मंत्र-पढ़े नमक और जल्दी ही दुनिया में प्रलय होने में विश्वास करती थी। वह विश्वास करती थीं कि ईस्टर के इतवार के दिन संध्या-प्रार्थना के समय अगर बत्तियां गुल न हों तो समझ लो कि जई की भरपूर फसल होगी, और यह कि लोगों की नज़र लगने पर कुकरमुत्ते का बढ़ना बंद हो जाता है। वह विश्वास करती थीं कि शैतान पनीली जगहों में रहता है और यह कि हर यहूदी की छाती पर ख़ून का धब्बा होता है। चूहों, घास के सांपों, मेंढकों, गौरैयों, जोंकों, बिजली, ठंडे पानी, हवा के झोंकों, घोड़ों, बकरियों, लाल बालवाले लोगों, और काली बिल्लियों से वह डरती थी और झिल्लियों-झींगुरों तथा कुत्तों को नापाक समझती थी। न वह बछड़े का मांस खाती थीं, न कबूतर, न केकड़ा, न पनीर, न आर्टीचोक, न ऐस्पैरेजस, न ख़रगोश, न तरबूज़। यह इसलिए कि कटा तरबूज़ देखकर उन्हें बैपतिस्ती जौन के सिर की याद हो आती थी। और घोंघों के नाम से तो उन्हें झुरझुरी-सी चढ़ जाती थी। यों अच्छा खाने की वह शौक़ीन थीं—और लैण्ट के व्रत-उपवासों का सख़्ती से पालन करती थीं। वह प्रतिदिन दस घंटे सोती थी और अगर वसीली इवानिच के सिर में कभी दर्द होता था तो रात रात भर पलक नहीं झपकाती थी। 'अलैक्सिस या जंगल का झोंपड़ा' के सिवा उन्होंने और कुछ नहीं पढ़ा था और साल में एक, या बहुत हुआ तो दो, ख़त लिखती थीं। घर-गिरस्ती संभालने, दवा-दारू करने और अचार-मुरब्बे डालने के सभी गुर उन्हें मालूम थे, हालाकि अपने हाथों से वह कभी कुछ नही करती थीं और

आमतौर से अपनी काया को कष्ट देने के नाम से दूर रहती थी। हृदय की वह बहुत मुलायम थी, और अपने ढंग से बेवकूफ़ भी नही थीं। वह जानती थीं कि दुनिया में एक तो मालिक है जिनका काम हुक्म देना है, दूसरे आम लोग हैं जिनका काम हुक्म की तामील करना है। इसलिए दासत्व और दीनता का प्रदर्शन उनके हृदय को कभी नही कचोटता था। फिर भी अपने मातहतों के प्रति वह रहमदिल और मेहरबान थी, बिना कुछ दिए भिखारी को कभी नहीं लौटाती थी और लोगों पर कभी फ़तवे नहीं कसती थीं, हालांकि कभी कभी इधर-की-उधर लगाने-सुनने में उन्हें आनन्द आता था। जवानी के दिनों में उनका रूप बहुत आकर्षक था। तब वह पियानो पर स-र-ग-म बजाया करती थीं और थोड़ी-बहुत फ़्रेंच बोल लेती थीं। लेकिन मर्ज़ी के ख़िलाफ़ शादी और ऐसे पति के साथ बरसों तक देशाटन के फलस्वरूप उनके शरीर पर चर्बी चढ़ चली और संगीत तथा फ़्रेंच दोनों ही वह भूल गई। अपने बेटे को वह प्यार करती थीं और इतना अधिक उससे डरती थीं कि कुछ कहना नहीं। जागीर का बन्दोबस्त उन्होंने वसीली इवानिच पर छोड़ दिया था, और उसे लेकर अब अपने दिमाग़ को परेशान नही करती थी। जब कभी उनके बूढ़े पति जल्दी ही किए जानेवाले सुधारों और अपनी योजनाओं की चर्चा छेड़ते तो वह केवल त्रस्त-सी कराहती, रूमाल से झिड़ककर उन्हें टालतीं और आशंका से अपनी भौहों को ऊंचा उठा लेतीं। काल्पनिक खतरों का वहम पीछा न छोड़ता, हर घड़ी किसी महान विपत्ति का खटका-सा लगा रहता और किसी भी दु:खद बात का ध्यान आते ही आंखों में आंसू उमड़ने लगते ... ऐसी स्त्रियां अब दिखाई नही देतीं। खुदा जाने, इसपर हमें खुश होना चाहिए अथवा नही।

बिस्तर से उठते ही आरकादी ने खिड़की खोली, और वसीली इवानिच पर सबसे पहले उसकी नज़र पड़ी। बुख़ारी चोगा पहने, पेटी की जगह एक बड़ा-सा रूमाल कसे, बुढ़ऊ बग़ीचे में कुछ खटर-मटर कर रहे थे। अपने युवक मेहमान पर नज़र पड़ते ही फावड़े की टेक लेते हुए चिल्लाए :

"सुबह मुबारक हो, जनाब! कहिए, नीद तो ख़ूब आई न?"

"हां, ख़ूब!" आरकादी ने जवाब दिया।

"ठीक। और यह देखिए, विदेहराज की भांति यहां धरती गोड़ रहा हूं। सोचा, अपनी शलजमों के लिए एक क्यारी ही तैयार कर लूं। जमाना अब कुछ ऐसा आ गया है – और मैं तो कहता हूं कि इसके लिए हमें खुदा का शुक्रगुज़ार होना चाहिए – कि हर आदमी को अपनी रोजी खुद अपने हाथों से कमानी होगी; दूसरों पर भरोसा करने से नहीं चलेगा, आदमी को खुद अपने हाथों से मेहनत करनी होगी। और सो लगता है रूसो ने ठीक ही कहा था। आधे घंटे पहले समझे जनाब, अगर आप मुझे देखते तो मैं बिल्कुल दूसरे ही चोले में नज़र आता। एक किसान स्त्री पेट चलने की शिकायत लेकर आई। यह इसे पेट चलना ही कहती है, हम कहते हैं पेचिश। मैंने उसे – भला कैसे कहना चाहिए मुझे ... मैंने उसे अफीम की सुई दी, और एक अन्य स्त्री का दांत उखाड़ा। मैंने कहा कि ठहरो, ज़रा मसूड़ा सुन्न कर दूं... लेकिन वह भला क्यों मानने लगी। और यह सब मैं gratis * करता हूं – अनमत्योर **। यों, मेरे लिए यह कोई नई चीज़ नहीं। जानते ही हो,

---

* मुफ़्त। (लैटिन) – सं०

** अनमत्योर (फ़्रेंच en amateur) – शौक़िया। – सं०

मैं ठेठ धरती का कीड़ा हूं, homo novus*,—मेरी रगों में कुलीनों का नीला रक्त नही सरसराता, जैसा कि मेरी जीवन-संगिनी की रगों में बहता है... लेकिन तुम यहां छांव में क्यों नही निकल आते? नाश्ते से पहले थोड़ी ताज़ा हवा मिल जाएगी।"

आरकादी बाहर उनके पास आ गया।

"आइए, एक बार फिर स्वागत करता हूं," अपनी चीकट-सी टोपी को छूकर फ़ौजी सलामी देते हुए वसीली इवानिच ने कहा। "मैं जानता हूं, आप ऐश व इशरत के आदी हैं, लेकिन इस दुनिया के बड़े-से-बड़े महान भी झोंपड़ी में समय बिताने में शिकवा नहीं करते।"

"हे भगवान," आरकादी ने क्षोभ प्रकट किया, "इस दुनिया के महानों में कब से मेरी गिनती होने लगी? और न ही मैं ऐश-आराम का आदी हूं।"

"ज़्यादा बातें न बनाओ," वसीली इवानिच ने सुहावनी मुसकान के साथ टाला, "भले ही ज़माने की भाग-दौड़ से मैं अलग पड़ गया होऊं, लेकिन मैंने भी दुनिया की थोड़ी-बहुत धूल छानी है—आम और जामुन में मैं भी कुछ तमीज़ करना जानता हूं। अपने ढंग से थोड़ा-बहुत मनोविज्ञान भी मैं जानता हूं, और सामुद्रिक शास्त्र भी। अगर ऐसा न होता—जिसे कि मै प्रतिभा कहने का साहस करता हूं—तो मैं बहुत पहले ही अण्टा-चित्त हो गया होता। मुझ जैसे मुख़्तसिर-से आदमी को धकियाना कौन बड़ी बात है। और मुझे खुलकर कहने दीजिए कि आपके और अपने बेटे के बीच मित्रता देखकर मेरा हृदय आन्तरिक ख़ुशी से छलछला उठा है। अभी, कुछ ही पहले, मैंने उसे देखा था। सदा की भांति वह तड़के ही उठ खड़ा हुआ—उसकी इस आदत से

---

* नया मानव। (लैटिन)—सं०

शायद आप परिचित होंगे–और देहातों की छानबीन के लिए निकल गया। उत्सुकता माफ़, क्या आप येवगेनी को बहुत दिनों से जानते है?"

"पिछले जाड़ों से।"

"समझा। और क्या मै यह भी पूछ सकता हूं–अरे, आप बैठ क्यों नही जाते–एक पिता के नाते, बिना किसी छिपाव के, क्या मैं यह जान सकता हूं कि मेरे येवगेनी के बारे में आपकी क्या राय है?"

"मेरी समझ में आपके सुपुत्र जैसा उल्लेखनीय व्यक्ति मुश्किल से ही मिलेगा," आरकादी ने संजीदगी से कहा।

वसीली इवानिच की आंखें एकाएक फैलकर बडी हो गईं और गाल हल्की लाली से दमक उठे। फावड़ा हाथ से छूटकर नीचे आ गिरा।

"सो, आपकी समझ में ..." उसने कहना शुरू किया।

"इसमें शक नहीं," आरकादी कहता गया, "कि आपका पुत्र भाग्य का बड़ा धनी है। उसी क्षण जब पहले-पहल हम मिले, यह बात मेरे मन में समा गई।"

"क्यों ... कैसे हुआ यह?" वसीली इवानिच हांफते-से हकला उठे। उनका चौड़ा मुंह आनन्द से उच्छ्वसित मुसकान में फैल गया और वैसे ही फैला रहा।

"सो आप जानना चाहते है कि हम कैसे मिले?"

"हां ... और मोटे तौर से यह ..."

आरकादी ने और भी अधिक हार्दिकता तथा उछाह के साथ बजारोव के बारे में बताना शुरू किया। इस स्मरणीय सांझ को भी जब वह ओदिनत्सोवा के साथ नाचा था, उसने इतनी अधिक हार्दिकता और उछाह का परिचय नही दिया था।

वसीली इवानिच एकटक उसकी बातें सुनते रहे। कभी वह सुड़कते, कभी हथेलियों के बीच रूमाल की गेंद-सी बनाते, कभी खांसते, कभी अपने बालों को उंगलियों से छितराते। आखिर वह अपने को संभाल न सके और आरकादी के ऊपर झुकते हुए उसके कंधे को चूम उठे।

"सच, मै बयान नही कर सकता कि तुमने मेरे हृदय को कितना अधिक खुशी से भर दिया है," दीर्घ मुसकान के साथ उन्होंने कहा। "बस, इतना ही समझ लो कि मैं ... वह मेरे रोम रोम में बसा है। और अपनी बुढ़िया के बारे में मै कुछ नही कहता—कहने की जरूरत भी नहीं, वह है मां—और बस, इसके बाद कुछ और कहने को नहीं रह जाता। लेकिन उसके—अपने लड़के के—सामने मैं अपने भावों को व्यक्त करने का साहस नही जुटा पाता। उसे यह अच्छा नहीं लगता। प्रेम के प्रदर्शन से—चाहे जिस रूप में भी वह हो—वह भन्ना उठता है। उसका यह रूखापन बहुतों को अखरता है। वे इसे दम्भ या भावशून्यता की निशानी समझते हैं। लेकिन उस जैसे व्यक्तियों को साधारण नियमों की कसौटी पर नही कसना चाहिए। क्यों, क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता? अच्छा, मिसाल के लिए यह देखो। उसकी जगह अगर और कोई होता तो वह अपने मां-बाप के गले में चक्की का पाट बनकर लटका रहता। लेकिन वह है कि उसने—तुम चाहे विश्वास करो या न करो—हमसे एक फूटी कौड़ी भी कभी फाज़िल नही ली—नहीं, कसम खाने के लिए भी नही!"

"वह ईमानदार और बेग़रज़ आदमी है," आरकादी ने राय दी।

"बेग़रज़—ठीक यही। और जहां तक मेरी बात है, सो आरकादी निकोलायेविच, मै उसपर केवल न्योछावर ही नहीं हूं, बल्कि गर्व भी करता हूं, और मेरी एकमात्र आकांक्षा यह है कि किसी

दिन उसकी जीवनी में मुझे निम्न शब्द अंकित देखने का अवसर प्राप्त हो: 'एक मामूली फ़ौजी सरजन का पुत्र जिन्होंने, इस सबके बावजूद, छोटी उम्र में ही अपने पुत्र में निहित महान सम्भावनाओं को पहचाना और उसकी शिक्षा-दीक्षा के मामले में कोई कसर न उठा रखी...'" वृद्ध की आवाज़ रुंध गई।

आरकादी ने उनका हाथ दबाया।

"क्या ख़याल है तुम्हारा," कुछ देर तक मौन रहने के बाद वसीली इवानिच ने फिर पूछा, "जिस शोहरत की तुम बात कर रहे हो, उसे क्या वह डाक्टरी से भिन्न किसी अन्य क्षेत्र में प्राप्त करेगा, क्यों, यही न?"

"निश्चय ही डाक्टरी के क्षेत्र में नहीं, हालांकि इस क्षेत्र में भी वह एक उल्लेखनीय विभूति सिद्ध होगा।"

"तो फिर, आरकादी निकोलायेविच, तुम्हारे ख़याल से वह कौन-सा क्षेत्र होगा?"

"अभी यह कहना कठिन है, लेकिन वह प्रसिद्ध होगा।"

"वह प्रसिद्ध होगा!" वृद्ध ने प्रतिध्वनि की और विचारों में खो गया।

तभी एक बहुत बड़ी रकाबी में पकी हुई रसभरियां लिए उधर से गुज़रते हुए अनफ़ीसुश्का ने सूचना दी:

"अरीना व्लासियेवना नाश्ते के लिए आपको बुला रही हैं।"

वसीली इवानिच जैसे सोते से जागे।

"तो क्या ठंडी की गई मलाई के साथ रसभरियों का रंग जमेगा?"

"हां, मालिक।"

"तो देखना, मलाई एक दम ठंडी हो। और आरकादी,

तकल्लुफ से काम नही चलेगा। ज़रा फुर्ती से हाथ चलाना। लेकिन येव्गेनी इतनी देर कहा अटक गया?"

"मैं यहां हूं," आरकादी के कमरे से बजारोव ने आवाज़ दी।

वसीली इवानिच तेज़ी से घूम गए।

"अहा, सोचा कि चलो दोस्त का भी हाल-चाल पूछ आएं। लेकिन तुम पिछड़ गए, amice*,—और यहां हम बहुत देर से बतिया रहे हैं। अब नाश्ते के लिए चलना चाहिए। हां, याद आया, तुमसे कुछ बातें करनी हैं।"

"किस बारे में?"

"यहां एक दहकान है जो इक्टेरस से परेशान है..."

"यानी पीलिया से?"

"हां, बहुत ही पुराने और सरकश इक्टेरस से। मैंने उसके लिए सैन्तौरी और सन्तजौन बूटी तजवीज़ की है, गाजर खाने के लिए उससे कहा है और उसे सोडा दिया है। लेकिन ये सब तो थोड़ा संभालने की चीजें हैं। कोई और उग्र उपाय काम में लाना होगा। हालांकि तुम चिकित्सा-विज्ञान का मज़ाक़ उड़ाते हो, फिर भी यह तय है कि तुम कोई माक़ूल सलाह दे सकते हो। लेकिन इसपर बाद में बातें करेंगे। अभी तो चलो, नाश्ता कर लिया जाए।"

वसीली इवानिच फुर्ती से उठ खड़े हुए और 'राबेर ले दि आबल' के गीत का एक रंगीन टुकड़ा गा उठे:

"मदिरा की प्यालियां,
मद-भरी अठखेलियां..."

---

*दोस्त। (लैटिन) —सं०

"अद्भुत! कितनी जिन्दादिली है इनमें!" खिड़की से हटते हुए बजारोव के मुंह से निकला।

दोपहर का समय था। सफ़ेद बादलों के झीने आवरण मे से सूरज झांक रहा था। हर चीज़ पर एक स्थिरता छाई हुई थी। केवल गांव के मुर्ग़े भारी उछाह से बांग दे रहे थे और हृदय में एक अजीब बेचैनी तथा अलसाहट का संचार कर रहे थे। कभी कभी, कहीं ऊंचे पेड़ों की चोटियों से, बाज़ के बच्चे की अनवरत चीची विलाप-ध्वनि की भांति मालूम होती थी। आरकादी और बज़ारोव घास की एक छोटी-सी गंजी की छांव में लेटे थे। बदन के नीचे उन्होंने एक या दो कौली भर घास बिछा ली थी जो भुरभुरी हो जाने पर भी अभी हरी और सुगंधित थी।

"वह जो आस्पन का पेड़ है न," बज़ारोव ने कहना शुरू किया, "उसे देखकर मुझे अपने बचपन की याद आ जाती है। वह एक गढ़े के किनारे खड़ा है जहां पहले ईंटों की खत्ती थी। उन दिनो मुझे पक्का विश्वास था कि यह पेड़ और खत्ती दोनों में कोई ख़ास जादू है। उनके पास जाता तो मेरा जी कभी न अघाता। तब मैं नहीं जानता था कि मेरे न अघाने का कारण केवल यह था कि मैं बच्चा था। और अब जबकि मैं बड़ा हो गया हूं, वह जादू भी छूमन्तर हो गया है।"

"कुल मिलाकर यहां तुम कितने दिन रहे होगे?" आरकादी ने पूछा।

"लगातार दो साल तक। उसके बाद कभी कभी ही यहां आना होता। चलता-फिरता जीवन बिताया है हम लोगों ने। आज इस शहर में हैं तो कल उसमें। ज़्यादातर इसी तरह भटकते रहे।"

"और क्या यह मकान बहुत पुराना बना है?"

"हां, बहुत पहले का। मेरे नाना के समय में बना था।"

"तुम्हारे नाना कौन थे?"

"शैतान ही जाने। सुना है कि ऐसे ही कोई सेकंड-मेजर थे। सुवोरोव के मातहत रह चुके थे और आल्पस पर्वत के कूच की कहानियां सुनाया करते थे। एकदम मनगढ़न्त, उसमें शक नहीं।"

"इसी लिए बराण्डे में सुवोरोव की तस्वीर लगी है। जो हो, तुम्हारा घर है अच्छा—पुराना और आरामदेह। ऐसे छोटे छोटे घर मुझे पसन्द हैं। अपनी एक खास गंध से महकते।"

"दिये के तेल और मेलीलोट की गंध से," बज़ारोव ने जमुहाई लेते हुए कहा, "और इन प्यारे छोटे घरों में भिनकती मक्खियों का जहां तक सम्बन्ध है... बस, खुदा ही बचाए!"

"ज़रा इधर सुनो," कुछ रुककर आरकादी ने पूछा, "यह बताओ, बचपन में तुम्हें दाबकर तो नहीं रखा जाता था?"

"मेरे मां-बाप किस कैंडे के हैं, तुम देख ही रहे हो। उन्हें सख्त नहीं कहा जा सकता, क्यों?"

"क्या तुम उन्हें प्यार करते हो, येवगेनी?"

"करता हूं, आरकादी!"

"ओह, तुम उन्हें कितने प्यारे हो!"

बज़ारोव चुप रहा।

फिर, कुछ ही देर बाद, अपने हाथों को सिर के पीछे बांधते हुए बोला:

"क्या तुम जानते हो कि मैं क्या सोच रहा हूं?"

"नहीं। क्या सोच रहे हो?"

"सोच रहा हूं: कितना अच्छा जीवन बिता रहे हैं ये लोग इस दुनिया में। मेरे पिता साठ वर्ष के हो गए हैं, फिर भी कुछ न कुछ खटर-पटर करते रहते हैं, कष्ट हल्का करनेवाली दवाइयों की बातें करते

है, रोगी लोगों का इलाज करते हैं, किसानों के प्रति उदारता से पेश आते हैं — मोटे तौर से यह कि अपने जीवन को भरा-पूरा बनाए है। और मां — वह भी सुखी है। दुनिया भर के काम और ओह-आह करते उनका दिन बीतता है — इस हद तक कि विराम लेने और दिमागी उधेड़बुन में डूबने की नौबत ही नहीं आती। एक मैं हूं कि ..."

"तुम्हें क्या हुआ, क्यो?"

"मैं सोचता हूं: एक मैं हूं कि यहां घास की गंजी की छांव में पसरा हूं... बित्ता भर यह जगह जिसे मैं घेरे हूं, उस बाक़ी जगह के मुक़ाबिले कितनी नगण्य और कितनी तुच्छातितुच्छ है जहां मैं नहीं हूं और जहां किसी को रत्ती भर भी मेरी पर्वाह नही है। और मेरे जीवन की यह नगण्य अवधि, काल के उस चिरन्तन विस्तार के मुक़ाबिले कुछ भी नही है, जिसमें मेरा कोई अस्तित्व नहीं रहा और न ही रह सकेगा... फिर भी इस परमाणु में, अंकगणित के इस शून्य में, रक्त दौड़ता है, मस्तिष्क काम करता है, उमंगें लपलपाती है... ओह, कितना विकट — और कितना बेहूदा है यह!"

"लेकिन सुनो, तुम्हारी यह बात अकेले तुम्हीं पर नही बल्कि समान रूप से सभी पर लागू होती है..."

"ठीक, तुम ठीक कहते हो," बज़ारोव बीच में ही बोला। "मैं जो कहना चाहता था वह यह कि क्या बात है जो फिर भी वे — यानी मेरे माता-पिता — हर घड़ी जुटे रहते हैं और अपनी नगण्यता को लेकर कभी परेशान नहीं होते — यह उनके हृदय को नहीं कुरेदती... जबकि मैं... मै भन्ना जाता हूं, बुरी तरह विक्षुब्ध हो उठता हूं।"

"विक्षुब्ध क्यों? विक्षुब्ध क्यों हो उठते हो?"

"क्यों? तुम पूछते हो कि क्यों? क्या तुम भूल गए?"

"भूला मैं कुछ नहीं हूं, लेकिन फिर भी मै नही समझता कि तुम्हें विक्षुब्ध होने का कोई अधिकार है। माना कि तुम दुःखी हो, लेकिन ..."

"ओह, अब समझा, आरकादी। प्रेम के बारे में तुम्हारी धारणा भी वैसी ही है जैसी कि अन्य सभी आधुनिक युवा लोगों की: पुच, पुच, पुच, मेरी नन्ही मुर्ग़ी, और जैसे ही नन्ही मुर्ग़ी ने तुम्हारी पुचकार से खिंचना शुरू किया कि तुम दुम दबाकर भाग निकले। मैं उस क़िस्म का नही हूं। लेकिन छोड़ो। मजबूरी की क्षतिपूर्ति बातों से नही की जा सकती!"

उसने बग़ल के बल करवट ली। फिर बोला:

"ख़ूब! यह देखो, इस नन्ही-सी तगड़ी चीटी को देखो, किस तरह एक अध-मरी मक्खी को खीचे लिए जा रही है। खीचे जा, मेरी नन्ही चीटी, खींचे जा। पर्वाह न कर उसके छटपटाने और हाथ-पांव मारने की। अपने अधिकार का जमकर प्रयोग कर जो जानवर होने के नाते तुझे मिला है। हम जैसे आत्म-खण्डित लोगों की भांति दया-माया की भावनाओं के चक्कर में पड़ना तेरा काम नहीं!"

"कम से कम तुम्हारे मुंह से ऐसी बात नहीं निकलनी चाहिए, येवगेनी! आख़िर तुम कब से आत्म-खण्डित हो गए?"

बजारोव ने अपना सिर उठाया।

"यही तो एक गनीमत है जिसपर मैं गर्व कर सकता हूं। मैंने कभी अपने को नहीं टूटने दिया, और पेटीकोटों की दुनिया में इतनी बिसात नहीं जो कभी मुझे तोड़ सके। आमीन! हवा का एक झोंका था जो आया और चला गया। बस, बात ख़त्म। अब उसके बारे में एक शब्द भी कभी मेरे मुह से नही निकलेगा!"

कुछ देर तो दोनों चुप पड़े रहे।

"हां," बज़ारोव ने कहना शुरू किया। "आदमी भी एक अजीब जन्तु है। दूर से जब हम अपने बड़ों के इस जीवन पर नज़र डालते हैं तो मुग्ध रह जाना पड़ता है—लगता है कि बस, अब और कुछ नही चाहिए। खाओ, पियो और समझो कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह सही और तर्क-संगत है। लेकिन नही, एक तरह की बेचैनी—जलन—धर दबोचती है। जी करता है कि लोगों को झंझोड़ डालें—हां, उन्हें झंझोड़ डालें, और भी कुछ नही तो उन्हें झिड़किया ही सुनाएं!"

"जीवन की कुछ इस ढंग से व्यवस्था होनी चाहिए कि उसका प्रत्येक क्षण अपनी सार्थकता व्यक्त करे," आरकादी ने कुछ सोचते हुए कहा।

"बस बस, ठीक यही। सार्थकता—चाहे वह कृत्रिम ही क्यों न हो—मधुर होती है, और आदमी नगण्यता तक को सह लेता है... लेकिन यह ओछी घिसघिस, छोटी छोटी बातों के लिए यह हायतोबा... असल में यही मुसीबत की जड़ है।"

"लेकिन यह ओछी घिसघिस उस आदमी के लिए कोई अस्तित्व नहीं रख सकती जो उसे मानने के लिए ही तैयार न हो।"

"हुं:... इसी को कहते हैं औंधी बूम मारना!"

"ऐं... भला, क्या मतलब है तुम्हारा इससे?"

"केवल यह: मिसाल के लिए अगर कोई कहे कि शिक्षा लाभदायक है तो बूम मारना हुआ, लेकिन अगर कोई कहे कि शिक्षा नुक्सानदेह है तो यह औंधी बूम मारना कहलाएगा। सुनने में भले ही इसमें निरालापन नज़र आए, लेकिन असल में नतीजा इसका भी वही निकलता है जो पहली का।"

"तो फिर सत्य कहां है?"

"कहां है? इसके जवाब में मै भी यही प्रतिध्वनि करूंगा – कहां है ?"

"तुम आज कुछ खिन्न मालूम होते हो, येवगेनी।"

"ऐसा? शायद धूप की वजह से, और फिर इतनी अधिक रसभरियां खाना भी बुरा है।"

"तो अच्छा हो कि थोड़ी झपकी ले ली जाए," आरकादी ने सुझाया।

"मंजूर है। लेकिन मेरी ओर ताकना नही – नीद में सोया आदमी आमतौर से बड़ा मूर्ख मालूम होता है।"

"तो तुम इसकी चिन्ता करते हो – यह कि तुम दूसरों को कैसे मालूम होते हो ?"

"ठीक से नहीं कह सकता। जो वास्तव में आदमी है, उसे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वास्तविक आदमी वह है जिसके बारे में लोग सोचते नहीं, उसकी तामील करते हैं – या फिर उससे घृणा करते हैं।"

"अजीब बात करते हो," कुछ रुककर आरकादी ने कहा, "मै तो किसी से घृणा नहीं करता।"

"लेकिन मैं करता हूं – और ढेर सारी करता हूं। तुम मोम-हृदय और बिना रीढ़ के आदमी हो, तुम किसी से घृणा नहीं कर सकते ... तुम ज़रूरत से ज़्यादा दब्बू हो, काफ़ी आत्मविश्वास का तुममें अभाव है..."

"और तुम ?" आरकादी ने बीच में ही कहा। "तुम तो शायद आत्मविश्वास के अवतार हो? अपने को तुम बहुत ऊंचा समझते हो, क्यों ?"

बज़ारोव ने एकाएक कोई जवाब नही दिया। फिर शब्दो का धीरे धीरे उच्चारण करते हुए बोला :

"जब कोई ऐसा आदमी मेरे सामने आएगा जो मुझसे टक्कर लेकर भी सीधा खड़ा रह सके तो मै अपने बारे में अपनी राय बदल डालूंगा। और घृणा क्यों? मिसाल के लिए आज की ही बात लो, उस समय जब हम अपने अमलदार फ़िलीप की झोंपड़ी के पास से गुज़र रहे थे–कितनी प्यारी सफ़ेद बुर्राक झोंपड़ी है वह–तो वहां तुमने कहा था कि रूस तभी एक आदर्श देश बन सकेगा जब अदना-से-अदना किसान को भी ऐसे ही झोंपड़े में रहना मयस्सर होगा, और यह कि उस दिन को लाने में हम सबको हाथ बंटाना चाहिए... लेकिन तुम्हारे उस अदना-से-अदना किसान से–तुम्हारे उस फ़िलीप और सीदोर तथा बाक़ी अन्य सबसे मुझे नफ़रत है, जिनके लिए मुझसे हाड़-मांस गलाने की आशा की जाती है, बदले में धन्यवाद का एक शब्द तक प्राप्त किए बिना... और उसके इस 'धन्यवाद' का भी मैं क्या अचार डालूगा? अच्छी बात, वह सफ़ेद झोंपड़ी में रहे और मैं अपनी आहुति भी देता रहूं, लेकिन इसके बाद?"

"बस बस, येवगेनी... आज तुम्हारी बातें सुनकर उन लोगों की बात मानने को जी चाहता है जो हमपर सिद्धान्तहीनता का आरोप लगाते है।"

"तुम अपने ताऊजी की वाणी बोल रहे हो। आमतौर से सिद्धान्त-विद्धान्त जैसी कोई चीज़ नही होती–ताज्जुब होता है कि अभी तक तुम इतनी-सी बात भी नही पकड़ पाए, केवल स्पन्दन-संवेदन होते हैं। हर चीज़ उन्ही पर निर्भर करती है।"

"सो कैसे?"

"बिल्कुल सीधी बात है। मिसाल के लिए मुझे ही लो: मेरा

रवैया नकारात्मक है–स्पन्दन की बदौलत। मैं नकारात्मक ढंग पसंद करता हूं, मेरा मस्तिष्क कुछ उसी ढंग का बना है–बस, कुल जमा इतना ही। रसायन-विज्ञान में मेरी क्यों रुचि है? तुम सेब क्यों पसंद करते हो? सब स्पन्दन-संवेदन की बदौलत। सबमें वही एक बात है। गहराई की यह इति है। हर कोई यह खुलकर नही कहेगा। और मैं भी इस तरह फिर कभी तुम्हारी पकड़ में नहीं आऊंगा।"

"तो क्या ईमानदारी भी एक स्पन्दन मात्र है?"

"क़रीब क़रीब।"

"येवगेनी...!" आरकादी ने कुछ त्रास से कहा।

"एह, यह क्या? बात गले में अटक गई, क्यों?" बजारोव बीच में ही बोला। "नही, जनाब। जब हर चीज़ को काटकर अलग फेंकने का निश्चय कर लिया तो फिर बीच में रुकना कैसा? उसे आख़िरी सीमा तक पहुंचाना ही होगा। लेकिन यह मैं दार्शनिकता पर उतर आया। पुश्किन ने कहा है–'प्रकृति देती वरदान नींद की नीरवता का'।"

"पुश्किन ने ऐसी बात कभी नही कही!" आरकादी ने विरोध किया।

"तो इससे क्या? नही कही तो, कवि होने के नाते, वह इसे कह सकते थे और उन्हें कहनी चाहिए थी। लेकिन सुनो, वह फ़ौज में ज़रूर रहे होंगे।"

"नहीं, वह कभी फ़ौज में नही रहे।"

"लेकिन, मेरे प्यारे बचुवा, उसकी रचनाओं के हर पन्ने से यह आवाज़ क्यो आती है–'बढ़े चलो, बढ़े चलो, रूस के गौरव की रक्षा के लिए'!"

"यह क्या बकवास है यह कालिख पोतने से कम नहीं, सच!"

"कालिख पोतना? ऊंह! इस शब्द से तुम मुझे डरा नहीं सकते। लाख कोशिश करने पर भी हम किसी पर उतनी कालिख नही पोत सकते जितनी कि वास्तव में उसपर पोती जानी चाहिए।"

"अच्छा हो कि अब हम सो रहें," आरकादी ने खीझकर कहा।

"बेहद खुशी से," बज़ारोव ने तुरत जवाब दिया।

लेकिन नींद दोनों में से किसी को भी न आई। क़रीब क़रीब अदावत जैसी एक भावना दोनों युवकों के हृदयों में सरसरा गई। पांच मिनट बाद उन्होंने अपनी आंखें खोलीं और बिना कुछ कहे आंखों ही आंखों में एक-दूसरे को परखा।

"अरे देखो," सहसा आरकादी ने कहा। "मेपल वृक्ष का सूखा पत्ता फड़फड़ाता हुआ ज़मीन पर गिर रहा है। इसकी गति तो देखो, बिल्कुल तितली की उड़ान की भांति। है न विचित्र? सूखे पत्ते जैसी एकदम उदास और मुर्दा चीज़ तितली जैसी एकदम प्रफुल्ल और चेतन चीज़ से मिलती-जुलती है।"

"सुनो, मेरे मित्र, आरकादी निकोलायेविच!" बजारोव ने कहा। "एक अर्ज़ है तुम से–यह कविता में बातें करना छोड़ो।"

"जैसा मुझसे बनेगा, वैसे बात करूंगा... अगर सुनना चाहते हो तो सुनो, यह निरी निरंकुशशाही है। अगर कोई विचार सूझता है तो मैं उसे व्यक्त क्यों न करूं?"

"बहुत ठीक। लेकिन मैं भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए उतना ही स्वतंत्र हूं। और मैं समझता हूं कि कविता में बातें करना अशिष्टता है।"

"तो शिष्टता क्या है?" गालियां देना?"

"ओह, देखता हू कि तुमने अपने ताऊजी के पदचिन्हों पर चलने का पक्का इरादा कर लिया है। तुम्हारी बातें सुनकर उस मूढ़ को भारी खुशी होगी।"

"पावेल पेत्रोविच के लिए क्या कहा तुमने?"

"वही जो कहना चाहिए–मूढ़!"

"लेकिन इसे कोई बरदाश्त नही करेगा!"

"ओह, आखिर रक्त बोल उठा," बजारोव ने ठंडे भाव से कहा। "मैंने देखा है कि इसका असर बड़ा सरकश होता है। आदमी हर चीज़ को रद्द कर सकता है, तमाम पूर्वाग्रहों-विश्वासों को छोड़ने के लिए तयार हो सकता है, लेकिन–मिसाल के लिए–यह स्वीकार नही कर सकता कि उसका भाई, जो दूसरों के रूमालों पर हाथ साफ़ करता है, चोर है। यह मानना उसके बूते से बाहर है। भला यह कैसे हो सकता है कि वह जो मेरा भाई है, एकदम मेरा, प्रतिभा का पुंज न हो?"

"सीधी-सच्ची न्याय की भावना से मैंने वह बात कही थी, रक्त के नाते से नही," आरकादी ने चिकोटी-सी काटते हुए जवाब दिया। "लेकिन चूंकि तुम उसे समझ नहीं सकते–संवेदन के अभाव की बदौलत–इसलिए तुम उसके निर्णायक भी नही हो सकते।"

"दूसरे शब्दों में: आरकादी किरसानोव के विचार इतने ऊंचे है कि मैं उनतक पहुंच नहीं सकता,–मैं घुटने झुकाता हूं, और अब एक लफ़्ज़ नहीं बोलूंगा।"

"छोड़ो, येवगेनी। झगड़े के सिवा इस तरह और कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा।"

"लेकिन, आरकादी, मैं कहता हूं कि आओ, एक बार खुल कर झगड़ा कर लिया जाए–पूरी तरह नाखून और दांत पैनाकर, एक-दूसरे को एकदम मटियामेट करने की हद तक।"

"और अन्त में..."

"घूंसेबाज़ी पर उतर आएं, यही न?" बज़ारोव तुरत बोल उठा। "लेकिन इससे क्या? यह घास, देहाती वातावरण की यह स्वप्निल चित्रमयता, दुनिया और लोगों की नज़र से काले कोसों दूर– ख़याल कुछ बुरा नहीं। लेकिन तुम मेरी जोड़ में भला क्या टिकोगे। तुम्हारा टेंटुआ पकड़कर..."

बज़ारोव ने अपनी लौह उंगलियां फैलाईं... आरकादी घूमा और जैसे मज़ाक़ में बचाव का पैतरा उसने धारण कर लिया... लेकिन उसके दोस्त के चेहरे में भयानकता की कुछ ऐसी झलक थी, खीझ और उपेक्षा से बल खाए उसके होंटों और चमकती हुई आंखों में कुत्सा का कुछ ऐसा भाव था कि आरकादी बरबस सहम गया...

उसी क्षण वसीली इवानिच की आवाज़ सुनाई दी:

"ओह, सो तुम लोग यहां छिपे हो!" घर की बनी डक-जाकेट और इसी प्रकार घर की बनी सीकों की टोपी पहने वृद्ध फ़ौजी सर्जन युवकों के सामने आ नमूदार हुए। "तुम्हारी खोज में मैंने एक एक कोना छान डाला... जो हो, जगह तुमने शानदार चुनी है, और तुम्हारा यह शग्ल भी बढ़िया है... धरती पर चित्त लेटकर आकाश की ओर ताकना... जानते हो, इसमें भी एक गूढ़ रहस्य छिपा है।"

"मैं तो तभी आकाश की ओर ताकता हूं जब मुझे छींक लेनी होती है," बज़ारोव भुनभुनाया और फिर आरकादी की ओर मुड़ते हुए दबी आवाज़ में बोला, "इन्हें भी इसी वक़्त टपकना था। सब गड़बड़ कर दिया।"

"शुक्राना भेजो," आरकादी ने फुसफुसाते और चुपके से अपने मित्र का हाथ दबोचते हुए कहा। "कोई भी मित्रता ऐसे थपेड़े खाकर अधिक नहीं टिक सकती।"

"जब मै तुम दोनों युवा मित्रों को देखता हूं," सिर हिलाते और बड़ी चतुराई से लहरिया डाली गई छड़ी के ऊपर अपने दोनों हाथों को टेके–यह छड़ी ख़ुद उनकी कारीगरी का नतीजा थी और उसकी मूंठ तुर्क के सिर के आकार की थी–वसीली इवानिच कह रहे थे, "तो मेरा दिल खिल जाता है। कितनी स्फूर्ति, कितनी योग्यता, और कितनी प्रतिभा के धनी हो तुम, जैसे यौवन का सागर चांद को छूने के लिए उछल रहा हो। एकदम... कैस्टर और पौलक्स* की भांति!"

"ज़रा सुनो तो," बज़ारोव ने कहा, "क्या देव-माला का फुहारा छूट रहा है। कोई भी यह कहने में देर नही करेगा कि अपने ज़माने में आप पक्के लैटिनपंथी रहे होंगे। और मैं समझता हूं, निबंध-रचना में एकाध रजत-पदक भी ज़रूर फटकारा होगा। क्यों, ठीक है न?"

"डिओस्कूर बंधु, डिओस्कूर बंधु!" वसीली इवानिच ने दोहराया।

"बस बस, पिताजी, काफ़ी हो चुका, अब यह कूकना बंद कीजिए।"

"साल में एकाध बार भूले-भटके कूक लेने में कोई हर्ज नहीं," वृद्ध ने बुदबुदाकर कहा। "लेकिन, महानुभावो, मैं आप लोगों की इसलिए तलाश नहीं कर रहा था कि मुझे आपको सलामी बजानी थी। मुझे तो आपको सूचना देनी थी–सर्व प्रथम तो यह कि हमें जल्द ही कलेवा करना है, दूसरे यह कि येवगेनी, मैं तुम्हें पहले से

---

*प्राचीन यूनानी गाथाओं के दो जुड़वां भाई (डिओस्कूर) जो अपनी अटूट मित्रता के लिए प्रसिद्ध थे।–सं०

ही एक बात चेता देना चाहता था... तुम चतुर आदमी हो, लोगों को समझते हो, और स्त्रियों को भी कि वे कैसी होती हैं। सो तुम्हें कुछ सहनशीलता बरतनी चाहिए... तुम्हारे घर आने के उपलक्ष्य में तुम्हारी मा कुछ पूजा-पाठ कराना चाहती थी। यह न समझ बैठना कि मैं तुम्हें पूजा-पाठ में शामिल होने के लिए कह रहा हूं। वह सब तो कभी का हो चुका, लेकिन फादर अलेक्सेई..."

"अच्छा, वह पादरी?"

"अरे... हां वही पादरी... वह कलेवे पर हमारे साथ होंगे... मुझे इसका कुछ पता नही था, और सच पूछो तो मैं इसके ख़िलाफ तक था... फिर भी जाने कैसे यह नौबत आ गई... वह मेरी बात कुछ समझे नहीं... फिर, अरीना व्लासियेवना... यों आदमी वह भला और समझदार है।"

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह मेरे हिस्से का भोजन चटकर जाएं, क्यों?" बज़ारोव ने पूछा

वसीली इवानिच खिलखिला पड़े।

"हद करते हो तुम भी! इसके बाद जाने और क्या कहोगे!"

"तब कोई बात नहीं! मैं किसी के साथ भी भोजन की मेज़ पर बैठ सकता हूं।"

वसीली इवानिच ने अपने सिर की टोपी ठीक की।

"यह तो मुझे पहले से ही यक़ीन था कि तुम सभी पूर्वाग्रहों से ऊपर हो। मुझे देखो, मैं एक बूढ़ा आदमी हूं, बासठवें साल की ओर डग बढ़ा रहा हूं, और मैं भी किसी तरह के पूर्वाग्रहों से वास्ता नहीं रखता।" (वसीली इवानिच को यह स्वीकार करने का साहस नहीं हुआ कि वह ख़ुद भी पूजा-पाठ कराना चाहते थे। धर्म-निष्ठा में वह भी उतने ही बढ़े-चढ़े थे जितनी कि उनकी पत्नी।) "और फिर फादर

अलेक्सेई तुमसे मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक है। देखना, तुम्हें वह ज़रूर पसंद आएंगे। दो-चार हाथ ताश खेलने से भी वह परहेज नही करते, और... किसी से कहना नही ... वह तम्बाकू तक पीते है।"

"ठीक है। भोजन के बाद डमी की चौकड़ी जमेगी। देखना, मै कैसा उन्हें मात करता हूं।"

"ही-ही-ही! सो भी देखेंगे, उस समय जब मुक़ाबिले पर डटोगे। अभी मंजिल दूर है।"

"ओहो, क्या बासी कढ़ी में फिर उबाल आनेवाला है?" एक ख़ास अन्दाज़ में ज़ोर देते हुए बज़ारोव ने कहा।

वसीली इवानिच के गेहुवां चेहरे पर लाली की एक हल्की-सी झलक दौड़ गई।

"शर्म करो, येवगेनी... बीते दिनों को न कुरेदो। लेकिन इन महानुभाव के सामने मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं कि जवानी के दिनों में मुझे इसकी लत थी, हां सचमुच लत थी, मैंने इसका नतीजा भी भुगता। लेकिन आज कुछ गर्मी अधिक है, क्यों? न हो तो मैं तुम्हारे पास ही बैठ जाऊं। तुम्हें कुछ दिक्कत तो न होगी, क्यों?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं," आरकादी ने जवाब दिया।

वसीली इवानिच कांखते हुए से घास पर बैठ गए।

"महानुभावो, आपका यह गुदगुदा आसन," उन्होंने कहना शुरू किया, "मुझे उन फ़ौजी दिनों की याद दिलाता है जब हम खुले में पड़ाव डालते थे। घास की ऐसी ही किसी गंजी के पास हम अपना मरहम-पट्टी का तामझाम जमाते और इसी को बहुत बड़ी गनीमत समझते।" कहते कहते उन्होंने उसांस भरी। फिर बोले—"हां, अपने ज़माने में मुझे जाने क्या क्या देखना पड़ा है। मिसाल के लिए, अगर

सुनना चाहो तो, बेस्सारेबिया में ताऊन की महामारीवाली वह घटना भी कुछ कम अजीब नही है।"

"वही न जिसमें आपको सन्त व्लादिमीर का पदक मिला था?" बज़ारोव ने बीच में ही कहा। "हम उसके बारे में सुन चुके है... लेकिन यह बताइए, आप वह पदक लगाते क्यों नहीं?"

"कहा तो कि मै कोई पूर्वाग्रह नहीं पालता," वसीली इवानिच बुदबुदाए, हालांकि उन्होंने एक ही दिन पहले उस लाल फीते को अपने कोट से उधड़वाया था—और इसके बाद ताऊनवाली घटना सुनानी शुरू कर दी। फिर, बीच में ही, सहसा फुसफुसा उठे—"अरे, ये तो सो गए हज़रत!" और परिहास से पुतलियां चमकाते हुए बज़ारोव की ओर इशारा किया। फिर जोरों से बोले, "येवगेनी, उठो! चलो, भोजन के लिए चलना है..."

फादर अलेक्सेई रोबदार शक्ल-सूरत के आदमी थे। डील-डौल में भी विधाता ने काफी उदारता बरती थी। पट्टेदार बाल बहुत ही सावधानी से संवरे थे और बैंगनी रंग के रेशमी कैस्सोक जामे के ऊपर कामदार पेटी कसी थी। वह बहुत ही काइयां और हाजिरजवाब व्यक्ति सिद्ध हुए। आते ही, तपाक से पहले उन्होंने आरकादी और बजारोव से हाथ मिलाए, जैसे यह पहले से जानते हों कि इन्हें उनके आशीर्वाद की ज़रूरत नहीं है। और, मोटे तौर से, सहजभाव स्वाभाविक बने रहे। उन्होंने अपने चेहरे में शिकन नही आने दी, न औरों को ठेस पहुंचाई। गिरजा-मार्का लैटिन को निशाना बनाकर उड़ाई गई खिल्लियों में उन्होंने रस लिया और अपने बिशप का पक्ष लेकर लड़े। शराब के दो जाम गले में उंडेल गए और जब तीसरा दिया गया तो इन्कार कर दिया। आरकादी ने चुरुट पेश किया तो ले लिया, मगर सुलगाया नहीं, कहा कि इसे घर ले जाऊंगा। केवल एक

ही चीज़ उनमें नागवार नज़र आई – चेहरे पर आ बैठी मक्खियों को दबोचने के लिए धीरे धीरे और अहतियात से हाथ उठाना और उन्हें कचर तक डालना। यह उनकी आदत में शामिल था। चेहरे पर नरमदिली प्रसन्नता छिटकाए वह हरा पाटन बिछी ताश की मेज़ पर बैठे और बजारोव से नोटों की शक्ल में दो रूबल पचास कोपेक जीत कर उठे। अरीना व्लासियेवना के घर में चांदी के सिक्के गिनने का किसी को मुहाविरा नहीं था... मालकिन (वह ताश नहीं खेलती थी) सदा की भांति अपने बेटे की बग़ल में बैठी थीं, चेहरे को अपनी हथेली पर टिकाए। वह तभी हरकत करतीं जब उन्हे किसी नयी चीज के परोसने का आदेश देना होता। बजारोव को दुलराते वह सहमती थीं। खुद बज़ारोव इसके लिए बढ़ावा नहीं देता था, न ही कोई गुंजाइश छोड़ता था। इसके अलावा वसीली इवानिच ने भी उन्हें ताक़ीद कर दी थी कि देखो, उसे ज़्यादा तंग न करना। "नौजवान यह सब पसन्द नहीं करते," उन्होंने ज़ोर देकर कहा था। (उस दिन भोजन में क्या क्या परसा गया, यह सब बताने की ज़रूरत नहीं। ख़ुद तिमोफ़ेइच, एक खास क़िस्म का चेरकासी मांस लाने के लिए, पौ फटते-न-फटते घोड़े पर दौड़ गया था। इससे ठीक विपरीत दिशा में – बामी, टेंगा और बड़ी झींगा लाने के लिए अमलदार लपक गया था। और अकेले कुकुरमुत्तों के लिए किसान स्त्रियों को और भी कुछ नहीं तो बयालीस कोपेक के ताम्बे के सिक्के दिए गए थे।) लेकिन अरीना व्लासियेवना की आंखों में, जो एकटक बज़ारोव के चेहरे पर जमी थीं, केवल न्योछावर होने की भावना और स्नेहसिक्त कोमलता ही नहीं झलक रही थी, बल्कि उनमें उदासी का, साथ ही कुछ जिज्ञासा और भय का – एक तरह के विनम्र उलाहने का – पुट घुला-मिला था।

बज़ारोव का दिमाग़, कहना चाहिए, मां की आंखों की भाषा

पढ़ने मे नही, दूसरी चीजों में उलझा था। बिरले ही वह मां को सम्बोधित करता, और जब करता भी तो संक्षिप्त अन्दाज में। एक बार तो मां का हाथ देखने को मांगा कि इससे 'भाग्य जगता है' या नहीं। मां ने अपना छोटा-सा मुलायम हाथ उसकी कड़ी चौड़ी हथेली में खिसका दिया।

"हां, तो," मां ने कुछ क्षण बाद पूछा, "कैसा रहा?"

"पहले से भी बुरा," व्यंग से मुसकराते हुए उसने जवाब दिया।

"ये लोग आग से खेलते है," अपनी नफ़ीस दाढ़ी को सहलाते हुए फादर अलेक्सेई ने कुछ खिन्न आवाज़ में कहा।

"नैपोलियन की भांति, फादर," इक्का बढ़ाते हुए वसीली इवांनिच ने कहा।

"जिसका अन्त सन्त हेलेना में हुआ," इक्के को तुरुप से काटते हुए फादर अलेक्सेई बुदबुदाए।

"कहो तो थोड़ा सरबेरी का रस मंगा दूं, प्यारे येवगेनी," अरीना व्लासियेवना ने पूछा।

बज़ारोव ने केवल कंधे बिचकाए, कहा कुछ नही।

"नही," अगले ही दिन बज़ारोव आरकादी से कह रहा था, "कल ही मै यहां से गोल हो जाऊंगा। तंग आ गया। मैं काम करना चाहता हूं और यहां कुछ हो नहीं सकता। मै फिर तुम्हारे यहां चलूंगा, मेरा सारा किया-कराया वही पड़ा है। वहां कम से कम कुछ एकान्त तो मिल जाता है—ऐसा कि कोई पास न फटके। यहां पिता तो बार बार भुनभुनाते हैं: 'मेरा अध्ययनकक्ष तुम्हारे लिए हाज़िर है। कोई तुम्हारे पास नहीं फटकेगा,' लेकिन एक क्षण के लिए भी वह वहां से नही खिसकते। और यह भी नहीं हो सकता कि मैं उन्हें बाहर निकालकर दरवाज़ा

बंद कर लूं, उन्हें घुसने ही न दूं। और मेरी मां! दीवार की ओट में से उनकी आहें-कराहें कानों को छेदती हैं, और जब उठकर उनके पास पहुंचता हूं तो समझ में नही आता कि उनसे क्या कहूं।"

"तुम्हें जाता देख वह बुरी तरह परेशान हो उठेंगी," आरकादी ने कहा, "और साथ ही पिता भी।"

"लेकिन उनके पास फिर लौटकर तो आऊंगा।"

"कब?"

"सन्त पीतर्सबर्ग जाने से पहले।"

"मुझे तो ख़ासतौर से तुम्हारी मां के लिए दुःख होता है।"

"सो क्यों? रसभरियां खिलाकर उन्होंने तुम्हारा मन जीत लिया है, क्यों?"

आरकादी ने अपनी आंखें झुका लीं।

"तुम अपनी मां को नही जानते, येवगेनी। वह केवल नेक ही नहीं है बल्कि–सच–बहुत चतुर भी हैं। आज सुबह ही वह मुझसे आध घंटे तक बातें करती रही–बहुत ही रोचक और समझ से भरी बातें।"

"ज़्यादातर मुझे लेकर ही तूमार बांधती रही होंगी, क्यों?"

"नहीं, हमने दूसरी भी बातें कीं।"

"हो सकता है। बाहरी आदमी इन चीजों को शायद ज़्यादा साफ़ तौर से देख और समझ सकता है। कोई स्त्री बिना तार तोड़े आध घंटा तक बात कर सके, यह अच्छा लक्षण है। जो हो, इससे मेरे खिसकने में कोई अन्तर नहीं पड़ता।"

"लेकिन तुम उनसे कहोगे कैसे? उन्हें इसकी खबर देना आसान न होगा। हर घड़ी वे तो यही बतियाते रहते हैं कि इस पखवारे के बाद क्या करेंगे।"

"हां, यह आसान नही होगा। और जाने मेरे दिमाग़ पर क्या शैतान सवार हुआ कि आज सुबह मै अपने पिता को चिढ़ा बैठा। उस दिन उन्होने अपने एक आसामी भू-दास को कोड़े लगाने का हुक्म दिया – और बिल्कुल वाजिब ही हुक्म दिया – हां, बिल्कुल वाजिब! समझे? इस तरह आंखें फाड़कर मेरी ओर न देखो! कारण, वह इतना पक्का पियक्कड़ और चोर है कि कुछ कहना नही। केवल पिता को इसका गुमान तक न था, कि मुझे भी कानोंकान खबर लग जाएगी। सो वह बौखला गए, और इसके बाद जले पर यह नमक ... लेकिन चिन्ता न करो। इसे रोका-संभाला नहीं जा सकता।"

बजारोव ने कहने को तो कह दिया कि चिन्ता न करो, लेकिन वसीली इवानिच को अपने इरादे की सूचना देने के लिए साहस बटोरने में उसे पूरा दिन लग गया। आख़िर रात को, सोने से पहले अध्ययनकक्ष में उनसे विदा लेते समय, जान-बूझकर जमुहाई लेता हुआ अलस अन्दाज़ में बोला:

"और ... हां ... यह बताना तो मैं क़रीब क़रीब भूल ही गया ... क्या आप कल फेदोत की चौकी तक पहुंचने के लिए घोड़े कसवाने की कृपा करेंगे?"

वसीली इवानिच चौके।

"क्या मिस्टर किरसानोव यहां से जा रहे है?"

"हां, और साथ ही मै भी।"

वसीली इवानिच लट्टू की भांति घूम गए।

"क्या तुम जा रहे हो?"

"हां ... मजबूरी है। कृपया घोड़ों का इन्तज़ाम करना न भूलें।"

"बहुत अच्छा ..." वृद्ध का गला रुंध-सा गया, "घोड़े ... अच्छा ... बहुत अच्छा ... लेकिन ... लेकिन ... हुआ क्या?"

"कुछ दिनों के लिए उसके यहां जाना ज़रूरी है। लौटकर फिर यही आऊंगा।"

"हां, कुछ दिनों के लिए ... ठीक," वसीली इवानिच ने अपना रूमाल निकाला और क़रीब क़रीब धरती तक दोहरे होते हुए नाक साफ़ की। "हां तो? ... बस ... इतना ही। मैं सोचता था, तुम अभी ... अभी और रुकोगे ... तीन दिन ... सो भी तीन साल बाद ... कुछ ... कुछ भी तो नहीं, येवगेनी!"

"लेकिन मैंने कहा कि जल्दी ही लौट आऊंगा। जाना ज़रूरी है।"

"ज़रूरी है... अच्छा, ठीक। कर्तव्य पहले, बेशक ... सो तुम चाहते हो, घोड़े भेज दिए जाएं। ठीक। बेशक, हमें इसकी उम्मीद नहीं थी। अरीना ने पड़ौसी से फूलों के लिए कहा था। तुम्हारा कमरा सजाने के लिए।" (वसीली इवानिच ने इस बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया कि रोज़ सुबह की सफ़ेदी के छिटकते ही, नंगे पांवों में फटफटे स्लीपर डाले, किस प्रकार वह तिमोफ़ेइच से बतियाते और बाज़ार से सामान लाने के लिए किस प्रकार, एक के बाद एक, कांपती उंगलियों से चिथड़ा हुए बैंकनोट निकालकर थमाते थे, खाने की उन चीज़ों और लाल मदिरा पर ख़ासतौर से ज़ोर देते हुए जो अन्दाज़ से अधिक इन युवकों को प्रिय थीं।) "आज़ादी से बढ़कर कुछ नहीं ... यह मेरा नेम है ... कभी आड़े न आना ... कभी नहीं ..."

वह अचानक चुप हो गए और दरवाज़े की ओर बढ़े।

"जल्दी ही हम फिर मिलेंगे, पिताजी। सच।"

लेकिन वसीली इवानिच ने बिना सिर मोड़े ही खिन्न भाव से हाथ हिलाया और कमरे से चले गए। अपने सोने के कमरे में जब पहुंचे तो देखा कि उनकी पत्नी सो गई है। इस ख़याल से कि कहीं उसकी नींद न उचट

जाए, फुसफुसाकर उन्होंने अपनी प्रार्थना की। लेकिन फिर भी उसकी नींद उचट ही गई।

"क्या तुम हो, वसीली इवानिच?" उसने पूछा।

"हां, मालकिन।"

"येवगेनी के पास से आ रहे हो न? मुझे लगता है कि उसे कौच पर आराम न मिलता होगा। मैंने अनफ़ीसुश्का से कहा है कि उसे तुम्हारा सफ़री बिछौना और कुछ नये तकिये दे दे। मैं तो उसके लिए अपना परोंवाला गद्दा निकाल देती, लेकिन अगर मैं भूलती नहीं तो वह मुलायम बिछावन पसंद नहीं करता।"

"कोई बात नही, मालकिन, चिन्ता मत करो। वह आराम से है। खुदा हम गुनहगारों पर रहम करे," दबे स्वर में अपनी प्रार्थना को सम्पूर्ण करते हुए उन्होंने कहा। वसीली इवानिच का हृदय अपनी पत्नी के लिए दया से भर गया। सुबह से पहले वह यह नहीं बताना चाहते थे कि कितना बड़ा दुःख उसकी बाट जोह रहा है।

अगले दिन बज़ारोव और आरकादी चल दिए। सुबह से ही समूचे घर पर उदासी छा गई। अनफ़ीसुश्का की उंगलियां चीनी के बरतनों को पकड़ नहीं पा रही थीं—वे बार बार फिसल जाते थे। यहां तक कि फ़ेदिया का चेहरा भी उतर आया था और अन्त में उसनें जूते उतार कर दूर रख दिए। वसीली इवानिच, और भी अधिक फिरकी बने, इधर-से-उधर लपक-झपक रहे थे। साफ़ था कि वह अपने आपको कड़े जी का सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे थे। ज़ोरों से बोलते, इधर-से-उधर पांव पटकते। लेकिन उनके चेहरे पर वीरानगी छाई थी और उनकी आंखें बेटे के चेहरे से कतराती नज़र आती थीं। अरीना व्लासियेवना दबी सिसकियों में रो रही थी। अगर उसके पति ने पूरे दो घंटे तक आज

सुबह उसे ढारस न बंधाया होता तो वह पूरी तरह औसान खो चुकी होती और अपनी भावनाओं को कभी क़ाबू में न रख पाती। जब बज़ारोव ने, बार बार यह वायदा दोहराने के बाद कि महीना बीतते न बीतते वह लौट आएगा, छुड़ाए न छूटनेवाले आलिंगनों से अन्त में अपने आपको मुक्त किया और तरन्तास में जा बैठा, जब घोड़ों ने हरकत करना, घंटियों ने टुनटुनाना और पहियों ने लुढ़कना शुरू किया, जब आंखों को पूरा तानने के बाद भी सड़क पर कुछ दिखाई देना बंद हो गया, उड़ती हुई धूल बैठ गई और तिमोफ़ेइच – क़रीब क़रीब दोहरा हुआ – लड़खड़ाता-सा अपनी खोह में समा गया, जब वृद्ध दम्पति के सिवा उस घर में और कोई न रहा जो अब अचानक इतना सिकुड़ा और खस्ताहाल-सा हो उठा था, तब वसीली इवानिच – जो अभी एक मिनट पहले तक पोर्च की सीढ़ियों पर खड़े बहादुरी के साथ अपना रूमाल हिला रहे थे – कुर्सी में ढह गए और उनका सिर लुढ़ककर छाती से आ लगा। "वह चला गया, मुह मोड़कर चला गया," वह बुदबुदा उठे। "हमसे इतना ऊब गया कि टिक न सका। अब फिर एकाकी – एकदम ए-का-की!" कई बार उन्होंने यह दोहराया, पथराई-सी आंखों से सामने की ओर ताकते और मिन्नत में अपने हाथ को फैलाते हुए। तभी अरीना व्लासियेवना उनके निकट पहुंची, सफ़ेद बालोंवाला अपना सिर उनके सिर के सहारे टिकाया और बोली: "यह तो होना ही था, वास्या। बेटा तो कटी डाल की तरह होता है। एक ऐसा बाज़ जो जब मन चाहा आकाश से उतर आया, और जब मन चाहा उड़ गया। और तुम और मैं पेड़ के ठूंठ पर उगे कुकुरमुत्तों की भांति हैं, उसी एक जगह पर सदा सदा के लिए अग़ल-बग़ल बैठे हुए। केवल मैं तुम्हारे लिए, और तुम मेरे लिए, सदा वहीं के वहीं बने रहेंगे।"

वसीली इवानिच ने चेहरे पर से अपने हाथ हटाए, और अपनी पत्नी को–अपनी उस मित्र को–कुछ इस तरह अपने आलिंगन में गूंथ लिया जैसे कि कभी अपनी यौवनावस्था में भी उसने नहीं गूथा था। शोक के उन क्षणों में उसी ने उसके हृदय को राहत दी।

२२

फ़ेदोत की चौकी तक रास्ते भर हमारे दोनों मित्र अपना मुंह बंद किए रहे, सिवा उस 'हां'–'हूं' के जो जब-तब उनके मुह से निकल जाती थी। बज़ारोव अपने आपसे कुछ ज्यादा ख़ुश नहीं था। और आरकादी का भी कुछ ऐसा ही हाल था। इसके अलावा उसका हृदय एक ऐसी अनबूझ उदासी से दबा जा रहा था जो केवल बहुत ही कमसिन–यौवन से अनजान–लोगों को कुरेदा करती है। कोचवान ने घोड़ों को फिर जोता और अपने कोचबोक्स पर चढ़ते हुए पूछा:

"बाएं कि दाएं, मालिक?"

आरकादी जैसे सोते से जागा। दाहिनी तरफ़वाली सड़क शहर से होती घर की ओर जाती थी, और बाईं तरफ़वाली ओदिनत्सोवा के घर की ओर।

उसने बज़ारोव की ओर देखा।

"येवगेनी," उसने पूछा, "बोलो, अगर बाईं ओर चलना हो तो?"

बज़ारोव ने मुह फेर लिया।

"यह क्या पागलपन है?" वह बुदबुदाया।

"मैं जानता हूं कि यह पागलपन है," आरकादी ने जवाब दिया, "लेकिन नुक्सान भी क्या है? आख़िर पहले-पहल तो जा नही रहे हैं।"

बज़ारोव ने अपनी टोपी खींचकर नीची कर ली।

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," अन्त में उसने कहा।

"बाईं ओर, कोचवान!" आरकादी चिल्लाया।

तरन्तास निकोलस्कोये की ओर धचकोले खाती बढ़ चली। और यह 'पागलपन' करने के बाद दोनों मित्रों ने अपने मुह और भी कसकर—अड़ियल हठ के साथ—बंद कर लिए। लगता था जैसे वे एक-दूसरे से भरे बैठे हों।

ओदिनत्सोवा की ड्योढ़ी पर पहुंचते ही जिस प्रकार भंडारी ने उनका स्वागत किया, उससे हमारे दोनो मित्रों को इस बात का चेत ज़रूर हो गया होगा कि अपनी उस आकस्मिक तरंग में बहकर उन्होंने कोई समझदारी का काम नही किया। स्पष्ट ही उनका आना एक अनहोनी बात थी। दुम दबाए उन्हें काफ़ी देर तक ड्राइंगरूम में एड़ियां खुजलानी पड़ीं। आख़िर ओदिनत्सोवा आई। आदत के अनुसार मिलनसारी के साथ उसने उनका अभिवादन किया, लेकिन उनके इतनी उतावली में लौट आने से वह चकित थी और उसकी मरियल बातों तथा हरकतों से मालूम होता था कि उसे यह सही मानी में अच्छा नही लगा। उन्होंने तुरत बात संभाली, ऐलान किया कि वे शहर जा रहे थे, रास्ते में इधर भी हो लिए, और यह कि चार-पांच घंटे में ही फिर रवाना हो जाएंगे। बेरुखी से उसने केवल एक हल्की-सी ऊंह् की, आरकादी से कहा कि अपने पिता से मेरा यथायोग्य कहना, और अपनी मौसी को बुला भेजा। उनींदी-सी आंखें लिए मौसी आईं जिससे उनका जीर्ण मुखड़ा और भी अधिक झल्लाया हुआ मालूम होता था। कात्या की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, सो वह अपने कमरे से नही उतरी। आरकादी ने अचानक एक बेचैनी का अनुभव किया। उसे लगा कि कात्या को देखने की चाह भी उसके हृदय में उतनी ही प्रबल है जितनी कि अन्ना

सेर्गेयेवना को देखने की। कभी इस ओर कभी उस विषय पर बेसिलसिले की बातों में चार घंटे बीत गए। अन्ना सुनती रही, बोली भी, लेकिन उसका चेहरा मुसकान से बराबर रीता ही रहा। केवल विदा के समय पहलेवाली घनिष्ठता का उसने कुछ परिचय दिया।

"उदासी का दौरा मुझे दबोचे है," उसने ऐलान किया, "मगर आप–और यह मैं दोनों से ही कहती हूं–इसे मन में न लें। कुछ दिन बाद फिर जरूर आएं।"

जवाब में बजारोव और आरकादी दोनों ने चुपचाप गरदन झुकाई, अपनी गाड़ी में सवार हुए और सीधे अपने घर मारिनो की ओर चल दिए। अगले दिन सांझ को वे वहां सही-सलामत पहुंचे। रास्ते भर दोनों में से एक ने भी, और तो और, ओदिनत्सोवा का नाम तक नही लिया। ख़ासतौर से बजारोव ने तो अपना मुह भी शायद मुश्किल से ही खोला हो। भीषण तनाव के साथ वह एक ओर सड़क से कहीं दूर घूरता रहा।

मारिनो में सभी ने ख़ुशी से उनका स्वागत किया। निकोलाई पेत्रोविच अपने लड़के की लम्बी ग़ैरहाजिरी से चिन्तित हो उठे थे। ख़ुशी के मारे वह चहक उठे, हवा में उनके पांव उछले और सोफ़े पर कुदकने लगे जब, आंखों में चमक लिए, फ़ेनिचका दौड़ती हुई आई और 'छोटे मालिकों' के आने की उसने सूचना दी। पावेल पेत्रोविच तक ने मन ही मन ख़ुशी की एक हल्की सरसराहट का अनुभव किया और लौटे हुए घुमक्कड़ों से हाथ मिलाते समय वह दुलार से खिल उठे। फिर सफ़र के वर्णनों और सवालों का दौर चला। ज़्यादातर आरकादी ही बोला, ख़ासतौर से सांझ के खाने-पीने के समय जो आधी रात के बाद भी काफ़ी देर तक चलता रहा। निकोलाई पेत्रोविच ने हाल ही में मास्को से आई पोर्ट की कई बोतलें निकलवाईं और इतना जमकर उनके पीछे पड़े कि उनके गाल लाल दमकने लगे। वह बराबर

हंस रहे थे। उनकी इस हंसी मे एक तरह की बचकाना विह्वलता थी। हंसी-खुशी की इस ग्राम लहर से नौकरों का बासा भी ग्रछूता नहीं रहा। दुन्याशा ग्रापा भूली इधर-से-उधर लपक रही थी। हर बार जब भी वह बाहर जाती, या भीतर ग्राती, दरवाजा फटाक से ग्रावाज करता। उधर प्योत्र, रात के तीन बज जाने पर भी, ग्रपनी धुन में मस्त वाल्ट्ज नृत्य की धुन बजाने के लिए ग्रपने गितार से जूझ रहा था। हवा स्थिर थी ग्रौर गितार के तारों से एक सुहावनी विलाप-ध्वनि की झंकार निकल रही थी। लेकिन वह पढ़ा-लिखा खवास ग्रालाप की नुमाइशी टेर से ग्रागे न बढ़ सका। ग्रन्य कलाग्रों की भांति संगीत की कला से भी प्रकृति ने उसे वंचित कर रखा था।

मारिनो की गाड़ी भी इधर कुछ ढंग से नहीं चल रही थी ग्रौर बेचारे निकोलाई पेत्रोविच के दिन काफ़ी टेढ़े गुजर रहे थे। खेती-बारी की चिन्ताएं—बिल्कुल बेरस ग्रौर बेकार की चिन्ताएं—नाक में दम किए थीं ग्रौर ग्राए दिन बढ़ती ही जाती थी। भाड़े के मजूर ग्रसह्य हो उठे थे। कई थे जो हिसाब साफ करने या तरक्क़ी देने की मांग कर रहे थे, कई पेशगी का पैसा हजम कर चंपत भी हो गए थे। घोड़ों का बुरा हाल था। जोतों की टूट-फूट ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। काम जैसे तैसे किया जा रहा था। मास्को से कूटने की मशीन मंगाई गई। वह इतनी वज़नी थी कि काम की नहीं निकली। ग्रोसाई की मशीन पहली परीक्षा में ही टें बोल गई—ऐसी कि मरम्मत भी न हो सके। मवेशीखाने का ग्राधा भाग जलकर खाक हो गया। यह इसलिए कि नौकरों के बासे की एक ग्रंधी बुढ़िया तेज़ हवा में जलती लुकाठी लिए ग्रपनी गाय को धुग्राने चली थी... ग्रौर सच, पकड़े जाने पर पलटकर बोली कि यह मालिक की एक से एक नयी धुन का—नये

ढंग से पनीर और गोरस की चीज़ें बनाने का – नतीजा है। मैनेजर एकाएक काहिल हो गया था और काहिली की रोटी खाने का चस्का लगे हर रूसी की भांति मोटाता भी जा रहा था। निकोलाई पेत्रोविच पर अगर दूर से भी नज़र पड़ जाती तो अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए पास गुज़रते सूअर पर वह चैली फेंकता या किसी अधनंगे छोकरे को घूसा दिखाता, अन्यथा वह ज़्यादातर ऊंघता रहता। जिन किसानों को काश्त का हक़ दे दिया गया था, वे लगान बाक़ी चढ़ाए थे और मालिक की इमारती लकड़ी चुरा ले जाते थे। शायद ही ऐसी कोई रात बीतती हो जब किसानों के छुट्टा घोड़े फ़ार्म के चरागाह में चरते न पकड़े गए हों और उन्हें कांजीहाउस में न बंद किया गया हो। नाजायज़ पैठ के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने जुरमाना लगा रखा था, लेकिन आमतौर पर होता यही था कि एक या दो दिन तक जागीरी चारा खिलाने के बाद घोड़ों को उनके मालिकों के पास लौटा दिया जाता था। कोढ़ में खाज यह कि किसान आपस में भी एक-दूसरे से लड़ने लगे थे। भाई जायदाद के बंटवारे के लिए लड़ते, उनकी पत्नियां अलग बैर साधतीं, यहां तक कि अचानक मारपीट का हल्ला मचता, पलक झपकते सभी बाहर खिंच आते, दफ़्तर के दरवाज़े पर उनका झुंड जमा हो जाता और न्याय तथा फ़ैसले की मांग करते मालिक के सिर पर सवार हो जाते। कितनों के चेहरे नोचे-खरोचे हुए, और नशे में धुत्त। गुल-गपाड़े और गुहारों का तूफान। स्त्रियों का रोना-किकियाना और पुरुषों का कोसना। इसके सिवा कोई चारा नहीं कि विरोधी पक्षों में बीच-बचाव करने की कोशिश में चिल्लाकर अपना गला बैठा लिया जाए, ख़ूब अच्छी तरह से यह जानते हुए भी कि किसी माकूल नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता। फ़सल काटने के समय मज़दूरों की कमी पड़ गई। फ़रिश्तों जैसी शक्लवाले पड़ोस के एक ताल्लुकेदार ने ठेका किया था

कि वह दो रूबल फ़ी देस्सियातिन के हिसाब से कटाई करनवालो को भेज देगा। लेकिन वह बड़ी बेशर्मी से निकोलाई पेत्रोविच को दगा दे गया। स्थानिक किसान स्त्रियों ने मजूरी के नाम बुरी तरह मुह फैलाए। उधर अनाज था कि बालियों मे ही बिगड़ा जा रहा था, घास की कटाई भी यों ही पड़ी थी और पंच-परिषद रहन के सूद की पूरी और तुरत अदायगी की धमकियो और माग पर उतर आई थी...

"मेरी तो इन्तहा आ पहुची," एक से अधिक बार निकोलाई पेत्रोविच ने निराशा से क्रन्दन किया, "मै खुद उनसे अच्छी तरह निबट नही सकता, और पुलिस अफ़सर को बुलाना मेरे सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ है, तिस पर यह भी एक मानी हुई बात है कि सजा का डर दिखाए बिना कुछ किया नहीं जा सकता।"

"Du calme, du calme*," पावेल पेत्रोविच उन्हे तसल्ली देने का प्रयत्न करते, जबकि वह अपने माथे को सिकोड़ते, मूंछों के बाल खीचते और मन ही मन गुर्राते।

बज़ारोव इन झमेलो से दूर ही रहता। इसके अलावा, मेहमान होने के नाते, इन सब बातों में वह पड़ भी नही सकता था। मारिनो आने के बाद अगले ही दिन से वह अपने मेंढकों, बीजाणु-घोलों और रासायनिक द्रव्यों में जुट गया और अपना अधिकांश समय उन्ही में बिताता। उधर आरकादी ने सोचा कि अपने पिता की मदद करना—या मदद करने की अपनी तत्परता का परिचय देना—उसका कर्तव्य है। पिता की बातों को वह धीरज से सुनता, एकाध बार उसने कुछ सलाह भी दी—इसलिए नहीं कि वह मानी जाए, बल्कि अपनी हमदर्दी जताने के लिए। खेती-बारी के—फ़ार्म चलाने के—काम से वह घिनाता नही था। सच

---

*धीरज से काम लो, धीरज से। (फ़्रेंच)—सं०

तो यह है कि वह खुद भी भविष्य मे उन्हे अपनाने का सपना देखता था, लेकिन इस समय उसका दिमाग अन्य चीजों से उलझा था। निकोलस्कोये का ख़याल – और यह देखकर खुद उसे भी आश्चर्य होता था – उसे बराबर बना रहता था। पहले अगर कोई इस बात की सम्भावना का भी ज़िक्र करता कि वह बजारोव की संगत – और साथ ही अपने पिता की छत्रछाया से भी – ऊब सकता है तो वह महज अपने कंधे बिचकाकर रह जाता। लेकिन अब वह सचमुच ऊब उठा था और उससे पीछा छुड़ाने के लिए छटपटाता था। उसने लम्बी, थका देने-वाली मटरगश्ती का सहारा लिया, लेकिन बेकार। एक दिन, अपने पिता से बातचीत के दौरान में, आरकादी को मालूम हुआ कि उसके पिता के पास कुछ पत्र हैं – सो भी काफ़ी दिलचस्प पत्र – जो ओदिनत्सोवा की मां ने उनकी स्वर्गीय पत्नी को लिखे थे। आरकादी अपने पिता के पीछे पड़ गया और अन्त में उसने पत्रों को लेकर ही छोड़ा। पत्रों की खोज में निकोलाई पेत्रोविच ने बीसियों दराजें और ट्रंक खोल डाले। इन अधगले-से पत्रों को क़ब्ज़े में करने के बाद ऐसा लगा जैसे आरकादी की मुराद पूरी हो गई हो, जैसे उस लक्ष्य की झलक उसे मिल गयी हो जिसे वह पाना चाहता था। "और यह मैं दोनों से ही कहती हूं," वह बार बार अपने आपसे फुसफुसाया। "यह खुद उसने कहा था। गोली मारो सबको, मुझे वहां जाना है, मैं जरूर वहां जाऊंगा।" तभी पिछली मुलाक़ात का चित्र उसकी आंखो के सामने मूर्त्त हो उठा, बेरुखी से भरे उस स्वागत की उसे याद आई, और झिझक तथा भय की भावना ने पहले की भांति फिर उसे घेर लिया। लेकिन जोखिम से खेलने की यौवन-सुलभ वृत्ति ने, अपना भाग्य आज़माने तथा अकेले ही अपनी शक्ति को कसने की निहित ललक ने, अन्त में उसकी झिझक और दुविधा पर विजय प्राप्त की। मारिनो

लौटने के दस दिन के भीतर ही, रविवारी स्कूलों के संगठन का अध्ययन करने के बहाने, उसने शहर का और वहां से फिर निकोलस्कोये का रास्ता पकड़ा। पूरी उत्कंठा के साथ कोचवान को उकसाता वह इस प्रकार अपनी मंज़िल की ओर लपक रहा था जैसे कोई युवा अफ़सर अपने मोर्चे की ओर बढ़ रहा हो। भय और ख़ुशी के भाव एक साथ उसे मथ रहे थे और बेसब्री ने उसके हृदय को झंझोड़ डाला था। "मुख्य बात यह है," वह बार बार अपने से कह रहा था, "कि इसे अपने दिमाग़ में ही न आने दूं।" कोचवान – और इसे सौभाग्य ही कहिए – खिलाड़ी तबीयत का आदमी था। रास्ते में जब भी कोई दारूघर आता, अपने घोड़े की रास रोकता और कहता: "क्या खयाल है, गला तर कर लिया जाय?" लेकिन गला तर करने के बाद वह कोई कसर न छोड़ता, और घोड़े हवा से बातें करने लगते। आख़िर चिर-परिचित घर की ऊंची छत नज़र के सामने उभर आई ... "मुझे भी यह क्या सूझा?" आरकादी के मन में कौधा। "लेकिन अब लौटा भी नही जा सकता।" त्रोइका सड़क की धज्जियां उड़ा रही थी, कोचवान हुंकार और सिसकार रहा था। लकड़ी का वह छोटा-सा पुल आया और टापों की खनखनाहट तथा पहियों की गड़गड़ाहट के साथ गुजर गया और अब राह के दोनों ओर खड़े फ़र-वृक्षों की पांतें तेज़ी से उनकी ओर लपकी आ रही थीं ... गहरी हरियाली के बीच गुलाबी फ़्राक फरफरा उठी और छतरी की हल्की झालर की ओट में से कोई युवा चेहरा झांका ... उसने कात्या को पहचाना, और कात्या भी उसे पहचानने में पीछे न रही। आरकादी ने दौड़ते घोड़ों की रास खींचने के लिए कोचवान से कहा, छलांग मार कर गाडी से बाहर आ गया और उसकी ओर बढ़ चला।

"अरे तुम हो!" वह बुदबुदाई और उसके गाल धीरे धीरे लाली

मे रंग चले। "चलिए, बहिन के पास चलें। वह भी यही बाग मे है। आपको देखकर खुश होंगी।"

कात्या आरकादी को बाग़ में ले चली। आरकादी को उसका यह मिलन अद्भुत रूप में शुभ लक्षण मालूम हुआ। उसे उतनी ही खुशी हुई जितनी कि अपनी निकटतम, और प्रियतम, वस्तु को देखकर होती है। इससे ज़्यादा अच्छा और क्या हो सकता था—न भंडारी, न ख़बर करवाने का झमेला। रास्ते के एक मोड़ पर अन्ना सेर्गेयेवना की झलक दिखाई दी। वह उसकी ओर पीठ किए खड़ी थी। पांवों की आहट सुन धीरे धीरे मुड़ी।

आरकादी के हृदय में बेचैनी ने फिर सिर उठाना शुरू किया। लेकिन उसके मुह से निकले पहले शब्दों ने ही उसे आश्वस्त कर दिया।

"ओह, तुम आ गए, भगोड़े-पंछी!" अपने मृदु और सुहावने अन्दाज़ में उसने कहा और मुसकराते तथा सूरज की चौंध और हवा के मारे अपनी आंखों को सिकोड़े आरकादी से मिलने के लिए आगे बढ़ी। "यह तुम्हें कहां मिले, कात्या?"

"आपके लिए मैं एक चीज़ लाया हूं, अन्ना सेर्गेयेवना," आरकादी ने कहना शुरू किया, "ऐसी कि आप सपने में ..."

"बस बस, आप अपने आपको ले आए, इससे अच्छी चीज़ भला और क्या होगी?"

२३

उपहास का पुट मिले खेद के साथ आरकादी को विदा करने और यह जताने के बाद कि उसकी यात्रा के असली मक़सद के बारे में उसे ज़रा भी भ्रम नहीं है, बज़ारोव ने अपने आपको पूर्ण एकान्तवास में

समेट लिया। लगता जैसे उसके ऊपर काम का–व्यस्तता का–भूत सवार हो। पावेल पेत्रोविच के साथ अब वह पहले की भांति न उलझता, ख़ासकर उस समय से जब से कि उन्होंने, उसकी मौजूदगी में, और भी ज्यादा कुलीनत्व का प्रदर्शन शुरू कर दिया था, और अपने मतो को शब्दों के बजाय आवाज़ों से व्यक्त करने लगे थे। केवल एक बार–बालतिक के कुलीनों के अधिकार संबंधी उन दिनों की फ़ैशनेबुल चर्चा को लेकर पावेल पेत्रोविच ने निहिलिस्ट से टकराने का साहस किया, लेकिन उन्होंने अचानक बीच में ही अपने आपको रोक लिया और एकदम सर्द मुद्रा में शाइस्तगी के साथ बोले: "लेकिन छोड़िए, हम दोनों एक-दूसरे को समझ नही सकते–कम से कम मैं, खेद के साथ कहना पड़ता है, आपको नहीं समझ पाता।"

"इसमें भी क्या शक है," बजारोव बोल उठा, "आदमी हर चीज़ समझने की क्षमता तो रखता है–यह कि हवा में कैसे कम्पन होता है और सूरज की सतह पर क्या कुछ हो रहा है, लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आता कि जिस अन्दाज में वह नाक सुड़कता है, उसके अलावा भी और कोई अन्दाज हो सकता है।"

"और शायद आप इसे बहुत ही मज़ेदार जवाब समझते है क्यों?" पावेल पेत्रोविच ने टोका और उठकर चल दिए।

लेकिन यह भी सच है कि कभी कभी वह बजारोव के प्रयोगों को देखने की इच्छा प्रकट करते थे, और एक बार तो किसी बहुत ही बढ़िया इत्र में बसा अपना चेहरा खुर्दबीन तक से अड़ाकर देखा कि किस प्रकार एक पारदर्शी बीजाणु एक हरे-से धब्बे को बड़ी तेजी से निगल और कंठदेश में स्थित अत्यन्त चपल बारीक कांटे की मदद से उदरस्थ कर रहा है। निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई के मुक़ाबिले अधिक बहुतायत से बज़ारोव के पास पहुंच जाते थे। अगर खेती-बारी में इतने न फंसे

होते तो, उनके ही शब्दों में, कुछ सीखने के लिए वह रोज़ उसके पास जा धमकते। युवक पदार्थशास्त्री को वह ज़रा भी अस्तव्यस्त करने में बाधा नहीं पहुंचाते थे। आमतौर से एक कोने में जम जाते और बस ध्यान से देखा करते। केवल कभी कभी, विरल अवसरों पर ही, समझ-बूझ के साथ सवाल पूछने को तैयार होते। भोजन के समय बातचीत के सिलसिले को वह भौतिक विज्ञान, भूतत्व या रसायन विज्ञान की ओर मोड़ने का प्रयत्न करते। कारण कि अन्य सभी विषय—राजनीति की तो बात ही छोड़िए—खेती-बारी तक ख़तरे से ख़ाली नहीं थे। टक्कर की बात अगर छोड़ भी दें तो उनसे आपसी बदमज़गी तो पैदा हो ही सकती थी। निकोलाई पेत्रोविच भांपते कि बज़ारोव के प्रति उनके भाई की भन्नाहट ज़रा भी कम नही हुई है। और तो और, एक नगण्य-सी घटना ने इस धारणा की पुष्टि कर दी। पड़ौस में हैज़ा फूट पड़ा था और मारिनो के दो निवासी भी उसकी चपेट में आ गए थे। एक रात पावेल पेत्रोविच बुरी तरह बीमार पड़ गए। वह सुबह तक छटपटाते रहे, लेकिन बज़ारोव की दक्षता का मुह नही देखा। अगली सुबह जब बज़ारोव उनसे मिला और उसने पूछा कि उन्होंने उसे क्यों नही बुला भेजा, तो अभी तक पीले पड़े लेकिन ख़ूब चिकने-चुपड़े और हजामत बने चेहरे से बोले · "अगर मैं भूलता नही तो शायद ख़ुद आपने ही यह कहा था कि दवा-दारू में आपका विश्वास नही है ?" इस प्रकार दिन आते और चले जाते। झुझलाहट और जिद्द से भरा बज़ारोव काम में जुटा रहता। लगता जैसे सिवा इसके दुनिया में और कोई रस न हो। लेकिन, उसके प्रति इस उदासीनता के बावजूद, निकोलाई पेत्रोविच के घर में एक ऐसा जीव भी मौजूद था जिसकी संगत में उसे आनन्द मिलता था ... यह जीव था फ़ेनिचका।

फ़ेनिचका से उसकी भेंट अक्सर तडके ही होती—बाग में या अहाते

में। उसके कमरे की ओर वह कभी न जाता। खुद वह भी केवल एक बार उसके दरवाज़े तक गई थी, यह पूछने कि मित्या को नहलाया जा सकता है या नही। केवल यही नहीं कि वह उसपर भरोसा रखती थी और उससे भय नही खाती थी, बल्कि उसकी मौजूदगी में वह अधिक अपनत्व का अनुभव करती थी, निकोलाई पेत्रोविच की संगत से भी ज्यादा सहूलियत के साथ सांस ले सकती थी। ऐसा क्यो था, यह कहना कठिन है। शायद इसका कारण यह था कि अपने भीतरी मन की सहज वृत्ति से उसने जान लिया था कि बजारोव महामहिम कुलीनों के आभिजात्य से अछूता है– उस ऊंचे सिंहासन पर वह स्थित नही है जो मोह और आतंक, दोनों का एक साथ संचार करता है। उसके लिए वह एक बहुत ही बढ़िया डाक्टर और एक सीधा-सादा आदमी भर था। बिना किसी झिझक के उसके सामने वह अपने बच्चे को दूध पिलाती और एक बार जब अचानक सिर चकराने और दुखने लगा तो बज़ारोव के हाथों से उसने एक चम्मच दवा भी पी ली। निकोलाई पेत्रोविच की उपस्थिति में वह बज़ारोव से कुछ कतराती-सी मालूम होती: उन्हें छलने की नीयत से नही, बल्कि इसलिए कि वह उनका लिहाज़ करती थी। पावेल पेत्रोविच से वह अब भी वैसे ही, बल्कि और भी ज़्यादा, डरती थी। इधर कुछ दिनों से वह उसकी चौकसी-सी करने लगे थे। एकदम अचानक, मानो धरती फोड़कर, वह उसके पीछे से प्रकट हो जाते, अपना बेदाग़ सूट पहने, जेबों में अपने हाथ खोसे, और चेहरे को सतर्कता के चौखटे में जड़े। "वह तो सुन्न कर देनेवाले सर्द झोंके की भांति हैं," फ़ेनिचका दुन्याशा से दुःखड़ा रोती। जवाब में वह एक आह भर के रह जाती और एक अन्य 'पाला मारे' आदमी की कल्पना उसके हृदय में उभर आती।

बजारोव, एकदम अनजाने में ही, उसके हृदय का क्रुद्ध आततायी बन गया था।

फ़ेनिचका बजारोव को पसन्द करती थी, और बज़ारोव भी उसे पसंद करता था। फ़ेनिचका से बातें करते समय उसके चेहरे तक में एक परिवर्तन आ जाता—उसके चेहरे पर एक प्रकार की शान्त स्थिरता और क़रीब क़रीब मृदुता का सा भाव छा जाता और बेपर्वाही तथा उपेक्षा से भरा उसका अन्दाज—जो कि उसकी आदत में शामिल था—ख़ुशमिज़ाजी की आभा से रंग जाता। फ़ेनिचका का सौन्दर्य दिन दिन निखर-उभर रहा था। युवती स्त्रियों के जीवन में ऐसा समय आता है जब वे ग्रीष्मकालीन गुलाब की भांति अचानक चटखना और खिलना शुरू कर देती हैं। फ़ेनिचका का वह समय आ गया था। हर चीज़ उसके अनुकूल थी—यहां तक कि जुलाई मास की उमस-भरी गर्मी भी। हल्के सफ़ेद कपड़ों में वह ख़ुद भी अधिक हल्की और अधिक उजली मालूम होती। धूप में तपना उसे न सुहाता और गर्मी ने जिससे बचने का वह निष्फल प्रयास करती, उसके गालों और कानों को एक मृदु आभा से दमका दिया, एक निढाल अलसाहट उसके रोम रोम में सरसरा गई, और उसकी प्यारी आंखों में स्वप्निल मूर्च्छना-सी बनकर तैरने लगी। उससे कुछ भी करते न बनता और उसके हाथ, खोए खोए से, बार बार उसकी गोद में फिसल आते। हिलना-डुलना तक उसे न सुहाता और बेबसी के छोटे छोटे विस्मयकारी उद्‌गार मुह से प्रकट करती।

"तुम्हें और भी अधिक स्नान करना चाहिए," निकोलाई पेत्रोविच उससे अक्सर कहते। अपने तालाबों में से एक के किनारे, जो अभी सूखा नही था, नहाने के लिए उन्होंने कनात लगवा दी।

"ओह निकोलाई पेत्रोविच! तालाब तक पहुंचते न पहुंचते जान-सी निकल जाती है, और वहां से लौटते न लौटते भी आदमी

अधमरा हो जाता है। बाग़ मे कसम खाने भर को भी तो छाव नही है।"

"हां, सो तो है," अपनी भौहों को खुरचते हुए वह जवाब देते, "बाग़ में छांव नही है।"

एक दिन, सुबह के छै बजे से कुछ ही ऊपर, बज़ारोव टहलकर लौट रहा था कि लिलक के कुंज में फ़ेनिचका से भेंट हो गई। लिलक के खिलने के दिन तो कभी के बीत चुके थे, लेकिन घनी और गहरी हरियाली अभी भी छाई थी। सदा की भाति सिर पर रूमाल डाले वह एक बैंच पर बैठी थी। पास ही लाल और सफ़ेद गुलाब के फूलों का ढेर लगा था। फूल अभी भी ओस से भीगे थे। उसने प्रातःकालीन शुभाभिवादन किया।

"ओह, येवगेनी वसीलियेविच!" फ़ेनिचका ने कहा और रूमाल का एक छोर उठाकर उसे देखने के प्रयास में उसकी बांह कोहनी तक उघर गई।

"यहां तुम क्या कर रही हो?" उसके निकट बैठते हुए बज़ारोव ने कहा। "ओह, गुलदस्ता बना रही हो, क्यों?"

"हा, नाश्ते की मेज के लिए। निकोलाई पेत्रोविच को इसका बड़ा चाव है।"

"लेकिन नाश्ते में अभी बहुत देर है। भाई ख़ूब, तुमने तो फूलों का पूरा अम्बार जमा कर लिया!"

"बाद को गरमी हो जाएगी और मुझसे बाहर निकलते नहीं बनेगा, इसलिए अभी चुन लिए। केवल यही समय है जब मैं कुछ खुल-कर सांस ले सकती हूं। गर्मी तो बुरी तरह जान सोख लेती है। जाने मेरी तबीयत को क्या हो गया है।"

"तुम भी क्या सोचती हो! ज़रा अपनी नब्ज़ तो दिखाओ!"

बज़ारोव ने उसका हाथ थामा, समगति से धड़कती नब्ज़ का अनुभव किया और धड़कनों को गिनने तक की चिन्ता न कर उसके हाथ को छोड़ते हुए बोला:

"सौ साल तक जियोगी।"

"ओह, ख़ुदा न करे!"

"क्यों, क्या लम्बी आयु पसंद नही?"

"मगर पूरे सौ साल! दादी पचासी की थी, बस, ज़िन्दा लाश ही समझो। काली, निपट बहरी, कमान की भांति दोहरी और हर घड़ी खों खों।

"तो युवावस्था ही बेहतर है?"

"हां, बेशक!"

"क्यों बेहतर है? बताओ तो।"

"क्या सवाल किया है? अच्छा तो सुनो। अभी मैं जवान हूं, चाहे जो कर सकती हूं, आ सकती हूं, जा सकती हूं, चीज़ों को उठा-धर सकती हूं, काम के लिए किसी का आसरा मुझे नही देखना पड़ता... इससे अच्छा भला और क्या होगा?"

"जवान हूं तो और बूढ़ा हूं तो, मेरे लिए दोनों एक हैं।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि दोनों एक है? यह असम्भव है, तुम जो कह रहे हो।"

"ख़ुद तुम्हीं सोचकर देखो, फ़ेदोसिया निकोलायवना, यह यौवन किस काम का है मेरे लिए? मैं एकदम अकेला रहता हूं–निरीह एकाकी जीव ..."

"यह सब तो ख़ुद तुम्ही पर निर्भर है।"

"ठीक यही तो मुसीबत है–यह कि मुझपर निर्भर नहीं है। काश कि कोई मुझपर तरस खा सकता।"

फेनिचका ने कनखियो से उसकी ओर देखा, लेकिन कहा कुछ नही। फिर अनायास ही पूछा :

"यह कौनसी पुस्तक लिए हो?"

"यह? यह अति ज्ञानवर्द्धक किताब है, भेदों से भरी।"

"और आप हर घडी पढ़ते-सीखते रहते है। क्या जी नही उकताता? लगता है, जानने योग्य एक भी बात आपसे नही बची होगी।"

"स्पष्ट ही ऐसा नही है। यह लो, इसमें से कुछ पढ़ने की कोशिश कर देखो।"

"लेकिन मेरे पल्ले तो कुछ पड़ेगा नही। क्या यह रूसी भाषा में है?" फ़ेनिचका ने पूछा। फिर दोनों हाथो में भारी-भरकम जिल्द बंधी किताब संभालते हुए बोली: "ओह, कितनी मोटी किताब है!"

"हां, रूसी में है।"

"जो हो, मै तो इसे समझ पाऊंगी नही।"

"मेरा मतलब तुम्हारे समझने से थोड़े ही है। मै तो केवल तुम्हें पढ़ते हुए देखना चाहता हूं। जब तुम पढ़ती हो तो तुम्हारी नाक बहुत ही प्यारे ढंग से कुलकुलाती है।"

फेनिचका जिसने 'क्रिओसोत के बारे में' शीर्षक को दबी आवाज़ में एक एक अक्षर करके पढ़ना शुरू कर दिया था, खिलखिलाकर हंस पड़ी और पुस्तक उसके हाथों से छूट गई... बैंच पर से फिसलकर वह धरती पर जा गिरी।

"तुम्हे हंसते हुए देखना भी मुझे अच्छा लगता है," बजारोव न कहा।

"बस बस, रहन दो।"

"जब तुम बोलती हो तो बड़ा सुहाना मालूम होता है—जैसे कोई झरना छलछला रहा हो।"

फेनिचका ने मुह फेर लिया।

"ओह, तो क्या सचमुच!" फूलों से खेलते हुए वह बुदबुदाई। "मेरी बातों में भला तुम्हें क्या मिलेगा? तुम एक से एक समझदार स्त्रियों से बातें कर चुके हो।"

"आह, फेदोसिया निकोलायेवना! मेरा विश्वास करो, दुनिया भर की सारी समझदार स्त्रियां भी तुम्हारी कानी उंगली की बराबरी नही कर सकती!"

"बस बस, तुम्हारी बातों का भी कोई पार नही," अपने हाथों को समेटते हुए फ़ेनिचका फुसफुसाई।

बज़ारोव ने पुस्तक को धरती पर से उठा लिया।

"यह डाक्टरी की किताब है। इसे यों ही नही फेंक देना चाहिए।"

"डाक्टरी की किताब?" फ़ेनिचका प्रतिध्वनि कर उठी और घूमकर उसकी ओर मुह कर लिया। "अरे सुनो तो, जब से तुमने मुझे बूंदे दी—याद है न?—तब से मित्या को बहुत ही बढ़िया नीद आ रही है। कुछ सूझ नही पड़ता कि तुम्हें कैसे धन्यवाद दूं—सच, तुम बहुत सदय हो।"

"सच पूछो तो डाक्टरों को फ़ीस देनी चाहिए," बज़ारोव ने मुसकराते हुए कहा, "डाक्टर लोग, तुम जानती ही हो, पैसों पर गुजर करनेवाले जीव होते हैं।"

फ़ेनिचका ने आंखें उठाकर बजारोव की ओर देखा। उसके चेहरे के ऊपरी हिस्से की पीली आभा की पृष्ठभूमि में उसकी काली आंखें और भी काली हो उठी थी। वह कुछ समझ नही सकी कि बज़ारोव हंसी कर रहा है या संजीदगी से कह रहा है।

"अगर तुम चाहो तो बड़ी खुशी ... मै निकोलाई पेत्रोविच से इसका जिक्र करूंगी ..."

"अरे नही, क्या तुम समझती हो कि मै पैसा चाहता हू," बज़ारोव ने बीच मे ही कहा, "नही, मुझे तुमसे कोई पैसा-वैसा नही चाहिए।"

"तो फिर?" फनिचका न पूछा।

"तो फिर?" बजारोव ने दोहराया। "तुम्ही अन्दाज़ लगा देखो कि मुझ क्या चाहिए।"

"अन्दाज़ लगाने मे मै माहिर नही हूं।"

"तब मै ही बताता हूं .. मैं चाहता हूं–गुलाब के उन फूलो मे से एक।"

फ़ेनिचका फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसके हाथ तक हवा में उछल गए। बज़ारोव की इच्छा उसे बहुत ही मज़ेदार मालूम हुई। वह हंसी ही नही, बल्कि उसने एक गर्व का भी अनुभव किया। बजारोव एकटक उसकी ओर देख रहा था।

"वाह, क्यों नहीं," आख़िर उसने कहा और बैंच पर झुकते हुए फूलों को छेड़न लगी, "कौनसा पसन्द करोगे–लाल या सफ़ेद?"

"लाल, और बहुत बड़ा न हो।"

वह सीधी हो गई।

"यह लीजिए अपना . ." उसने कहा, मगर उसी क्षण अपना हाथ खीच लिया, होंठों को काटते हुए कुज के प्रवेश-द्वार की ओर देखा और कुछ सुनने का प्रयास करने लगी।

"क्या है?" बजारोव ने पूछा। "निकोलाई पेत्रोविच तो नहीं?"

"नहीं . वह तो खेतों पर गए हैं ... उनसे मै नहीं डरती ... मगर पावेल पेत्रोविच .. पल भर में मुझे कुछ ऐसा लगा ..."

"कैसा लगा?"

"मुझे एसा लगा जैसे वह चारों ओर चक्कर लगा रहे है। नही... कोई नहीं है। लो, यह लो।"

फ़ेनिचका ने बज़ारोव को फूल दे दिया।

"तुम पावेल पेत्रोविच से इतना क्यों डरती हो?"

"उनका भय पल-भर को पीछा नही छोड़ता। मुह से वह कुछ नहीं कहते, बस अजीब ढंग से ताकते है। लेकिन खुद तुम भी तो उन्हें पसन्द नही करते। क्या तुम्हें याद है कि किस प्रकार तुम सदा उनसे बहसों में जूझा करते थे? यह तो मै नही जानती कि किस चीज़ को लेकर वे बहसें होती थीं, लेकिन यह मै भी देखती थी कि किस प्रकार कभी तुम उन्हें इधर को मरोड़ते, कभी उधर को ..."

फ़ेनिचका ने अपने हाथों की हरकत से बताया कि किस प्रकार बज़ारोव, उसकी समझ से, पावेल पेत्रोविच को इधर से उधर मरोडता था।

बज़ारोव मुसकराया।

"अगर वह मुझसे मज़बूत पड़ते तो," बजारोव ने पूछा, "तो क्या तुम मेरा पक्ष लेती?"

"तुम्हारा पक्ष मै किस प्रकार ले सकती थी? इसके अलावा, तुमसे भला कौन मज़बूत पड़ सकता है?"

"ऐसा सोचती हो तुम? लेकिन मै एक ऐसे हाथ को जानता हूं जो अगर चाहे तो मुझे अपनी कानी उंगली से पछाड़ सकता है।"

"वह कौनसा हाथ है?"

"अरे, तो क्या तुम इतना भी नही जानतीं? कितनी अच्छी महक है इस फूल में जो तुमने मुझे दिया है। जरा सूंघकर देखो।"

फ़ेनिचका ने अपनी छरहरी गरदन आगे की ओर की और फूल तक अपना चेहरा ले गई . . रूमाल खिसककर उसके कंधों पर आ गया

ग्रौर काले चमकदार बालों की कोमल राशि, थोड़ा ग्रस्तव्यस्त, उघर गई।

"जरा ठहरो, मै भी तुम्हारे साथ इसकी महक लेना चाहता हू," बजारोव बुदबुदाया ग्रौर नीचे झुकते हुए उसके ग्रधखुले होठों पर एक व्यग्र चुम्बन ग्रंकित कर दिया।

वह चौक उठी ग्रौर ग्रपने दोनो हाथो से उसकी छाती को धकेलने का प्रयास करने लगी। लेकिन उसकी बाहो मे शक्ति नही थी ग्रौर बज़ारोव ग्रपने चुम्बन दोहराने ग्रौर सुदीर्घ बनाने में समर्थ हो गया।

तभी, लिलक की झाड़ियों के पीछे से, खखारने की सूखी ग्रावाज़ सुनाई दी। फ़ेनिचका पलक झपकते न झपकते बेंच के परले छोर पर खिसक गई। पावेल पेत्रोविच दरवाजे के सामने से गुज़रे, धीरे से सिर झुकाया ग्रौर एक तरह की वहशियाना उदासी के साथ "ग्रोह, ग्राप यहां हैं!" कहकर ग्रागे बढ़ गए। फ़ेनिचका ने उतावली के साथ फूलों को बटोरा ग्रौर कुज से विदा हो गई ग्रौर दरवाजे से बाहर पांव रखते न रखते बोली:

"तुम्हें शर्म ग्रानी चाहिए, यवगेनी वसीलियेविच!"

उसकी ग्रावाज में सच्चे उलाहने का पुट था।

बज़ारोव की कल्पना में हाल की एक ग्रौर घटना का चित्र मूर्त्त हो उठा ग्रौर उसका हृदय ग्रपराध की भावना तथा ज़िल्लत भरी झुझलाहट से झनझना गया। लेकिन उसने तुरत ग्रपने सिर को झटका, सनदयाफ़्ता सिलादोनों* की पांत में इस प्रकार ग्रपना नाम लिखाने के लिए व्यंग के ग्रन्दाज में ग्रपने ग्रापको बधाई दी, ग्रौर फिर ग्रपने कमरे में चला गया।

---

* सिलादोन—फ़्रांन्सीसी लेखक दू उर्फ़े की पुस्तक 'ग्रास्त्रे' का एक व्यसनी चरित्र।—ग्रनु०

ग्रौर पावेल पेत्रोविच बाग़ से बाहर निकल धीरे धीरे वन की ग्रोर चल दिए। वहां वह काफ़ी देर तक रहे, ग्रौर वहां से जब नाश्ते के समय लौटे तो उनका चेहरा इतनी गहरी छाया से घिरा था कि निकोलाई पेत्रोविच से नही रहा गया ग्रौर व्यग्र भाव से पूछा कि तबीयत तो ठीक है न।

"तुम तो जानते ही हो कभी कभी मुझे पित्त-विकार के दौरे हो ग्राते हैं," पावेल पेत्रोविच ने शान्त भाव से जवाब दिया।

२४

कोई दो घंटे बाद पावेल पेत्रोविच ने बजारोव के कमरे का दरवाज़ा खटखटाया।

"ग्रापके विद्वत्तापूर्ण ग्रध्ययन में बाधा डालने के लिए क्षमा मांगना जरूरी है," खिड़की के पास एक कुर्सी पर ग्रासन जमाते ग्रौर हाथीदांत की मूठवाले ख़ूबसूरत बेंत पर ग्रपने दोनो हाथो को टिकाते हुए (यों बेंत लेकर कही जाने की उन्हें ग्रादत नहीं थी) उन्होंने कहा। "लेकिन मजबूरी है। ग्रापके समय में से पांच मिनट की मोहलत चाहता हूं। केवल पांच ही मिनट, ग्रधिक नहीं।"

"मेरा सारा समय ग्रापके लिए हाजिर है," बज़ारोव ने जवाब दिया जिसके चेहरे पर, पावेल पेत्रोविच के भीतर पांव रखते ही, जाने कैसा एक भाव दौड़ गया था।

"पांच मिनट ही मेरे लिए काफी होंगे। मै बस एक प्रश्न करने के लिए ग्रापके पास ग्राया हूं।"

"प्रश्न? किस बारे में?"

"ग्रच्छा तो कृपा कर सुनें। यहा मेरे भाई के घर में ग्रापके

आगमन के प्रारम्भ में – उन दिनो में जबकि आपसे बातचीत करने के आनन्द से मैंने अपने आपको वंचित नही किया था, अनेक विषयों पर आपके विचार सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन, जहां तक मुझे याद है, न तो हम दोनों के बीच, और न ही मेरी मौजूदगी में, द्वन्द्व-युद्धों का कभी कोई जिक्र हुआ। क्या मै जान सकता हूं कि इस बारे में आपके क्या विचार है?"

बज़ारोव, जो पावेल पेत्रोविच के आने पर उठकर खड़ा हो गया था , मेज़ के छोर पर बठ गया और उसने अपने हाथ दोनों बग़लो में दबा लिए।

"मेरा विचार यह है," उसने कहा, "सिद्धान्त की नज़र से मै इसे बेहूदा समझता हूं, लेकिन व्यवहार की दृष्टि से – वह और बात है।"

"इसका मतलब – अगर मैंने आपको ठीक से समझा है तो – यह कि द्वन्द्व-युद्ध के बारे में आपका सैद्धान्तिक मत चाहे जो भी हो, लेकिन वस्तुतः बिना सन्तुष्ट हुए आप अपने को अपमानित नही होने दे सकते।"

"आपका यह अनुमान बिल्कुल ठीक है।"

"बहुत ठीक, श्रीमान। आपसे यह सुनकर खुझे बड़ी ख़ुशी हुई। आपके इस बयान ने मुझे अस्थिरता से मुक्त कर दिया .. "

"अनिश्चितता से, यही न?"

"एक ही बात है। मेरे भाव समझ में आ जाएं, इसी लिए मै अपने को व्यक्त करता हूं। मैं गुरुकुल का चूहा नही हूं। तुम्हारे बयान नें मुझे एक खेदजनक अनिवार्यता की दुविधा से मुक्त कर दिया। मैंने आपके साथ द्वन्द्व-युद्ध करने का निश्चय किया है।"

बज़ारोव चौंका।

"मेरे साथ?"

"हां, बिल्कुल आपके ही साथ।"

"खुदा खैर करे। लेकिन किस लिए ?"

"कारण तो बता सकता हूं," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "लेकिन उसे अनकहा रहने देना अच्छा होता। आप मुझे कतई नही सुहाते, मै आपसे घृणा करता हूं, आपको देखकर उबकने लगता हूं, और अगर इतना काफी नही है तो . ."

पावेल पेत्रोविच की आंखें कौंध रही थी . . बज़ारोव की आखो में भी दमक का अभाव नही था।

"अच्छी बात है, श्रीमान," बज़ारोव ने कहा, "अब और अधिक व्याख्या करने की जरूरत नही। आपने ठान लिया है कि मेरे साथ अपने शौर्य की आजमाइश करे। चाहता तो इस आनन्द से मै आपको वंचित कर सकता था। लेकिन खैर, कोई बात नहीं।"

"इस कृपा के लिए बहुत बहुत कृतज्ञ हूं," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और अब मैं आशा कर सकता हूं कि हिंसा का सहारा लेने के लिए मुझे बाध्य किए बिना ही आप मेरी चुनौती मंजूर कर लेंगे।"

"दूसरे शब्दों में—अगर कविता मे बातें न की जाएं तो—उस बेत का सहारा लिए बिना?" बजारोव ने अविचलित भाव से कहा। "बिल्कुल ठीक। आपको मुझे अपमानित नही करना पड़ेगा। और ऐसा करना पूर्णतया निरापद भी न होगा। आपकी सज्जनता बरक़रार रहेगी... मै भी, एक सज्जन की ही भांति, आपकी चुनौती मंजूर करता हूं।"

"बहुत खूब!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और अपना बेंत उठाकर एक कोने में रख दिया। "दो-चार शब्द अब द्वन्द्व की शर्तों के बारे में भी। लेकिन पहले मै यह जानना चाहूंगा कि क्या आप, मेरी चुनौती के लिए एक बहाने के रूप में, कोई छोटा-मोटा झगड़ा मोल लेने की औपचारिकता का सहारा लेना ज़रूरी समझते है?"

"नही, औपचारिकता को ताक़ पर रखना ही अच्छा होगा।"

"मै भी ऐसा ही समझता हूं। इसी प्रकार अपने विरोध के असली कारणों को कुरेदना भी, मेरे खयाल मे, बेकार होगा। हम एक-दूसरे को बरदाश्त नही कर सकते। इसके बाद और कुछ कहने की जरूरत भी क्या है?"

"और कुछ कहने की जरूरत भी क्या है?" बजारोव ने व्यंग्यपूर्वक दुहराया।

"और जहां तक द्वन्द्व की शर्तों का सम्बन्ध है, चूकि हम अपने साथ कोई मध्यस्थ नही रखेंगे—और उन्हें हम पाएंगे भी कहां. ."

"बिल्कुल, हम उन्हे पाएंगे भी कहा?"

"सो मै सम्मानपूर्वक सुझाव रखता हूं: द्वन्द्व कल सुबह हो, यही छै बजे, पिस्तौलों से, ईधन-वन के पास, और बीच की दूरी दस डग ..."

"दस डग? बहुत खूब, हम एक-दूसरे से दस डग दूर से घृणा करते है।"

"चाहें तो आठ कर सकते है," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"बेशक, आठ क्यो न हों?"

"दोनों दो दो गोलिया दागेंगे। नागहानी के लिए दोनों की जेब में एक एक पत्र रहेगा कि अपनी मौत के खुद हम जिम्मेदार है।"

"बस बस, इस बात से मैं कुछ सहमत नही," बज़ारोव ने कहा, "इससे जरा फ़्रांसीसी उपन्यासों की गंध आती है। बात कुछ जंचती नही।"

"हो सकता है। लेकिन यह तो आप मानेंगे ही कि हत्या का शक पैदा करना भी कोई खुशगवार बात नहीं।"

"मानता हू। लेकिन इस दु:खद शक से बचने का एक तरीक़ा है। यह सही है कि हम अपना मध्यस्थ साथ नहीं रखेंगे, लेकिन साक्षी तो रख ही सकते है।"

"क्या मै पूछ सकता हूं, ठीक कौन व्यक्ति ग्रापकी नजर में है?"

"क्यों, प्योत्र।"

"प्योत्र कौन ?"

"ग्रापके भाई का खवास। वह एक ऐसा ग्रादमी है जो ग्राधुनिक शिक्षा की बरकतों से लैस है ग्रौर ढंग से—कामिलफ़ो*—ग्रपनी भूमिका का निर्वाह भी कर सकता है।"

"लगता है कि ग्राप मज़ाक़ कर रहे है, प्रिय महोदय!"

"बिल्कुल नहीं। ग्रगर ग्राप मेरे सुझाव पर गंभीरता से सोचे तो मालूम होगा कि वह सहज-बुद्धि ग्रौर सरलता से पगा है। हत्या छिपी तो रहेगी नही, लेकिन प्योत्र को इस मौक़े के लिए तैयार करने ग्रौर उसे युद्धस्थल तक लाने का जिम्मा मै लेता हूं।"

"ग्राप तो बराबर मज़ाक़ करने पर तुले हैं," ग्रपनी कुर्सी से उठते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "लेकिन जिस शिष्ट मनोभाव का ग्रापने परिचय दिया है, उसके बाद कोई शिकवा करने की गुजाइश नही रह जाती... सो मामले को तय समझा जाए... लेकिन हां, पिस्तौलें तो ग्रापके पास है न?"

"पिस्तौलों से मेरा भला क्या वास्ता हो सकता है, पावेल पेत्रोविच? मै कोई योद्धा तो हूं नहीं।"

"तब मैं ग्रपने पिस्तौल ही ग्रापके सामने हाज़िर कर दूंगा। विश्वास करें, पांच साल से मैंने उन्हें हाथ से छुग्रा तक नही है।"

"यह ग्रापने ग्रच्छी दिलासे की खबर दी।"

पावेल पेत्रोविच ने ग्रपना बेत उठा लिया।

---

*मौक़े के मुताबिक़। (फ़्रेंच)—सं०

"हां तो, प्रिय महानुभाव, अब इतना ही काम और बाक़ी रहा है कि आपको धन्यवाद देकर यहां से विदा लूं जिससे आप अपने अध्ययन मे फिर जुट सकें। आपका विनम्र सेवक, श्रीमान!"

"कल के सुखद मिलन तक के लिए विदा, प्रिय महोदय!" बाहर तक जाकर उन्हे विदा करते हुए बजारोव ने कहा।

पावेल पेत्रोविच विदा लेकर चल दिए। बजारोव कुछ देर तक बंद दरवाज़े के पीछे खड़ा रहा। फिर सहसा बोल उठा: "हुं, पूरा शैतान है। कितना नफ़ीस और कितना बेवकूफ! और कितना भोंड़ा नाटक किया हमने यह! जैसे दो सधे हुए कुत्ते अपनी पिछली टांगो पर कुदक रहे हो। लेकिन मै उससे भली भांति इन्कार भी तो नही कर सकता था? अगर वह हाथ उठा बैठता तो.." (इस विचार मात्र से बज़ारोव स्तब्ध हो गया और उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठा) "तो बिलौटे की भांति मैं उसका गला घोंट देता।" वह अपनी ख़ुर्दबीन के पास लौट आया, लेकिन उसका हृदय उद्वेलित हो गया था और परीक्षण के लिए आवश्यक स्थिरता गायब हो चुकी थी। वह सोच रहा था—"उसने आज हमें देख लिया, लेकिन अपने भाई की ख़ातिर क्या वह इस हद तक अपने आपको उत्तेजित कर सकता है? चुम्बन न हुआ, कहर हो गया। हो न हो, इसके पीछे कोई और बात है। ऊंह, मुझे तो लगता है कि वह उससे प्रेम करता है। बेशक, करता है। दिन की रोशनी की भांति एकदम साफ़... यह अच्छा झमेला उठ खड़ा हुआ। चाहे जिस पहलू से देखो," अन्त में उसने निश्चय किया। "मामला टेढ़ा है। सब से पहली बात तो यह कि ख़तरा मोल लो, दूसरे यह कि और भी कुछ नहीं तो यहां से कूच तो करना ही होगा; फिर आरकादी है... और स्वर्ग का वह फ़रिश्ता

निकोलाई पेत्रोविच है, खुदा उसे अपने साथ मे रखे। ऊंह, मामला टेढा है, एकदम टेढ़ा!"

जैसे-तैसे, एक अजीब खामोशी तथा अनमने ढग से, दिन बीता। फ़ेनिचका के तो अस्तित्व तक में सन्देह होता था। बिल में दुबके चूहे की भांति वह अपने कमरे में ही बैठी रही। निकोलाई पेत्रोविच अलग परेशान थे। उन्हें पता चला था कि गेहूं के उनके खेत में फफूंद लग गई है। अपनी इस फसल से वह खास उम्मीद बाधे हुए थे। पावेल पेत्रोविच की बरफ़ानी शिष्टता हरेक को—यहा तक कि प्रोकोफ़िच को भी—आतंकित किए थी। बजारोव ने अपने पिता को एक पत्र लिखना शुरू किया, फिर उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले और मेज के नीचे उसे फेंक दिया। "अगर मै मर गया," उसने सोचा, "तो वे इसकी खबर सुन ही लेगे। लेकिन मै मरूंगा नहीं। अभी मुझे बहुत बाज़िया जीतनी हैं।" उसने प्योत्र से कहा कि कल सुबह पौ फटते ही आकर मिले, ज़रूरी काम है। प्योत्र इस खयाल में था कि वह उसे अपन साथ पीतर्सबर्ग ले जाना चाहता है। बजारोव बहुत देर से बिस्तर पर गया, और सारी रात बेतुके सपने उसे परेशान करते रहे ... ओदिनत्सोवा उसे सपनों में दिखाई दी। ओदिनत्सोवा भी थी और साथ ही उसकी मां भी। काली मूंछोंवाली एक बिल्ली उसके साथ लगी थी और यह बिल्ली फ़ेनिचका थी। पावेल पेत्रोविच एक बड़े जंगल की शक्ल में दिखाई दिए जिनके साथ उसे अभी द्वन्द्व-युद्ध करना था। प्योत्र ने चार बजे आकर उसे जगाया। उसने जल्दी से कपडे पहने और उसके साथ बाहर निकल गया।

उजली और स्वच्छ सुबह थी। ताज़गी से भरी। आकाश की पीतवर्ण नीलिमा में रूई के गालों जैसे छोटे छोटे रंगबिरंगे बादल सजे थे। ओस की बूंदें पत्तों और घास पर छाई थी और मकड़ी के जालो

में मोतियो की भाति चमचमा रही थी। काली नम धरती अभी भी ऊषा की गुलाबी आभा से रंगी थी। लवा पक्षी का संगीत आकाश से निर्झर की भाति बरस रहा था। बज़ारोव ईधन-वन पहुचा और वन के छोर पर छाव मे बैठ गया। तभी उसने प्योत्र को बताया कि उसे क्या काम करना है। पढ़ा-लिखा खवास डर के मारे बदहवास-सा हो गया। लेकिन बजारोव ने यह भरोसा देकर उसे धीरज बंधाया कि तुम्हें तो केवल दूर खडे होकर बस देखते भर रहना है, और यह कि तुमपर कोई जिम्मेदारी नहीं आएगी। "तुम खुद ही जरा सोचो," अन्त में उसने कहा, "कि कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निवाहना तुम्हारे भाग्य में लिखा है।" प्योत्र ने अपने हाथ फैलाए, नजर जमाए धरती की ओर देखता रहा, चेहरा उसका एकदम हरा पड गया और बदन को बर्च वृक्ष के सहारे टिका लिया।

मारिनोवाली सड़क जंगल का चक्कर लगाती चली गई थी। सड़क की हल्की धूल ने कल से किसी पहिए या पांव का मुह नहीं देखा था। बजारोव की नजर बरबस सड़क की थाह ले रही थी, घास की कोंपलों को नोंचकर दांतों से कुतर और बार बार अपने से कह रहा था: "यह क्या हिमाकत है!" सुबह की हवा इतनी सर्द थी कि एक या दो बार उसका बदन झुरझुरा गया .. प्योत्र ने मातमी नजर से उसकी ओर देखा, लेकिन बज़ारोव केवल मुसकरा दिया—उसके पौरुष ने घुटने नही टेके थे।

सड़क पर टापों की आवाज़ सुनाई दी... पेड़ों की ओट में से एक किसान उभर आया। वह टंगड़ी बंधे दो घोड़ों को हांक रहा था। पास से गुज़रते समय, बिना किसी सलाम-दुआ के, उसने कुछ अजीब नज़र से बज़ारोव की ओर देखा। प्योत्र को यह प्रत्यक्षतः अपसगुन मालूम हुआ। "यह आदमी भी," बज़ारोव ने सोचा, "मुह-अंधेरे

ही उठ आया है, लेकिन इसके सामने कम से कम एक काम तो है... मगर हम ?"

"लगता है कि वह आ रहे हैं," प्योत्र फुसफुसाया।

बज़ारोव ने सिर उठाया और पावेल पेत्रोविच पर उसकी नज़र पड़ी। हल्की चेकदार जाकेट और बर्फ़-सी सफ़ेद पतलून पहने वह तेज डगों से सड़क पर चले आ रहे थे। बगल में एक पेटी दबाए थे जो हरे कपड़े मे लिपटी थी।

"माफ़ करना। मैं डर रहा था कि कही आप देर से इन्तजार न कर रहे हों," पहले बज़ारोव और फिर प्योत्र की ओर सिर झुकाते हुए उसने कहा—प्योत्र की ओर इस अन्दाज़ में मानो मध्यस्थ होने के नाते वह उसकी ओर यह सम्मान जता रहे हों। फिर बोले: "हुआ यह कि मै अपने खवास को जगाना नही चाहता था।"

"ठीक है," बजारोव ने जवाब दिया, "हम ख़ुद भी अभी अभी आए हैं।"

"ओह, तब और भी अच्छा है," कहते हुए पावेल पेत्रोविच ने चारों ओर देखा। "कोई नज़र नही आता, बाधा का डर नहीं... तो शुरू करें न?"

"हा, शुरू करे।"

"मेरी समझ में अब और कोई तफ़सील बताने की ज़रूरत नहीं।"

"नही, कोई ज़रूरत नही।"

"क्या आप गोली भरना चाहेंगे?" पेटी से पिस्तौलों को निकालते हुए पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही, आप ख़ुद ही भर दीजिए। मै इतने डग नाप लेता हूं।" फिर हंसी की मुद्रा में मुसकराते हुए बोला: "मेरी टांगें ज़्यादा लम्बी है! एक, दो, तीन..."

"येवगेनी वसीलियेविच !" प्योत्र हकला उठा, (वह ग्रास्पेन के पत्ते की भाति कांप रहा था) "जो मन में आए आप करें। मै इस पचड़े से दूर रहूंगा।"

"चार, पांच... दूर ही रहो, मेरे भाई। चाहो तो पेड़ की ओट मे खड़े हो जाओ और अपने कान भी मूंद लो, लेकिन आखें न मूदना। अगर कोई गिर पड़े तो लपककर उठा लेना. . छै, सात, आठ..." बजारोव रुक गया, और पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़ते हुए बोला: "इतना ही काफ़ी होगा, या दो-एक डग और डाल लू?"

"जैसा चाहो," दूसरी गोली भरते हुए पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है। दो-एक डग और शामिल कर लिए जाए।" बज़ारोव ने जूते की नोक से जमीन पर एक लकीर खीची, फिर बोला· "यह सीमा-रेखा है। लेकिन हां, सीमा-रेखा से हम कितने डग दूर रहेंगे? यह भी एक महत्वपूर्ण बात है। कल इसपर हमने कोई विचार नहीं किया।"

"दस डग रख लीजिए, और क्या!" बजारोव के आगे पिस्तौल बढ़ाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "कृपा कर इनमें से एक चुन लीजिए।"

"ज़रूर चुनूगा। लेकिन पावेल पेत्रोविच, क्या आप इस बात से सहमत नही हैं कि हमारा यह द्वन्द्व-युद्ध बेहूदगी की हद तक निराला है? जरा अपने इस मध्यस्थ के चेहरे पर तो नजर डालकर देखिए!"

"आप अभी तक इस मामले को एक मज़ाक़ समझने पर तुले है," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया। "मै इससे इन्कार नहीं करता कि हमारा यह द्वन्द्व-युद्ध कुछ अजीब है, लेकिन आपको यह चेता

देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं पूरी संजीदगी से लड़ने जा रहा हूं। A bon entendeur, salut!*"

"ओह नहीं, इसमें मुझे ज़रा भी शक नहीं कि हम एक-दूसरे को मटियामेट करने पर तुले हैं। लेकिन जैसा कि कहते हैं utile dulci**, चलते-चलाते थोड़ा हंस लिया जाए तो क्या हर्ज। सो देखा आपने, आपके फ़्रांसीसी टुकड़े और मेरे लैटिनी मुहावरे में कैसा जोड़ रहा।"

"लेकिन मैं पूरी संजीदगी से लड़ने जा रहा हू," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया और अपने मोर्चे पर डट गए। बज़ारोव भी अपनी पारी में सीमा-रेखा से दस डग हटकर खड़ा हो गया।

"आप तैयार हैं न?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"बिल्कुल।"

"तो अब हम बढ़ सकते है।"

बजारोव ने धीमे से आगे की ओर हरकत की। पावेल पेत्रोविच भी उसकी ओर बढ़े–बाया हाथ अपनी जेब में खोंसे और दाहिने से पिस्तौल के मुह को स्थिर गति से साधे... "सीधे मेरी नाक को निशाना बनाए हुए है," बज़ारोव ने सोचा, "और देखो न, कितनी सावधानी से अपनी अधमिची आंख मुझपर जमाए हुए है, लफ़ंगा कही का! लेकिन यह ऐसी चीज़ नही जो सुहावनी मालूम हो। मैं उसकी घड़ी की चेन से अपनी नजर नहीं डिगने दूगा..." तभी कोई चीज आनन-फ़ानन में बजारोव के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई और क्षण बीतते न बीतते गोली दगने की आवाज आई। "मैंने

---

* जिन्हें कान है, वे सुनें। (फ़्रेंच)–सं०

** एक पंथ, दो काज। (लैटिन)–सं०

अपने कानों से सुना," बजारोव के मस्तिष्क में ख़याल कौंधा, "सो समझना चाहिए कि सब ठीक है।" वह एक डग आगे बढ़ा और बिना निशाना साधे घोड़ा दबा दिया।

पावेल पेत्रोविच थोड़ा-सा छिटके और अपनी जांघ को उन्होंने दबोच लिया। उनकी सफेद पतलून पर से खून की धारा बह चली।

बजारोव ने पिस्तौल नीचे फेंक दिया और अपने विपक्षी के पास पहुंचा।

"क्या घायल हो गए?" उसने पूछा।

"सीमा-रेखा तक मुझे बुलाने का आपको अधिकार था," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और घाव, सो कुछ नही। शर्तों के अनुसार अभी दोनों एक एक निशाना और साध सकते है।"

"मगर अफ़सोस, वह अभी नही हो सकता। उसे किसी और दिन के लिए छोड़ना होगा," पावेल पेत्रोविच को संभालते हुए जिनका रंग अब पीला पड़ता जा रहा था, बजारोव ने जवाब दिया। "अब मै द्वन्द्व-योद्धा नही, डाक्टर हूं, और आपका घाव देखना मेरे लिए लाज़िमी है। प्योत्र, इधर आओ! जाने कहा जा छिपे हो?"

"ओह, यह कुछ नही... किसी मदद की मुझे जरूरत नही," धीरे धीरे, शब्दों का अटक अटक कर उच्चारण करते हुए, पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और... हमें अभी... एक बार और .." उन्होंने अपनी मूंछों में ताव देना चाहा, लेकिन उनका हाथ बेदम-सा लटक गया, आंखें चढ़ गई और वह निश्चेत हो गए।

"ओह, बेहोशी का यह दौरा, भई खूब!" अनायास ही बज़ारोव के मुह से निकला और उसने पावेल पेत्रोविच को घास पर लिटा दिया। "देखें तो, आख़िर मामला क्या है?" उसने कहा, जेब से रूमाल निकालकर खून पोंछा और घाव के इर्द-गिर्द टोहकर देखा ... "हड्डी तो सही-सलामत है," वह बुदबुदाया, "ऊपरी घाव है,

गोली साफ़ पार हो गई, केवल एक पेशी वासतुस एकस्टर्नुस में हल्की-सी चोट लगी है। तीन सप्ताह में ही नाचने लायक़ हो जाएगा... और बेहोशी का यह दौरा—कमाल है! भगवान ही बचाए इन कच्चे स्नायुवाले लोगों से! देखो न, चमड़ी कितनी नाज़ुक है!"

"मर तो नही गए, मालिक?" कापती आवाज में पीछे से प्योत्र घिघिया उठा।

बजारोव घूम गया।

"जाओ, और लपककर थोड़ा पानी तो ले आओ, बड़े भाई। मरना कैसा, वह हम दोनों से ज़्यादा दिन जिएंगे!"

लेकिन ऐसा मालूम होता था कि मिट्टी का माधो नौकर कुछ समझा नही कि उससे क्या कहा जा रहा है, कारण वह टस से मस तक नही हुआ। पावेल पेत्रोविच ने धीरे धीरे अपनी आंखें खोलीं। "अरे, इनकी जान निकल रही है," थरथराती आवाज में प्योत्र ने कहा और क्रास के निशान बनाने लगा।

"ठीक कहते हो... चेहरा तो देखो जैसे बुद्धू हो!" क्षीण मुसकान के साथ घायल सज्जन ने कहा।

"क्या हुआ तेरे उस कम्बख़्त पानी का! जा, जल्दी लपककर ले आ!" बजारोव ने चिल्लाकर कहा।

"कोई जरूरत नही... योंही ज़रा सिर चकरा गया था... बस, सहारा देकर ज़रा उठा दीजिए... हां, अब ठीक है .. इस खरोंच पर थोड़ा पट्टी बांधने की जरूरत है, फिर तो मै अपने आप घर तक पहुंच जाऊंगा, या मेरे लिए गाड़ी भी भेजी जा सकती है। अगर आप चाहें तो द्वन्द्व-युद्ध को फिर से आरंभ नही किया जाएगा। आपने बडी नेकी बरती... आज, केवल आज—इसका ध्यान रहे।"

"अतीत को कुरेदने की ज़रूरत नही," बजारोव ने जवाब दिया,

"और जहां तक भविष्य का संबंध है, सो उसकी चिन्ता करना भी बेकार है, क्योंकि मैं यहां से तुरत खिसक जाना चाहता हूं। हां, तो अब ज़रा पट्टी बंधवा लीजिए। आपका घाव खतरनाक नही है। फिर भी खून का रोकना अच्छा होगा। लेकिन पहले इस मरदूद के होश ठिकाने पर ले आएं।"

बज़ारोव न प्योत्र का कालर पकड़कर झंझोड़ा और गाड़ी लाने के लिए उसे रवाना कर दिया।

"और देखो, मेरे भाई को घबरा न देना," पावेल पेत्रोविच ने ताड़ना की, "तुम्हीं जानो, अगर कुछ भी उनसे कहने का दुस्साहस किया तो!"

प्योत्र लपक गया। उसके गाड़ी लेकर आने तक दोनों प्रतिद्वन्द्वी खामोश बैठे रहे। पावेल पेत्रोविच ने कोशिश की कि बजारोव दिखाई तक न दे। वह क़तई नहीं चाहते थे कि उससे सुलह हो। अपने उद्धतपन और असफलता पर शर्म से गड़े जा रहे थे। उन्हें शर्म मालूम हो रही थी कि उन्होंने यह तूफ़ान खड़ा किया, हालांकि वह यह भी अनुभव कर रहे थे कि मामले का इससे ज़्यादा सन्तोषजनक अन्त नहीं हो सकता था। "जो हो," उन्होंने अपने को तसल्ली दी, "एक अच्छी बात यह हुई कि अब वह यहां से दफ़ा हो जाएगा।" खामोशी अटपटी और त्रस्त करनेवाली बनती जा रही थी। दोनों कसमसा उठे थे। दोनों को यह अहसास था कि एक-दूसरे की स्थिति को पूर्णतया समझ रहे हैं। यह अनुभूति मित्रों के बीच सुखद मालूम होती है, लेकिन शत्रुओं के बीच अत्यन्त दुःखद। खासतौर से उस समय जबकि मामले को ठीक ढंग से रखने या साथ छोड़ने की कोई गुंजाइश न हो।

"क्यों, पट्टी कुछ ज़रूरत से ज़्यादा कसकर तो नहीं बंध गई?" बज़ारोव ने आख़िर पूछा।

"नहीं, ठीक है, बहुत ठीक," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया। फिर थोड़ा रुककर बोले: "मेरे भाई भुलावे में आनेवाले नहीं हैं। उन्हें बताना ही होगा कि राजनीति ने हमें टकरा दिया।"

"बहुत खूब," बज़ारोव ने कहा, "आप उनसे कह सकते हैं कि मै अंग्रेज़ियत के तमाम शैदाइयों की पगड़ी उछालने पर उतर आया था।"

"भई वाह!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर एक किसान की ओर इशारा करते हुए बोले: "कुछ बता सकते हो कि वह हमारे बारे में क्या सोच रहा है?"

यह वही किसान था जो द्वन्द्व-युद्ध से कुछ मिनट पहले टंगड़ी बंधे घोड़ों को हांकता बज़ारोव के पास से गुज़रा था। वह अब लौट रहा था। इस बार, कुलीनों पर नज़र पड़ते ही, उसने अपने आपको संभाला और टोपी उतारकर सिर झुकाया।

"ख़ुदा ही जाने," बज़ारोव ने जवाब दिया, "शायद वह कुछ भी नहीं सोच रहा है। रूसी किसान एक रहस्यमय जीव है—एक अजनबी प्राणी जिसके बारे में श्रीमती रेडक्लिफ़ ने इतना अधिक बखान किया है। कौन जाने? शायद वह ख़ुद भी न जानता हो कि वह क्या सोच रहा है।"

"सो ऐसा सोचते है आप," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया और फिर अचानक चिल्ला उठे: "देखो न, तुम्हारे उस गधे के बच्चे प्योत्र ने जाकर क्या तमाशा किया है! मेरे भाई सड़क को चीरते चले आ रहे हैं!"

बज़ारोव घूमा और गाड़ी में बैठे निकोलाई पेत्रोविच पर उसकी नज़र पड़ी। उनका चेहरा पीला पड़ गया। गाड़ी के रुकने से पहले ही वह उछलकर बाहर आ गए और लपककर अपने भाई के पास पहुंचे।

"क्या... क्या मतलब है इसका?" विचलित आवाज़ में वह चिल्लाए, "येवगेनी वसीलियेविच, आखिर मामला क्या है?"

"सब ठीक है," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "कम्बख़्तों ने नाहक़ आपको परेशान किया। मिस्टर बजारोव और मुझमें ऐसे ही झड़प हो गई थी, और मुझे थोड़ी मात खानी पड़ी।"

"आखिर हुआ क्या, खुदा के लिए बताइए न?"

"अच्छा, अगर जानना ही चाहते है तो सुनिए। मिस्टर बजारोव ने सर रौबर्ट पील की शान में कुछ बेजा शब्दों का इस्तेमाल किया। लेकिन साथ ही यह भी मै तुरत बता दूं कि दोष सारा मेरा था। मि० बज़ारोव न अपना बरताव शानदार रखा। मैंने ही उन्हें चुनौती दी।"

"लेकिन, हे मेरे भगवान, आपके बदन से तो खून बह रहा है?"

"तो क्या आप समझते थे कि मेरी रगों में पानी भरा है? लेकिन इस तरह थोड़ा खून बह जाना स्वास्थ्य के लिए बुरा नही होता। क्यों, ठीक है न, डाक्टर महोदय? समझे भाई, यह उदासी छोड़ो, और सहारा देकर मुझे गाड़ी में बैठने में मदद दो। कल तक मैं बिल्कुल चंगा हो जाऊंगा। हां, इस तरह, बहुत ठीक। चलो, कोचवान, अब ज़रा लपक चलो!"

निकोलाई पेत्रोविच गाड़ी के साथ हो लिए। बज़ारोव पीछे था...

"जब तक शहर से दूसरा डाक्टर नहीं आ जाता," निकोलाई पेत्रोविच ने उससे कहा, "तब तक मेरे भाई की देख-भाल आपको ही करनी होगी।"

बज़ारोव ने चुपचाप सिर झुका लिया।

घंटा भर बाद पावेल पेत्रोविच बिस्तरे पर लेटे थे। टांग की मरहम-पट्टी बड़ी दक्षता से की गई थी। सारे घर में एक कुहराम-सा मचा था। फ़ेनिचका को ग़श आ गया था। निकोलाई पेत्रोविच, नज़र बचाकर, हाथों को मरोड़ रहे थे। पावेल पेत्रोविच हंस और मजाक़ कर रहे थे—ख़ासतौर से बजारोव के साथ। वह कैम्ब्रिक की बढ़िया क़मीज पहने थे, क़मीज़ पर लक़दक़ प्रातःकालीन जाकेट सजी थी और सिर पर फैज़ टोपी लगाए थे। उन्होंने खिड़कियों के परदे तक नही गिराने दिए और परहेज के नाम पर भूखे रहने की ज़रूरत का मजाक़ उड़ाते हुए शिकायत की।

लेकिन रात को ताप बढ़ गया और माथा दर्द करने लगा। शहर से डाक्टर आया (निकोलाई पेत्रोविच ने अपने भाई की ना-नुकर कुछ नही सुनी और खुद बज़ारोव ने भी डाक्टर को बुलाने पर ज़ोर दिया था। वह दिन भर अपने कमरे में ही बैठा रहा, चेहरे पर तनाव और पीलापन लिए। बीच बीच में, बहुत थोड़ी देर के लिए, रोगी को भी देख आता। एक या दो बार फ़ेनिचका से भी मुठभेड़ हुई जो उसे देखते ही भय से सकपकाकर सिमट गई।) नये डाक्टर ने स्फूर्तिदायक पेय की तजवीज़ की और कुल मिलाकर बज़ारोव के इस आश्वासन की पुष्टि की कि ख़तरे की सम्भावना क़तई नहीं है। निकोलाई पेत्रोविच ने डाक्टर को बताया कि उनके भाई दुर्घटनावश घायल हो गए। सुनकर डाक्टर ने 'हुंः!' किया, लेकिन उसी क्षण चांदी के नगद पच्चीस रूबल पाकर बोले: "आश्चर्य! कोई अनहोनी बात नहीं, आप जानते ही हैं!"

घर में न तो किसी ने कपड़े बदले और न ही कोई सोने गया। रह रहकर निकोलाई पेत्रोविच पंजों के बल अपने भाई के कमरे में जाते और पंजों के बल ही लौट आते। रोगी गहरी नींद से

घिरा था। वह थोड़ा-सा कराह उठा , फ़्रेंच भाषा में "Couchez-vous"* कहा और पीने के लिए कुछ मांगा। एक बार लेमनेड का गिलास लेकर निकोलाई पेत्रोविच ने फ़ेनिचका को भेजा। पावेल पेत्रोविच ने एकटक उसे देखा और गिलास खाली कर दिया। सुबह होते न होते ताप कुछ और बढ़ चला और रोगी को हल्का सरसाम हो गया। पहले तो अनाप-शनाप जाने क्या बकते रहे , फिर अचानक अपनी आंखें खोलीं और चिन्तित मुद्रा में भाई को अपने ऊपर झुका हुआ देखकर बुदबुदा उठे :

"क्यों निकोलाई, क्या आपको ऐसा नहीं मालूम होता कि फ़ेनिचका में नेली की कुछ छाप है ? "

"नेली कौन, पावेल ? "

"अरे, इतना भी नही जानते ! वही राजकुमारी 'र'। खासतौर से उसके चेहरे का ऊपरी हिस्सा। C'est de la même famille!**"

निकोलाई पेत्रोविच ने कुछ जवाब नहीं दिया। लेकिन यह सोचकर उन्हें हैरानी हुई कि आदमी की पुरानी भावनाएं उसे कितना जकड़े रहती है। "यही समय होता है जब वे उभरना शुरू करती है ," उन्होंने सोचा।

"ओह, कितना प्यार करता हूं मैं उस पागल को," पावेल पेत्रोविच कराह उठे और वेदना से सिर के पीछे अपने दोनों हाथों को उमेठा। एकाध मिनट बाद फिर बड़बड़ाए : "मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता कि कोई बदमाश उसे छूने तक का साहस करे..."

---

*लेट जाएं। (फ़्रेंच) – सं०

** उसी सांचे में ढला हुआ है। (फ़्रेंच) – सं०

निकोलाई पेत्रोविच ने एक उसांस भरी। उन्हें इसका गुमान तक नहीं था कि इन शब्दों का असली तात्पर्य क्या है।

अगले दिन, सुबह आठ बजे के क़रीब, बजारोव उन्हें देखने के लिए आया। उसने अपना सामान बांध लिया था और अपने सारे मेंढकों, कीड़ों और पक्षियों को रिहा कर दिया था।

"तो आप विदा लेने के लिए आए हैं, क्यों?" मिलने के लिए उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा।

"जी हां।"

"मै आपकी भावना की क़द्र और उसका पूर्णतया समर्थन करता हूं। इसमें शक नहीं, दोष मेरे दयनीय भाई का है, और उन्हें इसकी सज़ा भी मिल चुकी है। उन्होंने ख़ुद मुझे बताया कि यह उनके ढील देने का—आपको ऐसी स्थिति में रखने का—नतीजा है। इसके सिवा आप और कुछ नही कर सकते थे। और मैं समझता हूं कि आप उस द्वन्द्व-युद्ध को भी नहीं टाल सकते थे जो... जो एक हद तक केवल आपके पारस्परिक विचारों के निरन्तर विरोध के कारण हुआ।" (निकोलाई पेत्रोविच बोलने में कुछ उलझ गए थे।) "मेरे भाई पुराने ढर्रे के आदमी हैं, तेज़-दिमाग़ और हठी... ख़ुदा का शुक्र है कि मामले का अन्त किसी अन्य रूप में न होकर इस रूप में हुआ। मामले को दबाने के लिए जो कुछ करना ज़रूरी था, वह सब मैंने कर लिया है..."

"मैं आपके पास अपना पता छोड़ जाऊंगा, अगर कोई बखेड़ा हो तो," बज़ारोव ने यों ही बेपर्वाही से कहा।

"मै आशा यही करता हूं कि कोई बखेड़ा नहीं होगा, येवगेनी वसीलियेविच... मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि हमारे घर में

आपके प्रवास का इस... इस तरह अन्त हुआ। और सबसे ज्यादा दुःख तो मुझे इस बात का है कि आरकादी..."

"सम्भवतः उससे भेंट होगी," बजारोव ने जो हर प्रकार की 'सफ़ाइयों' और 'भावुकता के प्रदर्शनों' से चिढ़ता था, बीच में ही कहा, "अगर नहीं तो कृपा कर उससे मेरा अभिवादन कहें और आप खुद भी मेरा अनुताप स्वीकार करें।"

"और आप भी कृपया..." निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, लेकिन बज़ारोव उनके कथन को बीच में ही छोड़ वहां से चला आया।

यह मालूम होने पर कि बज़ारोव जा रहा है, पावेल पेत्रोविच नें उससे मिलने की इच्छा प्रकट की, और उससे हाथ मिलाया। लेकिन बज़ारोव बर्फ़ की भांति सर्द बना रहा। उसे लगा कि पावेल पेत्रोविच उदारता का अभिनय करना चाहते हैं। फ़ेनिचका से विदा लेने का उसे अवसर नही मिला। केवल खिड़की की राह एक नजर डालकर रह गया। उसे लगा जैसे उसका चेहरा उदास हो। "मालूम होता है, इसके लिए यह भारी पड़ेगा," उसने मन ही मन सोचा, "जो हो, आशा करनी चाहिए कि वह किसी तरह पार कर ले जाएगी।" प्योत्र शोक से इतना अभिभूत हो गया कि उसके कंधे पर सिर रखकर रोने लगा। आखिर यह कहकर बज़ारोव ने उसे संभाला कि "बस बस, आंसुओं की यह बाढ़ अब बंद करो!" दुन्याशा तो अपनी आकुलता को छिपाने के लिए ईंधन-वन में जा छिपी। इस सारे ऊहापोह और आकुलता का मूलाधार—बज़ारोव—आखिर गाड़ी में सवार हुआ, अपने सिगार को उसने सुलगाया और कोस भर आगे मोड़ के पास किरसानोव का खेत और नया बना मकान जब आखिरी बार उसकी आंखों के सामने

से गुजरा तो वह थूकते हुए केवल इतना ही बुदबुदाया: "कमबख़्त सामन्तशाही!" और उसने अपना कोट बदन के और भी निकट समेट लिया।

पावेल पेत्रोविच जल्द ही ठीक होने लगे। लेकिन फिर भी क़रीब सात दिन तक उन्हें बिस्तरा सेना पड़ा। अपनी इस 'क़ैद' को—जैसा कि वह कहते थे—उन्होंने धीरज के साथ सहा। लेकिन अपनी सफाई-धुलाई पर वह काफ़ी हल्ला मचाते और कमरे को बार बार सुवासित करने के लिए जान खाते। निकोलाई पेत्रोविच उन्हें पत्र-पत्रिकाएं पढ़कर सुनाते, फ़ेनिचका पहले की भांति तत्पर रहती—उनके लिए शोरबा, लैमनेड, अध-उबले अंडे, चाय लेकर आती। लेकिन हर बार जब भी वह कमरे में पांव रखती, एक अनबूझ भय उसे जकड़ लेता। पावेल पेत्रोविच के उतावले आचरण से यों तो समूचे घर की जान सांसत में थी, लेकिन फ़ेनिचका की अन्य सबसे अधिक। केवल प्रोकोफिच ऐसा था जो ज़रा भी विचलित नही हुआ। वह अपने ज़माने के कुलीनों की चर्चा करता कि लड़ते वे भी थे, लेकिन असली कुलीनों की भांति, और इस तरह के बदमाशों के लिए तो वे बस सीधे अस्तबल में ले जाकर कोड़े लगाने की सज़ा देते थे ताकि उनकी सारी गुस्ताख़ी झड़ जाए!

फ़ेनिचका अपने हृदय में किसी ख़ास खटक का, आत्मप्रतारणा का, अनुभव नहीं करती थी। लेकिन कभी कभी झगड़े के असली कारण का आभास उसे उलझन में डाल देता। फिर पावेल पेत्रोविच कुछ इतनी अजीब दृष्टि से उसकी ओर देखते थे... उनकी ओर पीठ किए होने पर भी वह उनकी नज़र की सरसराहट का अनुभव करती।

अनवरत व्यग्रता से वह पतली हो चली और, जैसा कि होना था, उसका सलोनापन और अधिक निखर आया।

एक दिन – सुबह का समय था – पावेल पेत्रोविच का जी काफ़ी अच्छा था और वह बिस्तरे से अपने सोफ़े पर आ गए थे। निकोलाई पेत्रोविच आए और उनकी तबीयत का हाल पूछकर खलिहान चले गए। फ़ेनिचका चाय की प्याली लेकर आई और उसे मेज़ पर रखकर लौट ही रही थी कि पावेल पेत्रोविच ने उसे रोका।

"ऐसी जल्दी क्या है, फ़ेदोसिया निकोलायेवना?" उन्होंने कहना शुरू किया। "क्या कोई ख़ास काम अटका है?"

"नहीं, मालिक... लेकिन चाय के प्याले तो तैयार करने ही हैं।"

"यह काम तो तुम्हारे बिना दुन्याशा भी कर लेगी। कुछ देर तो बीमार के पास बैठो। ऐसे ही तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं।"

फ़ेनिचका आरामकुर्सी के छोर पर चुपचाप बैठ गई।

"देखो," अपनी मूंछों से उलझते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "बहुत दिनों से मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता था। ऐसा मालूम होता है जैसे तुम मुझसे डरती हो, क्यों?"

"मैं, मालिक?"

"हां, तुम। तुम कभी मेरी ओर आंख उठाकर नहीं देखतीं। जैसे तुम्हारा हृदय साफ़ नहीं हो।"

फ़ेनिचका लाल हो आई। लेकिन उसकी आंखें घूमकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़ीं। वह अपनी उसी विचित्र दृष्टि से उसे टोह रहे थे। फ़ेनिचका का हृदय सकपका गया।

"तुम्हारा हृदय तो साफ़ है न, क्यों?" उन्होंने जोर देकर पूछा।

"साफ़ क्यों नहीं होगा?" फ़ेनिचका फ़ुसफ़ुसाई।

"कौन जाने! पता नहीं, किसका बुरा सोचा है तुमने? मेरा? इसकी सम्भावना नहीं। घर में किसी अन्य का? वह भी मुमकिन नहीं। शायद मेरे भाई का? लेकिन तुम उसे प्यार करती हो-करती हो न?"

"हां, करती हूं।"

"अपनी समूची आत्मा और हृदय से?"

"निकोलाई पेत्रोविच को मैं जी-जान से प्यार करती हूं।"

"सच? मेरी ओर देखो, फ़ेनिचका।" (पहली बार उन्होंने उसे इस नाम से सम्बोधित किया था।) "जानती ही हो, झूठ बोलना कितना बड़ा गुनाह है।"

"मैं झूठ नहीं बोल रही हूं, पावेल पेत्रोविच। निकोलाई पेत्रोविच को मैं प्यार न करूं, यह क्या सम्भव है? ऐसा होने पर मैं जी नहीं सकती।"

"और अन्य किसी की भी खातिर तुम उसे छोड़ नहीं सकती?"

"उन्हें भला मैं किसकी खातिर छोड़ सकती हूं?"

"यह कोई कैसे जान सकता है? लेकिन, मान लो, उन्हीं सज्जन की ख़ातिर जो अभी यहां से विदा हुए हैं।"

फ़ेनिचका बैठी न रह सकी। उठती हुई बोली:

"हाय राम, मुझे इतना क्यों सताते हैं, पावेल पेत्रोविच? मैंन आपका क्या बिगाड़ा है? ऐसी बात आप अपने मुंह से कैसे निकाल सके?"

"फ़ेनिचका," उदास लहजे में पावेल पेत्रोविच ने कहा, "जानती हो, मैंने खुद अपनी आंखों से ..."

"क्या देखा था, मालिक?"

"वहां ... कुंज में।"

फ़ेनिचका के बालों की जड़ें तक लाल हो उठीं।

"लेकिन उसके लिए मुझे कैसे दोषी ठहराया जा सकता है?" काफ़ी प्रयास के बाद उसके मुंह से निकला।

पावेल पेत्रोविच सीधे उठ बैठे।

"तो दोष तुम्हारा नही था? नहीं, जरा भी नही?"

"निकोलाई पेत्रोविच के सिवा इस दुनिया में मैं और किसी से प्रेम नहीं करती, और जब तक मुझमें जान है मैं उन्हें प्यार करती रहूंगी," फ़ेनिचका के शब्दों में अचानक, जाने कहां से, एक शक्ति आ गई और उसका गला सुबकियों से भर उठा, "और जहां तक उसका सम्बन्ध है जो आपने देखा, तो उस दिन जब भगवान मेरा न्याय करेंगे, मैं क़सम खाकर कहूंगी कि क़सूर मेरा नहीं था, और यह कि अपने उपकारी के प्रति–निकोलाई पेत्रोविच के प्रति–ऐसी बात का–ऐसे लांछन का–सन्देह किए जाने से तो यह कहीं अच्छा है कि मैं इसी क्षण शेष हो जाऊं ..."

कहते कहते उसका गला रुंध गया, उसकी आवाज़ टूट गई। साथ ही उसी क्षण उसे चेत हुआ कि पावेल पेत्रोविच ने उसका हाथ थाम लिया है और उसे अपने हाथों से दबोच रहे हैं ... उसने उनकी ओर देखा और अचरज से स्तब्ध होकर रह गई। उनका चेहरा और भी पीला पड़ गया था, उनकी आंखें चमचमा रही थीं और सबसे आश्चर्यजनक यह कि एक बड़ा-सा एकाकी आंसू उनके गाल पर से ढुरक रहा था।

"फ़ेनिचका," उन्होंने चौंका देनेवाली फुसफुसाहट में कहा, "मेरे भाई से मोहब्बत करना, उसे अपना प्यार देना। ओह, वह कितना सदय, और कितना भला है! दुनिया में किसी के लिए भी उससे दग़ा न करना, किसी की ओर भी कान न देना। ज़रा सोचो तो, इससे अधिक भयानक और क्या होगा कि जो प्यार करता है, वह प्यार न पाए। मेरे निरीह निकोलाई का कभी साथ न छोड़ना, उसे कभी धता न बताना!"

फ़ेनिचका की आंखें अब सूख गई थीं और उसका भय तिरोहित

हो गया था—अचरज ने इस हद तक उसे अभिभूत कर लिया था। और उस समय जब पावेल पेत्रोविच ने—हां, खुद पावेल पेत्रोविच ने ही—उसका हाथ उठाकर अपने होंठों से लगाया और बिना चूमे ही होंठों से उसे सटाए रहे और सिर्फ़ रह रहकर—बरबस और बेसुध—उसांसें भरते रहे...

"हे भगवान," फ़ेनिचका ने सोचा, "कही ऐसा तो नहीं कि इन्हें कोई दौरा पड़नेवाला हो..!"

उस क्षण खण्डहर जीवन की तमाम स्मृतियां उस आदमी को थपेड़े मार रही थी।

तभी ज़ीने की सीढ़ियां तेज़ डगों के नीचे चरमरा उठी ... उन्होंने उसे अलग धकेल दिया और खुद अपने तकिए पर लुढ़क गए। दरवाज़ा खुला और निकोलाई पेत्रोविच ने भीतर पांव रखा। वह प्रसन्नता से खिले थे, चेहरा ताज़गी और गुलाबी आभा से दमक रहा था। मित्या, अपने पिता की भांति ताजगी और गुलाबीपन लिए, केवल क़मीज़नुमा फतुरी पहने, उनके सीने पर उछल और किलबिला रहा था। उसके नंगे पांवों की छोटी छोटी उंगलियां घर के कते-बुने उनके कोट के बड़े बड़े बटनों में रह रहकर उलझ जाती थी।

फ़ेनिचका अनायास ही उनकी ओर लपकी, उनके तथा अपने बच्चे के इर्द-गिर्द अपनी बांहें डालीं और उनके कंधे से अपना सिर सटाकर कुनमुनाने लगी। निकोलाई पेत्रोविच चकित रह गए—उनकी लजीली और गंभीर फ़ेनिचका ने उनके प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किसी तीसरे व्यक्ति के सामने आज तक कभी नही किया था।

"अरे, आज तुम्हें यह क्या हुआ?" उन्होंने कहा और अपने भाई की ओर एक नज़र डालते हुए मित्या को फ़ेनिचका के हाथों में सौंप

दिया। फिर पावेल पेत्रोविच के पास जाकर पूछा: "कही ऐसा तो नही कि आपकी तबीयत फिर गड़बड़ा गई हो?"

पावेल पेत्रोविच ने कैम्ब्रिक के रूमाल मे अपना चेहरा दुबका लिया।

"नहीं ... कुछ नहीं ... मैं ठीक हूं ... बल्कि कहिए कि कहीं अच्छा महसूस कर रहा हूं।"

"लेकिन आपको सोफ़े पर आने में इतनी उतावली नहीं करनी चाहिए।" फिर फ़ेनिचका की ओर मुड़ते हुए बोले: "अरे, तुम कहां जा रही हो?" लेकिन वह तब तक बाहर निकलकर दरवाज़ा बंद भी कर चुकी थी। "तुम्हें दिखाने के लिए ही तो मैं नन्हे को लेकर यहां आया था—यह कि अपने ताऊजी के लिए वह कितना ललकता है। लेकिन वह उसे लेकर भाग क्यों गई? तुम दोनों के बीच यहां कुछ कहा-सुनी तो नहीं हुई?"

"भाई!" पावेल पेत्रोविच ने गंभीर भाव से कहा।

निकोलाई पेत्रोविच चौके। सहमकर स्तब्ध-से रह गए, जाने क्यों।

"भाई," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया, "मेरा एक अनुरोध है। वचन दो कि उसे पूरा करोगे।"

"कैसा अनुरोध? क्या कहना चाहते है आप?"

"वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। तुम्हारे जीवन की समूची खुशी, मेरी समझ में, उसपर निर्भर करती है। इधर काफ़ी मैंने विचार किया है, उस बात पर जो मैं तुमसे कहने जा रहा हूं ... भाई, अपना दायित्व पूरा करो, एक ईमानदार और खरे आदमी का दायित्व। माया-मोह और उस बुरी मिसाल का अन्त कर दो जो कि तुम रख रहे हो, तुम जो नरों में श्रेष्ठ हो।"

"आप कहना क्या चाहते है, पावेल ?"

"यह कि फ़ेनिचका से विवाह कर लो ... वह तुमसे प्रेम करती है, वह तुम्हारे बच्चे की मां है।"

निकोलाई पेत्रोविच सकपकाकर पीछे हटे और हवा में उन्होंने अपने हाथ फेंके।

"और यह आप कहते हैं, पावेल? आप, जिन्हें मैं इस तरह के विवाहों का सदा कट्टर विरोधी मानता रहा हूं। यह आप कहते हैं? सच पूछो तो आपके प्रति सम्मान की भावना का ख़याल करके ही मैंने वह नहीं किया जिसे आपने ठीक ही मेरा कर्तव्य कहा है।"

"तब तो मेरा ऐसा सम्मान करके तुमने ग़लती की," निराशापूर्ण मुसकान के साथ पावेल पेत्रोविच ने कहा, "अब तो मुझे भी कुछ ऐसा मालूम होने लगा है कि बज़ारोव ने आभिजात्य का जो आरोप मुझपर लगाया था, वह सही था। नहीं, भाई, नहीं, अब समय आ गया है कि दिखावे और सभा-समाज की चिन्ता को विदा कर दिया जाए। हम बूढ़े और निरीह जीव हैं। समय है कि अब दुनियावी टीमटाम को उतार फेंके। असल बात यह है कि अपना कर्तव्य निबाहना शुरू कर दें, जैसा कि तुम कहते हो। और कोई अचरज नहीं कि इसमें हमारे सुख के दिन भी छिपे हों।"

आलिंगन करने के लिए निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की ओर लपके।

"आपने तो पूर्णतया मेरी आंखें खोल दीं," वह चहक उठे, "मैंने हमेशा ही आपको दुनिया में सबसे दयावान और सबसे चतुर आदमी कहा है, और अब मैं देखता हूं कि आप जितने उदार हैं, उतने ही समझदार भी।"

"अरे, बस बस, जरा संभल के," पावेल पेत्रोविच ने टोका, "अपने इस समझदार भाई की टांग न कचर डालना जो क़रीब पचास साल की आयु में अधकचरे झंडाबरदार की भांति द्वन्द्व-युद्ध में कूद पड़ा। हां तो इस मामले को अब तय समझा जाए : फ़ेनिचका ... belle-soeur * होगी।"

"प्यारे पावेल, लेकिन आरकादी क्या कहेगा?"

"आरकादी? क्यों वह खुशी के मारे छलछला उठेगा! माना कि विवाह का उसके सिद्धान्तों में स्थान नही है, लेकिन समता-समानता की उसकी भावना तो इसपर गर्व का अनुभव करेगी। और सच, सोचकर देखो तो हमारी इस उन्नीसवीं शती में वर्ग-जाति है भी क्या चीज़!" फ़्रेंच भाषा का पुट मिलाते हुए उन्होंने कहा।

"ओह पावेल, पावेल, एक बार और गले लग लेने दो मुझे। घबराओ नही, मैं सावधान रहूंगा।"

दोनों भाई आलिंगन में गुथ गए।

"कहो, क्या ख़याल है, अगर फ़ेनिचका को अभी इस निर्णय की सूचना दे दी जाए तो?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"ऐसी जल्दी क्या है?" निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "अरे हां, कहीं ऐसा तो नहीं कि आपने उससे इस बारे में कुछ कहा-सुना हो?"

"भई ख़ूब!" पावेल पेत्रोविच ने उद्‌गार प्रकट किया, "भला उससे क्या कहना-सुनना था?"

"यह अच्छा किया। पहले अच्छे हो जाओ, यह ऐसी चीज़ नहीं जो फिर हाथ न आए। इसपर ख़ूब अच्छी तरह से विचार करना और सोचना-समझना ज़रूरी है..."

---

* बहू। (फ़्रेंच) — सं०

"लेकिन तय तो तुम कर चुके हो, कर चुके हो न?"

"बेशक, तय कर चुका हूं, और इसके लिए आपका तहे-दिल से शुक्रगुज़ार हूं। अब मै चलता हूं। आपके लिए विश्राम करना ज़रूरी है। ज़्यादा आवेग और विह्वलता आपके लिए अच्छी नहीं ... इसपर फिर बातें करेगे। अब सो जाइए, मेरे प्यारे भाई, खुदा आपको खूब भला-चंगा बनाए।"

"यह शुक्रिया किस लिए?" अकेला रह जाने पर पावेल पेत्रोविच ने सोचा। "मानो यह उसपर निर्भर न हो! और जहां तक मेरा सम्बन्ध है, विवाह के होते ही मै यहां से कही दूर चल दूंगा–ड्रेस्डन, या फ़्लोरेन्स, और जीवन के अन्तिम क्षणों तक वहीं बना रहूंगा।"

पावेल पेत्रोविच ने माथे पर यू-द-कोलोन के छपके दिए और आंखें मूंद ली। दिन की रोशनी से आलोकित उनका क्षीण पीला चेहरा शव के सिर की भांति तकिए पर टिका था... और सचमुच वह एक जीवित लाश थे भी!

२५

निकोलस्कोये के बगीचे में कात्या और आरकादी एक ऊंचे ऐश वृक्ष की छांव में एक हरी-भरी मेंड़ पर बैठे थे। उनके पांव के पास उनका शिकारी कुत्ता फ़िफ़ी पसरा था। उसका लम्बा बदन, बहुत ही कमनीय ढंग से कमान की भांति बल खाए था–बिल्कुल 'खरहे की मुद्रा' में जैसा कि शिकारी लोग कहते हैं। कात्या और आरकादी दोनों चुप थे। आरकादी अपने हाथ में एक अधखुली किताब थामे था जबकि कात्या टोकरी में बाक़ी बचे रोटियों के चूरे को चुन चुनकर गौरैयों के एक छोटे से परिवार के सामने फेंक रही थी। गौरैयां भी, अपनी सहज भीरु

ढिठाई के साथ, उसके पांव के पास ही फुदक और चहचहा रही थीं। हल्की हवा के झोके ऐश वृक्ष के पत्तों को सरसरा रहे थे और थिरकते प्रकाश के स्वर्ण-पीत धब्बे छांवदार पथ तथा फिफ़ी की कत्थई पीठ पर नाच रहे थ। आरकादी और कात्या गहरी छांव में लिपटे थे और प्रकाश की एकाध रेखा जब तब कात्या के बालों को चमका जाती थी। दोनों में से बोल एक भी नही रहा था; लेकिन उनकी यह ख़ामोशी और जिस प्रकार वे पास पास बैठे थे, विश्वासपूर्ण घनिष्ठता के ही सूचक थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे एक दूसरे के अस्तित्व से बेख़बर हों, और फिर भी मन ही मन इस समीपता से प्रसन्न हों। उनके चेहरे भी—पिछली बार जब हमने उन्हें देखा था तब से—बदल गए थे। आरकादी अब पहले से ज़्यादा शान्त और स्थिर नज़र आ रहा था, और कात्या पहले से अधिक प्रफुल्ल तथा अधिक साहसपूर्ण।

"क्या तुम ऐसा नहीं सोचतीं, कात्या," आरकादी ने कहना शुरू किया, "कि ऐश वृक्ष के लिए रूसी शब्द बहुत ही फबता है। कोई भी अन्य वृक्ष इतने अछूते अन्दाज़ और सुस्पष्टता के साथ हवा में सिर ऊंचा किए नज़र नहीं आता।*"

कात्या ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और बुदबुदा उठी: "हां।" और आरकादी ने सोचा: "कविता बघारने के लिए इसने मुझे झिड़का नहीं।"

"हाइने मुझे पसन्द नहीं," आरकादी के हाथवाली किताब की ओर अपनी आंखों से संकेत करते हुए कात्या ने घोषणा की। "न उस समय

---

* ऐश वृक्ष को रूसी में 'यासेन' कहते हैं जिसका दूसरा अर्थ है: स्पष्ट, उजला।—अनु०

जब वह हंसता है, और न तब जब वह रोता है। जब वह किसी सोच में डूबा और उदास होता है, तभी मुझे अच्छा लगता है।"

"और मुझे तब अच्छा लगता है जब वह हंसता है," आरकादी ने अपनी राय दी।

"व्यंग करने की तुम्हारी पुरानी आदत का असर अभी तक नहीं गया। इस समय वही प्रकट हो रहा है..." ("पुरानी आदत का असर!" आरकादी ने सोचा, "काश, बजारोव यह सुन पाता।") "जरा धीरज रखो, तुम्हारी बाक़ायदा कायापलट हो जाएगी।"

"कौन करेगा मेरी कायापलट? – तुम?"

"कौन क्या – मेरी बहिन, पोरफ़िरी प्लातोनिच जिसके साथ तुम अब नही झगड़ते, और मेरी मौसी जिसके साथ तुम उस दिन गिरजा गए थे।"

"लेकिन मैं इन्कार भी तो नही कर सकता था, नहीं कर सकता था न? और जहां तक अन्ना सेर्गेयेवना का संबंध है, तुम्हे याद होगा कि अनेक बातो में वह येवगेनी से सहमत थी।"

"मेरी बहिन उन दिनों उसके असर में थीं, जैसे कि तुम थे।"

"जैसे कि मैं था? तो क्या मै अब तुम्हें उसके प्रभाव से मुक्त मालूम होता हूं?"

कात्या चुप रही।

"मैं जानता हूं," आरकादी ने फिर कहा, "तुमने कभी उसे पसन्द नहीं किया।"

"मैं उसके भले-बुरे होने की परख नहीं कर सकती।"

"और क्या तुम जानती हो, कातेरीना सेर्गेयेवना? जब भी तुम्हारे मुंह से मैंने यह उत्तर सुना, मुझे विश्वास नही हुआ ... ऐसा

एक भी व्यक्ति नही है जिसपर हममें से जो भी चाहे अपनी राय न दे सके। यह तो निरा बहाना बनाना है।"

"अच्छा तो सुनो, मै तुम्हें बताती हूं कि वह ... हां, यह तो मैं ठीक से नही कह सकती कि उसे नापसंद करती हूं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे वह मेरी प्रकृति से भिन्न जाति का जीव है और मैं उसकी प्रकृति से भिन्न जाति की जीव हूं ... और वह तुम्हारी प्रकृति से भी भिन्न है।"

"सो कैसे?"

"किन शब्दों में मै इसे व्यक्त करूं—वह बनैला है और हम-तुम पालतू।"

"मैं भी पालतू हूं?"

कात्या ने सिर हिलाया।

आरकादी ने अपना कान ख़रोंचा।

"देखो, कातेरीना सेर्गेयेवना, ऐसा कहकर क्या तुम मेरी भावनाओं को ठेस नही पहुंचातीं?"

"क्यों, क्या तुम बनैला बनना पसन्द करोगे?"

"बनैला—नही; लेकिन सबल और प्राणवान—अवश्य।"

"यह ऐसी चीज नहीं जिसे तुम चाह सको... लेकिन तुम्हारा वह मित्र—वह इसे चाहता नहीं, मगर फिर भी इससे लैस है।"

"हुं:! सो तुम्हारा ख़याल है कि अन्ना सेर्गेयेवना पर उसका काफ़ी ज़बर्दस्त असर था?"

"हां," कात्या ने कहा और फिर दबे स्वर में जोड़ा: "लेकिन अधिक दिनों तक कोई भी उनपर हावी नहीं रह सकता।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"वह बहुत ही गर्वीली है... नहीं, सो नहीं... वह अपनी आज़ादी को सबसे ज़्यादा महत्व देती हैं।"

"कौन ऐसा है जो नही देता?" आरकादी ने पूछा और उसी क्षण उसके मस्तिष्क में कौधा: "बेकार, बिल्कुल बेकार!" कात्या के मन ने भी यही कहा: "बेकार, बिल्कुल बेकार!" युवा लोग जो अक्सर मिलते और मित्रतापूर्ण आदान-प्रदान करते है, उनके मस्तिष्क भी बराबर एक-से विचारों में रमने लगते हैं।

आरकादी मुसकराया और कात्या के थोड़ा और निकट खिसकते हुए फुसफुसाया:

"देखो, मुकरना नहीं। साफ़ साफ़ कह दो कि तुम उससे डरती हो?"

"किससे?"

"उसी से," आरकादी ने अर्थभरे अन्दाज़ में दोहराया।

"और तुम..?" कात्या ने पलटकर पूछा।

"मैं भी, लेकिन ध्यान रखना, मैंने कहा, मै भी।"

कात्या ने अपनी तर्जनी उंगली हिलाई।

"अजीब बात करते हो," वह कहती गई, "बहिन जितनी प्रसन्न नज़र से तुम्हें अब देखती हैं, उतना पहले कभी नहीं देखती थी,–पहली बार जब तुम यहां आए थे तब से कहीं ज़्यादा!"

"ऐसा?"

"क्या तुम्हें ऐसा नज़र नहीं आता? क्या तुम इससे खुश नहीं हो?"

आरकादी ने सोचा; फिर बोला:

"ऐसा मैंने क्या किया है जो अन्ना सेर्गेयेवना मुझपर इतनी प्रसन्न हैं? इसका कारण क्या वास्तव में तुम्हारी मां के वे पत्र नहीं है जो मैंने उन्हें लाकर दिए है? क्यों, ठीक है न?"

"हां, इसी लिए, साथ ही अन्य कारणो के लिए भी जो मै तुम्हे नही बताऊंगी।"

"क्यों?"

"नही बताऊंगी, बस!"

"ओह, समझा—तुम बड़ी जिद्दिन हो!"

"हां, हूं।"

"और तेज़ नजरवाली भी।"

कात्या ने कनखियों से उसकी ओर देखा।

"क्यों, क्या तुम इससे झुंझला उठे हो? आखिर तुम सोच क्या रहे हो?"

"मैं सोच रहा हूं—इतनी पैनी नजर तुमने कहां से पाई? तुमने, जो इतनी भीरु हो, जो इतनी अविश्वासपूर्ण हो और सबसे इतना कतराती हो..."

"बहुत कुछ मुझे अपने ही भरोसे छोड़ दिया गया है। सो जाने-अनजाने मैं कुछ अपने में ही रमना—सोच-विचार करना—सीख गई हूं। लेकिन क्या मैं सबसे कतराती हूं?"

आरकादी ने कृतज्ञ नज़र से उसकी ओर देखा।

"यह सब तो ठीक," उसने कहना शुरू किया, "लेकिन तुम जैसी स्थिति के लोग—मतलब यह कि तुम जैसे सम्पन्न लोग—बिरले ही इस प्रतिभा के धनी होते हैं। राजा-महाराजाओं की भांति सत्य उनके पास भी आसानी से नही पहुंच पाता।"

"लेकिन मैं सम्पन्न कहां हूं?"

आरकादी सकपका गया। एकाएक उसका आशय पकड़ नहीं सका। "बेशक," उसे जैसे चेत हुआ, "जागीर तो सारी इसकी बहिन की है," और यह विचार उसे कुछ बुरा नहीं मालूम हुआ।

"कितने बढ़िया, नफीस ढंग से तुम यह कह गई," वह बुदबुदाया।

"सो कैसे?"

"बहुत ही नफ़ासत से कहा तुमने। बड़ी सरलता से, बिना किसी लाज या बनावट का सहारा लिए। और सुनो, मुझे ऐसा लगता है कि जो लोग यह जानते और मानते है कि वे गरीब हैं, उनकी भावना में एक अपना निरालापन–एक ख़ास किस्म का दम्भ–घर कर जाता है।"

"ऐसी किसी चीज का मैंने कभी अनुभव नही किया, और इसके लिए मै अपनी बहिन की कृतज्ञ हूं। मैंने तो यों ही, सो भी बात चलने पर, अपनी स्थिति का उल्लेख कर दिया।"

"सो तो ठीक। लेकिन तुम्हें यह भी मान लेना चाहिए कि तुम में उस दम्भ के भी कुछ कण मौजूद है जिसका कि मै अभी ज़िक्र कर रहा था।"

"जैसे?"

"जैसे यह कि तुम–इस बात के लिए माफ़ करना–किसी धनी से ब्याह नही करोगी, नही करोगी न?"

"अगर मै उसे अत्यधिक प्यार करती हूं... लेकिन नही, मेरा खयाल है कि तब भी मैं उससे विवाह नही करूंगी।"

"ओह, देखा तुमने!" आरकादी ने हुमककर कहा और फिर कुछ रुककर बोला: "तुम उससे विवाह क्यों नहीं करोगी?"

"इसलिए कि हीन दुलहिन का राग सुन चुकी हूं..."

"शायद तुम अपना हाथ सख्त रखना चाहती हो, या..."

"ओह, नहीं! आख़िर किस लिए? उल्टे, मै समर्पण के लिए तैयार हूं। केवल असमानता असह्य है। समर्पण करते हुए आदमी अपना

आत्मसम्मान बनाए रह सकता है। यह बात मेरी समझ मे आती है। यह सुख है। लेकिन गुलामी का जीवन... नहीं, बाज़ आई मैं ऐसे जीवन से! "

"बाज आई ऐसे जीवन से!" आरकादी ने प्रतिध्वनि की। "क्यों न हो," वह कहता गया, "प्रत्यक्षत: तुम्हारी रगो में भी वही खून दौड़ रहा है जो अन्ना सेर्गेयेवना की। तुम भी उतनी ही आजाद हो जितनी कि वह। केवल अन्तर इतना ही है कि तुम उससे ज़्यादा घुन्नी हो। मेरा पक्का विश्वास है कि तुम, कभी भी, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में पहल नही करोगी, चाहे वे कितनी ही प्रबल और पवित्र क्यों न हों..."

"इसके सिवा अन्यथा क्योंकर हो सकता था?" कात्या ने पूछा।

"तुम उतनी ही चतुर भी हो। चरित्र की दृढ़ता भी, अगर ज़्यादा नहीं तो, तुममें उतनी ही है जितनी कि उसमें..."

"कृपा कर मेरी तुलना मेरी बहिन से न करो," कात्या ने तुरत टोका। "इस तरह तुम मुझे भारी टोटे में डाल देते हो। ऐसा मालूम होता कि तुम्हें यह याद नही रहा कि मेरी बहिन सुन्दर हैं, चतुर हैं... और कम से कम तुम्हें ऐसी बातें मुंह से नहीं निकालनी चाहिए, सो भी इतना गम्भीर चेहरा बनाकर।"

"'कम से कम तुम्हें'—भला, क्या मतलब है इसका? और यह तुमने कैसे जाना कि मै मज़ाक़ कर रहा हूं?"

"बेशक, तुम मज़ाक़ कर रहे हो!"

"क्या तुम ऐसा सोचती हो? लेकिन जो कुछ मै कह रहा हूं, अगर वही मेरा विश्वास भी हो तो? अगर मैं यह समझता हूं कि अपनी बात को काफ़ी ज़ोरदार ढंग से मै व्यक्त नहीं कर सका, जैसा कि मुझे करना चाहिए था?"

"तुम्हे समझना मेरे बूते से बाहर है।"

"क्या सचमुच? तो यह कहो कि तुम्हारी तेज नजर की तारीफ़ में मै कुछ जरूरत से ज्यादा आगे बढ़ गया था!"

"मतलब?"

आरकादी ने कोई जवाब नहीं दिया और उसने दूसरी ओर मुह फेर लिया। कात्या ने कुछ और चूरे के लिए डलिया को टटोला और जो मिला उसे गौरैयों के लिए फेंक दिया। लेकिन उसके हाथ की हरकत कुछ इतनी तेज़ी से हुई थी कि चुगने के बजाय गौरैयां दूर उड़ गईं।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," सहसा आरकादी ने कहा, "शायद तुम्हारे लिए यह महत्व की बात न हो, मगर मै तुम्हें इस बात का भान कराना चाहता हूं कि तुम्हारी बहिन हो या कोई और, इस दुनिया में तुमसे बढ़कर मेरे लिए अन्य कोई नही है।"

वह उठ खड़ा हुआ और तेज़ डगों से वहां से चल दिया, मानो इस विस्फोट ने खुद उसे ही चौका दिया हो।

कात्या के दोनों हाथ, मय डलिया के, उसकी गोद में आ गिरे, और वह सिर झुकाए देर तक आरकादी के ओझल होते हुए आकार को देखती रही। धीरे धीरे उसके गाल लाली से चुनचुना उठे। उसके होंठ अभी भी मुसकराहट से सूने थे और उसकी काली आंखों में एक हैरानी छाई थी, साथ ही कुछ और भी, एक ऐसी भावना जो अभी तक संज्ञाविहीन थी।

"अरे, तुम अकेली हो?" पास ही अन्ना सेर्गेयेवना की आवाज़ सुनाई दी। "मैं तो यह समझे थी कि तुम आरकादी के साथ बग़ीचे में गई हो।"

कात्या ने फुरसत के भाव से नज़र उठाकर अपनी बहिन की ओर देखा (बहुत ही सुचारु, बल्कि कहिए कि उत्कृष्ट ढंग से सजी वह

पगडंडी पर खड़ी थी और अपनी खुली हुई छतरी की नोक से फ़िफ़ी के कानों को गुदगुदा रही थी) और उतने ही फुरसत के भाव से बोली:

"हां, मैं अकेली ही हूं।"

"ओह, समझी!" लघु हंसी हंसते हुए बहन ने चुटकी ली। "तो यह कहो कि वह अपने कमरे में चला गया है, क्यों?"

"हां।"

"क्या तुम दोनों मिलकर पढ़ रहे थे?"

"हां।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने कात्या की ठोड़ी पकड़कर उसका सिर ऊंचा किया।

"कही ऐसा तो नही कि दोनों लड़ पड़े हो?"

"नहीं," कात्या ने कहा और चुपचाप अपनी बहिन का हाथ हटा दिया।

"कितने भारी अन्दाज में जवाब देती हो तुम! मैंने सोचा कि वह यहां मिल जाएगा और कुछ देर साथ टहलने के लिए उससे मैं कहूंगी। जब देखो तब इसके लिए पीछे पड़ा रहता था। और सुनो, शहर से तुम्हारे लिए एक जोड़ी जूता मंगाया है। जाओ और पहिनकर देखो कि ठीक है या नहीं। कल मेरी नजर गई तो देखा कि तुम्हारे जूते फट चले हैं। जाने तुम्हारी क्या आदत है कि तुम अपना काफ़ी ध्यान नहीं रखतीं—सो भी तब जब तुम्हारे छोटे छोटे पांव इतने लुभावने हैं। तुम्हारे हाथ भी बहुत प्यारे हैं ... गोकि कुछ बड़े ज़रूर हैं। सो तुम्हें अपने पांवों पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए। लेकिन किया क्या जाए, रीझना-रिझाना तो तुम जानती ही नहीं।"

अन्ना सेर्गेयेवना पगडंडी पर आगे बढ़ गई। उसका सुन्दर गाऊन सरसराहट की धीमी ध्वनि कर रहा था। कात्या भी उठ खड़ी हुई और

हाइने की पुस्तक हाथ में लिए वहां से चल दी – लेकिन जूते पहनकर देखने के लिए नही।

"छोटे छोटे लुभावने पाव!" धूप से झुलसती तिदरी की पत्थर की सीढ़ियों पर धीमे और हल्के डग रखते समय वह सोच रही थी। "छोटे छोटे लुभावने पांव यही कहा न तुमने ... तो सुनो, इन्ही पांवों पर वह पसरा हुआ नज़र आएगा!"

वह तुरत लाज से कट गई और लपककर एक ही सांस में बाक़ी पैंड़ियों को लांघ गई।

आरकादी गलियारे को पार कर अपने कमरे की ओर जा रहा था। तभी भंडारी भागता हुआ उसके पास पहुंचा और बताया कि बज़ारोव आपके कमरे में बैठे आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।

"येवगेनी!" त्रस्त-सी मुद्रा में आरकादी बुदबुदाया, "क्या वह काफ़ी देर से आए हुए हैं?"

"नही मालिक, अभी अभी आए है। बोले कि अन्ना सेर्गेयेवना को उनके आने की सूचना न दी जाए, बल्कि सीधे आपके कमरे में उन्हें पहुंचा दिया जाए।"

"कौन जाने, घर पर कोई गड़बड़ हो गई हो? आरकादी ने सोचा और भागकर जीना चढ़ते हुए एक ही झटके में दरवाज़ा खोल डाला। बज़ारोव पर नज़र पड़ते ही वह तुरत आश्वस्त हो गया, हालांकि और अधिक पारखी आंखों से यह छिपा नहीं रहता कि इस अप्रत्याशित आगन्तुक के पहले से कुछ दुबले लेकिन अभी भी चेतन – स्फूर्तिवान – आकार-प्रकार में आन्तरिक बेचैनी के चिन्ह मौजूद हैं। कंधों पर अपना धूल-धूसरित कोट डाले और सिर पर टोपी लगाए वह खिड़की की ओटक पर बैठा था, और वह उस समय भी वैसे ही बैठा रहा जब आरकादी शोर मचाता उसके गले से लिपट गया।

"भई वाह, तुमने तो चकित कर दिया! कहो, कैसे आए?" आरकादी बार बार दोहरा रहा था और उस आदमी की भांति इधर-से-उधर उचक रहा था जिसे न केवल अपने खुश होने का विश्वास है बल्कि जो अपनी इस खुशी का प्रदर्शन भी करना चाहता है। "आशा है कि घर पर सब ठीक-ठाक है और सब भले-चंगे हैं, क्यों?"

"ठीक-ठाक तो सब है, लेकिन भले-चंगे सब नहीं हैं," बजारोव ने कहा। "लेकिन यह चहकना छोड़ो, क्वास पेय लाने के लिए किसी को रवाना करो, यहां आकर बैठो और गिने-चुने किन्तु—जैसी कि आशा है—सटीक शब्दों में जो कुछ मैं कहने जा रहा हूं, उसे सुनो।"

आरकादी ठंडा पड़ गया, और बज़ारोव ने पावेल पेत्रोविच के साथ अपने द्वन्द्व-युद्ध का क़िस्सा उसे बताया। आरकादी स्तब्ध ही नहीं, बल्कि त्रस्त भी हो उठा। लेकिन उसने अपने भावों को प्रकट नहीं होने दिया। इसी में उसे बुद्धिमानी दिखाई दी। उसने केवल इतना ही पूछा कि ताऊजी का घाव सचमुच में खतरनाक तो नहीं है, और यह मालूम होने पर कि घाव दिलचस्प जरूर है, लेकिन डाक्टरी दृष्टिकोण से नहीं, उसके होंठों पर एक वक्र मुस्कान फैल गई, और हृदय एक अज्ञात भय और शर्म से घिर गया। बज़ारोव से उसके मस्तिष्क की स्थिति छिपी न रही।

"हां, मेरे प्यारे साथी," उसने कहा, "सामन्तों के साथ रहने का ऐसा ही नतीजा होता है। तुम खुद भी सामन्त बन जाओगे—तुम्हें पता भी नहीं चलेगा कि क्या से क्या हो गया—और एक दिन, अनायास ही, राजा-बहादुरों के दंगलों में मूंछों को पैनाते नज़र आओगे। सो अपना बंधना-बोरिया समेट घर का रास्ता नापने का मैंने तय किया," अपनी कहानी को समेटते हुए बज़ारोव ने कहा, "और रास्ते में यहां आ उतरा... बेकार झूठ बोलना अगर मूर्खता न समझता तो कहता—

तुम्हें यह सब बताने के लिए ही यहां आया। नही, यहां आने की यह हरकत... शैतान ही जानता है कि मैंने क्यों की। देखो न, यह अच्छा ही है अगर आदमी, कभी कभी, आजाद होने के लिए इतना तिलमिला उठे कि अपना टेंटुआ पकड़कर खेत की मूली की भांति अपने आपको जड़ से उखाड़ फेंके : मेरी यह नयी हरकत ठीक ऐसी ही है... लेकिन जिस चीज़ से मैंने नाता तोड़ा है उसे– उस ज़मीन को जिसमें मै जमा हुआ था–चलते-चलाते एक बार फिर देखने के लिए मन ललक उठा।"

"मै विश्वास करता हूं कि जो कुछ तुमने कहा उसका मुझसे सम्बन्ध नही है," आरकादी ने विचलित भाव से कहा, "मै भरोसा करता हूं कि तुम मुझसे अलग होने की बात नही सोच रहे हो?"

बज़ारोव ने उसे गहरी, क़रीब क़रीब मर्मभेदी, नज़र से देखा।

"ओह, तो क्या सचमुच तुम्हें इससे इतना त्रास होगा? मुझे तो लगता है कि तुम पहले ही मुझसे अलग हो चुके हो। तुम कुछ इतने जिन्दादिली और ताज़गी में पगे हो जैसे डेजी का फूल... अन्ना सेर्गेयेवना के साथ निश्चय ही तुम्हारी ठाठ से गुजर रही होगी।"

"ठाठ से गुज़र रही होगी, मतलब?"

"बस, रहने दो। क्या तुम, मेरे छौने, उसके लिए ही यहां नही आए? और हां, तुम्हारे रविवारी स्कूलों का क्या हाल है? बोलो, क्या तुम उससे प्रेम नही करते? या मामला यहां तक पहुंच चुका है कि तुम विनम्रता का प्रदर्शन कर सकते हो?"

"येवगेनी, तुम जानते हो कि मैंने कभी तुमसे दुराव नहीं रखा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं, ख़ुदा को साक्षी करके कहता हूं, कि तुम्हारा ख़याल ग़लत है।"

"हुं.! यह भी एक नयी बोली है," बजारोव ने दबे स्वर में कहा, "लेकिन तुम्हे इस तरह ओर-छोर नापने की जरूरत नही। सच तो यह है कि मुझे इसमे जरा भी दिलचस्पी नही। कोई रोमान्सवादी होता तो कहता: लगता है कि अब अलग अलग रास्ता पकड़ने का समय आ गया। लेकिन मैं केवल इतना भर कहूंगा कि हम एक-दूसरे से आजिज आ चुके है।"

"येवगेनी ..."

"मेरे प्यारे मुनुआ, ऐसा कहने में कोई हर्ज नही है। ज़रा सोचो तो, यह दुनिया ऐसी चीजों से कितनी भरी है जिनसे लोग आजिज आ जाते है। हां तो अब अलविदा की रस्म पूरी कर ली जाए। जब से यहां पांव रखा है, जाने कैसी एक मनहूस-सी भावना का मैं अनुभव कर रहा हूं, मानो कलूगा के गवर्नर की पत्नी के नाम गोगोल के पत्रों की दलदल में मैं धंसा हूं। जो हो, मैं कोचवान से कह आया था कि घोड़ों को खोले नहीं, उन्हें तैयार रखे।"

"ओह नहीं, यह नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"अपनी मैं कुछ नहीं कहूंगा, लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना के प्रति यह बेहद बेअदबी होगी, जो निश्चय ही तुमसे मिलने की चाह अपने हृदय में संजोए हैं।"

"तुम्हारा यह खयाल ग़लत है, समझे!"

"उल्टे, मेरी समझ में बिल्कुल ठीक है," आरकादी ने पलटकर जवाब दिया। "बेकार नाटक न करो। और सच पूछो तो, क्या तुम उसकी ख़ातिर ही यहां नहीं आए?"

"हो सकता है। लेकिन तुम्हारा खयाल फिर भी ग़लत है।"

ज़ो हो, आरकादी की बात ठीक थी। अन्ना सेर्गेयेवना बज़ारोव

से मिलना चाहती थी और भंडारी के जरिये उसने उसे बुला भेजा। जाने से पहले बज़ारोव ने कपड़े बदले। पता चला कि उसने अपना नया सूट सबसे ऊपर ही रख छोड़ा था ताकि उसे आसानी से निकाला जा सके।

ओदिनत्सोवा ने उसका स्वागत किया—उस कमरे में नही जहां उसने इतने अचानक रूप में अपने प्रेम का इजहार किया था, बल्कि ड्राइंगरूम में। उसने कृपापूर्ण अन्दाज मे अपनी उंगलियों के छोर उसकी ओर बढाए, लेकिन उसके चेहरे पर कशमकश का एक भाव छाया था।

"अन्ना सेर्गेयेवना," बजारोव ने अविलम्ब कहा, "सबसे पहले एक बात का मै तुम्हें यक़ीन दिलाना चाहता हूं। तुम्हारे सामने इस मर्त्यलोक का एक ऐसा जीव मौजूद है जो अर्से से अपने होश में आ चुका है और उम्मीद करता है कि उसकी मूर्खता भूली जा चुकी होगी। मैं अब एक मुद्दत के लिए विदा हो रहा हूं, और बावजूद इसके कि मैं मोम का पुतला नही हूं, यह तुम भी मानोगी कि हृदय में एक ऐसी खटक लेकर जाना कोई सुखद बात नहीं होगी कि एक घिनौनी स्मृति मैं तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूं।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने एक गहरी सांस खींची—उस आदमी की भांति जो एक ऊंची पहाड़ी पर चढ़ता हुआ उसकी चोटी पर पहुंच गया हो, और उसका चेहरा मुसकानों की बन्दनवार से खिल गया। उसने फिर बजारोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया और ख़ुद अपने हाथ की दाब से उसके हाथ की दाब का जवाब दिया।

"गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नही," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "इसलिए और भी अधिक—अगर सच पूछो तो—इस मामले में मै ख़ुद भी कुछ बेदाग़ नहीं हूं, गुनाह मैंने भी किया, अगर

रीझने-रिझाने से नही तो किसी और ढंग से। सो, जैसे हम पहले मित्र थे, वैसे ही बने रहे। वह सब एक सपना था, क्यों, था न? और सपनों को कोई याद नही रखता।"

"बेशक, कोई याद नही रखता। और फिर प्रेम... प्रेम एक ढकोसला है।"

"क्या सचमुच? यह जानकर मुझे बेहद खुशी हुई।"

सो अन्ना सेर्गेयेवना ने इस प्रकार अपने आपको व्यक्त किया, और इस प्रकार बज़ारोव ने अपने आपको व्यक्त किया। दोनों ने सोचा वे सच बोल रहे हैं। लेकिन क्या वह सच था, पूर्ण सच था, वह जो उन्होंने कहा? यह वे खुद भी नही जानते, और यह लेखक भी इस मामले में उतना अनजान है। लेकिन बातों में वे कुछ इस तरह रमे थे जैसे वे एक-दूसरे की बातों को एकदम सच मान रहे हो।

अन्य बातों के साथ साथ अन्ना सेर्गेयेवना ने यह भी बजारोव से पूछा कि किरसानोव परिवार के साथ किस प्रकार उसका समय गुज़रा। पावेल पेत्रोविच के साथ द्वन्द्व की बात उसके होंठों तक आई ही थी कि उसने अपने आपको रोक लिया, यह सोचकर कि कही वह यह न समझे कि वह बन रहा है। सो उसने जवाब दिया कि वह हर घड़ी अपने काम से ही वास्ता रखता था।

"और मैं," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "जाने क्यों, उदासी के भूत ने मुझे कुछ इस तरह दबोचा कि... ओह, ज़रा सोचो तो... कि मैं विदेश तक जाने की बात सोचने लगी... फिर वह उतर गया। तुम्हारे मित्र आरकादी निकोलायेविच आ गए, और फिर वही पुराना चरखा चलने लगा, अपना वास्तविक चोला मैंने धारण कर लिया।"

"वास्तविक चोला,—क्या मैं जान सकता हूं कि वह क्या है?"

"चाची, कुंवारी कन्या की अभिभाविका, मां–जो भी चाहें, कह लें। लेकिन यह तो बताओ, तुम जानो, आरकादी निकोलायेविच के साथ तुम्हारी मित्रता को मैं पहले कुछ ठीक से समझ नही सकी थी। मैं उसे अपेक्षाकृत नगण्य ख़याल करती थी। लेकिन अब उसे अच्छी तरह जानने का मौक़ा मिला, और मैंने देखा कि वह चतुर है ..और सब से बड़ी बात यह कि वह युवा है... तुम्हारी और मेरी भांति नही, येवगेनी वसीलियेविच!"

"क्या वह अब भी तुमसे शरमाता है?" बजारोव ने पूछा।

"अरे, तो पहले क्या वह..." कहते कहते बीच में ही अन्ना सेर्गेयेवना रुक गई, और क्षण भर कुछ सोचने के बाद बोली: "अब वह कुछ अधिक आश्वस्त बन गया है, मुझसे बातें करता और बतियाता है। पहले वह कतराता था। साथ ही यह भी सच है कि मैंने कभी उसका संग नही चाहा। कात्या और वह–दोनों में खूब घुटती है।"

बज़ारोव कुछ खीज-सा उठा। मन-ही-मन सोचा: "नारी के छल-कपट का क्या कभी अन्त नही होता?"

"तुमने कहा कि वह तुमसे कतराता था," उसके स्वर में ताने का कुछ पुट था, "लेकिन यह बात शायद तुमसे छिपी न थी कि वह तुमसे प्रेम करता था।"

"क्या? तो क्या वह भी...?" अचानक अन्ना सेर्गेयेवना के मुंह से निकला।

"हां, वह भी," गम्भीर अन्दाज में सिर झुकाते हुए बज़ारोव ने दोहराया। "लेकिन क्या तुम कहना चाहती हो कि तुम्हें इसका पता नहीं था, और पहली बार ही यह समाचार तुम सुन रही हो?"

अन्ना सेर्गेयेवना ने अपनी आंखें झुका ली।

"तुम्हारा यह ख़याल गलत है, येवगेनी वसीलियेविच!"

"मै ऐसा नही समझता। लेकिन शायद मुझे इसे जुबान पर नही लाना चाहिए था।" फिर मन-ही-मन कहा: "मतलब यह कि तुम्हें अभी और अधिक कौशल से काम लेना सीखना होगा।"

"ज़िक्र क्यों नहीं करना चाहिए था? लेकिन मेरा खयाल है कि इस मामले में फिर एक क्षणिक प्रभाव को अत्यधिक महत्व दे रहे हो?"

"लेकिन छोड़ो, अन्ना सेर्गेयेवना, इस विषय को न छेड़ना ही अच्छा है।"

"सो क्यों?" उसन पलटकर कहा और इसके बाद ख़ुद ही दूसरा विषय छेड़ दिया। बावजूद इसके कि उसने उससे यह कहा था और अपने मन को भी यह समझा लिया था कि सारी बातें भुलाई जा चुकी हैं, बज़ारोव की संगत में उसे बड़ा अटपटा-सा लग रहा था। अत्यन्त निस्संग भाव से बतियाते और यहां तक कि हंसी-मज़ाक़ करते हुए भी वह एक अस्पष्ट-सी घबराहट का अनुभव कर रही थी। बहुत कुछ वैसे ही जैसे कि जहाज के यात्री निस्संग भाव से बतियाते और हंसते हैं– मानो वे समूची दुनिया को यह जताना चाहते हों कि ठोस धरती पर उनके पांव टिके हैं, लेकिन जैसे ही कोई हल्का-सा हिचकोला या किसी अनहोनी घटना का चिन्ह् नज़र आता है, उनके चेहरों पर अजीब हवाइयां-सी उड़ने लगती हैं और अनवरत ख़तरे से त्रस्त उनकी अनवरत चेतना निरावरण हो जाती है।

बज़ारोव के साथ अन्ना सेर्गेयेवना की बातचीत ज्यादा देर तक नहीं चली। वह जाने किस चिन्ता में खो गई, बेमन से जवाब देने लगी और अन्त में सुझाव दिया कि चलो, बैठक में चलें। वहां

राजकुमारी और कात्या मौजूद थी। "और आरकादी निकोलायेविच कहां है?" मालकिन ने पूछा और जब यह मालूम हुआ कि एक घंटे से भी अधिक समय से वह दिखाई नही दिया तो उसे बुलवा भेजा। उसे खोजने में कुछ वक़्त लग गया: वह बाग की गहराइयो में पहुंच गया था और दोनों हाथों पर ठोड़ी टेके किन्हीं विचारों मे डूबा था। उसके इन विचारों में गहराई और गम्भीरता चाहे जितनी हो, लेकिन निराशा की वेदना नहीं थी। वह जानता था कि अन्ना सेर्गेयेवना बज़ारोव के साथ अकेली बैठी है, फिर भी उसके हृदय मे ईर्ष्या की कोई चुभन नही थी, जैसे कि पहले हुआ करती थी। उसका चेहरा एक तरह के कोमल आलोक से निखरा था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह अचरज का, आन्तरिक सुख और एक तरह के संकल्प का, भाव व्यक्त कर रहा हो।

२६

नवीनताओं के प्रति स्वर्गीय ओदिनत्सोव में कोई मोह नहीं था, लेकिन "परिष्कृत रुचि के लिए थोड़ा खिलवाड़" कर लेने में वह कोई हर्ज नही समझते थे। इसी का यह नतीजा था कि उनके बग़ीचे में, ग्रीष्म-घर और ताल के बीच, रूसी ईंटों से बनी एक इमारत नज़र आने लगी थी जो देखने में यूनानी बारहदरी की भांति मालूम होती थी। इस बारहदरी या छतदार गलियारे की सबसे पिछली मुह-बंद दीवार में प्रतिमाएं सजाने के लिए छै आले बने थे। इन प्रतिमाओं को ओदिनत्सोव विदेशों से मंगानेवाले थे। प्रत्येक प्रतिमा निम्न भावों को व्यक्त करती–एकान्त, मौन, चिंतन, उदासी, लज्जा और भावुकता। इनमें से एक, मौन की देवी, अपनी एक उंगली होंठों पर रखे, आ भी गई थी और उसे उसके स्थान पर प्रतिष्ठित भी कर दिया गया

था। लेकिन उसी दिन गढ़ी के बच्चों ने उसकी नाक तोड़ डाली। एक स्थानीय प्लास्तरसाज ने ज़िम्मा लिया कि वह नयी नाक लगा देगा जो "पुरानी से दूनी बढ़िया होगी", लेकिन इस सबके बावजूद ओदिनत्सोव ने उस प्रतिमा को वहां से हटवाकर खलिहान-घर के एक कोने में रखवा दिया। सो बरसों से वह वहीं विराज और स्त्रियों के हृदयों में अंध-विश्वासी भीरुता का संचार कर रही थी। बारहदरी का अग्र भाग जाने कब से झाडियों ने तोप रखा था: केवल खम्बों के शिरोभाग—उनके मत्थे—इस झाड़-झंखाड़ से कुछ उभरे नज़र आते थे। बारहदरी के भीतर, दोपहर में भी, ठंडक रहती थी। अन्ना सेर्गेयेवना, उसी दिन से जब एक घसियल सांप पर उसकी नज़र पड़ी, इधर नहीं फटकती थी। लेकिन कात्या अक्सर यहां आती और प्रतिमा के लिए बने एक बड़े-से पत्थर के आसन पर बैठा करती। यहां की ठंडी छांव में बैठकर वह पढ़ती, काम करती या अपने आपको भावुकता में—चरम शान्ति के उन स्पन्दनों में—तिरने देती जिनसे हम सभी परिचित हैं। वे मोहक क्षण जिनमें हमें अपने चारों ओर तथा भीतर, निरन्तर तरंगित जीवन के तेज प्रवाह का नाम मात्र को ही भान होता है और एक मूक चेतना हमें अभिभूत कर लेती है।

बज़ारोव के आगमन के अगले दिन कात्या अपनी उसी प्रिय जगह पर बैठी थी। आरकादी इस समय भी उसके साथ था। ख़ुद उसने ही यहां, बारहदरी आने के लिए कात्या को तैयार किया था।

कलेवा से क़रीब एक घंटा पहले का समय था। ओस में भीगी सुबह दिन की उमस में बदल चली थी। आरकादी के चेहरे पर अब भी कल जैसा ही भाव छाया था। कात्या कुछ चिन्तित नज़र आती थी। नाश्ते के बाद उसकी बहिन उसे अध्ययनकक्ष में लिवा ले गई थी। थोड़ा थपकने और दुलराने के बाद—एक ऐसी चीज़ जिससे

कात्या हमेशा कुछ आशंकित-सी हो उठती थी–उसने सलाह दी कि आरकादी की ओर से ज़रा चौकस रहे, ख़ासतौर से अकेले में उससे ज़्यादा न घुले-मिले। साथ ही यह भी जता दिया कि मौसी और समूचे घर की नज़र इसपर पड़ चुकी है। इसके अलावा पिछली सांझ अन्ना सेर्गेयेवना की तबीयत कुछ बेहाल-सी थी, और वह खुद भी एक तरह की सचेत बेचैनी का–जैसे उसने कोई अपराध किया हो–अनुभव कर रही थी। सो आरकादी का अनुरोध तो उसने मान लिया, लेकिन मन ही मन निश्चय किया कि बस, आख़िरी बार वह उसके साथ जा रही है।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," एक प्रकार की संकोच युक्त स्थिरता के साथ उसने कहना शुरू किया, "एक ही छत के नीचे तुम्हारे संग रहने का जब से मुझे सुख नसीब हुआ है, जाने कितनी चीज़ों पर मैंने तुमसे बातें की हैं, लेकिन एक... अरे... एक... मसले को मैंने अब तक नहीं छुआ जो मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कल बातों ही बातों में तुमने मेरी कायापलट होने के बारे में कुछ कहा था," कात्या की नजरों की थाह लेते और साथ ही उनसे बचने का भी प्रयास करते हुए वह कहता गया। "सच ही मैं बहुत कुछ बदल गया हूं, और इसे तुमसे ज़्यादा भला और कौन जान सकता है–तुम जो कि मेरे इस परिवर्तन का वास्तव में आधार हो।"

"मैं ? मुझे ?" कात्या के मुह से निकला।

"अब मुझमें वह लड़कपन–निरा बछेड़ापन–नही रहा जो कि पहले था," आरकादी कहता गया। "आख़िर चौबीसवें वसन्त की ओर मैं बढ़ रहा हूं। अपने को उपयोगी बनाने की कामना मुझमें मौजूद है, सत्य की खोज में अपनी सारी शक्तियां मैं लगाना चाहता हूं। लेकिन मेरे आदर्शों का केन्द्र अब वह नहीं है जो पहले था। पहले की भांति अब

मैं नही भटकता। मै देखता हूं... वे आदर्श बहुत निकट है। अब तक मै खुद अपने से भी बेखबर था, ऐसे निवालों पर मुंह मारता था जिन्हें निगलना मेरे बूते से बाहर था... आखिर, हाल ही में, मेरी आखें खुली, एक ऐसी भावना का मेरे हृदय मे उदय हुआ... ओह, मैं अपने आपको ठीक स्पष्टता के साथ व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं, लेकिन आशा है कि तुम मुझे समझ रही होगी..."

कात्या ने कुछ नही कहा, लेकिन उसकी आंखें अब आरकादी की ओर नही देख रही थी।

"मै समझता हूं," पहले से भी अधिक विह्वलता के साथ उसने कहना शुरू किया और ऊपर, बर्च वृक्ष पर, चाफ़िंच पक्षी हुमक कर अपना गीत गाए जा रहा था, "मेरा विश्वास है कि हर ईमानदार आदमी का यह कर्तव्य है कि उनके... उन लोगों के... थोड़े में यह कि उन लोगों के साथ जिन्हें वह अपना समझता है... कतई छिपाव न रखे... सो मैं... मेरा इरादा है..."

और यहां तक आकर आरकादी की ज़बान जवाब दे गई; उसने झोंका-सा खाया, लड़खड़ाई और विराम लेने के लिए मजबूर हो गई। कात्या की आंखें अभी भी धरती पर जमी थी। लगता था जैसे उसकी समझ में यह नहीं आ रहा है कि वह कहना क्या चाहता है। सो वह अधर में लटकी मालूम होती थी।

"मुझे डर है कि कहीं तुम चौंक न उठो," साहस बटोरकर आरकादी ने फिर कहना शुरू किया, "इसलिए और भी अधिक कि एक हद तक यह भावना—ध्यान रहे—यह भावना... तुमसे सम्बन्ध रखती है। कल, तुम्हें याद होगा, तुमने मुझे झिड़का था कि मैं वाजिब संजीदगी से काम नहीं लेता," उस आदमी की भांति जो

दलदल में फंस गया है, जो अनुभव करता है कि हर डग पर वह गहरा धंसता जा रहा है लेकिन फिर भी दलदल से उबरने की आशा में ज़ोर लगाना नही छोड़ता, आरकादी कहता गया, "जो युवक है अक्सर उनपर... उन्हे अपना निशाना बनाकर... उस समय भी जबकि वे इसके हक़दार नही होते... इस झिड़की की बौछार की जाती है... अगर मुझमें कुछ और आत्मविश्वास होता .." (डूबते आदमी की भांति आरकादी जैसे छटपटा रहा था– "अरे, खुदा के लिए तुम क्यों नहीं मुझे सहारा देती!" लेकिन वह अभी भी कोई जुम्बिश नही कर रही थी।) "अगर मै सिर्फ़ यह आशा कर सकता. "

तभी अन्ना सेर्गेयेवना की सुस्पष्ट आवाज सुनाई दी:

"हां, अगर मुझे सिर्फ़ तुम्हारे मन पर–जो कुछ तुम जुबान पर लाने जा रहे हो उसपर–भरोसा होता!"

आरकादी के होंठों तक आए शब्द वही के वही मुरझाकर रह गए। कात्या भी पीली पड़ गई। बारहदरी को ओट में करनेवाली झाड़ियों के पास से एक पगडंडी गुज़रती थी। अन्ना सेर्गेयेवना उसपर टहल रही थी। साथ में बजारोव भी था। कात्या और आरकादी को वे दिखाई नही दिए, लेकिन उनका एक एक शब्द उन्हें सुनाई दिया। अन्ना के गाउन की सरसराहट, यहां तक कि उनके सांस लेने की आवाज़ तक सुनाई दे रही थी। वे कुछ डग बढे और फिर एकदम रुक गए, मानो जानबूझकर, ठीक बारहदरी के सामने ही।

"हां तो देखा तुमने," अन्ना सेर्गेयेवना कह रही थी, "हम दोनों ही ग़लत है। यौवन का वह पहला वसन्त–वह उल्लास और हुमक–न तुम्हारे पास है, न मेरे, खासकर मेरे। हम दुनिया में थोड़ा-बहुत रम चुके हैं। हम थके-मांदे हैं। हम दोनों–इधर-उधर करने से क्या फ़ायदा–चतुर हैं। पहले हममें एक-दूसरे के लिए

दिलचस्पी पैदा हुई, कौतुक ने अपने पंख पसारे. . और फिर..."

"और फिर बासी कढ़ी में उबाल आया," बजारोव ने बीच में ही कहा।

"नहीं, तुम जानते हो कि हमारे छिटकने का वह कारण नही है। लेकिन कारण चाहे जो भी हो, तत्व की बात यह है कि हमें एक-दूसरे की जरूरत नहीं थी। हममें ज़रूरत से ज्यादा... ओह, क्या कहते है भला उसे . . ज़रूरत से ज्यादा समानता थी। इसे हम तुरत ही नहीं समझ सके। इसके प्रतिकूल आरकादी..."

"क्या तुम्हें उसकी ज़रूरत मालूम होती है?" बज़ारोव ने पूछा।

"ओह, बस करो, येवगेनी वसीलियेविच। तुम कहते हो कि उसका मन मुझमें रमा है, खुद मुझे भी बराबर कुछ ऐसा महसूस होता रहा है कि मैं उसे पसंद हूं। मैं जानती हूं कि उम्र में मैं उसकी चाची-मौसी के बराबर हूं, लेकिन तुमसे मैं नहीं छिपाऊंगी कि वह अब मेरे ख़यालों में रमता जा रहा है। ओह, एक अजीब लुभावनापन है इस नवजात, और ताज़गी में पगी इस भावना में..."

"ऐसे मामलों में, आमतौर से, सम्मोहन शब्द का ज्यादा प्रयोग किया जाता है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा। शान्त और स्थिर होते हुए भी उसकी आवाज किसी रिसती हुई कसक के कारण धुधली-सी पड़ गई थी। "कल आरकादी मोम की भांति पिघलकर घनिष्ठ हो उठा था, लेकिन उसने तुम्हारे या तुम्हारी बहिन के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा... यह एक महत्वपूर्ण लक्षण है।"

"कात्या को जैसे वह अपनी बहिन समझता है," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "और उसकी यह विशेषता मुझे पसंद है। फिर भी,

शायद, उनके बीच इतनी घनिष्ठता मुझे नहीं पनपने देनी चाहिए।"

"यह क्या... बहिन की आवाज है?" बजारोव ने अलसा कर पूछा।

"बेशक... लेकिन हम खड़े क्यों है? चलिए, टहलते चलें। हमने भी क्या अनोखी बातें शुरू कर दी? क्यों, क्या तुम्हे ऐसा नहीं मालूम होता? मैं यह सोच तक नही सकती थी कि तुमसे कभी इस तरह से बातें कर सकूंगी। जानते ही हो, मै तुमसे कुछ डरती हूं... और फिर भी तुमपर भरोसा करती हूं। कारण, तुम सचमुच में बहुत ही भले हो।"

"पहली बात तो यह कि मै क़तई भला नहीं हूं। दूसरे यह कि तुम्हारे लिए अब मैं कोई अर्थ नहीं रखता। फिर भी तुम मुझे कहती हो... यह ऐसा ही है जैसे कोई मुर्दे के सिर पर माला चढ़ाए।"

"येवगेनी वसीलियेविच, हममें इतना बल नही..." उसने कहना शुरू किया, लेकिन हवा का एक झोंका पत्तों को सरसराता उसके शब्दों को बहा ले गया।

"लेकिन तुम, फिर भी, आजाद हो," कुछ रुककर बज़ारोव ने कहा। बाक़ी शब्द एकाकार हो गए। कुछ सुनाई न दिया। पांवों की आहट दूर तक होती गई... सन्नाटा घिर आया।

आरकादी कात्या की ओर मुड़ा। वह अभी भी उसी मुद्रा में बैठी थी। केवल उसका सिर और अधिक झुक गया था।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," उसकी आवाज़ कांप रही थी और उसके हाथों की मुट्ठियां भिंची थीं, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं, आख़िरी तौर पर और हमेशा के लिए। तुम्हारे सिवा मैं और किसी को प्यार नहीं करता। यही वह चीज़ है जो मैं तुम्हें बताना,

तुम्हारे मन की बात जानना और तुमसे पाणिग्रहण के लिए कहना चाह रहा था। कारण, मैं धनवान नही हूं और मेरा हृदय सभी कुछ न्योछावर करने के लिए हुमक रहा है... तुम जवाब क्यों नही देती? क्या तुम मेरा विश्वास नही करती? क्या तुम समझती हो कि मैं यों ही छलछला रहा हूं? लेकिन पिछले कुछ दिनों की याद करो! क्या तुमने नहीं देखा कि बाकी सभी कुछ—विश्वास करो—बाकी सभी कुछ, वह सब, कभी का विलीन हो चुका है और उसका एक भी चिन्ह अब शेष नही रहा है? मेरी ओर देखो, कुछ तो मुंह से कहो.. मैं प्यार... मैं तुमसे प्यार करता हूं... विश्वास करो मुझपर!"

कात्या ने गीली उजली आंखो से उसे देखा और काफ़ी [illegible] के बाद होंठों पर मुसकान की एक परछाई-सी लाती हुई बुदबुदाई :

"हां।"

आरकादी हुमककर खड़ा हो गया।

"'हां'! तुमने 'हां' कहा, कातेरीना सेर्गेयेवना! इसका अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ यह है कि मैं तुमसे प्यार करती हूं, या यह कि तुम मुझपर विश्वास करती हो.. या... या... ओह, मुझमें साहस नही कि उसे अपनी जुबान पर ला सकूं..."

"हां," कात्या ने दोहराया, और इस बार उसके समझने मे कसर नहीं रही। उसने उसके बड़े बड़े सुन्दर हाथों को अपने हाथों में थामा और आनन्दातिरेक से आत्मविभोर हो उन्हें अपने हृदय से सटा लिया। अपने पैरों पर खड़ा होना तक उसके लिए दुश्वार हो रहा था, और वह बार बार दोहरा रहा था: "कात्या, कात्या..!" उधर कात्या थी कि उसने एक अजीब अल्हड़ अन्दाज में आंसू चुआने

शुरू कर दिए थे। वह रोती भी जाती थी और अपने इन आंसुओं पर मृदु मृदु मुसकराती भी जाती थी। जिसने अपनी प्रेयसी की आखों मे ऐसे आसू न देखे, जिसका हृदय नही थरथराया, वह भला क्या जाने कि क्षणभंगुर मानव इस धरती पर कितना सुखी हो सकता है!

अगले दिन, तड़के ही, अन्ना सेर्गेयेवना ने बजारोव को अध्ययनकक्ष में बुलाया और अटपटी-सी हसी हंसते हुए मुड़ा हुआ एक काग़ज़ उसे थमा दिया। यह आरकादी का पत्र था जिसमें उसने उसकी बहिन से विवाह करने का प्रस्ताव किया था।

बज़ारोव जल्दी मे पत्र पढ गया और कुत्सित प्रसन्नता की भावना को, जो सहसा उसके हृदय में उमड़ आई थी, व्यक्त करते करते रुक गया।

"सो यह बात है," उसने कहा, "और तुम, मेरी समझ में कल ही तो, यह सोच रही थी कि वह कातेरीना सेर्गेयेवना को अपनी बहिन मानता है। हां तो अब क्या इरादा है?"

"तुम क्या सलाह दोगे?" अभी भी वैसे ही हंसते हुए अन्ना सेर्गेयेवना ने पूछा।

"अच्छा तो सुनो," बजारोव ने भी हसते हुए कहा, हालांकि अन्ना सेर्गेयेवना की भांति हंसने की मन:स्थिति में वह भी नहीं था, "मेरा ख़याल है कि तुम्हें इन युवा जनों को अपना आशीर्वाद देना चाहिए। जोड़ी हर लिहाज़ से अच्छी है। किरसानोव काफ़ी सम्पन्न है, इकलौता लड़का है, और उसका बाप बहुत ही भला आदमी है, वह विरोध नहीं करेगा।"

ओदिनत्सोवा ने कमरे में एक चक्कर लगाया। उसका चेहरा लाल से सफ़ेद हो चला।

"सो तुम ऐसा सोचते हो?" उसने कहा। "अच्छी बात है, मुझे भी इसमें कोई आपत्ति नही दिखाई देती... कात्या की खातिर मैं प्रसन्न हूं... और आरकादी निकोलायेविच की खातिर भी। बेशक, उसके पिता का जवाब आने तक मैं राह देखूंगी। मैं खुद उसे ही इसके लिए रवाना करूंगी। आखिर वह सही निकला जो कल मैंने तुमसे कहा था–यह कि हम दोनो बुढ़ा चले हैं.. लेकिन यह कैसे हुआ कि मैं कुछ भी नही जान सकी? बड़े अचरज की बात है!"

अन्ना सेर्गेयेवना फिर ठठाकर हंसी और उसी क्षण दूसरी ओर घूम गई।

"आज के युवा डाल-डाल पात-पात चलने में बड़े चतुर हैं," बज़ारोव ने भी हंसते हुए टीका की। फिर कुछ रुककर बोला: "अच्छा तो अब विदा। उम्मीद है कि इस मामले को तुम खुशी के साथ निबटा सकोगी। मैं भी दूर से ही देखकर खुश हो लूंगा।"

ओदिनत्सोवा तेज़ी से उसकी ओर मुड़ी।

"क्यों, क्या तुम जा रहे हो? अब तुम्हें रुकने में भला क्या आपत्ति हो सकती है? रुको न... तुमसे बातें करने में एक अजीब थरथराहट का अनुभव होता है... जैसे किसी गहरे खड्ड के कगारे पर चल रहे हों। एक बार तो हृदय सकपका जाता है, लेकिन फिर–जाने कैसे–हिम्मत बांध बढ़ चलता है। सच, रुक जाओ!"

"रुकने के लिए निमंत्रण, और बात करने की मेरी प्रतिभा की खुश कर देनेवाली प्रशंसा, दोनों के लिए धन्यवाद, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन मुझे लगता है कि मैं कुछ ज़रूरत से ज़्यादा लम्बे अर्से से अजनबी वातावरण में रम रहा हूं। उड़न-मछली कुछ समय के लिए ही हवा में निराधार टिकी रह सकती है, लेकिन फिर अविलम्ब पानी

में उसका फड़फड़ाकर गिरना अनिवार्य है। सो कृपा कर अब मुझे भी अपने असली ठौर-ठिकाने पर लगने दीजिए।"

ओदिनत्सोवा ने ध्यान से उसे परखा। बजारोव का चेहरा कटु मुसकान से बल खा रहा था। "यह आदमी मुझे प्यार करता था!" उसने सोचा, अचानक तरस का एक भाव उसके हृदय में उमड़ा और संवेदना से अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

लेकिन उसका यह भाव उससे छिपा न रहा।

"नहीं," एक डग पीछे हटते हुए उसने कहा, "मैं ग़रीब हूं, लेकिन आज तक मैंने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। अच्छा तो विदा मैडम; और बस, भली-चंगी रहना।"

"मेरा विश्वास है कि हमारी यह मुलाक़ात आख़िरी मुलाक़ात नहीं सिद्ध होगी," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहज स्निग्धता के साथ कहा।

"हमारी इस दुनिया में जो भी हो जाए थोड़ा है," बजारोव ने जवाब में कहा, सिर झुकाया और बाहर चल दिया।

"सो तुमने अपने लिए एक घोंसला बनाने का निश्चय कर लिया है," उसी दिन, उस समय जबकि अपने सूटकेस के सामने बैठा वह कपड़े रख रहा था, उसने आरकादी से कहा, "जो हो, ख़याल बुरा नहीं है। लेकिन इतनी-सी बात के लिए यह लुकाव-छिपाव क्यों? मैं उम्मीद करता था कि तुम किसी दूसरी, सर्वथा भिन्न, डोंगी का पाल संभालोगे। या फिर हो सकता है कि तुम खुद भी अनजाने में ही पकड़े गए?"

"सच पूछो तो तुम्हें छोड़कर आते समय खुद मुझे भी इसका गुमान नहीं था," आरकादी ने जवाब दिया, "लेकिन यह बेकार का बन्धन किस लिए? तुम्हारा यह कहना कि 'ख़याल अच्छा है,'— विवाह के बारे में तुम्हारे विचार क्या ऐसी चीज़ हैं जो मुझसे छिपे हों?"

"ओह, मेरे प्यारे मित्र!" बज़ारोव ने कहा। "तुम्हारी बातें भी एक तमाशा होती हैं। देखो न, तुम्हारी आंखों के सामने ही मैं क्या कर रहा हूं: मेरे सूटकेस में कुछ जगह खाली है, उसे मैं घास-फूस से भर रहा हूं। जीवन के सूटकेस का भी यही हाल है। जो मन में आए भर लो, बस शून्य नहीं रहना चाहिए। बुरा न मानना, मेहरबानी करके। कातेरीना सेर्गेयेवना के बारे में मेरी जो सदा राय रही है, उसे शायद तुम भूले न होगे। कुछ लड़कियां केवल इसी लिए दक्षता का सर्टीफ़िकेट पा जाती हैं कि वे बड़ी चतुराई से आहें भरना जानती हैं। लेकिन तुमने जिस लड़की को चुना है वह तुमसे अपनी बातें मनवाकर छोड़ेगी और तुम्हें अपने क़ब्ज़े में रखेगी, यह मैं दावे से कह सकता हूं। और ऐसा ही होना भी चाहिए।" सूटकेस का ढक्कन फटाक से बंद करते और फ़र्श से उठते हुए वह कहता गया। "और अब, उस समय जबकि मैं विदा हो रहा हूं, मैं फिर दोहराना चाहता हूं ... अपने को भुलावा देने से कोई लाभ नहीं, हम हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं, और यह तुम खुद भी समझते हो ... तुमने समझदारी का काम किया .. हमारे जैसे कड़ुवे, ऊबड़-खाबड़ और एकाकी जीवन के लिए तुम पैदा नहीं हुए। तुममें न साहस है, न क्रोध। तुममें केवल हौसला है, युवक सुलभ जोश है जो हमारे मसरफ़ का नहीं। कुलीन वर्ग के तुम लोग बहुत ज़ोर मारने पर भी शरीफ़ाना नम्रता या शरीफ़ाना विक्षोभ से आगे नहीं बढ़ पाते, जो बिल्कुल बेकार है। लड़ाई से तुम दूर भागते हो, और फिर भी अपने को तीसमारखां से कम नहीं समझते, लेकिन हम हैं कि लड़ने के लिए कसमसाते रहते हैं। क्यों न हो, हमारी धूल तुम्हारी आंखों को घायल कर देगी, हमारी गंदगी तुम्हारे उजलेपन को चटकर जाएगी। इसके अलावा हमारे लिए अभी तुम्हारे दूध के दांत तक नहीं टूटे हैं, तुम अनजाने ही अपने को लगाते हो, आत्म-भर्त्सना

में—अपने को कोचने में—तुम रस लेते हो। इन सब चीज़ों से हम ऊब चुके हैं, कोई नयी चीज़ हम चाहते हैं। तोड़ने को और बहुत हैं! यों तुम एक अच्छे लड़के हो, लेकिन हो आख़िर एकदम मुलायम, कुलीनों के एक उदार घराने की एक चिन्दिया—हा, वोलातू*, जैसा कि मेरे पिता कह उठते।"

"हमेशा के लिए तुम अलविदा कह रहे हो, येवगेनी," आरकादी ने उदास मुद्रा में कहा, "उसके अलावा क्या और कुछ तुम्हारे पास कहने के लिए नही है?"

बज़ारोव अपनी कनपटी खुजलाने लगा।

"है, आरकादी, मेरे पास अन्य शब्द भी हैं, लेकिन मै उनका प्रयोग नहीं करूंगा, कारण कि ऐसा करना रोमाण्टिकता होगी, दूसरे शब्दों में, छलछला पड़ना होगा। तुम जाओ, शादी करो, अपने नन्हे-से घोंसले को गुदगुदा बनाओ, नन्हे मुन्नो की फौज पैदा करो—जितने अधिक हों, उतना ही अच्छा। वे बढ़िया जीव होंगे, अन्य किसी लिए नही तो केवल इसी लिए कि उन्हें इस दुनिया में वाजिब समय पर आने का सौभाग्य प्राप्त होगा—हमारी-तुम्हारी तरह नही। ओह, देखता हूं कि घोड़े तैयार है। चलने का समय हो गया। विदा भी सबसे ले चुका ... अच्छा तो ... आओ, गले मिल लिया जाए, ठीक है न?"

आरकादी अपने भूतपूर्व निर्देशक और मित्र के गले से लिपट गया। उसकी आंखों में आंसू छलछला रहे थे।

"ओह, यौवन का यह आवेश!" बज़ारोव ने स्थिर भाव से कहा। "लेकिन मुझे कातेरीना सेर्गेयेवना पर भरोसा है। देख लेना, कितनी जल्दी वह तुम्हारे घावों पर मरहम लगाती है!"

---

* बस और क्या। (फ़्रेंच)—सं०

"अच्छा तो विदा, मेरे पुराने साथी," गाड़ी में बैठ जाने के बाद बजारोव ने आरकादी से कहा और फिर अस्तबल की छत पर सटकर बैठी कागों की जोड़ी की ओर सकेत करते हुए बोला: "वह देखो, तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त मौजूद है!"

"मतलब?" आरकादी ने पूछा।

"अरे, प्रकृति के इतिहास का क्या तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं, या तुम भूल गए कि घर बसाकर बैठनेवाले पक्षियों मे काग का दरजा बहुत ऊंचा है? बस, उसका अनुकरण करो ... अच्छा तो विदा, श्रीमान!"

गाड़ी उचककर बढ़ चली।

बज़ारोव ने सच ही कहा था। उसी सांझ कात्या से बाते करते समय आरकादी अपने निर्देशक को एकदम भूल गया। वह अभी से उसके असर में आना शुरू हो गया था। खुद कात्या ने भी यह महसूस किया और इससे उसे कोई अचरज नहीं हुआ। अगले दिन आरकादी को मारिनो जाना और निकोलाई पेत्रोविच से बातें करके मामले को ठीक करना था। अन्ना सेर्गेयेवना युवा लोगों के लिए बाधा नहीं बनना चाहती थी, और केवल दुनियादारी का खयाल कर उन्हें ज़रूरत से ज्यादा देर तक अकेले नहीं रहने देती थी। राजकुमारी को उनकी राह से अलग ही रखने में उसने काफ़ी शानदार भावना का परिचय दिया। आसन्न परिणय के समाचार ने आंसुओं और बेहद झल्लाहट के भंवर में उसे डुबा दिया था। अन्ना सेर्गेयेवना भी शुरू शुरू में आशंकित हो उठी थी कि उनके सुख का दृश्य उसके लिए कष्टकर होगा, लेकिन हुआ इससे उलटा: न केवल यह कि उनके सुख को देखकर वह त्रस्त नहीं हुई, बल्कि यह कि वह उसे रमणीय – यहां तक कि हृदय-स्पर्शी मालूम हुआ। उसकी इस अनुभूति में प्रसन्नता भी थी, और उदासी भी। "लगता है कि बज़ारोव का

कहना ठीक था," उसने सोचा, "उत्सुकता, निरी उत्सुकता – इसके सिवा कुछ नहीं, आराम-पसन्दी और स्वार्थपरता ..."

"बच्चो!" उसने सस्वर कहा, "प्यार क्या कोई ढकोसला है?"

लेकिन न कात्या और न आरकादी, उसकी बात समझ सके। दोनों उससे सकुचाते थे। अनजान में सुने शब्द उनके मस्तिष्क में गहरे अटक गए। लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना ने जल्दी ही उनकी खटक दूर कर दी। और इसके लिए उसे विशेष प्रयास भी नही करना पड़ा – कारण, वह खुद भी अब अपनी सहज स्वाभाविक स्थिति में आ गई थी।

२७

बेटे के अचानक लौट आने पर वृद्ध बजारोव दम्पत्ति की खुशी का और भी वारपार नहीं रहा। उन्हें कतई उम्मीद नही थी कि वह इतनी जल्दी लौट आएगा। अरीना व्लासियेवना घर में फिर्की बनी घूमती थी और इस हद तक अभिभूत हो गई थी कि वसीली इवानिच ने 'कुड़क मुर्गी' से उसकी तुलना की; और सचमुच दुमकटी अपनी छोटी जाकेट पहने वह पक्षी की ही भांति दिखाई भी देती थी। और खुद उनका जहां तक सम्बंध था, वह केवल कांखते-कखियाते, अपने पाइप के अम्बर के छोर को दांतों से कुतरते, दोनों हाथों में गरदन को पकड़कर अपने सिर को ऐंठते, मानो यह जांचना चाहते हों कि कोई क़ब्जा तो ढीला नहीं हो गया है, और मौन आल्हाद में उनका मुंह मटका-सा खुला रह जाता।

"पूरे छै सप्ताह तक जमकर रहने के लिए मैं आया हूं, समझे बुढ़ऊ," बज़ारोव ने उनसे कहा, "और कुछ काम मैं करना चाहता हूं, सो कृपा कर कोई बाधा न डालना।"

"बाधा डालने की बात – ओह, मैं ऐसा करूंगा कि तुम्हें मेरी शक्ल तक याद नहीं रहेगी!" वसीली इवानिच ने जवाब में कहा।

और उन्होंने अपना वचन निभाया भी। बेटे को अपने अध्ययनकक्ष मे जमाने के बाद उन्होने अपने आपको उसकी आंखों मे अगर एकदम नही तो करीब करीब ओझल-सा ही कर लिया, साथ ही अपनी पत्नी की भी लगाम कसी कि वह अपने प्रेम-प्रदर्शन को जरा क़ाबू में रखे – एकदम छलछला न पड़े। "सुनो प्रिय," उन्होंने कहा, "पिछली बार जब येवगेनी यहां था तो हमने इतना लाड-दुलार जताया कि उसे कुछ अपच-सा हो गया। अब हमें ज़रा समझदारी से काम लेना होगा।" अरीना व्लामियेवना ने यह मंजूर तो कर लिया, लेकिन इससे उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। अपने बेटे को अब वह केवल खाना खाने के समय ही देख पाती, और उसे सम्बोधित तक करते भय से कांप उठती। "प्यारे येवगेनी," वह कहना शुरू करती, और इससे पहले कि वह मुंह फेरे, उसकी उंगलियां जालीदार बटुवे की डोरियों पर फिसलने लगतीं और उसकी जुबान लड़खड़ाने लगती – "नहीं, कुछ नहीं, मैं तो केवल ..." इसके बाद वह वसीली इवानिच के पास पहुंचती, और अपनी ठोड़ी को हाथ की अंजुली में टिकाती हुई कहती: "यह कैसे मालूम करें प्रिय कि आज कलेवे में कौन चीज येवगेनी को ज्यादा पसन्द आएगी – गोभी का शोरबा या पुलाव?" "लेकिन यह खुद तुमने उससे क्यों नहीं पूछ लिया?" "मैं उसके काम में बाधा डालना नहीं चाहती थी!" लेकिन बज़ारोव ने जल्दी ही अपना वह एकान्तवास छोड़ दिया। उसकी क्रियाशीलता का ज्वार ठंडा पड़ चला और एक क्लान्त अलसाहट तथा सुन्न कर देनेवाली बेचैनी उसके रोम रोम में सरसराने लगी। उसकी सभी हरकतों में एक अजीब बेहोशी छाई थी, यहां तक कि उसकी चाल-ढाल भी – जिसमें सदा एक दृढ़ता और

अदम्य आत्मविश्वास नजर आता था – बदल गई थी। अब वह अकेले घूमने न जाता और संग-साथ के लिए उसका हृदय हुमकता। वराण्डे में बैठकर अब वह चाय पीता, वसीली इवानिच के साथ बग़ीचे में चक्कर लगाता और उसके साथ धूम्रपान करता। एक बार उसने फादर अलेक्सेई के बारे में भी पूछा-ताछा। यह परिवर्तन देख वसीली इवानिच का हृदय शुरू से तो उछल उठा, लेकिन उसकी यह खुशी कुछ ज्यादा नहीं टिकी। "येवगेनी को देखकर चिन्ता होती है," अकेले में उसने अपनी पत्नी से दुखड़ा रोया। "यह नहीं कि वह नाखुश या नाराज़ हो, अगर ऐसा होता तो भी ग़नीमत थी; लेकिन वह त्रस्त और दुःखी मालूम होता है, और यही सबसे बुरा है। किसी घड़ी भी अपने मुंह से एक शब्द नहीं निकालता। इससे तो अच्छा होता अगर वह हमें झिड़कता, डांट-डपट ही करता। दिन दिन दुबलाता आ रहा है और चेहरे का रंग ऐसा हो गया है कि ज़रा भी नहीं देखा जाता।" "भगवान ही मालिक है," वृद्धा फुसफुसाकर कहती, "मैं तो उसके गले में पाक तावीज ही डाल देती, लेकिन उसे भला यह कहां सुहाएगा?" एक या दो बार, बड़ी चतुराई से, वसीली इवानिच ने उसकी थाह लेनी चाही – उसके काम, स्वास्थ्य और आरकादी का ज़िक्र छेड़ा... लेकिन बजारोव अनमने और उड़ते हुए ढंग से टाल गया और एक दिन तो, यह आभास पाकर कि उसके पिता उसकी टोह लेने की कोशिश कर रहे हैं, झल्लाकर बोला: "यह चोर की तरह तुम क्यों मेरे इर्द-गिर्द मंडराते रहते हो? यह तो पहले से भी बुरा है।" "अरे, बस बस, सो कुछ नहीं!" बेचारे वसीली इवानिच ने हड़बड़ाकर कहा। राजनीति के सहारे टोह लेने में भी उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। एक बार उन्होंने प्रगति और किसान-वर्ग की आसन्न मुक्ति की चर्चा छेड़ी – इस आशा से कि शायद बेटे की दिलचस्पी कुछ

जाग जाए, लेकिन उसने अनमने अन्दाज में जवाब दिया: "कल जब मैं बाड़े के पास से गुजर रहा था तो पास ही कही कुछ किसान लड़कों के गाने की आवाज सुनाई दी। पुराने बढ़िया गीतो को छोड़ वे कोई चलताऊ गीत रेक रहे थे – "मेरी जान तेरी अदाओं ने मारा," – यह है तुम्हारी प्रगति!"

कभी कभी बजारोव टहलता हुआ गाव मे निकल जाता और खिल्ली उडाने के अपने पुराने अन्दाज़ में किसी एक किसान से बतियाना शुरू कर देता। "हां तो बुढऊ," वह उससे कहता, "झटपट यह तो बताओ कि जीवन के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं? कहते है कि रूस की समूची शक्ति और उसका भविष्य तुममें समाया है, कि इतिहास में तुम एक नये युग का सूत्रपात करोगे – कि तुम हमें एक प्रामाणिक भाषा देनेवाले और हमारे लिए विधान की दाग-बेल डालनेवाले हो!" बुढऊ या तो गुमसुम बने रहते या ऐसे ही कुछ कह उठते, "एइयो, सो तो हम कर सकते हैं ... अब, तुमी देखो, पैट जे है ... जो है, सो हमारा दरजा जे है ..."

"मुझे तो बस तुम यह बता दो कि तुम्हारा यह 'मीर'* क्या है?" बजारोव बीच में ही टोकता, "क्या यह वही 'मीर' है जो तीन मछलियों पर टिका कहा जाता है?"

"सो तो मालिक जे धरती है जो तीन मच्छियों पर टिकी है," स्थिर-गम्भीर अन्दाज़ और बड़े बड़े बुजुर्ग की भांति कृपापूर्ण तथा लयदार आवाज़ में देहाती बुढ़ऊ कहते, "हमारा जे 'मीर' तो, जो है सो, सब कोई जानें, मालिकों की मर्जी पर टिका है, चोंकि मालिक, आप

---

* रूसी भाषा में 'मीर' शब्द के तीन अर्थ हैं: देहाती समाज, संसार और शान्ति। – अनु०

ही हमारे भाई-बाप हो। औ, मालिक जित्ता सखत होता है, उत्ता ही जादा दहकान उसे चाता है।"

इस तरह के प्रलाप को सुन एक बार बज़ारोव ने घिन्नाकर कधे बिचकाए, दहकान को वहीं फटफटाता छोडा और मुह मोडकर चल दिया।

"क्या बतिया रहे थे, बाबा?" सजीदा चेहरेवाले अधेड़ आयु के एक किसान ने अपनी झोंपड़ी की चौखट पर खड़े खड़े ही अपने उस गाव-भाई से पूछा, "क्या बकाया के बारे में बतिया रहे थे?"

"अजी राम कहो, जो है सो बक़ाया का उससे भला क्या वास्ता!" पहलेवाले किसान ने जवाब दिया, और इस बार उसकी आवाज़ में बड़े-बूढ़ों जैसे उस लयदार लहजे का कही नाम तक नही था, उलटे उसमें हिकारत से भरा एक भारीपन आ गया था। "यों ही कुछ बूंकने के लिए छोकरे का जी चर्रा उठा, सो लगा बाबा आदम का राग अलापने। निरा लिफ़ाफ़ा, देखा नहीं तुमने, क्या जाने कि कुत्ते के कित्ती टाग होती हैं!"

"एइयो, वह क्या जाने?" दूसरे दहकान ने प्रतिध्वनि की और सिर हिला हिलाकर तथा अपनी पेटियों को कसते हुए वे अपने घर-बार की चर्चा मे जुट गए। आह! बज़ारोव जिसने घृणा से अपने कंधे बिचका लिए थे, बजारोव जो किसानों से बतियाना जानता था (पावेल पेत्रोविच के साथ बहस में उसने ऐसी ही शेखी बघारी थी), बज़ारोव जो अपने आपमें इतना आश्वस्त था — उसने कभी सपने में भी यह गुमान न किया होगा कि किसानों की नज़र में वह गपोड़शंखों की बिरादरी का जीव है ...

लेकिन, अन्ततोगत्वा, बजारोव को भी अपने लिए एक रास्ता मिल गया। एक दिन — उस समय वह भी मौजूद था — वसीली

इवानिच किसी किसान की लुजी टांग में पट्टी बांधने मे जुटे थे, लेकिन बुढ़ऊ के हाथ कांप रहे थे और पट्टी संभाले नहीं संभल रही थी। बेटे ने उनकी मदद की, और इसके बाद उनकी डाक्टरी में हाथ बंटाना शुरू कर दिया, हालांकि वह अब भी खुद अपने तजवीजे इलाजों की – जिन्हें उसके पिता तुरत अमल में लाते थे – खिल्ली उड़ाने से नहीं चूकता था। बजारोव की इस छीटाकशी से वसीली इवानिच जरा भी विचलित नहीं होते, बल्कि वह गुदगुदा तक उठते। अपने चीकट चोगे को पेट के ऊपर दो उंगलियों से थामे और अपने पाइप से धुवां छोड़ते हुए चिन्दियां उड़ानेवाली अपने बेटे की टिप्पणियों को खुशी से वह सुनते, और कडुवाहट की मात्रा जितनी ही अधिक उनमें होती, उतनी ही अधिक हार्दिकता के साथ खुशी से मगन पिता हंसते और कालौंछ-चढ़ी उनकी बत्तीसी का एक एक दात चमक उठता। यहा तक कि इन बेतुकी या बेमतलब 'फुलझड़ियों' को कभी कभी वह खुद भी दोहराने लगते। मिसाल के लिए, कई दिन तक, मौके-बेमौके, एक इस मिसरे की माला जपते रहे – "खुदा के घर में कहीं ऐसा न कर बैठना!" – सिर्फ़ इसलिए कि यह मालूम होने पर कि वह प्रातः प्रार्थना के लिए गिरजे में जाते हैं, बज़ारोव ने यह फ़िकरा उनपर कसा था। "खुदा का शुक्र है," उन्होंने अपनी पत्नी से फुसफुसाकर कहा, "वह अब कुछ खुश नजर आता है। बस क्या कहूं, आज तो उसने मुझे एकदम चित्त ही कर दिया!" ऐसा सहयोगी पाने की कल्पना मात्र से उनके हृदय का रोम रोम छलछला उठता और गर्व से वह भर जाते। "अरे, अपना भाग्य सराहो प्रिय," मटमैला मरदाना ओवरकोट पहने और सिर पर रूसी देहाती टोपी लगाए किसी किसान स्त्री को गुलाब-लोशन की शीशी या हरबेन-मलहम की डिबिया देते हुए कहते, "तुम अपना भाग्य सराहो भली औरत, कि मेरा बेटा आजकल यहां आया हुआ है; और एकदम नये

वैज्ञानिक तरीको से तुम्हारा इलाज किया जा रहा है, समझी? इतना बढ़िया डाक्टर फ़ान्स के शाह नैपोलियन को भी नसीब न हुआ होगा।" और वह स्त्री जो 'आंव-मरोड़े' की शिकायत लेकर आई थी (हालाकि न वह आव का मतलब जानती थी और न मरोड़े का) धरती पर माथा टेकती और अगिया के भीतर से डाक्टर की फीस—अगोछे के छोर में लिपटे चार अंडे—खोज खाज कर बाहर निकालती।

एक बार बज़ारोव ने सामने से गुज़रते कपड़े की फेरी करनेवाले का दांत भी उखाड़ा और हालांकि वह एक बहुत ही मामूली दांत था, लेकिन वसीली इवानिच ने उसे एक तोहफ़े के रूप में रख छोड़ा, फ़ादर अलेक्सेई को उसे दिखाया और यह कहते न अघाए:

"ज़रा इस दन्तुल्ले की जड़ों पर तो ध्यान दो! बजारोव का ही दम था जो उसने इसे उखाड़ डाला। और वह फेरीवाला, वह तो दांत के साथ ही उठता चला आया... सच, ओक का पेड़ भी उस झटके की ताब न ला पाता..."

"बहुत खूब!" अन्त में, और कुछ न सूझने पर खुशी से छलछलाते वृद्ध से पिंड छुड़ाने के लिए फ़ादर अलेक्सेई ने कहा।

एक दिन पास के गाव का एक किसान अपने भाई को लेकर वसीली इवानिच को दिखाने लाया। वह टाइफ़स ज्वर से पीड़ित था। घास के एक पूले पर पड़ा बेचारा दम तोड़ रहा था। सारे बदन पर काले चकत्ते हो गए थे और काफ़ी देर से बेहोश था। वसीली इवानिच ने खेद प्रकट किया कि डाक्टरी मदद लेने की बात लोगों को पहले क्यों नहीं सूझती, और ऐलान किया कि अब कोई उम्मीद नही है। और ऐसा ही हुआ भी। किसान अपने भाई को लेकर घर पहुंच भी न पाया कि गाड़ी में ही उसकी मृत्यु हो गई।

इसके तीन दिन बाद बजारोव ने अपने पिता के कमरे में दाखिल होते हुए पूछा .

"लूनर कास्टिक होगा थोड़ा-सा ?"

"हा, है। क्या करोगे ?"

"जरूरत है ... कटे को दागना है।"

"किसके ?"

"खुद अपने।"

"खुद तुम्हारे ? सो कैसे ? क्यो कर कटा ? किस जगह ?"

"यहां, उगली मे। आज मैं गांव गया था – जहा से वह टाइफ़स पीड़ित किसान आया था न, वहीं। जाने क्यों, लाश की चीर-फाड़ की जानी थी। और इस तरह के काम का मेरा अभ्यास बहुत दिनों से छूटा था।"

"तो ?"

"तो यह कि मैंने स्थानिक डाक्टर से कहा कि मुझे करने दो। नतीजा यह कि अपनी उंगली काट ली।"

वसीली इवानिच का चेहरा अचानक पीला पड़ गया और बिना एक शब्द कहे दौड़कर अपने अध्ययनकक्ष में पहुचे और हाथ में लूनर कास्टिक का एक टुकड़ा लिए तुरत लौट आए। बजारोव उसे लेकर चलने को हुआ।

"खुदा के लिए," वह बुदबुदा उठे, "यह मुझे ही कर लेने दो।"

बजारोव के होंठों पर एक वक्र मुसकराहट फैल गई।

"अभ्यास का मौक़ा हथियाने के लिए उतावलापन तुममें भी कुछ कम नहीं है!"

"दया करो, मज़ाक़ न करो। ज़रा अपनी उंगली दिखाओ। नहीं, ऐसा कुछ ज़्यादा कटा-वटा नही है। क्या दुःखता है ?"

"डरो नही, खूब जोरों से दबाओ।'

वसीली इवानिच ठिठके।

"तुम्हारा क्या ख़याल है येवगेनी, लोहे से दागना क्या ज़्यादा अच्छा नही रहेगा?"

"यह सब बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अब, सच पूछो तो, लूनर कास्टिक भी बेकार है। जो छूत लगनी थी, लग चुकी, उसे अब नही रोका जा सकता।"

"क्यों ... रोका क्यो . नही जा सकता .." जैसे-तैसे, लडखड़ाते शब्दो मे वसीली इवानिच ने कहा।

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। चार घटे से भी ज्यादा हो चुके है।"

वसीली इवानिच ने घाव को एक बार फिर कास्टिक से दागा।

"क्या उस डाक्टर के पास लूनर कास्टिक नहीं था?"

"नही।"

"ओह, भगवान, भला यह कैसे हो सकता है? कहने को डाक्टर, और उसके पास इतनी आवश्यक चीज भी नहीं!"

"और उसके चीरफाड़ के सामान—काश कि तुम उन्हें देख पाते!" बज़ारोव ने कहा और कमरे से चल दिया।

उस सारी रात और अगले दिन अपने बेटे के कमरे में जाने के लिए हर सम्भव बहाने का वसीली इवानिच ने आविष्कार किया, और बावजूद इसके कि उन्होंने दुनिया भर की तो बातें की लेकिन घाव के बारे में एक शब्द भी मुंह से नहीं निकला, वह कुछ इतना नज़र जमाकर उसकी आंखों में देखते और इतनी व्यग्रता से उसे निहारते कि बजारोव अधिक धीरज न रख सका और उसने वहां से भाग जाने की धमकी दी। वसीली इवानिच ने वायदा किया कि अपनी उद्विग्नता को अब वह

क़ाबू में रखेंगे, इसलिए और भी अधिक कि अरीना व्लासियेवना ने भी, जिससे उन्होंने बिला शक सारी बातें छिपा रखी थी, उनकी जान खानी शुरू कर दी थी कि रात को सोते क्यों नहीं है, तुम्हे हो क्या गया है? पूरे दो दिन उन्होंने जैसे-तैसे निभाया, हालांकि बेटे के चेहरे की रंगत उन्हें कतई अच्छी नही मालूम हो रही थी, लुक-छिपकर वह उसे देखते रहते थे। लेकिन तीसरे दिन, कलेवे के समय, वह और अधिक जब्त नही कर सके। बज़ारोव आंखें झुकाए बैठा था और खाने को उसने छुआ तक नही था।

"खाते क्यों नहीं, येवगेनी?" जितना भी उनसे हो सकता था, निर्लिप्तता जताते हुए उन्होने पूछा। "खाना तो काफ़ी स्वादिष्ट बना है, क्यों?"

"जी नही करता, इसलिए खाया भी नही जाता।"

"क्या भूख नहीं है? सिर कैसा है? दु:खता तो नही?" सहमी-सी आवाज़ में उन्होने पूछा।

"दु:खता है। और दु:खता क्यो नही?"

अरीना व्लासियेवना चौकस हो सीधी बैठ गई।

"कृपा कर नाराज न होना, येवगेनी," वसीली इवानिच कहते गए, "न हो तो ज़रा मुझे अपनी नाड़ी ही देख लेने दो।"

बज़ारोव उठ खड़ा हुआ।

"बिना नाडी के ही मैं तुम्हें बता सकता हूं कि मुझे तेज बुख़ार है।"

"क्या झुरझुरी भी मालूम होती है?"

"हां। मैं चलकर लेटता हूं। मेरे लिए थोड़ी लीमू के फूलों की चाय भेज देना। शायद ठंड लग गई है।"

"तभी तो! रात तुम्हारे खासने की आवाज आ रही थी," अरीना व्लासियेवना ने कहा।

"ठड लग गई है," बजारोव ने दोहराया और कमरे से चल दिया।

अरीना व्लासियेवना लीमू की चाय बनाने मे जुट गई। वसीली इवानिच बराबरवाले कमरे में चले गए और निर्वाक आन्तरिक वेदना मे अपने बालों में उगलियां गड़ा दी।

उस दिन बजारोव बिस्तरे में पड़ा रहा और रात भर एक बोझिल अधजगी तन्द्रा उसे घेरे रही। रात को, एक बजे, जैसे-तैसे जब उसने आंखें खोलीं तो बिस्तरे पर झुके और देवमूर्ति के दिये की मद्धिम लौ में टिमटिमाते पिता के पीतवर्ण चेहरे पर उसकी नजर पड़ी। उसने उनसे चले जाने के लिए कहा। वृद्ध ने बात मान ली, लेकिन फिर तुरत ही दबे पांव लौट आए और किताबोंवाली अलमारी की ओट में आधा छिपकर स्थिर नजर से अपने बेटे को ताकते रहे। अरीना व्लासियेवना भी निश्चल नहीं थी। अधखुले दरवाज़े के पास चुपचाप खड़ी होकर वह अपने प्यारे येवगेनी की सांसों को सुनने और वसीली इवानिच की एक झलक पाने का प्रयत्न करती रही। लेकिन सिवा उसकी झुकी हुई पीठ के, जो जरा भी हरकत नही कर रही थी और कुछ नजर न आता। वह इतने को ही बहुत मान एक हल्केपन का अनुभव करती। सुबह होने पर बज़ारोव ने उठने की कोशिश की। उसका सिर चकराया और नाक से ख़ून आने लगा। वह फिर बिस्तरे पर पड़ गया। वसीली इवानिच चुपचाप टहल में लगे रहे। अरीना व्लासियेवना आई और पूछा कि उसका जी कैसा है। उसने जवाब दिया: "ठीक हूं," और दीवार की ओर अपना मुंह फेर लिया। वसीली इवानिच ने अपनी पत्नी को उड़नछू करने के लिए एक साथ दोनों हाथ हिलाए। रुलाई रोकने के लिए

पत्नी ने अपने होंठो में दांत गड़ाए और वहां से चली गई। ऐसा मालूम होता था जैसे समूचा घर अचानक अंधेरे में डूब गया हो। सभी के चेहरे उतरे थे और हर चीज को एक अजीब सन्नाटे ने घेर लिया था। खलिहान का मुर्गा, जो बहुत शोर मचाता था, पकड़कर दूर गांव में पहुंचा दिया गया। उस बेचारे की समझ में ही नहीं आया कि उसके साथ इतनी बेमुरौवती का सलूक क्यों किया गया। बजारोव अभी भी वैसे ही दीवार की ओर मुंह किए पड़ा था। वसीली इवानिच ने उससे तरह तरह के सवाल पूछने की कोशिश की, लेकिन बजारोव उनसे दिक़ हो उठा, और वृद्ध ने—बिना हिले-डुले—अपनी आरामकुर्सी की शरण ली। बस, वह कभी कभी, अपनी उंगलियां चटखा लेते। कुछ क्षणों के लिए वह बाहर बगीचे में भी जाते, और पत्थर की मूर्ति की भांति वहां जाकर खड़े हो जाते, मानो किसी अकथनीय आश्चर्य ने उन्हें वहीं-का-वहीं जाम कर दिया हो (उन दिनों उनके चेहरे पर, आमतौर से, स्थायी आश्चर्य का भाव जैसे जमकर रह गया था), और फिर अपने बेटे के पास लौट आते। पत्नी के बेचैन प्रश्नों से वह बचने की कोशिश करते, लेकिन अन्ततोगत्वा वह उनकी बांह पकड़ ही लेती और मरोड़-सी खाती, क़रीब करीब आतंकपूर्ण, स्वर में फुकार उठती: "उसे क्या हुआ है?" तब वह अपने आपको बटोरने की कोशिश करते और जवाब में अपने होंठों पर ज़बर्दस्ती एक मुसकराहट लाना चाहते; लेकिन वह भय से कांप उठते, जब देखते कि मुसकराने के बजाय वह ठठाकर हंसने लगे हैं। आज सुबह ही डाक्टर को बुलवाने के लिए उन्होंने आदमी भेजा था। उनका बेटा कहीं इससे नाराज़ न हो जाए, इसलिए उसे इसकी ख़बर देना वह ज़रूरी समझते थे।

सहसा बज़ारोव करवट लेकर सोफ़े पर मुड़ा, पथराई-सी आंखों से पिता की ओर उसने ताका और पीने के लिए कुछ मांगा।

वसीली इवानिच ने उसे थोड़ा पानी दिया और इस बहाने उसे उसका माथा छूने का मौका मिल गया। वह बुखार से भभक रहा था।

"क्या देखते हो, बुढऊ," धीमी भरभराई आवाज में बज़ारोव ने कहा, "मेरा परवाना आ गया। छूत ने अपना दखल जमा लिया है, दो-एक दिनों मे ही मुझे दफ़नाने का नम्बर आ जाएगा।"

वसीली इवानिच का समूचा बदन डोल गया, जैसे उनके पांवों के नीचे की जमीन एकदम खिसक गयी हो।

"येवगेनी," लड़खड़ाती आवाज में उन्होने कहा, "ये कैसी बाते करते हो? खुदा तुम्हे सलामत रखे। थोडी ठड खा गए हो..."

"बस बस," बिना किसी उतावली के बज़ारोव ने टोका, "डाक्टर होकर ऐसी बाते नहीं करनी चाहिए। सारे लक्षण छूत के हैं, यह खुद तुमसे भी छिपा नही है।"

"नही तो... कहां है... छूत के लक्षण... तुम भी अजीब बात करते हो, येवगेनी!"

"यह सब क्या है?" बज़ारोव ने कहा और कमीज की आस्तीन उलटकर अपने पिता को वे भयानक लाल चकते दिखाए जो उसके समूचे बदन पर उभर आए थे।

वसीली इवानिच को जैसे काठ मार गया और उनका खून सर्द हो चला।

"तो इससे क्या?" आख़िर जैसे-तैसे उन्होंने कहा। "अगर... यह. . छूत .. जैसी कोई चीज हो भी... तो इससे क्या..."

"प्यागमिया," उसके बेटे ने चेताया।

"ए... हां... महामारी ऐसी. ."

"प्या-ए-मि-या," निर्मम स्पष्टता के साथ बजारोव ने दोहराया, "मालूम होता है कि आप डाक्टरी का क-ख-ग-घ तक भूल गए हैं!"

"ओ... हां... बिल्कुल ठीक... यही सही ... बीत जाएगा यह सब भी!"

"कोई सम्भावना नही। लेकिन छोड़ो, सो कुछ नही। मुझे उम्मीद नही थी कि इतनी जल्दी बिस्तरा गोल करना पड़ेगा। इसी को कहते है भाग्य की मार। तुम और मा दोनों का धर्म में जबर्दस्त विश्वास है। सो उसका दामन पकड़ना, जितना भी पकड़ा जा सके। परखकर देखना, कितना दम है उसमें।" कुछ और पानी पीकर उसने गला तर किया। "और... जब तक मेरा यह दिमाग़ सही सलामत है... मैं चाहता हूं कि मेरा एक काम कर दो... जानते ही हो, कल या परसों तक यह दिमाग भी इस्तीफ़ा दे देगा। मैं तो अब भी निश्चय से नही कह सकता कि मेरे होश-हवास एकदम दुरुस्त हैं। अभी यहां पड़े पड़े मुझे लगा जैसे लाल शिकारी कुत्ते चारों ओर से मेरा पीछा कर रहे हैं, और तुम मुझपर ऐसे नज़र गड़ाए हो मानो मैं कोई जंगली मुर्ग़ होऊं। लगता है जैसे एक नशा-सा मुझपर सवार हो। क्यों मेरी बात तो ठीक से समझ में आ रही है न?"

"सच, येवगेंनी, तुम बिल्कुल अच्छे आदमियों की भांति बोल रहे हो।"

"तब तो और भी अच्छा है। तुमने मुझे बताया कि डाक्टर को बुलवा भेजा है... चलो, तुम्हारा यह खेल भी सही... अब मुझपर भी एक इनायत करो: किसी को भेजकर..."

"आरकादी निकोलायेविच के पास?" वृद्ध ने बीच में ही कहा।

"आरकादी निकोलायेविच कौन?" बज़ारोव कुछ शंकित-सा बुदबुदाया। "ओह, वह नये परोंवाला पंछी? न, उसे परेशान न करो, वह अब घोंसले का जीव बन गया है। चौंको नहीं, अभी सरसाम शुरू नहीं हुआ। ओदिनत्सोवा—अन्ना सेर्गेयेवना

ओदिनत्सोवा – के पास किसी को भेज दो। इधर ही उसकी जागीर है... क्या तुम उसे जानते हो?" वसीली इवानिच ने सिर हिलाया। "उसके पास मेरा, येवगेनी बजारोव का, सलाम भेजना और उसे यह खबर करना है कि वह मृत्यु-शय्या पर पडा है। क्यों, इतना कर दोगे न?"

"जरूर... लेकिन तुम मृत्यु-शय्या पर? भला यह कैसे हो सकता है, येवगेनी .. अब, खुद तुम्ही सोचो .. क्या यह ठीक है?"

"सो मैं नही जानता। लेकिन देखो, सन्देश ज़रूर भेज दो।"

"मैं अभी आदमी रवाना किए देता हूं, और खुद अपने हाथ से उसे एक पुर्ज़ा लिखकर दे दूगा।"

"नही, यह सब किस लिए? उससे सिर्फ़ इतना कहना है कि मैंने सलाम भेजा है, बस और कुछ नही। हां तो अब मै फिर अपने उन शिकारी कुत्तों के पास पहुंचता हू। अजीब तमाशा है। मै मौत का चेहरा देखना चाहता हू – चाहता हूं कि अपनी कल्पना के डोरों से बांधकर उसे अपनी आंखों के सामने खड़ा करू लेकिन सब बेकार। ले-देकर एक धब्बा-सा नजर आता है... बस इतना ही, और कुछ नहीं।"

कसमसाकर उसने फिर दीवार की ओर मुह कर लिया। वसीली इवानिच अध्ययनकक्ष से वाहर आ गए, पांवों को घसीटते अपनी पत्नी के सोने के कमरे में पहुंचे और देवमूर्तियों के आगे घुटनों के बल गिर पड़े।

"दुआ करो, अरीना, दुआ करो," वह कराह उठे, "हमारा बेटा मर रहा है।"

डाक्टर आया – वही डाक्टर जिसके पास बज़ारोव के लिए लूनर कास्टिक तक नहीं था। रोगी की जांच करने के बाद उसने

चिकित्सा की प्रतीक्षा-प्रणाली तजवीजी और बड़ी तत्परता के साथ यह भी विश्वास प्रकट किया कि रोगी के चंगे होने की सम्भावना है।

"क्या आपने मुझ जैसी हालतवाले लोगों को कभी मौत के मुंह में से लौटते भी देखा है?" बजारोव ने पूछा और अचानक सोफे के पास पडी भारी मेज का पाया पकड़कर उसे इतने ज़ोरों से हिलाया कि वह डगमगा गई।

"जीवन की सारी हुमक अभी भी मौजूद है," उसने कहा, "फिर भी मुझे मरना होगा!... वृद्ध आदमी के लिए, कम से कम, इतना तो है ही कि उसके जीने का अभ्यास शेष हो चुका होता है, लेकिन मैं... शक्ति हो तो अब मौत से इन्कार करके उसे आजमाओ। वह तुमसे इन्कार करती है, और बस, सारा खेल ख़त्म। लेकिन यह रो कौन रहा है?" थोड़ा रुककर उसने कहा। "मां? बेचारी मां! अपना लाजवाब पुलाव अब वह किसे खिलाएगी? और तुम, वसीली इवानिच, देखता हूं कि तुमने भी आंसुओं का नल खोल दिया है। अच्छा, अगर ईसाइयत सहारा न दे तो दार्शनिक, या बैरागी बन जाना। क्यो, दार्शनिक होने का तो तुम दावा भी किया करते थे न?"

"कहां का और कैसा दार्शनिक!" वसीली इवानिच, शोक से मर्माहत, चीख़ उठे और आंसू उनके गालों पर से ढुरक ढुरककर धरती को भिगोने लगे।

बज़ारोव की हालत हर घड़ी बद से बदतर होती गई। रोग तेज़ी से लपक रहा था, जैसा कि जर्राही ज़हरबाद में अक्सर होता है। अभी उसकी चेतना लुप्त नहीं हुई थी और कही हुई बात समझ लेता था। वह अभी भी लड़ रहा था। "नहीं, मैं अपने को बदहवास नहीं होने दूंगा," अपनी मुट्ठियों को कसते हुए वह फुसफुसाया, "क्या वाहियात है?"

इसके बाद कहता – "आठ मे से दस घटाओ, – क्या बचा ? " वसीली इवानिच ऐसे मंडरा रहे थे, जैसे सिर पर भूत सवार हो, एक के बाद दूसरी दवाई तजवीज रहे थे और अपने बेटे के पांवों को निरन्तर ढक रहे थे। "ठंडी चादर लपेटे रहो . कै कराओ... पेट पर अलसी की पुलटिम बाधो... गंदा खून निकालो," बार-बार वह दोहरा रहे थे। डाक्टर, जिसे उन्होंने आग्रहपूर्वक रोक लिया था, सिर हिलाकर उनकी हर बात पर हामी भरता, रोगी को लैमोनेड देता, अपने लिए कभी पाइप की फ़र्माइश करता और कभी 'रूह् अफज़ा' की – यानी वोदका की। अरीना व्लासियेवना दरवाज़े के पास एक छोटे से मोढे पर बैठी थी और बीच बीच में केवल दुआ करने के लिए वहा से थोडा खिसक जाती थी। अभी उस दिन एक दस्ती आईना उमकी उंगलियों से फिसलकर टूट गया था, और इसे वह सदा ही एक बुरा सगुन मानती थी। अनफीसुश्का की समझ में न आता था कि क्या कहकर वह उन्हे ढारस बंधाए। तिमोफ़ेइच घोड़े पर ओदिनत्सोवा को ख़बर देने चला गया था।

बजारोव ने रात बुरी तरह बिताई... जानलेवा ज्वर ने उसे एक घड़ी चैन नही लेने दिया। सुबह होते होते उसने कुछ हल्कापन अनुभव किया। अरीना व्लासियेवना से कहकर उसने अपने बालों में कंघी करवाई, उसके हाथ को चूमा और चाय की एकाध चुस्की ली। वसीली इवानिच के चेहरे पर ख़ुशी की एक रेखा दौड़ गई।

"शुक्र है खुदा का," उसने आश्वासन के साथ कहा, "एक संकट था जो आया... और टल गया।"

"भई वाह!" बज़ारोव ने कहा, "भला शब्दों में क्या है। कोई एक शब्द चुन लो, जैसे 'संकट' और बस – जी हल्का हो गया। आश्चर्य, मानव किस प्रकार आज भी शब्दों में विश्वास रखता है।

मिसाल के लिए, उससे कहो कि तुम मूर्ख हो फिर देखो कि किस प्रकार बिना मार खाए ही उसका चेहरा धूल चाटने लगता है; कहो कि तुम बड़े होशियार हो, और फिर देखो कि बिना कुछ दिए ही किस प्रकार वह गुदगुदा उठता है।"

बज़ारोव के इस लघु सम्भाषण से, जो उसकी पुरानी फब्तियों की याद दिलाता था, वसीली इवानिच का हृदय खिल गया।

"भई वाह! खूब—बहुत खूब कहा!" उनके मुह से बरबस निकला और हाथों को ऐसे डुलाया जैसे तालिया बजा रहे हों।

बज़ारोव के चेहरे पर उदास मुसकराहट दौड गई।

"सो, तुम्हारी समझ मे," उसने पूछा, "क्या मही है—संकट का आना या टल जाना?"

"मुझे तो यही सूझता है कि तुम अब बेहतर हो, और यही मुख्य चीज़ है," वसीली इवानिच ने जवाब दिया।

"ठीक, तो खुशी मनाओ, यह हमेशा अच्छा होता है। उसके पास तो किसी को भेज दिया है न?"

"हां, बेशक।"

बजारोव की तबीयत ज़्यादा देर तक संभली नही रह सकी। रोगी ने फिर पलटा खाया। वसीली इवानिच बज़ारोव की पाटी के पास बैठे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई खास तीव्र वेदना उन्हें झंझोड़ रही हो। कई बार उन्होंने बोलने की कोशिश की, पर बोल नहीं सके।

"येवगेनी," आखिर उनके मुंह से निकला, "मेरे बेटे! मेरे लाल! मेरे जिगर के टुकड़े!"

इस असाधारण गुहार से बज़ारोव द्रवित हो उठा... उसने अपना सिर तनिक-सा फेरा, और ग़शी की स्थिति को छिटककर दूर करने का प्रत्यक्ष प्रयास करते हुए बोला :

"अरे यह क्या प्यारे दद्दा?"।

"येवगेनी," कहते कहते वसीली इवानिच बज़ारोव के सामने घुटनों के बल गिर गए। बजारोव की आखे मुदी थी और वह उन्हे देख नही सकता था। वह कहते गए—"येवगेनी, अब तुम पहले से अच्छे हो। खुदा ने चाहा तो तुम अब ज़रूर ठीक हो जाओगे। लेकिन, अपनी मा की और मेरी खातिर, यह ऐसा समय है जब तुम्हे अपना ईसाई कर्तव्य पूरा कर लेना चाहिए। मेरे लिए बडा हौलनाक है तुमसे यह कहना, लेकिन न कहना और भी ज्यादा हौलनाक होता... यह चिर काल के लिए है, येवगेनी... जरा सोचो तो, क्या अर्थ है इसका ..."

वृद्ध का गला रुंध गया, और उसके बेटे के चेहरे पर एक अजीब-सी छाया रेंग गई, हालाकि वह अभी भी वैसे ही आंखें मूंदे पड़ा था।

"अगर तुम्हें इससे कुछ राहत मिलती हो तो मुझे कोई उज्र नही," आखिर वह बुदबुदाया। "लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि अभी ऐसी जल्दी क्या है। खुद तुम्ही ने तो कहा था कि मेरी हालत अब बेहतर है।"

"सो तो है, येवगेनी, तुम्हारी हालत पहले से बेहतर है। लेकिन कौन जाने, खुदा की क्या इच्छा है, और अगर तुम अपना यह फ़र्ज़ पूरा कर लेते..."

"नहीं, अभी नहीं," बजारोव ने बीच में ही कहा, "मैं तुमसे सहमत हूं कि संकट आ धमका है। और अगर हमारी बात गलत निकलती है, तो फिर! —बेहोशी की हालत में भी तो आदमी इस अन्तिम धर्माचरण का लाभ ग्रहण कर सकता है..."

"लेकिन, प्यारे येवगेनी..."

"नहीं, अभी कुछ नहीं। और मैं अब सोना चाहता हूं। दिक न करो।"

और उसने अपना सिर फिर पहलेवाली स्थिति में कर लिया।

वृद्ध वहां से उठा, आरामकुर्सी में बैठ गया, और ठोड़ी को अपनी हथेली में थामे दातों से उंगलियां काटने लगा।

सहसा, देहात की निस्तब्धता में और अधिक मुखर होकर, कमानीदार गाड़ी की आवाज उनके कानो से आकर टकराई। गाड़ी के हल्के पहियों की घरघराहट निकट से निकटतर आती जा रही थी, और अब तो घोड़ो का हिनहिनाना तक सुनाई देने लगा था। वसीली इवानिच तेज़ी से खिड़की की ओर लपके। दो सीटों की एक गाड़ी, जिसमें चार घोड़े जुते थे, झपाटे के साथ अहाते में आ गई। भीतर से एकाएक निर्बन्ध ख़ुशी का ऐसा ज्वार उमडा कि क्या उचित है और क्या नहीं की सुध बिसरा, वह दौड़कर बाहर वराण्डे में निकल आए... वर्दी-कसे एक प्यादे ने गाड़ी का दरवाजा खोला और काला नक़ाब तथा काला लबादा पहने एक महिला गाड़ी में से प्रकट हुई।

"मै ओदिनत्सोवा हूं," उसने कहा, "येवगेनी वसीलियेविच तो अभी सही-सलामत हैं न? और आप,—क्या आप उनके पिता हैं? मैं अपने साथ एक डाक्टर भी लिवा लाई हूं।"

"देवी, फ़रिश्ता हो तुम!" वसीली इवानिच के मुंह से निकला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उद्विग्नता के साथ अपने होंठों से लगा लिया। इस बीच वह डाक्टर जो उसके साथ आया था, इत्मीनान के साथ गाडी से उतर आया। आंखों पर चश्मा चढ़ाए वह एक मुख़्तसिर-सा आदमी था और शक्ल से जर्मन मालूम होता था।

"वह जीवित है, मेरा येवगेनी अभी जीवित है, और अब वह निश्चय ही बच जाएगा। मालकिन, मालकिन, देखो न, ईश्वर ने ऐन वक़्त पर इस फ़रिश्ते को हमारे यहां भेजा है..."

"ओह क्या है, भगवान तुम्हारा भला करे," अधूरी-पूरी आवाज में यही कहती वृद्धा बैठक से बाहर दौड़ आई और एकदम भ्रमित-सी होकर अन्ना सेर्गेयेवना के पांवों से लिपट गई। वह जैसे आपे में नही थी और अन्ना सेर्गेयेवना के गाउन के छोर को बार बार चूम रही थी।

"अरे, बस, बस, यह आप क्या कर रही है!" अन्ना सेर्गेयेवना उन्हें रोक रही थी, लेकिन अरीना व्लासियेवना को जैसे कुछ सुनाई नही दे रहा था। उधर वसीली इवानिच अलग अपनी माला जपे जा रहे थे—"फ़रिश्ता, फ़रिश्ता!"

"Wo ist der Kranke?"* जब नही रहा गया तो अन्त में डाक्टर ने कुछ झुझलाकर पूछा, "रोगी कहां है?"

वसीली इवानिच ने अपने आपको संभालकर स्थिर किया।

"यहां, इधर—आइए मेहरबान," उन्होंने कहा और फिर पुराने दिनों की याद कर जर्मन में बोले—"इधर आइए, वेरतेसतेर हेर कोल्लेगा!**"

"अच्छा!" खीज के साथ बत्तीसी दिखाते हुए जर्मन ने कहा।

वसीली इवानिच उसे लेकर अपने अध्ययनकक्ष में पहुंचे।

"अन्ना सेर्गेयेवना ओदिनत्सोवा के यहां से ये डाक्टर साहब आए हैं," बेटे के कान के पास झुकते हुए वह बोले, "और वह खुद भी यहां मौजूद हैं।"

---

* रोगी कहां है? (जर्मन)—सं०

** मेरे मानवीय सहकर्मी। (जर्मन)—सं०

बज़ारोव ने तुरत अपनी आंखें खोल लीं:

"क्या-आ... क्या कहा आपने?"

"मैंने कहा कि अन्ना सेर्गेयेवना यहा आ गई है और तुम्हारे लिए एक डाक्टर को भी ले आई हैं,–यह है वह महानुभाव!"

बज़ारोव की आखे कमरे मे घूम गइ।

"वह यहा है...? मै उन्हें देखना चाहता हूं।"

"देखोगे, येवगेनी, जरूर देखोगे। पहले डाक्टर साहब से निबट लिया जाए। सीदोर सीदोरिच (यह ज़िले के डाक्टर का नाम था) तो चले गए, इसलिए मै इन्हे तुम्हारे रोग का इतिहास बता दूंगा। और फिर थोड़ा सलाह-मशविरा करेंगे।"

बजारोव ने जर्मन पर एक नजर डाली।

"अच्छी बात है। लेकिन जरा जल्दी कीजिए। और देखिए, लैटिन न बूकिएगा, मै जानता हू कि 'जाम मोरितूर'* का क्या मतलब है।"

"साफ़ है कि महोदय जर्मन खूब जानते है," वसीली इवानिच की ओर मुड़ते हुए धन्वन्तरि के इस नये अवतार ने जर्मन में कहा।

"इख... हाबे... अच्छा हो, आप रूसी में बात करें," वृद्ध ने कहा।

"आख! बौत्त अक्खा..."

और सलाह-मशविरा होने लगा।

---

* मौत आ पहुंची। (लैटिन)–सं०

आधे घंटे बाद वसीली इवानिच के साथ अन्ना सेर्गेयेवना ने रोगी के कमरे में प्रवेश किया। डाक्टर ने पहले ही उसके कानों में फुसफुसाकर बता दिया था कि रोगी के अच्छा होने की कोई उम्मीद नही है।

उसने बजारोव की ओर देखा ... और दरवाज़े पर जड़वत् खड़ी रह गई। बज़ारोव की पथराई-सी आंखें उसपर जमी थीं। चेहरे पर सूजन थी और रंग राख जैसा हो गया था। देखकर उसे काठ मार गया। भय की सुन्न कर देनेवाली मर्मबेधी भावना से वह आतंकित हो उठी। यह ख़याल कि अगर वह उससे प्यार करती होती तो उसकी संवेदनशीलता इससे भिन्न होती, उसके दिमाग़ में कौंध गया।

"शु-क्रि-या," उसने सप्रयास कहा, "मुझे उम्मीद नहीं थी। यह आपकी मेहरबानी है कि हम फिर मिल रहे हैं, जैसा कि आपने आश्वासन दिया था।"

"अन्ना सेर्गेयेवना इतनी भली हैं..." वसीली इवानिच ने कहना शुरू किया।

"पिता, हमें अकेला छोड़ आप यहां से चले जाइए। क्यों, अन्ना सेर्गेयेवना, आपको तो इसमें आपत्ति नही? मैं समझता हूं कि अब..."

सिर के एक हल्के से संचालन से उसने अपनी पस्त और कमज़ोर देह की ओर संकेत किया।

वसीली इवानिच कमरे से बाहर चले गए।

"तो शुक्रिया," बज़ारोव ने फिर दोहराया, "यह शाही मेहरबानी है। कहते हैं कि बादशाहत भी मरते हुओं के पास आकर उन्हें दर्शन दे देती है।"

"येवगेनी वसीलियेविच, मुझे उम्मीद..."

"हे-हो, अन्ना सेर्गेयेवना, अच्छा हो कि हम सच को आंखों की ओट न करें। मेरा तो अब किस्सा ही तमाम है। दलदल में फंस चुका हूं। आखिर यही निकला कि भविष्य के तूमार बांधने में कोई तुक नहीं थी। मौत की कहानी बड़ी पुरानी है, और पुरानी होते हुए भी नयी बनकर हरेक को वह भेंटती है। अभी भी मैंने घुटने नही टेके हैं... लेकिन विराम आएगा और तब–यह बुलबुल फुर्र हो जाएगी!" उसने एक क्षीण-सा संकेत किया। "हां तो क्या कहूं मैं तुमसे ... यह कि मैं तुमसे प्यार करता था? लेकिन इसमें तब भी कोई तत्व नहीं था, अब तो और भी नहीं है। प्रेम एक आकार है और खुद मेरा आकार निराकार हो रहा है। सो अच्छा यही है कि मैं कहूं, तुम कितनी सुन्दर हो। ओह, तुम वहां खड़ी ऐसी मालूम होती हो जैसे सौन्दर्य इस धरती पर उतर आया हो ..."

अन्ना सेर्गेयेवना बरबस थरथरा उठी।

"लेकिन छोड़ो। इतना उद्विग्न होने की जरूरत नहीं... वहां, उधर, बैठ जाओ... ओह नहीं, मेरे पास न आना... जानती ही हो मेरा यह रोग उड़कर पकड़ता है।"

अन्ना सेर्गेयेवना क्षिप्र गति से कमरे में आई और जिस सोफ़े पर बज़ारोव पड़ा था, उसके पास आरामकुर्सी पर बैठ गई।

"मेरी अधिष्ठात्री देवी," वह फुसफुसाया, "ओह कितनी निकट, कितनी यौवनमय, ताज़ा और निर्मल... इस वीभत्स कमरे में ..! हां तो विदा! बहुत बहुत दिनों तक जियो, इससे बढ़कर कुछ नहीं, और चूको नहीं–जो पा सको उसका अच्छे से अच्छा उपयोग करो। देखो न, कितना घिनौना दृश्य है यह: अधकुचला कीट, लेकिन फिर भी अपनी अकड़ से बाज़ न आता हुआ। ओह, क्या शान थी मेरी भी–सोचता था, मरना कैसा, अभी इन हाथों में बहुत दम है, बहुत

कुछ मुझे करना है, भीम का सा बल मेरे रगों-रेशों में सरसरा रहा है। लेकिन अब... अब उस भीम की मुख्य चिन्ता यह है कि किस प्रकार आबरू के साथ मरा जाए, हालांकि इसकी रत्ती भर भी किसी को पर्वाह नही है कि वह कैसे मरता है... जो हो, दुम मैं कभी नहीं हिलाऊंगा!"

बज़ारोव चुप हो गया और पानी का गिलास टोहने लगा। अन्ना सेर्गेयेवना ने बिना दस्ताने उतारे ही उसे पानी दिया। सांस लेने का साहस तक उसे मुश्किल से हो पा रहा था।

"तुम भूल जाओगी मुझे," उसने फिर कहना शुरू किया। "मृतक जीवितों के संगी नहीं हुआ करते। मेरे पिता, इसमें शक नही, तुम्हें बताएंगे कि कितनी बड़ी विभूति रूस से विदा हो गई... निरी बकवास, लेकिन बूढ़े का यह भ्रम न तोड़ना। जानती ही हो... जीवन की इस नीरवता में जो भी सहारा मिल जाए... और मां का ध्यान रखना। चिराग़ लेकर तुम्हारी दुनिया का कोना कोना छान लेने पर भी ऐसे लोग ढूंढे नहीं मिलेंगे... रूस को मेरी ज़रूरत है... नहीं, प्रत्यक्षतः नही है। तो फिर किसकी जरूरत है? ज़रूरत है मोची की, दर्ज़ी की, कसाई की... जो मांस बेचता है... वह कसाई... लेकिन देखो... ओह, मेरा दिमाग़ गड़बड़ा रहा है... वह एक जंगल..."

बज़ारोव ने माथे पर अपना हाथ रखा।

अन्ना सेर्गेयेवना ने अपना बदन आगे को झुकाया।

"येवगेनी वसीलियेविच, इधर मेरी ओर देखो..."

उसने तुरत अपना हाथ हटा लिया और कोहनियों के सहारे उचक गया।

"विदा," आकस्मिक आवेग के साथ उसने कहा और उसकी आंखों में लौ की आखिरी लपक चमक उठी। "विदा... सुनो... उस बार मैंने तुम्हें चूमा नही था, तुम जानती हो... इस बुझते हुए दिए को अपनी सांस का स्पर्श दो, वह बुझ जाए..."

अन्ना सेर्गेयेवना ने उसके माथे पर अपने होंठ रख दिए।

"बस, और कुछ नहीं," वह बुदबुदाया और फिर अपने तकिए पर लुढक गया। "अब... अंधकार..."

अन्ना सेर्गेयेवना दबे पांव कमरे से बाहर चली गई।

"क्यों?" वसीली इवानिच ने फुसफुसाकर पूछा।

"सो गए है," उसने इतने धीमे से कहा कि सुनना मुश्किल था।

बज़ारोव की मुंदी हुई आंखें फिर नहीं खुलीं। सांझ होते न होते उसपर मौत से पहले की बेहोशी छा गयी और अगले दिन वह चल बसा। फ़ादर अलेक्सेई ने धार्मिक कृत्य पूरे किए। अन्तिम क्रिया के दौरान में—उस समय जबकि उसकी छाती को पवित्र तेल से सिक्त किया जा रहा था—उसकी एक आंख खुली। ऐसा मालूम हुआ जैसे धार्मिक लबादे से लैस पादरी, धूपदान से उठते हुए गूगल के धुवें और देवमूर्तियों के सामने जलती मोमबत्तियों को देखकर मरनेवाले के बेजान चेहरे पर दारुण भय की एक कंपकंपी-सी दौड़ गई हो। अन्त में जब प्राण-पखेरू उड़े और समूचा घर स्यापे की चीख़ों से गूंज उठा, तब वसीली इवानिच को एकाएक जैसे उन्माद ने जकड़ लिया। "मैंने कह दिया था कि मै यह बरदाश्त नहीं करूंगा!" भरभराई-सी आवाज़ में वह चिल्ला उठे। उनका चेहरा ऐंठ और दहक रहा था और किसी की अवज्ञा करने की मुद्रा में अपनी मुट्ठी को हवा में हिला हिला कर वह कह रहे थे—"और मैं यह बरदाश्त नहीं करूंगा, कभी

नहीं करूंगा!" लेकिन अरीना व्लासियेवना, आंसुओं में डूबती-उतराती, उसके गले से लिपट गई और वह दोनों घुटनों के बल फ़र्श पर ढह गए। "और वे उसी प्रकार घुटनों के बल बैठे रहे," बाद में नौकरों के बासे में अनफीसुश्का ने वर्णन करते हुए कहा। "एक-दूसरे से सटे, सिर झुकाए, ठीक दोपहर मे दो निरीह मेमनों की भांति..."

लेकिन दोपहर की तपन ढल जाती है, फिर सांझ आती है और फिर रात अपना शीतल आंचल फैला देती है जिसकी छाया में थके-मांदे शांति की नींद सोते है...

२८

छै महीने बीत चुके थे। श्वेत-केशी शिशिर ऋतु आ गयी थी। निर्मेघ पाले की क्रूर निस्तब्धता, कचर कचर करती बर्फ़ का बोझिल कंबल, पेड़ों पर गुलाबी चमक लिए हिम के फाहे, मुरझाया मरकती आकाश, धुम्रांरों से उठते धुएं के गुब्बारे, पटापट खुले दरवाजों से निकलते भाप के घूमदार बादल, पाले से खिले चेहरे और ठिठुरे घोड़ों की हड़बड़ाई-सी दुलकियां। जनवरी का दिन था वह। सांझ होने को आ रही थी। शाम की सर्द सांस ने स्थिर हवा को अपने बर्फ़ीले पंजे में जकड़ लिया था और सूर्यास्त की रक्तिम चमक बड़ी तेजी से धुंधला गयी थी। मारिनो के घरों में बत्तियां जल उठी थी। काली अचकन और उजले दस्ताने पहने प्रोकोफ़िच आज ग़ैरमामूली बाज़ाब्तगी के साथ सात जनों के लिए दस्तरख़ान चुन रहा था। आज से हफ़्ता भर पहले, बस्ती के छोटे-से गिरजे में, एक

साथ दो दो शुभ लग्न संपन्न हुए थे—बिना किसी तड़क-भड़क के ग्रौर लगभग बिना किसी साखी-साक्षियों के। इन दोनों शादियों में एक तो थी ग्रारकादी ग्रौर कात्या की, दूसरी निकोलाई पेत्रोविच ग्रौर फ़ेनिचका की। ग्रौर ग्राज निकोलाई पेत्रोविच ग्रपने भाई की विदाई में भोज दे रहे थे। भाई कारोबार के सिलसिले में मास्को जा रहे थे। ग्रन्ना सेर्गेयेवना पहले ही, विवाह के तुरत बाद, मास्को चली गयी थी। विवाह में उसने छोटे नव-दम्पत्ति को काफ़ी उदारता से दहेज दिया था।

ठीक तीन बजे सभी कोई खाने की मेज पर ग्रा बैठे। मित्या को भी पंगत में जगह मिली थी। ग्राजकल उसके लिए एक धाय रख ली गयी थी जो किमख़ाब की टोपी पहनती थी। पावेल पेत्रोविच, कात्या ग्रौर फ़ेनिचका के बीच में बैठे थे। दोनों 'शौहर' ग्रपनी ग्रपनी बीवी के पासवाली कुर्सी पर थे। हमारे दोस्त इधर कुछ बदल गए थे; सभी पहले से ग्रधिक परिपक्व जान पड़ते थे ग्रौर सभी के रूप निखर ग्राए थे। सिर्फ़ पावेल पेत्रोविच दुबले नज़र ग्राते थे। लेकिन उनका यह दुबला होना भी उनकी बोलती मुद्रा ग्रौर ग्राभिजात्य में पगी शानदार भाव-भंगिमा की नफ़ासत में ग्रौर भी वृद्धि कर रहा था। फ़ेनिचका भी बदल गई थी। ताज़ा रेशमी लबादा, चौड़ी मख़मली टोपी ग्रौर गले में सोने की लड़ी पहने वह ग्रदब के मारे निश्चल बैठी थी। वह ग्रपने प्रति ग्रौर ग्रपने चारों ग्रोर की हर चीज़ के प्रति सम्मान की भावना से भरी थी। ग्रौर वह कुछ इस तरह मुसकुरा रही थी कि मानो कह रही हो: "माफ़ करना, इसमें मेरा दोष नहीं है।" सच पूछो तो वहां ग्रन्य सब भी मुसकुरा रहे थे ग्रौर हरेक के चेहरे पर इस मुसकराने के लिए माफ़ी मांगने का सा भाव छाया था। हरेक को कुछ ग्रटपटा-सा ग्रौर कुछ उदास-सा लग रहा था। मगर

सच पूछो तो हर कोई बहुत ही ख़ुश था। हर कोई हरेक के साथ बड़े ही मज़ेदार ढंग से तकल्लुफ़ बरत रहा था मानो मौन सहमति से सब ने आज कोई निश्छल प्रहसन खेलने का निश्चय कर लिया हो। कात्या उपस्थित जनों में सबसे ज़्यादा इतमीनान से बैठी थी; उसकी नजरों में विश्वास की झलक थी और यह आसानी से देखा जा सकता था कि निकोलाई पेत्रोविच उसे अपनी आंखों की पुतली की भांति प्यार करते हैं। भोज शेष होने के पहले वह उठकर खड़े हुए और अपना जाम उठाकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुड़े।

"तुम हमें छोड़कर जा रहे हो... तुम हमें छोड़े जा रहे हो, प्यारे भाई," उन्होंने कहना शुरू किया, "लेकिन बेशक ज़्यादा दिनों के लिए नहीं! फिर भी मुझे कहने दीजिए कि मैं... यानी हम... किस प्रकार मैं... यानी हम – किस प्रकार हम... ओह, यही तो मुसीबत है। स्पीचबाज़ी मेरा धंधा नहीं। तुम्हीं कुछ कहते न, आरकादी!"

"नहीं पिताजी, यों ही अललटप्पू नहीं।"

"और मुझे क्या तुम तीसमारखां समझते हो? अच्छा तो भाई साहब, आओ, तुम्हें सिर्फ़ गले ही लगा लें, तुम्हारे लिए शुभ से शुभ कामना करें। बस, इतना ही है कि जल्द से जल्द लौट आना।"

पावेल पेत्रोविच ने हरेक को चूमा – और मित्या को तो ख़ैर कुछ कहना ही नहीं। इसके अलावा उन्होंने फ़ेनिचका के हाथ को भी चूमा, यद्यपि बेचारी ने चुम्बन के लिए क़ायदे से हाथ पेश तक करना अभी नहीं सीखा था। फिर नये भरे गये अपने जाम को एक ही बार में ख़ाली करते हुए पावेल पेत्रोविच ने गहरी आह भरी और कहा: "तुम सभी के सितारे चमकें, मेरे दोस्तो! फ़ेयरवेल!" इस अंगरेज़ी के फुदने पर किसी का ध्यान नहीं गया, पर हरेक का दिल भर आया।

"बज़ारोव की याद में," कात्या ने अपने पति के कान में फुसफुसाकर कहा और दोनों ने अपने जाम खनकाए। प्रत्युतर में आरकादी ने उसकी हथेली अपनी मुट्ठी में लेकर कसके दाबी। मगर उसे यह साहस न हुआ कि बज़ारोव की याद में इस जाम का सबके सामने खुलकर प्रस्ताव करे।

तो क्या कहानी यहीं शेष हो जाती है? लगता तो ऐसा ही है। लेकिन शायद कोई पाठक यह जानने के लिए उत्सुक हो कि हमारी कहानी के अन्य पात्र इस समय, ठीक इस क्षण, क्या कर रहे हैं। पाठक की जिज्ञासा को शांत करने को हम तैयार है।

हाल में ही अन्ना सेर्गेयेवना ने शादी कर ली है। प्रेम की बदौलत नही, बल्कि एतक़ाद की बदौलत। जिनसे शादी हुई है, वह रूस के भावी जन नेता हैं। ठोस सूझ-बूझ, बहुत ही चतुर वक़ील। इरादे के पक्के और शब्दावली के बेजोड़ धनी। अभी नौजवान है, स्वभाव के अच्छे और दिल के इतने ठंडे जैसे हिम। दोनों में खूब निभती है। हो सकता है मियां-बीवी आगे चलकर जीवन के सुख का, शायद प्रेम के सुख का, आनंद भी ले सकें,—कौन जाने? राजकुमारी 'एक्स' तो मर गईं, और मरने के बाद से ही याद से उतर गईं। किरसानोव पिता-पुत्र मारिनो में ही बस गए। हालत सुधरने लगी। आरकादी लगन से किसानी करता है। काश्त से खासी आमदनी हो जाती है। निकोलाई पेत्रोविच ने मीरोवोय पोसरेदनिक* का चोला धारण कर

---

* शांति का मध्यस्थ। यह पद रूस में किसान मुक्ति के बाद क़ायम हुआ था। मध्यस्थों का काम था किसानों और जमींदारों के बीच के झगड़े सुलझाना।—अनु०

लिया है और खूब जी जान से काम करते हैं। लगातार अपने ज़िले का दौरा ही करते रहते है। लम्बी लम्बी तक़रीरें झाड़ते है (वह यह विश्वास संजोए बैठे हैं कि मूजिकों को बातें समझा दी जानी चाहिए, मतलब यह कि उनके कानों के पास बराबर एक ही बात का ढोल पीट पीटकर उन्हे सुन्न कर देना चाहिए।) हालांकि सच बात यह है कि वह न तो उस शिक्षित कुलीन वर्ग को ही ठीक से संतुष्ट कर पाते हैं जो किसान मुक्ति के सवाल पर (जिसे कि वे सानुनासिक उच्चारण के साथ यमांसिपास्यों कहते है) जैसा भी मौक़ा हो—या तो मुंह फुलाये या मुह लटकाये नजर आते हैं, और न ही वह उन अशिक्षित कुलीनों को ठीक से संतुष्ट कर पाते हैं जो किसान मुक्ति को फ़्रांसीसी में यमांसिपास्यों नही कह पाते, इसलिए उसे सीधे मुशीपेशन कहते और "उस मरदूद मुशीपेशन" को बुरी तरह कोसते है। दोनों के लिए ही वह जरूरत से ज्यादा बोदे थे। कातेरीना सेर्गेयेवना एक पुत्र की माता बन गई है, जिसका नाम निकोलाई है। मित्या पैरों से खूब चलने और बोलने लगा है। फ़ेनिचका—फ़ेदोसिया निकोलायेवना—अपने पति और मित्या के बाद अपनी बहू को जितना चाहती है, उतना दुनिया में और किसी को नही। बहू जब पियानो बजाने बैठती है तो वह बिना अघाए सारे दिन बैठी सुनती रह सकती है। लगे हाथ एकाध शब्द प्योत्र के बारे में भी। हिमाक़त और मियांमिट्ठूपन ने उसे एकदम जड़ बना दिया है। उसने अपने उच्चारण का इतना परिष्कार किया है कि उसे समझना मुश्किल है। पर साथ ही, उसने शादी भी कर ली है। दुलहिन के साथ साथ उसने अच्छे ख़ासे दहेज पर भी हाथ साफ़ किया है। दुलहिन का पिता शहर के लिए साग-भाजी उगाता है। बेटी ने दो अच्छे चाहनेवालों को सिर्फ़ इसलिए ठुकरा दिया कि उनके पास घड़ी नहीं

थी। प्योत्र के पास घड़ी भी थी, और साथ ही एक जोड़ा पेटेंट जूते भी।

द्रेसदेन में, ब्रूल तेरास पर, सांझ को दो से चार के बीच, यानी शौक़ीनों की हवाख़ोरी के समय, आपको लगभग पचास साल के एक सज्जन मिल जाएंगे। बाल सारे पक चुके हैं और देखने में हर पहलू से गठिया के रोगी मालूम होते हैं। लेकिन हैं फिर भी वह रूपवान। सज-धज में एक अजीब नफ़ासत लिए और एक ऐसी भाव-भंगिमा से लैस जो समाज के ऊंचे हलकों से एक ज़माने तक घनिष्ठ सम्पर्क द्वारा ही हासिल की जा सकती है। यह हैं पावेल पेत्रोविच। स्वास्थ्य सुधारने के लिए वह मास्को छोड़कर विदेश चले आए और द्रेसदेन में आकर टिक गए। यहां वह अक्सर अंगरेजों और रूसी अभ्यागतों से मिलते-जुलते हैं। अंगरेजों के साथ तो वह बहुत ही सादगी के साथ, बल्कि क़रीब क़रीब यह कहिए कि बहुत विनय के साथ पेश आते हैं, पर अपने मान का ध्यान रखते हुए। अंगरेज़ों को वह कुछ उबा देनेवाले मालूम होते हैं, मगर वे उनकी 'सोलहों आना शराफ़त' (a perfect gentleman) की कद्र करते हैं। रूसियों के साथ वह बाज़ाब्तगी नहीं बरतते। उनके आगे वह चिड़चिड़ा उठते हैं, अपने को और दूसरों को निशाना बनाकर मज़ाक़ करते हैं, लेकिन यह सब कुछ वह इतनी मोहक नफ़ासत से करते हैं कि ज़रा भी नहीं खलता। वह स्लाविस्ट विचारों का समर्थन करते हैं जिन्हें, जैसा कि सभी जानते हैं, ऊंची सोसायटी में 'त्रे दिस्तिंग्व' (उच्चता की निशानी) समझा जाता है। रूसी भाषा की वह कोई चीज़ नहीं पढ़ते, लेकिन उनकी मेज़ पर चांदी की एक राखदानी पड़ी रहती है जिसकी शक्ल रूसी दहकानों की छाल से बनी चप्पल जैसी होती है। यात्रा के लिए निकले हमारे देश के लोग उनकी ख़ूब दरबारगीरी करते हैं। मातवेई इलिच कोल्याज़िन ने, जो आरज़ी विरोधी दल

में हैं, बोहेमिया-क्षेत्रों की यात्रा के लिए जाते समय उनसे शाहाना भेंट की। और द्रेसदेन के मूल निवासी तो जैसे उनकी उपासना करते हैं, हालांकि उन लोगों से वह बहुत कम मिलते-जुलते हैं। दरबारी कीर्तन या नाटक घर के लिए कोई भी शख्स उतनी आसानी और उतनी जल्दी टिकट नहीं हासिल कर सकता, जितनी आसानी और जल्दी से देर हर बारोन फ़ान किरसानोव। वह अब भी अपनी सामर्थ्य भर भलाई करने की कोशिश करते हैं। अब भी थोड़ी चहल-पहल कर लेते हैं—आखिर वह भी तो कभी समाज-सिंह थे न? लेकिन जीवन अब भार बन गया है... इतना अधिक कि वह खुद भी अंदाज नहीं कर पाते... रूसी गिरजे में उन्हें देखिए तो पता चले। वह सबसे अलग, दीवार से लगे, बिना हिले-डुले, होंठों को कसकर कटु मौन धारण किए, काफ़ी देर तक विचारों में खोए खड़े रहते हैं और फिर, यकायक चेतन होकर हाथों की लगभग न मालूम-सी हरकत से अपने सीने पर सलीब के चिन्ह बनाने शुरू कर देते हैं...

कूक्शिना भी विदेश में ही है। आजकल हैदेलबर्ग में जमी है। अब प्रकृति-विज्ञान नहीं, वास्तु-कला पढ़ती है और इस क्षेत्र में नये नियमों का आविष्कार करने का दावा करती है। वह अब भी विद्यार्थियों से खूब संपर्क रखती है, खासकर पदार्थ और रसायन विज्ञान के रूसी विद्यार्थियों से, जिनकी हैदेलबर्ग में भरमार है और जो भोले जर्मन प्रोफ़ेसरों को शुरू शुरू में दीन-दुनिया सम्बंधी अपने गम्भीर चिन्तन से और फिर अपनी निष्क्रियता और निपट काहिली से हैरानी में डाल देते हैं। ऐसे ही दो या तीन रसायन-शास्त्रियों के साथ—जो आक्सीजन और नाइट्रोजन में भले ही तमीज़ न कर सकें लेकिन खण्डन और आत्मगौरव जिनमें एड़ी से चोटी तक भरा है—और महान येलिसेविच के साथ सितनिकोव सन्त

पीतर्सबर्ग में बोझिल समय काट लेता है। सितनिकोव भी महानता के दावेदारों में से है और उसका विश्वास है कि वह बजारोव के 'लक्ष्य' को पूरा कर रहा है। कहनेवाले कहते हैं कि अभी हाल ही में उसकी पिटाई हो चुकी है, लेकिन पीटनेवाले को उसने भी नहीं बख़्शा: किसी टुकड़ियल छरछन्दी अख़बार में छरछन्द से उन्होंने एक छोटा-सा पैरा छपाया कि उसे मारनेवाला कायर था। इसे वह व्यंग कहता है। उसके पिता पहले की भांति उसे उल्लू बनाते हैं और उसकी पत्नी उसे निरा घुग्घू... और लिखारिया समझती है।

रूस के दूर देहात में एक छोटा-सा क़ब्रिस्तान है। क़रीब क़रीब हमारे सभी क़ब्रिस्तानों की भांति इसकी दशा भी दयनीय है: चारों तरफ़ के खाई-खड्डों में झाड़-झंखाड़ उगे हैं; लकड़ी के काई चढ़े सलीब आगे को झुक आए हैं, और उन छतरियों के नीचे जिनपर कभी रंग-रोगन था, सड़ रहे हैं। क़ब्रों के ऊपर के पत्थर अपनी जगह से उखड़ आए हैं, जैसे कोई उन्हें नीचे से धकेल रहा हो; दो या तीन टेढ़े-तिरछे पेड़ हैं, जिनसे नाम मात्र को ही छाया होती है; भेड़ें बड़ी उद्दंडता से क़ब्रों पर घूमती हैं। लेकिन एक क़ब्र ऐसी है जिसे न कोई आदमी हाथ लगाता है, न कोई जानवर रौंदता है; केवल पक्षी उसपर उतरते हैं और प्रभात की बेला में अपने गीत गा जाते हैं। क़ब्र के चारों तरफ़ लोहे का एक बाड़ा है और इसके दोनों ओर फ़र के दो वृक्ष खड़े हैं। इसी क़ब्र में सोता है येवगेनी बज़ारोव। पास के गांव से अक्सर यहां एक अपाहिज वृद्ध पुरुष और स्त्री–पति और पत्नी–आते हैं। एक-दूसरे को सहारा देते, अपने थके पांवों को घसीटते हुए वे आगे बढ़ते हैं। वे बाड़े में दाख़िल होते हैं और फिर घुटनों के बल गिरकर बहुत देर तक, और फूट-फूट कर, रोते रहते हैं। बहुत देर तक वे उस मूक शिला को देखते रहते हैं, जिसके नीचे

उनका बेटा चिरनिद्रा में निमग्न है। दो एक शब्द वे एक-दूसरे से कहते हैं, क़ब्र के पत्थर की धूल पोंछते हैं, फ़र की नीचे को झुक आई शाखा सीधी करते हैं, और फिर प्रार्थना करने लगते हैं। वे अपने को उस स्थान से हटा नही पाते जहां अपने बेटे और उसकी स्मृतियों के वे इतने निकट हैं ... क्या उनकी प्रार्थनाएं, उनके आंसू, निष्फल जाएंगे? क्या प्रेम, अलौकिक आभा से घिरा सच्चा प्रेम, सर्वशक्तिमान नही होता? इतना ही नहीं! क़ब्र में सोया हृदय कितना ही वासनामय, कितना ही पापी, कितना ही विद्रोही क्यों न हो, उसपर खिले फूल अपनी मासूम आंखों से तुम्हारी ओर बड़ी निष्कपटता से देखते हैं; वे केवल अनन्त शांति की ही बातें, 'तटस्थ' प्रकृति की महान शांति की ही बातें, हमसे नहीं कहते; वे हमसे अनन्त समन्वय और अनन्त जीवन की बातें भी कहते हैं ...

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।